मैथिली
शैवसाहित्यक भूमिका

★

डाक्टर रामदेव झा
एम्०ए०, पी-एच्०डी०
मैथिली विभाग,
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

मैथिली अकादमी
पटना

Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी प्रकाशन, प्रकाशन सं० —११५

प्रकाशक :

मैथिली अकादमी

श्रीकृष्णपुरी, पटना-८०००१

(C) मैथिली अकादमी, पटना-१

अक्टूबर—१९८२

प्रति—११००

मूल्य { अजिल्द —१०.५० (दस टाका पचास पाइ)
सजिल्द—१२.५० (बारह टाका पचास पाइ)

मुद्रक :

धर्मयुग प्रेस न्यू

पटना-८००००३

प्रकाशकीय

एहिसँ पूर्व अकादमी द्वारा डॉ० रामदेव झाक 'मैथिली शैवसाहित्य' प्रकाशित एवं सुधीजन द्वारा प्रशंसित भ' चुकल अछि। शैवसाहित्यमे अभिरुचि रखनिहार मिथिला क्षेत्रसँ बाहरोक विद्वान लोकनि एहि पुस्तकके मङा क' अवलोकन कयलनि अछि। प्रस्तुत पुस्तक ओहि पुस्तकक भूमिका स्वरूप लिखल गेल छल परन्तु दूनू एक संग छपने शैवसाहित्य ग्रन्थ बहुत वृहदाकार ने भ' जाय तेँ एहि वृहत् एवं विषद् भूमिकाकेँ पृथकसँ प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेल।

डॉ० रामदेव झा मैथिली साहित्यक निविष्ट विद्वान् एवं साहित्यकारक रूपमे प्रख्यात छथि। एखन धरि कथा, नाटक, निबन्ध तथा शोधग्रन्थ सभ मिला क' हिनक करीब एक दर्जन पुस्तक प्रकाशित छनि। 'एक खीरा : तीन फाँक', 'मनुक संतान', हिनक कथा संग्रह छनि एवं 'इजोती रानी' बालकथा। 'रामविजय' (अंकिया नाट) 'हरगौरी विवाह' नाटक, नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीतक सम्पादन एवं 'उमापति' 'मैथिली शैवसाहित्य' आदि मौलिक शोधग्रन्थक प्रकाशनसँ ई ख्याति अर्जित कयने छथि। एकरा अतिरिक्त जगज्योतिमल्लक 'कुंज बिहार'क सम्पादन श्री अमरजीक संग एवं मैथिली प्राचीन गीतावलीक सम्पादन श्री सुमन जीक संग कयने छथि।

एहि पुस्तकमे डॉ० रामदेव झा भारतीय बाङमयमे शिव सम्बन्धी साहित्यक प्राग्वैदिक कालसँ ऐतिहासिक काल धरिक समीक्षा कयलनि अछि। मिथिलामे शैव-भावना कतेक व्यापक अछि तकरो एहि पुस्तकमे पूर्ण विवेचना कयल गेल अछि। संगहि मैथिलीमे शैव साहित्यक विविधता तथा शिव भक्तिक विभिन्न स्वरूपक स्पष्ट निरूपण एहिमे कयल गेल अछि। मैथिली साहित्यक प्रादुर्भाव कालमे शैवसाहित्यक की रूप छल तकरो विद्वान लेखक स्वरूप निर्धारित कयलनि अछि।

Scanned by CamScanner

मैथिलीमे प्रचुरमात्रामे आरंभकालेसँ शैवसाहित्यक रचना होइत रहल अछि। लेखकक पूर्व प्रकाशित ग्रन्थमे मैथिली शैवसाहित्यक विस्तारसँ विचार कयल गेल अछि एवं एकरा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे देखबाक चेष्टा कयल गेल अछि। परन्तु मैथिली शैव साहित्य ताबत धरि पूर्ण नहीं मानल जा सकैत अछि जाबत धरि ओकर पृष्ठभूमि एवं प्रेरक तत्वक विश्लेषण नहि कयल जाय। प्रस्तुत ग्रन्थ एहि उद्देश्यक पूर्ति करैत अछि।

आशा अछि, 'मैथिली शैवसाहित्यक भूमिका'क पाठकगण द्वारा स्वागत होयत।

अध्यक्ष

मदनेश्वर मिश्र

पटना,
दिनांक 27 सितम्बर, 1983

मैथिली अकादमी

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ सं०
अध्याय – १		
रुद्र-शिवक उद्भव ओ विकास	...	१
अध्याय – २		
मिथिलामे रुद्र शिव	...	३२
अध्याय – ३		
शिव भक्तिक स्वरूप	...	८३
अध्याय – ४		
मैथिली शैवसाहित्यक स्वरूप	...	१०२
अध्याय – ५		
प्राक् मैथिली शैवसाहित्य	...	१२४
परिशिष्ट	...	१६१

Scanned by CamScanner

प्रथम अध्याय

रुद्र-शिवक उद्भव ओ विकास

मैथिली साहित्यमे विवृत शिवक स्वरूप, मैथिली शैव साहित्य, भारतीय वाङ्मयक एकटा अंग रूपमे विकसित भेल अछि। अतः भारतक धर्म-साधना, सभ्यता-संस्कृति, साहित्य-कला आदिक ऐतिहासिक विकास क्रमक अन्वेषण-आलोचनामे जाहि प्राचीनतम स्रोत धरि पहुँचबाक चेष्टा विचारक लोकनि करैत रहलाह अछि, स्रोत' धरि मैथिलीयोक शैव-साहित्यक ऐतिहासिक विकासक्रमक सूत्रक अन्वेषण करब अपेक्षित अछि।

भारतक प्राचीनतम स्रोत थिक वैदिक वाङ्मय तथा सिन्धु-घाटीक सभ्यता। वैदिक वाङ्मयमे एकटा देवता भेटैत छथि 'रुद्र' जे क्रमशः विकास करैत-करैत 'शिव' रूप ग्रहण क' 'रुद्र-शिव' भेलाह आ विकासक विभिन्न स्तरकेँ पार करैत मिथिलाक 'भोलानाथ' 'अढरनढरन' 'औढरदानी' बनि गेलाह।

वैदिक देवता 'रुद्र'क ई विकास-कथा अत्यन्त रोचक ओ महत्त्वपूर्ण अछि। 'रुद्र-शिव'क विकासक इतिहासमे विभिन्न धार्मिक विश्वास, साधना ओ संस्कृतिक संगमक इतिहास सन्निहित अछि। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'क फलितार्थ सन्निहित अछि।

वैदिक रुद्र

'रुद्र' वैदिक कालमे कोन रूपक देवता छलाह ताहि विषयमे विभिन्न विद्वान्‌लोकनि अपन-अपन सिद्धान्त प्रस्तुत करैत रहलाह अछि। हुनका लोकनिक सिद्धान्त आ विचारकेँ सूत्र रूपमे निम्न प्रकारेँ राखल जा सकैछ।

वैदिक रुद्र देवता छलाह—

१. झंझावातक रवक प्रतीक।
२. विनाशकारी विद्युतक रूपमे झंझावातक ध्वंसक स्वरूपक प्रतीक।
३. प्रकृतिक विनाशकारी स्वरूपक प्रतीक।
४. अग्निक कोनो रूपक प्रतीक।

Scanned by CamScanner

५. अग्नि वा इन्द्रक एक रूप ।
६. मृत्युक देवता ।
७. वायुक संग उड़ैत मृतात्माक नेता ।
८. प्राचीन मानव-भक्षी एकटा असुरक ब्राह्मण वर्ण द्वारा परिष्कृत रूप ।[1] इत्यादि-इत्यादि ।

एहि प्रकारक सिद्धान्त कयनिहार महानुभावलोकनिमे अधिकांश पाश्चात्ये विद्वान् थिकाह । भारतीय मानस एवं चिन्तनसँ सामरस्य नहि रहने भारतीय 'रुद्र-शिव'क यथार्थ स्वरूपक अनुभूति, परिचय ओ निकटताक अभावक कारणेँ एहन एकांगी वा असम्बद्ध सिद्धान्त क' बैसलाह । उपर्युक्त सूत्र सभमे कोनो एहन नहि अछि जे रुद्रक यथार्थ वा समग्र रूपक अंकन क' सकय अथवा हुनक समस्त कार्य ओ चरित्रकेँ परिभाषित क' सकय । वैदिक रुद्र भयानके नहि, सौम्यो छथि । अमंगल, अकल्याण एवं अशुभे नहि; मंगल, कल्याण एवं शुभ कयनिहार सेहो छथि, उग्र, गोघ्न, नृघ्न तथा क्षयद्वीर रूपमे रुद्र संहर्त्ता छथि, तँ पशुपति, महाभिषक्, वृषभ इत्यादि रूपमे स्रष्टा ओ संरक्षक सेहो छथि ।

यदि प्रकृतिक कोनो घटनाक प्रतीक रुद्र होथि तँ ओ अवश्ये कोनो एहन घटना होयत जकर परिणाम मानव जातिक हेतु अनुकूल ओ प्रतिकूल, भयद ओ सुखद, जीवहन्ता ओ जीवनदाता दुहू प्रकारक होइत हो । डा० यदुवंशीक शब्दमे 'रुद्रकेँ' जाहि प्राकृतिक तत्त्वक प्रतीक मानल जा सकैछ से थिक सघन मेघमे चमकैत विद्युत् ओ तकरहि संग होमऽवला घनघोर गर्जन तथा वर्षा ।[2]

वस्तुतः वैदिक आर्यलोकनि आकाशक एहि घटनामे कोनो देवताक अस्तित्वक मानैत छलाह जकरा 'रुद्र' नामसँ अभिहित कयल गेल छल । ओकर घनघोर गर्जन, वर्षा, झंझावात, विद्युत प्रकाश तथा वज्रपातसँ ओ लोकनि संत्रस्त रहैत छलाह तथा वर्षाक कारणे नद-नदी ओ जलाशयक जल-पूर्णता, वनस्पति एवं ओषधिक वृद्धि, तृणाधिक्यक कारणे पशु सभक स्वस्थता ओ सुपुष्टता, जलवर्षणसँ पृथ्वीक उर्वरता आदिसँ ओहि देवताक प्रति कृतज्ञ ओ प्रसन्न रहैत छलाह । संत्रासमे ओलोकनि रुद्र देवताकेँ दूर जाय रक्षा करबाक निवेदन करैत छलथिन तँ उपकारी कार्यक हेतु कृतज्ञता-ज्ञापन पूर्वक स्तवन करैत छलथिन ।

१. शैवमत—डा० यदुवंशी, पृ० १-२ ।
२. तत्रैव, पृ० २ ।

Scanned by CamScanner

ऋग्वेद मे एहन रुद्रक तीन गोट सूक्तमे स्तवन कयल गेल छनि (१।११४, २।३३,७।४६)। ताहिसँ भिन्न एकटा आओर सूक्तमे छओ गोट मन्त्र रुद्रक हेतु आयल अछि (१४३)। एकटा आर सूक्तमे सोम ओ रुद्रक संग-संग स्तवन भेल अछि (६।७४)। अनेक ठाम रुद्र ओ अग्निक तादात्म्य देखाओल गेल अछि (२।१।६, ३।२।५, ४।३।६-७)। एहिसँ अतिरिक्तो स्थलपर रुद्रक उल्लेख सभ भेटैत अछि। ऋग्वेदमे रुद्रके गोघ्न, पुरुषघ्न, क्षयद्वीर, कपर्दिन्, दिवोवराह, कल्मलीकिन्, वृषभ आदि उपाधि देल गेल अछि।

विद्वान्लोकनि ऋग्वैदिक रुद्रक वा परवर्त्ती वैदिक रुद्रक ध्वंसात्मके रूप ओ क्रिया-कलाप दिस विशेष ध्यान देने रहलाह। किन्तु से समीचीन नहि। कतोक स्थल पर हुनक शुभङ्कर ओ सौम्य रूपक सेहो दर्शन होइछ। ऋग्वेदक द्वितीय मण्डलक तैंतीसम सूक्तक देवता थिकाह रुद्र। एहि सूक्तमे हुनक जाहि गुण ओ कार्यसभक उल्लेख कयल गेल अछि से हमर मन्तव्यक पुष्टि करैत अछि। सूक्तक भाव अछि—

> हे मरुत्-पिता रुद्र ! अहाँक देल सुख हमरा लग आबय। सूर्य दर्शनसँ हमरा वंचित नहि करब। हमर वीर पुत्र शत्रुके पराजित करथि। रुद्र ! हम पुत्र ओ पौत्रमे अनेक भ' जाइ।।
>
> रुद्र ! हम अहाँक देल सुखकर ओषधिसँ शत वर्ष जीबी। हमरा शत्रुक विनाश करू। हमर पाप सर्वांशतः निश्शेष करू। सर्वशरीर-व्यापी व्याधि दूर करू।।
>
> रुद्र ! ऐश्वर्यमे अहाँ सब सँ श्रेष्ठ छी। हे वज्रबाहु ! वृद्धोमे अहाँ सभ सँ वृद्ध छी। हमरा पापसँ पार करू। हमरा लग पाप नहि आबय।।
>
> हे अभीष्टवर्षी रुद्र ! हम अन्याय्य नमस्कार, अन्याय्य स्तुति वा विसदृश देवक सत्य आह्वान द्वारा अहाँके क्रुद्ध नहि करी। हमर पुत्र-गणके ओषधि द्वारा परिपुष्ट करू। सुनैत छी, अहाँ वैद्यमे सर्वश्रेष्ठ छी।।
>
> जे रुद्रदेव हव्यक संग आह्वान द्वारा आहूत होइत छथि, हुनक स्तोत्र द्वारा हम क्रोध शान्त करबनि। कोमलोदर, शोभन आह्वान-वाला, बभ्रु (पीत) वर्ण ओ सुनासिक रुद्र हमरा नहि मारथि।।

Scanned by CamScanner

हम प्रार्थना करैत छी जे हे अभीष्टवर्षी ओ मरुत्युक्त रुद्र ! हमरा दीप्त अन्नद्वारा तृप्त करी। जेना रौदक झमारल मनुष्य छायाक आश्रित होइछ तहिना हमहूँ पापशून्य भ' रुद्रक देल सुख प्राप्त करब तथा रुद्रक परिचर्या करब ।।

हे रुद्र ! अहाँक ओ सुखदाता हाथ कत' अछि जाहिसँ अहाँ ओषधि निर्माण क' सबकें सुखी करैत छी ? अभीष्टवर्षी रुद्र ! दैव पापक विगतक भ' हमरा शीघ्र क्षमा करी ।।

वभ्रुवर्ण, अभीष्टवर्षी ओ श्वेत आभावान् रुद्रकें लक्ष्य क' अतीव महती स्तुतिक उच्चारण करैत छी। हे स्तोता ! नमस्कारद्वारा तेजस्वी रुद्रक पूजा करू। हम हुनक उज्ज्वल नामक संकीर्त्तन करैत छियनि ।।

दृढांग, बहुरूप, उग्र ओ वभ्रुवर्ण रुद्र दीप्त ओ हिरण्मय अलंकरण सँ सुशोभित छथि। रुद्र समग्र भुवनक अधिपति ओ भर्त्ता थिकाह। हुनक बल विलग नहि होइत छनि ।।

हे पूज्य रुद्र ! अहाँ धनुर्धर छी। हे पूजार्ह ! अहाँ नानारूपधारी, पूजनीय ओ निष्कधारी छी। अहाँ व्यापक संसारक रक्षा करैत छी। अहाँसँ अधिक बली आओर कैयो नहि अछि ।।

हे स्तोता ! विख्यात रथपर आरूढ़, युवा, पशुक समान भयंकर, शत्रुक विनाशक तथा उग्र रुद्रक स्तुति करू। हे रुद्र ! स्तुति कयला पर अहाँ हमरासभकें सुखी करैत छी। अहाँक सेना शत्रुक विनाश करय ।।

जेना आशीर्वाद देबा काल पिताकें पुत्र प्रणाम करैछ, तहिना हे रुद्र ! अहाँक आगमन काल हम अहाँकें नमस्कार करैत छी। रुद्र ! अहाँ बहुधनदाता ओ साधुपालक छी ! स्तुति कयलापर अहाँ ओषधि दैत छी ।।

हे मरुत् ! अहाँक जे निर्मल ओषधि अछि, हे अभीष्टवर्षिगण ! अहाँक जे औषधि अतीव सुखद अछि, जाहि ओषधिक हमरा सभक पिता मनु चयन कयने छलाह सैह सुखकर ओ भयहारक ओषधि हम चाहैत छी ।।

रुद्रक हेति-आयुध हमरा छोड़ि देअय। दीप्त रुद्रक महती दुर्मतियो छोड़ि देअय। सेचन-समर्थ रुद्र ! धनवान् यजमानक प्रति अपन धनुषक ज्या शिथिल करू। हमर पुत्र-पौत्रकें सुखी करू ।।

अभीष्टवर्षी, बभ्रुवर्ण, दीप्तिमान, सर्वज्ञ, हमर आह्वान सुननिहार रुद्र ! हमरा प्रति कहियो क्रुद्ध नहि होउ, हमरा कहियो विनष्ट नहि करू। हम पुत्र-पौत्रवान् भ' एहि यज्ञमे अहाँक प्रभूत स्तुति करब ।।

एहि सूक्तमे रुद्रक उग्रत्वक चर्चा भेल अछि अवश्य, किन्तु अधिकांश भागमें हुनक सौम्य, सुखद, रक्षक, लोकोपकारी, मांगलिक रूप ओ क्रियाक वर्णन भेल अछि। पौराणिक काल धरि रुद्र-शिवक स्वरूपक जे विकास भेल तकर बहुत रास भागक बीज एहि सूक्तमे निहित अछि। पुराण ओ मैथिली साहित्यमे अति वृद्ध रूपमे चित्रित शिवक मूल रूप एहि ठाम प्रयुक्त 'वृद्धोमे वृद्ध' (तवस्तमस्तवसां, २।३३।३) विशेषणमे भेटैत अछि। एहि विशेषणसँ रुद्रक अनादित्व सूचित होइछ। एहि आधारपर इहो धारणा बनाओल जा सकैछ जे वैदिक देवगणमे सर्वप्रथम मान्यता प्रायः रुद्रकेँ भेटल छलनि।

ऋग्वेदक उपरिवर्णित सूक्तक पहिले मन्त्रमे रुद्रकेँ मरुत्पिता कहल गेलनि अछि। एहि वेदक अन्यो अनेक सूक्तमे रुद्रकेँ मरुत्पिता तथा मरुद्गणकेँ रुद्र-पुत्र कहल गेलनि अछि। मरुद्गण अनेको ऋग्वैदिक सूक्तक देवता थिकाह तथा कतेको सूक्तमे हुनक उल्लेख भेल अछि। ओहि सभमे ओ सौम्य, सुखद, कल्याण-कर, शुभ्र ओ मांगलिक रूपमे प्रार्थित भेल छथि (१।१६५-६९,१७१; २।३०। ११; २।३४; २।३६;२; २।४१।१५; ३।२६।४-६; ५।५२-६१; ५।८७; ६।४८।११-१५, २०-२२)। वस्तुतः मरुत्क यात्रा कालमे समस्त भुवन, अट्टालिका डेराइत अछि (१।१६६।४)। मरुत्क गमन अत्यन्त प्रदीप्त अछि तथा जाहि समय ओ गिरि-गह्वरकेँ ध्वनित करैछ वा मानव-हितक लेल अन्त-रिक्षक ऊर्ध्व भागमे आरोहण करैछ ताहि समय पथक समग्र वनस्पति डरसँ व्याकुल भ' जाइछ (१।१६६।५)। जाहि जलक लेल मरुत् अबैछ ताहि विशाल वृष्टि-जलक आदि-अन्तक कोनो पता नहि रहैछ। शिथिल तृण जकाँ जखन ओ जल-राशि-पात करैछ तखन वज्र द्वारा देदीप्यमान मेघकेँ विदीर्ण करैछ (१।१६८।६)। जाहि समय मरुद्गण पृथ्वी पर जलसेचन करैछ ताहि समय विद्युत् निम्नमुख पृथ्वी पर प्रकट होइछ (१।१६८।८) रोदसी (आकाशस्थ विद्युन्माला भाला) केँ मरुत पत्नी कहल गेल अछि (१।१६७।३-६)।

सारांशतः मरुद्गण संख्यामे अनेक, अन्तरिक्षस्थ झंझावात, जलवर्षण, बहैत वायु ओ विद्युत् सँ सम्बद्ध देवता मानल गेल छथि। रुद्र देवताक अनेकशः कार्य मरुद्गणकेँ समर्पित कयल गेल छनि। अतः रुद्रक पुत्र रूपमे मरुद्गणकेँ मानब संगत अछि।

Scanned by CamScanner

परवर्ती कालमे एकादश रुद्रमे परिगणित अहिर्बुध्न्य (१।४, १।१८६।५, २।३१।६) तथा अजएकपात् (२।३१।६) नामक दुइ गोट अन्तरिक्ष देवताक उल्लेख ऋग्वेदमे अछि।

ऋग्वेदक पश्चात् अथर्ववेदमे रुद्रक स्थिति-दर्शन अपेक्षित। अथर्ववेदक भाषाक किछु विशेषता देखि विद्वानलोकनिक धारणा छनि जे ऋग्वेदक पश्चात् अथर्ववेदक रचना भेल होयत। एहिमे रुद्र देवताक पूर्वापेक्षा विकसित ओ बहुविध रूपक दर्शन होइछ। रुद्रक ध्वंस-कार्य-क्षेत्र एहिठाम विस्तृत भेल दृष्टिगोचर होइछ। एत' विभिन्न प्रकारक रोग-व्याधिक उत्पत्ति-कार्य रुद्रसँ सम्बद्ध क' देल गेल अछि। रुद्रकेँ ज्वरक अभिमानी (४।२२।७, ७।७५।१) रोग-रूप बाण फेकनिहार कहल गेल छनि (६।९०)। एकटा सूक्तक देवता विश्वेदेव ओ रुद्र दूनू छथि। ओहिमे सर्पक प्रतिकारक सम्बन्धमे कहल गेल अछि (६।५०)। एहिसँ संकेतित होइछ जे सर्पक सम्बन्ध सेहो किछु-किछु रुद्रसँ भ' गेल छल। जहिना ध्वंस-कार्य-क्षेत्रमे विस्तार भेल तहिना हुनक मांगलिक रूप सेहो विकसित भेल। रुद्रकेँ यातुधान ओ पिशाचक शमनकर्त्ता (६।३२।२), भव-भूतपति एवं भूतक नियामक (११।६।२१) सेहो कहल गेल छनि (८।५।१०)। सोमारुद्रकेँ संग-संग स्तवन करैत अमीवा-विसूचिका रोग ओ तकर कारणकेँ नष्ट करबाक हेतु निवेदन कयल गेल अछि।

रुद्रक अनेक नवीन नाम ओ उपाधिक प्रयोग अथर्ववेदमे भेल जे आगाँ चलिक' बड़ महत्त्वपूर्ण ओ अर्थान्वियी भ' गेल, यथा—पशुपति (२।३४।१; ५।२४।१२; ११।२।१-२; ११।६।९; ५।१५), महादेव (९।७।७; १२।५।१८; १३।४।३; १५।५।१४), क्षेत्रपति शम्भु (१९।१०।१०) आदि।

भव ओ शर्व नामक दुइ गोट देवताक बहुवार उल्लेख एतऽ कयल गेल अछि। संभवतः अथर्ववेदसँ पूर्व ओ दुहू कोनो स्वतन्त्र किन्तु सामान्य देवता छलाह जकर संकेत अथर्ववेदमे भेटैत अछि (४।२८; ६।९३।१-२; ८।८।११, १७,१८)। लगैत अछि जेना अथर्ववेदेमे रुद्रक संग भव ओ शर्वक एकाकार होयबाक प्रक्रिया आरम्भ भ' गेल छल। एगारहम काण्डक दोसर ओ छठम सूक्तमे रुद्रक विविध नाम, उपाधि ओ विशेषणक स्तवनक संग-संग भव-शर्वक सेहो स्तवन भेल अछि। एहिमे दोसर सूक्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एहिमे भव-शर्व, भूतपति, पशुपति, रुद्र, नील-शिखण्ड, सहस्राक्ष आदि नाम ओ उपाधिक तात्पर्य स्पष्ट भेल अछि।

पन्द्रहम काण्डकेँ व्रात्यकाण्ड सेहो कहल जाइछ। एहि काण्डमे व्रात्यकेँ

Scanned by CamScanner

विशिष्ट महत्ता प्रदान कयल गेल अछि। व्रात्य के छल, ताहि सम्बन्धमे कोनो निश्चित ओ अन्तिम निष्कर्ष नहि बाहर भ' सकल अछि। इतिहासक ई एकटा विवादास्पद विषय अछि। ओना साधारणतः ई मानल जाइछ जे व्रात्य सभ वैदिक जीवन-पद्धतिसँ विच्छिन्न पूर्वीय प्रदेशक कोनो जाति वा वर्ग विशेष छल। व्रात्यकाण्डक कतिपय सूक्त समसँ आभास भेटैछ जे व्रात्यसमक संग रुद्रक विशेष सम्बन्ध छलनि। एहि काण्डक प्रथमे सूक्तमे कहल गेल अछि जे व्रात्य महान भ' गेल, 'महादेव' भ' गेल, (१५।१।४)। ओ देवताक स्वामी भेल आ 'ईशान' बनि गेल (१५।१।५)। ओ 'एकव्रात्य' भ' गेल तथा धनुष उठओलक तँ ओएह इन्द्रधनुष बनि गेल (१५।१।६)। चौदहम सूक्तक किछु मंत्रमे कहल गेल अछि जे जखन ओ पशु दिस चलल तँ ओषधिकेँ 'अन्नाद' (अन्नसेवी) बनाय रुद्र बनैत चलल (१५। ४।११)। जखन देवता दिस चलल तँ यज्ञकेँ 'अन्नाद' बनाय 'ईशान' बनैत चलल (१५।१४।१९)। व्रात्यकाण्डक पाँचम सूक्तमे कहल गेल अछि जे पूर्व दिशाक भव, दक्षिण दिशाक शर्व, पश्चिम दिशाक पशुपति, उत्तर दिशाक उग्र, ध्रुव दिशाक रुद्र, ऊर्ध्व दिशाक महादेव, सभ दिशाक ईशान देवता द्वारा अनुष्ठाता बनाओल गेलाह। दिशाक अनुष्ठानाक अनुकूल रहने भव, शर्व, ओ ईशान तीनू अनुकूल रहैत छथि। एहेन जननिहारक समान पुरुषकेँ ओ तकर पशुकेँ हिंसित नहि करैत छथि (१५।५)। एहि ठाम देखल जाइछ जे रुद्रकेँ अत्यन्त उच्च स्थान दैत दिक्पालक समान बना देल गेलनि। संभवतः परवर्त्ती कालक शिवक अष्टमूर्तिक कल्पनाक बीजो एही ठाम सन्निहित अछि। भव-शर्व, जे एखन धरि प्रायः स्वतन्त्र देवता छलाह तनिक अस्तित्व रुद्रमे विलीन होम' लागल तथा हुनक कार्य सेहो रुद्रेक कार्य बूझल जाय लागल छल। परवर्त्ती कालमे शिवक अष्टमूर्त्तिमे भव-शर्वकेँ स्थान द' देल गेलनि।

अथर्ववेदमे 'निर्ऋति' पाप देवता रूपमे स्तुत भेल अछि। एहि देवताक अनेक ठाम उल्लेख अछि। एकटा सूक्तेक देवता 'निर्ऋति' अछि (६।६३)। दोसर सूक्तमे 'अजएकपात्' एवं 'अहिबुर्ध्न्य'क उल्लेख (१९।११३) अछि। एहि दुहू देवताक उल्लेख ऋग्वेदोमे भेल अछि। परवर्त्ती कालमे ई तीनू देवता एकादश रुद्रमे समाविष्ट क' देल गेल छथि।

यजुर्वेदक नाम यद्यपि गणनाक क्रममे दोसरे स्थानमे अबैछ किन्तु बहुतो विद्वानक धारणा छनि जे प्रायः ऋक् ओ अथर्वक पश्चात् यजुर्वेदक निर्माण भेल होयत। कारण, एहिमे पूर्वोक्त दुहू वेदक मंत्र सभ संकलित अछि। जहाँ धरि रुद्र देवताक प्रश्न अछि, यजुर्वेदमे ओ अत्यन्त विकसित अवस्थाकेँ

Scanned by CamScanner

प्राप्त क' लेने छनाह। विभिन्न देवता सभक रुद्रमे अन्तर्भावक जे प्रक्रिया पहिने आरम्भ भेल छल से यजुर्वेदमे आबि बहुत किछु पूर्ण भ' गेल। यजुर्वेदमे उच्चकोटिक देवताक रूपमे रुद्रकें स्मरण कयल गेलनि अछि। एहि ठाम हुनक पूर्वक अशुभ ओ अमंगलकारी रूप बहुत अंशमे शान्त भ' गेल छल तथा पूर्वापेक्षया हुनक शिव ओ मंगलकारी रूप अधिक उद्दीप्त भ' उठल। एहि ठाम रुद्रमे अनेक नवीन तत्त्व सभ दृष्टिगोचर होइछ जे पूर्वमे सर्वथा अज्ञात छल। रुद्र पार्थिव पिण्डकें पाषाणचूर्णसँ युक्त क' महान् ज्योतिबाला अग्निकें प्रदीप्त कयल, ताहि रुद्रक तेज देवताक मध्य नीक जकाँ प्रकाशित होइछ (११।५४)। पंचप्राण द्वारा स्तुत भेलापर पंचभूतक उत्पत्ति भेल जकर अधिपति भूतपति भेलाह (१४।१८)। एहन उक्ति सभमे रुद्र शिवत्वयुक्त भ' क' जेना रुद्र-शिव बनि गेलाह। रुद्र-शिवक संग दार्शनिक तत्त्वक सम्बन्धक मूलान्वेषण एहि सभमे कयल जा सकैछ।

यजुर्वेदमे 'त्र्यम्बक होम' 'सोमारौद्र चरु' तथा 'शतरुद्रिय नामक तीन गोट महत्त्वपूर्ण सूक्त अछि जाहिमे रुद्रदेवताक महत्ता प्रतिपादित भेल अछि। त्र्यम्बक होममे पशुपति आ भिषग् रूपमे रुद्रक स्तवन तँ कयले गेलनि अछि, संगहि अवततधन्वा, पिनाकावस: एवं कृत्तिवासा नामसँ विभूषित करैत मूजवत पर्वतसँ दूर चल जाय लेल सेहो कहल गेलनि अछि (३।५७-६२)। एही ठाम रुद्रक 'त्र्यम्बक' नाम तथा रुद्रभगिनी रूपमे 'अम्बिका' नामक स्त्री देवताक प्रथम बेर उल्लेख भेल अछि। एहिसँ भिन्न, एक ठाम त्र्यम्बक देवताक पितृवर्गक संग उल्लेख अछि (२४।१८)। दोसर मंत्रमे अम्बा, अम्बिका ओ अम्बालिका नाम स्त्री-देवताक उल्लेख अछि (२३।१८)। परन्तु ओ कोन कोटिक देवता छथि से अस्पष्ट अछि।

डा० यदुवंशी उपर्युक्त त्र्यम्बक होमकें सामान्य यज्ञविधानसँ भिन्न एक विशेष विधि मानलनि अछि। हुनका मतें हिमालयक उपत्यकामे बसैत कोनो जातिक पूज्य चर्मधारी, कन्दरावासी कोनो देवता रुद्रक संग एकीभूत भ' गेल।[1]

यजुर्वेदोक्त शतरुद्रिय (१६।१-६६)मे रुद्रक सम्बन्धमे महत्त्वपूर्ण सामग्री संकलित अछि। ऋक् ओ अथर्ववेदमे स्तुत रुद्रक स्वरूप सेहो शतरुद्रियमे स्थिर रहल। एकर १५म, १६म ओ ४८म मन्त्र तँ ऋग्वेदेसँ लेल गेल

१. शैवमत, पृ० १५।

अछि। संभव अछि, किछु आरो मन्त्र प्राचीने हो। शतरुद्रियमे वस्तुतः प्राचीन रुद्रक गुण ओ कार्यमे वृद्धि देखल जाइछ। एहिमे सर्वप्रथम बेर रुद्रकें **'शिव'**, **'शिवतर'** एवं 'शंकर' आदि विशेषणसँ विभूषित कयल गेलनि अछि। किन्तु रुद्रक भीषण स्वरूप विस्मृत नहि भेल छलनि। यथार्थमे रुद्र देवताक व्यक्तित्वक विकासक विषयमे शतरुद्रिय प्रचुर प्रकाश-निक्षेप करैत अछि। एकर निर्माणकाल धरि अन्य वैदिकेतर आर्य अथवा अन्य आर्येतर जनजातीय देवतासभ रुद्रमे अन्तर्भुक्त भ' गेल छलाह। सातम मन्त्रमे कथित अछि जे वेदोक्त कर्मसँ हीन गोप तथा पानि ल' गेनिहारि पनिभरनी सेहो हिनक (रुद्रक) दर्शन करैछ। 'गिरिशंत', 'गिरित्र', 'गिरिश' **'गिरिचर'**, 'गिरिशय', 'वनानांपति' आदि उपाधि कोनो पर्वतीय जातिक देवताक रुद्रमे अन्तर्भाव सूचित करैछ। **स्तेनानांपति** (चोरक अधिराज), **मुष्णतांपति**, **विकृन्तानांपति** (घेंटकटक नेता), **कलुंचानांपति**, **तक्षक**, **रथकार**, **कुलाल**, **कर्मकार**, **निषाद**, **पुंजिष्ठ**, **श्वनि** (श्वान पोसनिहार), **मृगायु** (व्याध) आदि उपाधि तत्तत् जाति वा तत्तत् पेशा कयनिहार लोकक रुद्र-सेवक वा रुद्रक समान कोनो देवताक सेवक होयब सूचित करैछ।[1] **५४म** मन्त्रमे जे कहल गेल अछि—

असंख्याता सहस्राणि
ये रुद्रा अधिभूम्याम्

से यथार्थमे अनेकशः देवक रुद्रक संग एकीभवन दिस संकेत करैत अछि। एहि ठाम रुद्रकें **'व्रात'** ओ **'व्रातपति'** कहल गेल अछि जे अथर्ववेदोक्त व्रात्य-रुद्रक सम्बन्धक पुष्टि करैछ। **'गण'**, **'गणपति'**, **'सभा'**, **'सभापति'** आदि उपाधिमे रुद्रक गण वा उपासक सभक संकेत भेटैछ।

यजुर्वेदमे एकर स्थलपर विचित्र प्रकारक विधानक उल्लेख भेटैत अछि। मनुष्य-बलिक प्रक्रिया जेना एहिमे वर्णित अछि। ओहि विधानमे हृदयसँ **अग्निकें**, हृदयाग्रसँ **अशनिकें**, सम्पूर्ण हृदयसँ **पशुपतिकें**, यकृतखण्डसँ **भवकें**, मतन नामक हृदयास्थिसँ **शर्वकें**, क्रोधाधारसँ **ईशानकें**, पार्श्व-अस्थिसँ **महादेवकें**, स्थूल आँतसँ **उग्रकें** प्रसन्न करबाक हेतु कहल गेल अछि (३९। ८-९)। ई विधान प्रायः सूत्र-कालमे प्रचलित भयावह **शूलगव होमक** पूर्व रूप थिक। बूझि पड़ैत अछि जेना विविध देवताक रुद्रक संग समीकरण प्रक्रिया

---

१. Vaishnavism Saivism and Minor Religious System, P. 104.

कोनो मानवभक्षी जनजातिक क्रूर देवता ओ तकर क्रूर एवं बीभत्स यज्ञ-विधानक सेहो समावेश भ' गेल।

यजुर्वेदोमे अजएकपात्, अहिर्बुध्न्य (३४।५३) तथा निर्ऋति (२४।२८; २५।२) नामक देवक उल्लेख अछि जकर गणना आगाँ चलि क' एकादश रुद्रमे भेल।

वेद-पश्चात् रचित ब्राह्मण ग्रन्थ सभमे रुद्रक अनेकशः उल्लेख भेटैत अछि। प्राचीन तत्वक संग अनेको नवीन तत्वक समावेश रुद्र देवताक संग भ' गेल। रुद्र-शिव विषयक कथा-तत्वक बीज एत' पहिल बेर दृष्ट होइछ। जैमिनीय ब्राह्मण कहैत अछि जे यज्ञमे जाइत देवगण द्वारा अपन-अपन क्रूरांश बहिर्गत कयल गेल एवं ओहीसँ रुद्रक जन्म भेल (३।२६१।६३)। शतपथ ब्राह्मण (६।१।३।७) एवं कौशीतकी ब्राह्मण (६।१।९)मे रुद्रकेँ उषा-पुत्र कहल गेल अछि। एहि दूनू ब्राह्मणमे प्रजापति द्वारा रुद्रक नामकरण कयल गेल जाहिमे रुद्रक अष्टमूर्त्तिक उल्लेख अछि। एहि अष्टमूर्त्तिमे सात गोट नाम अथर्ववेदक (१५।५।१-१६) एवं एक गोट नवीन नाम 'अशनि' केर समावेश अछि। यजुर्वेद (३९।८)मे 'अशनि' नामक देवताक अग्नि, पशुपति, भव, शर्व, महादेव तथा ईशानक संग उल्लेख कयल गेल छल। 'अशनि'केँ ओत' हृदयक अग्रभाग अर्पित क' प्रसन्न करबाक विधान कयल गेल अछि। ब्राह्मणकालमे अशनि रुद्रक रूपमे मान्य भ' अष्टमूर्तिमे स्थान पाओल। कौशीतकि ब्राह्मणमे रुद्राष्टमूर्त्तिमे शर्वकेँ आप, शर्वकेँ, अग्नि, पशुपतिकेँ वायु, उग्रकेँ ओषधि-वनस्पति, महादेवकेँ आदित्य, रुद्रकेँ चन्द्रमा, ईशानकेँ अन्न तथा अशनिकेँ इन्द्ररूप कहल गेल अछि। शथपथमे नाम सभ उपर्युक्त अछि किन्तु रूपमे परिवर्त्तन देखना जाइत अछि, यथा—रुद्रकेँ अग्नि (अग्निर्वै रुद्रः) शर्वकेँ आप (आपो वै शर्वो), पशुपतिकेँ ओषधि (ओषधयः पशुपतिः), उग्रकेँ वायु (वायुर्वा उग्रः), अशनिकेँ विद्युत् (विद्युद्वा अग्निः), भवकेँ पर्जन्य (पर्जन्यो वै भवः), महादेव वा प्रजापतिकेँ चन्द्रमा (तमब्रवीन्महादेवोऽसीति··· चन्द्रमसस्तद्रूपम् अभवत् प्रजापतिर्वै चन्द्रमाः प्रजापतिर्वै महान् देवः) तथा ईशानकेँ आदित्य (आदित्यो वा ईशानः) रूप कहल गेल अछि। एहि ब्राह्मणमे अग्निकेँ भव ओ शर्व कहल गेल अछि; प्राच्यजन अग्निकेँ शर्व कहैत छल तथा बाहीकजन भव कहैत छल (१।७।३।१-८)। एहिसँ एतबा प्रमाणित होइत अछि जे आर्य जातिक विभिन्न वर्ग-गोत्रमे रुद्रक विभिन्न रूप ओ नामक अर्थाभिव्यक्तिमे साम्य नहि छल। ई वैषम्य अवश्ये विविध जातीय देवताक रुद्रमे अन्तर्भावक कारण भेल होयत।

Scanned by CamScanner

शतपथ ओ तैत्तिरीय ब्राह्मणमे दुइ गोट यज्ञक विधान अछि, जे दुनू रुद्र सँ सम्बद्ध छल । ओ दुनू थिक गवेधुक होम (शत० ५।३।१।१०) तथा त्र्यम्बक हवि (तै० १।६।१०) ।

वैदिक वाङ्मयक महत्त्वपूर्ण भाग उपनिषद् थिक । उपनिषद् आर्य जातिक ज्ञानकाण्डक भाण्डागार थिक । एकर रचना काल ब्राह्मणक पश्चात् मानल जाइत अछि । उपनिषद् सभमे सँ अधिकांशमें रुद्रक कोनो विशेष चर्चा नहि भेटैत अछि । बृहदारण्यक (१।४।११, २।२।२, ५।२।३), मैत्रायणी (३।१२,४।५,५।७-८) तथा प्रश्नोपनिषद् (२।९)मे रुद्रक प्रकीर्ण उल्लेख मात्र भेटैत अछि । केनोपनिषद् (३।१२)मे उमाहैमवती नामक स्त्रीदेवताक चर्चा अछि किन्तु हुनका रुद्र-पत्नी नहि कहल गेल छनि । तथापि परवर्त्ती कालमे देखैत छी जे यैह नाम रुद्र-शिवक पत्नीक सेहो पड़ि गेलनि ।

सभसँ प्रचुर ओ महत्त्वपूर्ण सामग्री श्वेताश्वतर उपनिषद्मे उपलब्ध होइत अछि । एहिमे रुद्र-शिवक उत्कृष्टतम स्वरूपक विवरण भेटैत अछि । शिवक दार्शनिक स्वरूपक व्याख्या प्रथम बेर एहीमे कयल गेल । एत' रुद्र-शिव साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेल छथि । शैव दर्शनक क्षेत्रमे श्वेताश्वतर उपनिषद्क महत्ता प्रतिपादित करैत भण्डारकर महोदय अभिमत देने छथि जे—

'ईश्वरक स्वरूप जीव एवं जगत्क संग हुनक सम्बन्धक जे समुन्नत कल्पना प्रारंभिक उपनिषद्मे कयल गेल छल से एहि ग्रन्थमे रुद्र-शिव पर आरोपित क' देल गेल ।'[१]

'एहि उपनिषद्क दार्शनिक चिन्तनक स्वरूप औपनिषद होइतो अन्य उपनिषद्क अपेक्षा परवर्त्ती कालक भक्ति-मार्गक बेसी समीप अछि । एकर ईश्वर ओ परमानन्दक वर्णन प्रेम ओ स्तुतिक प्रभासँ दीप्त अछि । ग्रन्थक अन्त ताहि ईश्वरक समक्ष आत्मनिवेदनक अभि-व्यक्तिक संग होइछ जे व्यक्तिक बुद्धिमे स्वयं प्रकाशित होइछ । अतएव श्वेताश्वतर उपनिषद् भक्ति-सम्प्रदायक द्वारपर स्थित अछि ओ अपन प्रेमपूर्ण अभ्यर्थना रुद्र-शिवकें अर्पित करैछ, वासुदेव कृष्णकें नहि······ श्वेताश्वतर उपनिषद् कालमे सर्वोच्च देव रुद्र-शिवे

---

१. तत्रैव, पृ० १०७ ।

छलाह, एवं ओहि समयमे प्रकटित भक्ति वा अनुरागक अंकुर हुनके लेल अभिप्रेत छल ।[1]

वस्तुतः सांख्यदर्शनक आधार थिक श्वेताश्वतर उपनिषद् जाहिमे शिवकें सांख्य पुरुषक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेलनि अछि ।

पुनः भण्डारकर महोदय अथर्वशिरस् उपनिषद्कें सेहो रुद्रसम्बन्धी मानि ओहिमे यावन्तो प्रतिपन्न दार्शनिक तत्त्वपर विचार कयलनि अछि ।

उपरिचर्चित उपनिषद्मे रुद्र-शिवकें दार्शनिक तत्त्व चिन्तनक केन्द्र-विन्दु मानल गेल अछि । किन्तु कर्मकाण्डक क्षेत्रमे हिनक की रूप ओ स्थान छल, तदर्थ श्रौतसूत्र, धर्मसूत्र ओ गृह्यसूत्रक अवलोकन अपेक्षित अछि ।

सूत्र-ग्रन्थ समयमे रुद्रसम्बन्धी एक विचित्र प्रकारक यज्ञ-विधानक विवरण भेटैत अछि । ओहि यज्ञकें 'शूलगव होम' कहल गेल अछि । ओकर रूप अत्यन्त भयानक छल । शरद् वा वसन्त ऋतुमे ग्रामसँ बाहर ईशान कोनमे गुप्त रूपें ओ सम्पन्न कयल जाइत छल । ओकर कोनो अवशेष गाममे आनब सर्वथा निषिद्ध छल । 'शूलगव होम'क जे प्रक्रिया देल गेल अछि तकर आदि रूपक साम्य यजुर्वेद (३९।८,९)मेता कल जा सकैछ । शांखायन श्रौतसूत्र (४।१७। १७-२०), मानव गृह्य सूत्र(२।५-१०), आश्वलायन गृह्य सूत्र (४।९।२-१७), बोधायन गृह्य सूत्र (१।२।७।१-३०)आदिमे शूलगव होमक विस्तृत विधान देल गेल अछि । विभिन्न सूत्र ग्रन्थमे एहि यज्ञक रूप बहुत किछु समाने अछि तथापि प्रत्येकमे किछु ने किछु विशेषता अवश्य अछि जे एक दोसरासँ भिन्न अछि । शांखायन श्रौत सूत्रमे शतपथ ब्राह्मणोक्त अष्टमूर्त्तिक आठो नामसँ आहुति देबाक विधान अछि । किन्तु एत' एहि आठो नामक संग एही नामक देवीक सेहो कल्पना कयल गेल अछि । अर्थात् भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, ईशानी, आग्नेयी आदिसँ देवीकें सेहो आहुति देल जाइत छल । एहिसँ एतबा सिद्ध होइत अछि जे सूत्र-काल धरि अबैत-अबैत रुद्रक संग शक्ति-तत्त्वक सम्बन्ध स्थापित भ' गेल छल । एहि सूत्रमे रुद्रकें भूपति, भुवपति, भुवनपति, भूतपति, भूतानांपति, महाभूतपति आदि विशेषण देल गेल अछि एवं भव-शर्वकें महादेवक पुत्र कहल गेल अछि (महादेवस्य पुत्राभ्यां भवशर्वाभ्यां नमः) ।

आश्वलायन गृह्यसूत्रमे अथर्ववेदोक्त (१५/५) सात नामक संग पांच टा आओर नवीन नाम—हर, मृड, शिव, भीम ओ शंकर, जोड़िक' द्वादश नाम सँ शूलगव होमक आहुति देबाक प्रक्रिया वर्णित अछि । बोधायन गृह्य सूत्रमे

---

१. तत्रैव, पृ० ११०-१११ ।

Scanned by CamScanner

अथर्ववेदक सात नाममे एकेटा नाम 'भीम' जोड़ि आठ नामसँ आहुति दातव्य छल। एहि आठो नाम संग एही नामक आठ पत्नी ओ आठ पुत्रकेँ सेहो आहुति देल जाइत छल।

सूत्रकालमे रुद्र-शिवक परिवारक कल्पना कयल गेल जे क्रमशः विस्तृत होइत गेल। बोधायन गृह्यसूत्रमे एहि परिवारक विस्तृत रूप भेटैत अछि। एहीठाम भव, शिव, ईशान, पशुपति, रुद्र, उग्र, भीम, महान्त नामक अष्ट-मूर्ति, तनिक पत्नी, पुत्र ओ पार्षद-पार्षदीक तर्पणक विधि देल अछि। पुनः स्कन्द, षण्मुख, जयन्त, विशाख, महासेन, सुब्रह्मण्य तथा स्कन्दक पार्षद-पार्षदीक तर्पणक विधान अछि (२।५ ६।७,२।७।१०, ३।६।६)। ई स्कन्द आगाँ जा क' शिवपुत्र रूपमे मान्य भेलाह।

यजुर्वेदोक्त त्र्यम्बक होमक विकसित रूपक परिचय लाट्यायन श्रौतसूत्रक त्र्यम्बक होम (५।३) मे भेटैत अछि। मानव गृह्यसूत्र (१।१३।९-१४)मे रुद्रकेँ ग्रामसद्, वृक्षासद्, श्मशानसद्, चतुष्पथसद् तथा तीर्थसद् कहल गेलनि अछि। पारस्कर गृह्यसूत्र ओ हिरण्यकेशि गृह्यसूत्रमे मार्ग पार करैत काल, चौबट्टो पर, पहुँचैत काल, धार पार करैत काल, नाओपर चढ़ैत काल, वनमे प्रवेश करैत काल, पर्वतारोहण काल, श्मशान, गोशाला तथा एहने अन्य ठाम बाटेँ जाइत काल रक्षा हेतु रुद्रक प्रार्थना करबाक निर्देश देल गेल अछि। एहि आधार पर भण्डारकर महोदयक निष्कर्ष छनि जे रुद्र घरसँ दूरक प्रदेश, मैदान, शून्यारण्य, श्मशान, पर्वत, प्राचीन वृक्ष आदि पर आधिपत्य रखनिहार देवता छलाह। जखन कखनो ककरो कोनो अमांगलिक ओ भयदायक वस्तु भेटैत छलैक तँ रक्षार्थ रुद्रक स्तुति कयल जाइत छल।[७]

वस्तुतः ऋग्वेदक अन्तरिक्ष देवता सूत्रकाल धरि अबैत पृथ्वी परक विभिन्न स्थलमे निवसित देवता बनि गेलाह।

आगाँ देखब जे विनायक शिवक पुत्रक रूपमे स्थापित भ' गेल छलाह। हिनक पहिल उल्लेख सूत्र ग्रन्थमे भेटैत अछि। मानव गृह्यसूत्र (२।१४) ओ बोधायन गृह्यसूत्र (३।३।१०)मे विघ्नक देवता रूपमे वर्णित भेल छथि। बोधायने गृह्यसूत्रमे रुद्र मूर्तिक स्थापनाक सेहो विधान अछि जाहिमे रुद्र-शिवक द्वादश नाम - शिव, शंकर, सहमान, शितिकण्ठ, कपर्दिन्, ताम्र, अरुण, अपगुरमान, हिरण्यबाहु, शष्पिंजर, बभ्लुष, ओ हिरण्य केर उल्लेख अछि। रुद्रकेँ 'पुरुषपुरातन' तथा 'विश्वसृज्' कहल गेलनि अछि (३।२।१६। १-४३)।

---

७. तत्रैव, पृ० १०६।

अन्तरिक्षक प्राकृतिक घटनाक प्रतीक रुद्र क्रमशः शिव रूप भेलाह आ वैदिक युगक अन्तिम चरण, सूत्रकाल धरि अबैत स्थूल रूप धारण क' मूर्त्ति रूपमे पूजित होअ' लगलाह। हिनक विविध रूप, पत्नी, पुत्र, पार्षद आदिक कल्पनाक परिधि दीर्घ भ' गेल। एही आधारपर आगाँ चलिक' रामायण, महाभारत ओ विविध पुराण सभमे रुद्र-शिवक पौराणिक स्वरूपक विकास भेल तथा ओहि क्रममे विशाल शिव-कथा-समूहक सर्जन भेल। किन्तु एकटा महत्त्व-पूर्ण तत्त्व विचारणीय अछि, से थिक रुद्र-शिवक प्रतीक लिंगक पूजा। शैवो-पासनामे लिंगपूजाक जे स्थान अछि से सिद्ध करैत अछि जे अतीतमे एकर जड़ि बहुत दूर धरि गेल छैक।

सिन्धु-घाटी सभ्यताक देवता ओ लिंगोपासना

वैदिक वाङ्मय तथा उपनिषद्मे कतहु शिवलिंग-पूजाक उल्लेख नहि अछि। **श्वेताश्वतर उपनिषद्क** एकटा श्लोकमे लिंग-योनि-पूजाक संकेतमात्र भेटैत अछि (५।२)। सूत्रो ग्रन्थमे एकहि ठाम **बोधायन गृह्यसूत्रमे** (३।२। १६।१४) रुद्र मूर्तिक संग शिवलिंगक उल्लेख अछि। किन्तु परवर्ती साहित्य ओ धर्मोपासनामे एकाएक शिवलिंगक पूजाकेँ अत्युच्च स्थान प्राप्त क' लेने देखैत छी। पुराण इतिहास कालक ओ परवर्ती प्रायशः समस्त शैव तीर्थमे शिवलिंगे प्रधान रहल अछि।

ऋग्वेदमे दुइ स्थल पर वैदिक आर्यसँ शत्रुभाव रखनिहार **'शिश्नदेव'** अर्थात् **'शिश्नक'** उपासकक चर्चा आयल अछि (७।२१।५,२०।९९।३)। एहिसँ एतबा संकेत भेटैत अछि जे ऋग्वैदिक कालमे वैदिक आर्यसँ भिन्न कोनो समुदायमे **लिंगोपासना** कोनो रूपमे अवश्य विद्यमान छल, किन्तु से वैदिक आर्यमे श्रेयस्कर नहि, गर्हित बूझल जाइत छल। क्रमहि वैदिक रुद्रक संग रुद्रक समान विभिन्न जन-जातीय देवताक समीकरणक प्रक्रियामे ओहो रुद्रक संग मिलि गेल। किन्तु यजुर्वेदक **'शतरुद्रिय'**क रचना काल धरि प्रायः आर्य द्वारा मान्य नहि भ' सकल छल आ संभवतः बहिष्कृतो छल।

डा० यदुवंशीक मत छनि जे जननेन्द्रियक उपासनाक प्राचीन सभ्य संसारमे बहुत प्रचार छल। आदि मानवक मस्तिष्क पर समस्त पार्थिव जीवनक आधार-भूत प्रजनन-प्रक्रियाक बहुत गम्भीर प्रभाव पड़ल। तदतिरिक्त आदि-मानवक अप्रौढ़ विवेक मैथुनकर्म ओ पशु तथा धान्यक उर्वरताक एक कारण-

कार्य सम्बन्ध स्थापित क' देलक। एहीसँ लिंगोपासनाक प्रादुर्भाव भेल।[१] ओ संसारक विभिन्न भागमे प्राचीन कालमे उर्वरता ओ जननेन्द्रिय सम्बन्धी उपासनाक चर्चा करैत लिंगोपासनाक प्रमुख केन्द्र पश्चिम एशिया मानने छथि।[२]

वैदिक युगक पूर्व वा समकालमे भारतक सिन्धु-घाटीमे एकटा पूर्ण विकसित सभ्यता छल जे प्रायः वैदिक सभ्यतासँ भिन्न छल। सिन्धु-घाटी जनक सम्बन्ध पश्चिम एसियासँ छलैक। ओहि ठाम उत्खननसँ प्राप्त सामग्रीक आधार पर अनुमान कयल गेल अछि जे सिन्धु-घाटी-जनमे रुद्र-शिवसँ साम्य रखनिहार कोनो देवताक उपासना होइत छल जाहिमे ओहि देवताक लिंगो-पासना सेहो होइत छल। डा० यदुवंशीक अनुमान छनि जे सिन्धु-घाटीक लिंगोपासना ओहि उपासनाक अंग मात्र छल जकर प्रचार समस्त पश्चिम एसियामे छल।[3] संभव अछि जे ऋग्वेदोक्त 'शिश्नदेव' इएह सिन्धु-घाटी-जन रहल हो। किन्तु वैदिक आर्यसँ शत्रु भाव रहने एवं लिंगोपासनाक स्वरूप व्रीडाजनक होयबाक कारणे आर्य द्वारा घृष्य बूझल गेल हो। किन्तु लगैत अछि जेना सिन्धु-घाटी-जनक रुद्र-शिव सन देवताक उपासनाक अन्य तत्त्वक, रुद्रक व्यक्तित्वमे ओ आर्य जातिमे संक्रमणक प्रक्रिया गतिमान छल। यजुर्वेदमे एक स्थल पर विभिन्न देवताकें पशु सभ अर्पित कयल जयबाक जे विवरण अछि ताहिमे—रुद्रक हेतु 'रुरु' नामक मृग (२५।२७।२९), 'ईशान'क लेल पारस्वतमृग (२४।२८) तथा 'निर्ऋति'क हेतु कपोत, उलूक तथा शश (२४।२८) नियुक्त कयल गेल। सिन्धु-घाटीमे एकटा मोहर प्राप्त भेल छल। ओहिमे अंकित चित्रमे एकटा पुरुषक दुनू कात एक बाघ, एक हाथी, एकटा गैंड़ा ओ एकटा महिसा दृश्यमान अछि। ओहि पुरुषक सिंहासनक नीचाँमे दुइ गोट हरिण सेहो अंकित अछि। यदि ओ कोनो देवताक चित्र होइक तँ ओहिमे अवश्ये पशुपतित्वक भाव सन्निहित होइत। वैदिको रुद्र तँ पशुप वा पशुपति छलाह। हुनको पाँचटा जीव—गो, अश्व, पुरुष, अज तथा अवि (अथर्व० ११।२।९-तवे मे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः) अर्पित कयल गेल छल। लगैत अछि जे दुहुमे आरो साम्य रहल होयत जाहि कारणे सिन्धुघाटीक उपर्युक्त देवता तथा रुद्रक एकीकरण होम' लागल होयत। समसँ महत्त्वपूर्ण अछि रुद्रक 'रुरु' नामक मृग, ईशान तथा निर्ऋति देवताक

१. शैवमत, पृ० २६।
२. उपरिवत्।
३. तत्रैव, पृ० २९।

मृग तथा सिन्धु-सभ्यताक पशुपति देवताक दुनू मृगक साम्य। ई मृग पश्चात् शिवक ध्यानक एकटा प्रधान अंग भ' गेल (मृगवराभीतिहस्तम्)। संभवतः उत्तर वैदिक कालक पश्चात् आर्य जातिक विभिन्न वर्गमे लिंगोपासना अधिक लोकप्रिय ओ प्रचलित होइत देखि वैदिक आर्यलोकनि ओकरो रुद्र-शिवक प्रतीक-पूजाक रूपमे स्वीकार क' लेने होयताह।

यदि श्वेताश्वतर उपनिषद् ओ बोधायन गृह्यसूत्रक उपरिचर्चित प्रसंगकें छोड़ि देल जाय तँ लिंगोपासनाक सर्वप्रथम विस्तृत विवरण महाभारतक अनुशासन पर्वमे भेटैत अछि। एहि ठाम जाहि रूपमे शिवलिंगक महत्ताक वर्णन कयल गेल अछि ताहिसँ निष्कर्ष बाहर कयल जा सकैछ जे महाभारत काल धरि लिंगोपासना समाजक बृहत्तर भागमे पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त क' लेने छल।

Scanned by CamScanner

रामायण-महाभारतमे रुद्र-शिव

रुद्र-शिवक प्रतिष्ठा जहिना-जहिना बढ़ैत गेलनि तहिना-तहिना हुनका सम्बन्धमे विविध प्रकारक कथा सभक रचना होइत गेल। एहि प्रकारक कथा सभक आरम्भिक सूचना रामायण ओ महाभारतमे प्राप्त होइत अछि। रामायण-महाभारतमे जे कथा-सूत्र सभ अछि तथा शिवकें जे उच्चता प्रदान कयल गेल छनि से सभ उत्तरवैदिक कालधरि दृष्टिगोचर नहि भेल छल। अतः ई मान' पड़ैछ जे उत्तर वैदिककाल ओ रामायण-महाभारतक रचना-कालक मध्य बड़ पैघ अन्तराल रहल होयत। संभव अछि जे रुद्रक संग अन्यान्य जनजातीय एवं वैदिकेतर जनक समरूप देवताक जे एकीकरण ओ समीकरणक प्रक्रिया चलि रहल छल ओही क्रममे तत्तत् देवता-सम्बन्धी किंवदन्ती ओ माहात्म्य-कथा सभ रुद्रक संग सम्बद्ध होइत चल गेल होयत। क्रमहि क्रम रुद्र-शिवक विभिन्न नाम, उपाधि, विशेषण ओ कार्य सभक समाधानात्मक ओ व्याख्यात्मक कथा सभक सर्जन क' ओकरा स्थूल रूप देबाक प्रयास सेहो कयल जाइत रहल होयत।

रामायणमे रुद्र पूर्णतः शिव, सौम्य ओ मंगलकारी भ' गेलाह। बोधायन गृह्यसूत्रमे रुद्रकें कहल गेल छलनि

त्वमेकमाद्यं पुरुषं पुरातनं
रुद्रं शिवं विश्वसृजं यजामहे ॥

ओ श्वेताश्वर उपनिषद्‌मे परब्रह्म धरि उत्थापित भ' गेल छलाह। रामायणमे दुहूसँ विकसित रूप भेटैत अछि। एहिठाम शिवकें अमर, अक्षर एवं अव्यय विशेषण देल गेलनि अछि (१/४/२९)। शिव जगत्स्रष्टा ओ संहर्ता सर्वलोकाधार, परमगुरु कहल गेल छथि (१/६/२)। शिवक संग योगसाधनाक घनिष्ठ सम्बन्धक प्रथम दर्शन रामायणेमे भेटैत अछि। भगीरथ (१/४२/२३-२४), विश्वामित्र (१/५५/१२) तथा देवगण (७/१३/२१-२२) तपश्चर्या द्वारा वा योगसाधनासँ शिवकें सन्तुष्ट करैत छथि। शिवो हिमालयमे योगसाधना करैत कहल गेल छथि (१/३६/२६)।

रामायण, महाभारत एवं परवर्ती पौराणिक कथा सभमे देव, दानव, मनुष्य——सभ द्वारा शिव पूज्य मानल गेल छथि। ई स्थिति अन्य देवताक संग नहि देखल जाइछ। शिव दानव ओ असुरो सभकें संरक्षण एवं वरदान दैत रहलथिन। ओहो सभ शिवक विशेष रूपसँ आराधना करैत छलनि।

दोसर दिस विष्णु दानव ओ असुर लोकनिक संहारे करैत रहलथिन । दानव ओ असुरक प्रति शिवक एहि प्रकारक कृपादृष्टि, हुनक, दानव ओ असुर आदि जातिसँ विशेष निकट सम्बन्ध सूचित करैत अछि। रामायणमे वर्णित रावणक शिव-भक्ति (७/१६/३४) विद्युत्केशदानवकेँ पार्वती द्वारा कोरमे लेब ओ शिव द्वारा अमरत्व प्रदान (७/४/२९), शिव द्वारा दानवगणक संहार करबासँ अस्वीकार करब (७/६/३), आदि घटना एकर प्रमाण थिक। रामायणमे रुद्र-शिव सम्बन्धी प्रचुर कथा-सामग्री विद्यमान अछि, यथा—बालकाण्डमे मदन-दहन (सर्ग-२३/१-२०), कार्त्तिकेयक जन्म (सर्ग-३६/५-२६), गंगावतरण (सर्ग-४३/२-११), शिवक विषपान (सर्ग-४५/१८-२६), विश्वामित्रक शिवपूजन (सर्ग-५५/१२-१३), शिवधनुष (सर्ग-६६/८-१४; ७५/११-१२); किष्किन्धाकाण्डमे अन्धकवध (सर्ग-४३/५५); उत्तरकाण्डमे विद्युत्केशक पुत्रक कथा (सर्ग-४/२७-३१), शिवद्वारा असुर-वधक अस्वीकृति सर्ग-६/९), कुवेरक शिवपूजा (सर्ग-१३/२१-३१), नन्दी आ रावणक मान-मर्द्दन (सर्ग-१६/८-४३), शिवक स्त्री-रूप-धारण (सर्ग-८७/११-१८) इत्यादि ।

पुराण सभमे शिव-पार्वती विषयक उपाख्यानक जे विस्तृत रूप देखैत छी आ जे शिव-कथा-माला परवर्ती शिवाराधना ओ शिवकीर्तनक आधार-भूमि रहल तकर वृहत् अंशक मूल कथासूत्र रामायणमे स्थिर भ' गेल छल ।

महाभारतमे, रामायणक अपेक्षा, रुद्र-शिव ओ हुनक कथाक अधिक विकसित, विवृत ओ व्यवस्थित रूप भेटैत अछि। रुद्र-शिवक परब्रह्म पर-मेश्वरत्वक, विशद् रूपमे, अधिक विश्वासक संग, उद्घोषणा कयल गेल अछि। शिवकेँ एत' असीम, अचिन्त्य, विश्वस्रष्टा, सृष्टिक एकमात्र उद्गम-विन्दु, नित्य, अव्यय ओ कारण-स्वरूप, एक होइतो अनेक रूपमे विद्यमान, कालरुद्र रूपमे सृष्टिक विलयकर्त्ता मानल गेल अछि ।[1]

---

१. महाभारत, द्रोण—७४/४१—लोकादिं विश्वकर्माणम् अजमीशान अव्ययम् ।।
तमसः परमं ज्योतिः स्वं वायुं ज्योतिषां गतिम् ।।
७४/४२—योगिनां परमं ब्रह्माव्यक्तं वेदविदां निधिम् ।
चराचरस्य स्रष्टारं प्रतिहर्त्तारमेव च ।।
७४/५७—विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते ।

Scanned by CamScanner

श्वेताश्वतर उपनिषद्मे रुद्र-शिवकें सांख्यदर्शनसँ सम्बद्ध ओ सांख्य-पुरुष कहल गेलनि अछि तकर बहुवार चर्चा महाभारतमे कयल गेल अछि।[१] एहिठाम शिवकें सहस्र नयन-शिर-भुजा-चरणसँ युक्त तथा असंख्यकर्मा कहल गेल छनि। शिवभक्तिक पल्लवित रूप महाभारतमे उपलब्ध अछि।[२] शिव भक्तानुकम्पी, अभक्तक भयहेतु तथा भक्तजनक हेतु अभयंकर कहल गेल छथि।[३] तथापि वैदिक युगक क्रूर ओ कोमल उभय स्वरूपक स्मृति एतहु विद्यमान रहल तें घोर एवं शिव वा शुभ दुनू रूप वर्णित अछि।[४]

महाभारतकाल अबैत-अबैत किरात जातिक कोनो देवता शिवसँ सम्बद्ध भ' गेल। अतः एहिठाम शिवकें किरात रूपमे देखैत छियनि।[५] तहिना एकादश रुद्रक परिकल्पना सेहो एहिठाम पूर्ण भ' गेल छल जाहिमे वैदिक युगक रुद्रसँ भिन्न देवता अजएकपाद्, अहिर्बुध्न्य, निर्ऋति, अशनि आदि देवता रुद्रक पंक्तिमे बैसा देल गेलाह।[६]

१६९/३१—अजमीशानमव्यक्तं कारणात्मनमव्ययम्।
कर्ण०—२४/६३—एकश्च भगवाँस्तत्र नानारूपाण्यकल्पयन्।
अनु०—२२/९९—दिवसकर शशाङ्क वह्नि नेत्रंत्रिभुवन
सारमपार मीशमाद्यम्॥
अजरममरमप्रसाद्य रुद्रंजगति पुमान्
इहको लभते शान्तिम्॥
२२/१५८—आत्मा च सर्वभूतानां।
२२/१६६—आदिस्त्वमसिलोकानां संहर्त्ता काल एव च।
१५०/८—शंकरस्त्वसृजत् तात प्रजाः स्थावर जगमाः।
नास्ति किञ्चित पर भूतं महादेवाद्
विश्वंपते॥ इत्यादि।

१. तत्रैव, कर्ण—२४/६१—यः सांख्यमात्मनोवेत्ति
अनु—२२/१५८—सांख्ये पुरुष उच्चते
/१५९—सांख्यानां कपिलोमुनिः
२३/४३—यः साख्यं गुण तत्त्वज्ञाः
सांख्यशास्त्र विशारदाः।

२. तत्रैव, द्रोण—७४/३७, ६०, ६१
३. तत्रैव, द्रोण—४१/१५,७४/६२; अनु—११२/१९
४. तत्रैव, अनु—१५१/३, १९
५. तत्रैव, आदि०, अध्याय-३५।
६. तत्रैव, आदि०, ६७/२-३।

Scanned by CamScanner

महाभारतमे सागर-मन्थन (आदि-१३), गंगावतरण (वन-८५-८६) स्कन्दजन्म (वन-१८३-८८, शल्य-४४) त्रिपुरदाह (कर्ण-२४-२५, अनु-१५०); दक्ष-यज्ञ ध्वंश (सौप्तिक-१८, अनु-१५०, शान्ति (१८६, १९१), उपमन्युक भक्ति-कथा (अनु २२-२३) आदि शिव सम्बन्धी अनेकशः नवीनकथा समूहक परिचय भेटैत अछि।

रुद्र-शिव : विद्या ओ कलाक देवता

रुद्र-शिवक संग विद्या ओ कलाक सम्बन्ध सेहो महाभारत कालसँ विकसित होइत पबैत छी। द्रोणपर्वमे गीत-वादित्र-सवाद-ताल-नर्तनसँ लासित शिवक वर्णन भेल अछि।[1] परवर्तीकालमे संगीत-नृत्य-नाट्य आदिक प्रथम प्रवाचक शिवकेँ कहल गेलनि अछि। समस्त कलाक उद्भव शिवेसँ मानल गेल अछि। भरत-नाट्य-सूत्रमे शिवकेँ नटराज, कैशिकी वृत्तिसँ सेव्यमान नृत्यक महान् आचार्य ओ ताण्डव नृत्यक स्रष्टा कहल गेलनि अछि।[2] तहिना विभिन्न विद्याक सेहो आदि आचार्य शिवे मानल गलाह अछि। पाणिनिकेँ व्याकरणक चौदह गोट मूलसूत्र शिवेसँ भेटल छलनि।[3]

योगेश्वर शिव

रामायण-महाभारतकालधरि अबैत-अबैत रुद्र-शिवक सम्बन्ध योगसँ भ' गेलनि। शिव आब योगेश्वर भ' गेलाह। ई योग-साधना आर्य तत्त्व छल वा आर्येतर तत्त्व; जँ आर्येतर तत्त्व छल तँ कोन जातिक छल - एहि प्रसंगमे मतभेद देखल जाइछ। एत' एतबय कहल जा सकैछ जे वदमे वा उत्तर वैदिक वाङ्मयमे रुद्र-शिवक संग योग साधनाक सम्बन्धक कोनो स्पष्ट परिचय नहि भेटैत अछि। किन्तु परिवर्ती कालमे आबि योगसाधना रुद्र-शिवक महत्वपर्ण विशिष्टता बनि गेल। पुराणमे शिवक योगीरूपक चित्रण अनिवार्यरूपेँ भेल अछि। मैथिलीयोमे शिवक ओहि योगी रूपकेँ ओ हुनक योगसाधनाकेँ प्रमुख स्थान भेटैत रहल अछि।

रुद्र-शिव ओ उमा-पार्वती

रुद्र-शिवक संग स्त्री-देवताक सम्बन्ध कोना भ' गेल से अव्याख्यात अछि। सार्वभौम सत्ताक रूपमे स्त्री-देवताक पूजन प्रागैतिहासिक कालमे विश्वक

---

१. तत्रैव, द्रोण०, ७४/३८।
२. नाट्यशास्त्र, १/४५,४/१७।
३. शिवाङ्क, पृ० १७०।

Scanned by CamScanner

विभिन्न भागमे प्रचलित छल । भारतोमे कोनो ने कोनो रूपमे होयबाक कल्पना कयल जाइत अछि । किन्तु रुद्र-शिवक पत्नीक रूपमे शक्तिक स्थापना तथा शाक्तमत ओ तान्त्रिक वाङ्मयमे ओही देवीक चरम स्थान कोन प्रक्रियासँ भेल तत्सम्बन्धी कोनो सर्वमान्य व्याख्या एखन धरि सम्भव नहि भ' सकल अछि ।

रुद्र शिवक ओ स्त्रीदेवताक सम्बन्ध-सम्पर्क विषयक कोनो सूचना ऋग्वेद' वा अथर्ववेदमे नहि भेटैत अछि । यजुर्वेदमे एकठाम त्रिदेवी अम्बा, अम्बिका ओ अम्बालिकाक स्वतन्त्ररूपेँ चर्चा भेल अछि (२३/१८) । किन्तु एही वेदमे दोसर ठाम अम्बिकाकेँ रुद्रभगिनी कहल गेल अछि (३/५७-६२) । शतपथब्राह्मणमे एहि उक्तिक समर्थन कयल गेल अछि (२/६/३/४) । शांखायन श्रोतसूत्रमे रुद्रक अष्टमूर्तिकेँ आहुति देलाक पश्चात् ओही अष्टमूर्त्तिक नामानुरूप आठ गोट स्त्री-देवताकेँ आहुति देल गेल अछि (४/१७/१७-२०) । एहि ठाम ई नहि कहल गेल अछि जे ई सभ रुद्रक अष्ट मूर्त्तिक पत्नी थिकीह । किन्तु बोधायन धर्मसूत्रमे ई आठो स्त्री-देवताकेँ रुद्रक अष्टमूर्त्तिक तन्नामक पत्नी कहल गेलनि अछि ।

केनोपनिषद्मे एकटा अत्यन्त भव्य स्त्री-देवता 'उमा हैमवती' क वर्णन आयल अछि (३/१२) किन्तु हिनक कोनो विशेष परिचय नहि देल अछि । हैमवती वस्तुत. हिमवत्सँ व्युत्पन्न अपत्यार्थक विशेषण थिक अत हिमवत् वासिनी वा हिमवतसँ उत्पन्न होयबाक कारणेँ 'हैमवती' नाम पड़ल होयत । तैत्तिरीय आरण्यकमे रुद्रकेँ 'अम्बिकापति' कहल गेलनि अछि (१०/१८) । अतः यजुर्वेद ओ शतपथ ब्राह्मणक रुद्र भगिनी अम्बिका एत' रुद्र पत्नी मानल गेलीह । एहीठाम उमाक चर्चा भेल अछि आ रुद्रकेँ 'उमापति' कहल गेलनि अछि (१०/१८) । किन्तु अम्बिका ओ उमा एके थिकीह वा भिन्न ताहि विषयमे ई आरण्यक मौन अछि । किन्तु रुद्र-पत्नी अम्बिका वा उमा पश्चात् अत्यन्त वर्चस्वमयी बनि गेलीह आ श्वेताश्वतर उपनिषद्मे ई प्रकृति वा माया कहल गेलीह एवं रुद्र-शिव 'मायिन' (४/१०) । त्रिपुरातापिनी उपनिषद्मे एहि स्त्री-देवताकेँ शिवक सर्जनात्मिका शक्तिक रूपमे कीर्त्तन कयल गेलनि । अम्बिका ओ उमा हैमवती एक रूप भ' क' पार्वती, गिरिजा इत्यादि नामे शिवक पत्नी रूपमे प्रख्यात भेलीह । शिव ओ उमा-पार्वतीक प्रगाढ़ संग-सान्निध्यसँ अर्द्धनारीश्वर रूप बनल; उमा-महेश्वर ओ साम्बसदाशिव रूप बनल । दुहू एक दोसरासँ अविच्छेद्य, अभिन्न छथि ।

Scanned by CamScanner

शिव पत्नी, शक्ति-रूपा भ' क' शाक्त ओ तन्त्रमतमे अधिष्ठात्री बनि गेलीह आ ओहि समस्त अभिधानकें ग्रहण कयलनि जे ओहि मतमे शक्तिकें प्रदान कयल गेलनि। इ० ए० पेन महोदय उचिते कहने छथि जे शाक्त मतमे शिवपत्नीएक विविध रूपक पूजन होइत छनि।[1] तान्त्रिक सम्प्रदायक तँ समस्त वाङ्मये शिव-पार्वतीक संवाद रूपमे अवतारित अछि।

गणपति ओ स्कन्द

एहीठाम गणपति वा विनायकक चर्चा अपेक्षित अछि। आरंभमे ई क्रूर एवं उपद्रवी देवता मानल जाइत छलाह। भण्डारकरक मतें ई एकटा स्वतन्त्र देवता छलाह जनिक समीकरण रुद्रक संग भ' गेलनि।[2] डा० यदुवंशीक विचार छनि जे रुद्र-शिवेक अनिष्टकारी स्वभाव ओ रूपक, स्वतन्त्र गणपति वा विनायक देवताक रूपमे विकास भेल।[3]

मानव गृह्यसूत्रमे (२/१४) तथा बोधायन गृह्यसूत्र (३/३/१०)मे विघ्नविनायकक विवरण भेटैत अछि। मानव गृह्यसूत्रमे चारि गोट विनायकक उल्लेख अछि—

१. शालकटंकट २. कूष्माण्डराजपुत्र ३. उस्मित ४. देवयजन।

याज्ञवल्क्य स्मृति (१/१५/२५८) मे छओ गोट विनायकक नाम देल गेल अछि—

१. मित २. संमित ३. शाल ४. कटंकट ५. कूष्माण्ड एवं ६. राजपुत्र।

याज्ञवल्क्य स्मृतिमे देखल जाइछ जे मानव गृह्यसूत्रक पहिल ओ दोसर विनायकक नामकें दू खंडमे बाँटि स्वतन्त्र मानि लेल गेल अछि।

उपर्युक्त दुहू ग्रन्थमे वर्णित विनायक-ग्रस्ततासँ भेनिहार अमंगल, अशुभ ओ हानिकारक उत्पात तथा ओकर शान्तिक विविध विधानमे समता देखल जाइछ।

आगाँ चलि गणपतिक गजमुख ओ एकदन्त रूप बनल। ताण्ड्य ब्राह्मण (७/१/१६) तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण (१/६/१०)मे देखल जाइछ जे देवगण द्वारा पशुक वितरणमे रुद्रकें अंश नहि देल गेलनि। किन्तु रुद्रक प्रकोप ओ तज्जन्य सृष्टि-विनाशक आशंकासँ भीत भ' क' हुनका 'मूषक' प्रदान कयल गेलनि।

---

१. The Saktas—E.A. Payne, Page–6.

२. भण्डारकर, पृ० १४७।

३. शैवमत, पृ० ५२।

Scanned by CamScanner

भविष्यमे ओएह 'मूषक' गणेशक वाहन बनि गेल। क्रमहि गणपति शिव-पार्वतीक पुत्र ओ बुद्धिक देवता रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। विघ्नविनाशकक रूपमे सर्व-कर्मारम्भे हुनक पूजन होम' लागल। गणेश ओ शिवक सन्निकटता एतेक बढ़ि गेल जे शिवक ध्यानमे जाहि-जाहि वस्तुक वर्णन होइत छल ताहिमे सँ अधिकांश गणेशोक ध्यानमे प्रयुक्त होम' लागल।

भारतीय चिन्ताधारामे गणपतिक महत्ता एतेक बढ़ि गेल जे हुनका आराध्य मानि उपासना कयनिहारक एकटा स्वतन्त्रे सम्प्रदाय बनि गेल जकरा गाणपत्य सम्प्रदाय कहल जाइछ। एहि सम्प्रदायक छओ गोट उपसम्प्रदाय बनल जकर उपास्य क्रमशः महागणपति, हरिद्रागणपति, उच्छिष्ट गणपति, नवनीत गणपति, स्वर्ण गणपति, एवं सन्तान गणपति मानल गेलाह।[1]

स्कन्द-कार्तिकेय सेहो कहियो स्वतन्त्र देवता छलाह। बोधायन धर्मसूत्र (२।५।७)मे स्कन्द, जयन्त, विशाख, महासेन, षण्मुख एवं सुब्रह्मण्य एहि छओ गोट कार्तिकेयक पर्याय एवं हुनक पार्षद-पार्षदीक उल्लेख भेटैत अछि। एहि देवताक रुद्र-शिवक संग कोनो सम्बन्धो छल तकर किछु संकेत सूत्रकाल धरि नहि भेटैत अछि। किन्तु रामायण-महाभारतमे स्कन्द शिवपुत्र बना देल गेलाह। तथापि स्कन्दक जन्म विषयक कथामे वैचित्र्य देखल जाइत अछि। रामायण ओ महाभारतमे स्कन्दक जन्म प्रक्रियामे शिव, पार्वती, अग्नि, गङ्गा, हिमालय पर्वत, षट्कृत्तिका आदिक सम्पर्क-सम्बन्ध देखल जाइत अछि। कार्त्तिकेयक छओ मुख, मयूरवाहन, तारकासुरक वध कयनिहार तथा सेनानी रूपमे प्राचीन वाङ्‌मयमे वर्णन कयल गेल अछि। अनुमान कयल जाइछ जे स्कन्द अग्निक कोनो रूपक प्रतीक छलाह तथा रुद्र ओ अग्निक तादात्म्य रहने रुद्र-शिवक पुत्र मानल जाय लगलाह। स्कन्द कार्त्तिकेयक पूजा तँ होइत रहल, स्कन्दसँ सम्बद्ध साहित्यक निर्माण होइत रहल किन्तु हुनकासँ सम्बद्ध कोनो सम्प्रदायक उद्‌भवक प्रमाण उपलब्ध नहि अछि।[2] वस्तुतः जे प्रतिष्ठा गणपतिकेँ भेटलनि से सेनापति (स्कन्द) केँ नहि। यद्यपि ऐतिहासिक क्रममे दुहु शिवक पुत्र मानल जाइत रहलाह।

पुराणमे रुद्र-शिव

वैदिक ओ उत्तर वैदिक वाङ्‌मयमे, रामायण ओ महाभारतमे रुद्र-शिवक विकासक रूप-रेखा देखल अछि। रामायण-महाभारतक पश्चात्

---

१. भण्डारकर, पृ० १४९-५०।

२. तत्रैव, १५०-५१।

विशाल पौराणिक साहित्यक निर्माण भेल। पुराणमे शिव-कथाक विशाल भागक दर्शन होइत अछि। इएह पौराणिक शिव-कथा सभ परवर्ती भारतीय शैवसाहित्यक आधार-शिला बनल। पुराण सभमे आयल शिव-कथा सभमे अधिकांशक मूलान्वेषण रामायण-महाभारतमे कयल जा सकैत अछि, किन्तु ओहूसँ विशाल कथा-प्रसंग ओ घटनासमूहक कल्पना होइत रहल आ परम्परा क्रमसँ पुराण सभमे जोड़ल जाइत रहल। पुरानकालमे शिव, सती, उमा-पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, हिमालय, मैना, नन्दी, भृङ्गी, भैरव दि गणसँ युक्त शिव-परिवारक कल्पना पूर्ण भ' गेल। संगहि शिवक दार्शनिक स्वरूप ओ शैव दर्शनक संग शिवलिङ्ग, शैवव्रत, शिवार्चन, शिवनाम-कीर्त्तन आदिक माहात्म्य एवं तत्सम्बन्धी विविध विधि-विधानक निर्माण होइत रहल जे आगाँ चलि हिन्दू आचारक अंग बनि गेल। आधुनिक कालधरि विद्यमान शैव तीर्थ सभक विवरण ओ माहात्म्य पौराणिक वाङ्मयेमे निर्मित होइत रहल।

पुराण सभमे सागर-मन्थन, विषपान, गंगावतरण, दक्ष यज्ञध्वंस, मदन-दहन, पार्वती-परिणय, स्कन्द-जन्म, गणेश-जन्म, अन्धक वध, त्रिपुरासुर-वध, वाणासुर ओ उषा-अनिरुद्धक कथा प्रधान वर्ण्य विषय रहल अछि। एहिसँ अतिरिक्त सहस्रो अवान्तर कथाक परिकल्पना ओ माहात्म्य सभक पुञ्जीभूत रूप लिंग, स्कन्द एवं शिवपुराणमे प्रधान रूपें भेटैत अछि। किन्तु अन्यो—अग्नि, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मत्स्य, वराह, वायु, सौर, इत्यादि पुराण-उपपुराणमे तत्तत् पुराणक दार्शनिक मत-वैशिष्ट्यक रक्षा करैत विशाल कथा-समूहक प्रस्तार भेल अछि।

पौराणिक शिवकथाक वर्गीकरण

आरम्भसँ ल' पुराणकाल धरि शिवकथाक जे विशाल समूह परिकल्पित भेल तकरा दुइ भागमे विभक्त कयल जा सकैत अछि।[1]

(क) शिव-सम्बन्धी मुख्य कथा

(ख) शिव-सम्बन्धी गौण कथा

(क) शिव-सम्बन्धी मुख्य कथा

एहि वर्गमे आठ गोट प्रधान कथाकेँ राखल जा सकैत अछि। ई कथा

---

१. द्रष्टव्य, अध्ययन और अन्वेषण (प्रधान सम्पादक–डा० देवराज उपाध्याय) मे डा० रामगोपाल सिंह 'दिनेश'क निबन्ध 'शिव-कथा का उद्भव और विकास'।

Scanned by CamScanner

सभ शिवक चरित ओ महिमाकेँ विस्तार एवं व्यापकता प्रदान कयलक। शिवक कथा-प्रसंग जत' कतहु आयल अछि ओहिठाम ई कथा सभ अनिवार्यतः अबिते रहल अछि। जनमानस एही कथा सभक नायक रूपमे शिवकेँ स्मरण करैत रहलनि अछि। ओ आठो प्रधान कथा थिक—

१. विषपान कथा
२. दक्ष-यज्ञ-ध्वंस कथा
३. मदन-दहन कथा
४. शिव-विवाह कथा
५. स्कन्द-जन्म कथा
६. गणेश-जन्म कथा
७. तारक-वध कथा
८. त्रिपुर-संहार कथा

(ख) शिव-सम्बन्धी गौणकथा

एहि वर्गमे ओ लघुकथा एवं प्रसंग सभ अबैत अछि जे उपर्युक्त कथा सभक अंग रूपमे रहल अछि, किन्तु शिव-चरित ओ शिव-माहात्म्यक निर्माणमे महत्वपूर्ण योगदान करैत रहल। काव्यादिक निर्माणमे आधार सामग्रीक रूपमे प्रयुक्त होइत रहल। एहि गौण कथाक अतिरिक्तो बहुशः अवान्तर कथा सभक कल्पना कयल गेल। ओहि सभमे स्वमत-पोषण, विमत-दूषण अथवा शिव महिमाक उत्थापनो मात्र उद्देश्य रहल। परन्तु निम्नलिखित आठ गोट कथा एहन अछि जकर प्रसिद्धक संग ऐतिहासिक भित्तियो छैक। रामायण, महाभारत, पुराणादिमे एकर सभक उल्लेख होइत रहल अछि। ओ आठो गौण कथा थिक—

१. गंगावतरण कथा
२. सती-सन्देह कथा
३. अन्धक-वध कथा
४. किरातार्जुन कथा
५. स्त्रीरूप शिवक वनविहार कथा
६. शंखचूड-वध कथा
७. लिंगोत्पत्ति कथा
८. वाणासुर ओ उषा परिणय कथा

उपर्युक्त एही दुइ वर्गक कथा सभ संस्कृत-प्राकृतक तथा भारतक देशी भाषाक शैव साहित्यक उपजीव्य एवं आधार सामग्री रहल अछि।

Scanned by CamScanner

मैथिलीयोक शैव साहित्यमे आरम्भिक कालसँ अद्यतन काल धरि इएह शिव-कथा एवं माहात्म्य समूह उपजीव्य सामग्रीक रूपमे प्रयुक्त होइत रहल अछि।

भारतीय पुरातत्त्वमे रुद्र-शिव

वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, इतिहास, पुराण आदिमे रुद्र-शिवक जाहि स्वरूपक क्रमिक विकास, जे रूप-रेखा भेटल अछि से लोक-मानस ओ लोक जीवनसँ सम्बद्ध छल। रुद्र-शिवसँ सम्बद्ध भावना शैव धर्म, शैव दर्शन, शैव-मत, शैव सम्प्रदाय आदि रूपमे अधिष्ठित भेल। समय-समय पर शैवधर्म राजधर्मक रूपमे सेहो प्रतिष्ठा पबैत रहल। एहि सम्बन्धमे अनेकशः पुरातात्त्विक सामग्री— मुद्रा, शिलालेख, शिवमूर्त्ति, शिवमन्दिर इत्यादिक रूपमे उपलब्ध होइत अछि। ईसाक आरम्भिक शताब्दीमे कुषाणवंश शैव मतावलम्बी छल। ओहि वंशक प्रत्येक राजाक शिवांकित मुद्रा ओ मोहर सभ भेटैत रहल अछि। गुप्तशासन काल तथा परवर्त्ती राजवंशक समयक शैव भावाभिव्यंजक चिह्नांकित मुद्रा ओ शिवमहिमा युक्त शिलालेख सभ उत्खननमे उपलब्ध होइत रहल अछि जे प्रचुर संख्यामे देश ओ विदेशक विभिन्न संग्रहालयमे सुरक्षित अछि।

दक्षिण-पूर्व एशियामे रुद्र-शिव

भारतक ई शैवधर्म भारतक सीमासँ बाहर दक्षिण-पूर्व एशियामे अत्यन्त प्रचलित भेल। हिन्द चीन, जावा, बालिद्वीप, सुमात्रा, मलाया तथा अन्य पूर्वी द्वीप मंडलमे—चारिमसँ चौदहम शताब्दी धरि प्रायः एक हजार वर्ष पर्यन्त भारतीय शैवधर्मक वृहत् प्रचार छल जकर प्रमाण ओहि भूभागमे प्राप्त शिवमन्दिर, शिव, गणेश, स्कन्द, पार्वती आदिक मूर्ति, शिलालेख, ताम्रपत्र, शिवविषयक भित्तिचित्र एवं साहित्यमे उपलब्ध अछि। वस्तुतः एहि भूभागमे शैवधर्म ओ शिवोपासना लोकधर्म एवं राजधर्म, उभयरूपमे सहस्र वर्षधरि मान्य रहल। इस्लामी शासकक वर्चस्व स्थापित भेलाक पश्चात् शैवधर्म समाप्त भ' गेल, किन्तु पुरातत्त्वक रूपमे अद्यापि विद्यमान अछि। जन मानसो अपन राष्ट्रीय सम्पत्ति ओ संस्कृतिक रूपमे एकरा सुरक्षित रखने अछि। धर्म भने बदलि गेलैक, किन्तु संस्कृति नहि बदलि सकलैक।

शैव सम्प्रदाय

अन्तरिक्षक प्राकृतिक घटनाक प्रतीक देवता रुद्र क्रमशः शिवत्व प्राप्त क' रुद्र-शिव बनलाह आ तत्पश्चात् परमेश्वर पदपर आसीन भ' गेलाह।

Scanned by CamScanner

जगत्क स्रष्टा, पालनकर्त्ता, संहर्त्ता, भवसागरसँ उद्धर्त्ता, मोक्ष-प्रदाता बनि गेलाह। ब्राह्मण वर्णाश्रम धर्ममे शिवकेँ परम ब्रह्म मानिक' चलनिहार शिवाराधक जन शैव मानल जाय लगलाह। किन्तु हुनका सभक आचार-विचारमे कोनो विशेष भिन्नता नहि रहैत छलनि। किन्तु कालक्रमे एहन साधारण शैवसँ भिन्न विशिष्ट आचार-विचार ओ दार्शनिक सिद्धान्तसँ सम्पन्न अनेकशः शैव सम्प्रदायक अभ्युदय भेल। एहि प्रकारक शैव सम्प्रदायक उद्भवक इतिहास दूर अतीत धरि जाइत अछि। महाभारतमे अनेको धार्मिक मतमे 'पाशुपत' मतक उल्लेख अछि (शान्ति। ३४९।५०)। पतंजलिक महाभाष्यमे अगन उपास्यक आयुधारण कयनिहार 'शिवभागवतक' उल्लेख भेटैत अछि (५।२-/७६)। 'पाशुपति' ओ 'शिवभागवतमे' कोनो ऐक्य वा साम्य छल की नहि से कहब कठिन। किन्तु इतिहासमे अनेक ठाम अनेक बेर 'पाशुपत' मतक चर्चा आयल अछि। विद्वान् लोकनिक धारणा छनि जे एहि सम्प्रदायक दोसर नाम 'माहेश्वर' सेहो छल। कहल जाइछ जे शिव भट्टारक स्वयं लकुलीशक रूपमे अवतरित भ' एहि सम्प्रदायक स्थापना कयल तथा पाशुपत व्रतक सम्पादनार्थ हुनक चारि गोट शिष्य– कुशिक, गर्ग्य, कौरुष, मैत्रेय सेहो शरीर धारण कयल जे चारि सम्प्रदायक जन्मदाता बनलाह।[१]

शैव मतावलम्बी चारि गोट सम्प्रदायक विकास भेल जकर नाम छल— शैव, पाशुपत, कारूक सिद्धान्ती तथा कापालिक। वाचस्पति कारूक सिद्धान्ती केँ 'कारुणिक सिद्धान्ती' नाम देलेँ छथि रामानुज तथा केशव कश्मीरी एहि चारू सम्प्रदायक उल्लेख करैत कारूक सिद्धान्तीकेँ 'कालामुख' नाम देने छथि। भण्डारकर महोदय एहि चारू सम्प्रदायक सिद्धान्तक संक्षिप्त परिचय देने छथि।[२]

कश्मीरी शैव सम्प्रदाय

कश्मीरमे शैवमतक स्वतन्त्र रूपमे विकास भेल। एकर दुइ गोट शाखा भेलैक—स्पन्दशास्त्र तथा प्रत्यभिज्ञा शास्त्र। प्रथमक संस्थापक वसुगुप्त ओ हुनक शिष्य कल्लवट छलाह। द्वितीय शाखाक संस्थापक छलाह सोमानन्द। प्रथम शाखाक ग्रन्थ अछि शिवसूत्रम तथा स्पन्दकारिका। द्वितीय शाखाक ग्रन्थ अछि शिवदृष्टि।[३] कश्मीरक शास्त्र-चिन्तनमे प्रत्यभिज्ञा दर्शनक प्रभाव

१. भण्डारकर, पृ० ११६।

२. तत्रैव, पृ० १२१–२८।

३. तत्रैव पृ० १२९।

सर्वाधिक पड़ल अछि। सोमानन्दक शिष्य उत्पल 'प्रत्यभिज्ञा' सूत्रक रचना कयने छलाह जाहि नाम पर एहि शाखाक नामकरण भ' गेल। उत्पलक शिष्य अभिनवगुप्त 'परमार्थसार' क रचना कयल। क्षेमराजक शिवसूत्र विमर्शिनी प्रत्यभिज्ञा हृदय, स्पन्द सन्दोह एवं स्पन्द-निर्णय ग्रन्थ तथा योगराज ओ जयरथक टीका ग्रन्थ सभमे कश्मीरी शैव सिद्धान्तक विकसित रूप भेटैत अछि।[1]

लिंगायत वा वीरशैव

दक्षिण भारतमे एक आओर शैव सम्प्रदायक अभ्युदय भेल जकरा लिंगायत वा वीरशैव कहल जाइछ। एहि मतक संस्थापक कतहु 'बसव' कें एवं कतहु एकानन्द रामाय्या'कें मानल जाइछ। किन्तु भण्डारकर ओ डा० यदुवंशी दुनू एकरा अस्वीकार करैत छथि। लिंगायत सम्प्रदायमे स्त्री-पुरुष दुनूक उपनयन संस्कार कयल जाइत छल तथा यज्ञोपवीत केर स्थानमे शिवलिंग धारण कयल जाइत छल। मूलमन्त्र गायत्री नहि 'ॐ नमः शिवाय' छल। शिव गायत्रीक जाप कयल जाइत छल जाहिमे पहिल दुइ चरण ब्रह्म-गायत्रीक ओ अन्तिम चरण 'तन्नः शिवः प्रचोदयात्' रहैत छलैक। लिगाय-तक चारि श्रेणी विभाग छल —जंगम, वणिक्, शीलवन्त ओ पंचमशील।[2]

द्रविडमे शैवधर्म

द्रविडभूमिमे शैवधर्मक प्रचार बड़ प्राचीन कालसँ रहल अछि। ओहि ठामक समृद्ध भाषा तमिलमे शैव साहित्यक एकटा विशिष्ट परम्परा रहल अछि। तमिलमे निर्मित विशाल शैव साहित्यक एगारह गोट संग्रह अछि। एहिमे तीन गोट संग्रह महान् शैव सन्त तिरुज्ञानसम्बन्धक रचल स्तुतिक संग्रह थिक। एहि स्तुति सभकें तमिलभाषामे 'पडिगम' कहल जाइछ। 'पडिगम दशपदी होइत अछि आ ठाम-ठाम एगारहम चरण सेहो होइछ जाहिमे भणिता रहैत छैक। तीन गोट सग्रहक रचयिता 'अप्पर' छलाह। सातम सग्रह सुन्दर' नामक ब्राह्मण कयने छलाह। एहि सातो सग्रहकें 'देवारम्' कहल जाइछ। आठम संग्रहक नाम 'तिरुवासगम्' थिक आ रचयिता छलाह 'मानिक्कवाशगर'। नवम संग्रह चोल शासक कन्दरादित्य (दशम-शताब्दी) देवारम्क अनुकरणपर रचने छलाह। दशम सग्रहक रचना 'तिरुमूलर' योगीक रचना थिकनि। एगारहम सग्रह प्रकीर्ण थिक।

---

१. शैवमत पृ० १७१-७२।

२. भण्डारकर, पृ० १३१-४०; शैवमत, पृ० १५८-६०।

एहिसँ अतिरिक्त तमिलभाषामे रचित 'पेरिय पुराण' अछि। दक्षिणक आलवार वैष्णव सन्त जकाँ पेरिय पुराणमे तिरसठि गोट शैव भक्तक विस्तृत परिचय देल गेल अछि। शैव दर्शनक व्याख्या कयनिहार चौदह गोट सिद्धान्त-शास्त्र अछि।

ई सभ द्रविडभूमिक शैवधर्ममे अत्यन्त मान्य स्थान रखैत अछि। ओहि ठाम 'देवारम्'क तुलना वेदसँ कयल जाइत छैक। ओतवे पवित्र मानल जाइछ जतबा वेद। एक दिस वेदक पाठ होइत छैक तँ दोसर दिस 'देवारम्'क। 'तिरुवासगम्'केँ उपनिषद्क समकक्ष मानल जाइछ। देवारम्क पद्दिगमक गान करबाक परिपाटी रहल अछि। पहिने ई दाक्षिणात्ये रागमे गाओल जाइत छल किन्तु पश्चात् ओहिमे उत्तर भारतीय रागक सेहो समावेश होमए लागल। संभव अछि जे द्रविड़ भूमिक एही शैव गीतक रचना ओ गानक परम्परा कर्णाट राजा नान्यदेव ओ हुनक सैन्य सभक संग मिथिलामे आयल हो। मैथिलीयोमे तँ ओहने रचनाक परम्परा भेटैत अछि।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे समस्त भारतमे शैवमत प्रसृत छल आ ओखन अछि। शैवमत वास्तवमे भारतक समवायिक संस्कृतिक द्योतक थिक। ई मत भारतीय जनताक आचार-व्यवहार, सभ्यता-संस्कृति, दर्शन-साहित्य, काव्य ओ कला, सभकेँ प्रभावित करत रहल अछि। रुद्र-शिवक विकासक इतिहासे रहल अछि समन्वयात्मक, किन्तु एकर उपासना पद्धति जहिया कहियो साम्प्रदायिक एवं असहिष्णु रूप धारण कयलक तहिये वैष्णव, शाक्त, जैन, बौद्ध वा अन्ये कोनो मतसँ ओकर संघर्ष भेलैक।

एहि संघर्षक क्रममे अन्य मत ओ सम्प्रदायसँ अनेक तत्त्व ग्रहणो कयलक। किछु सम्प्रदायक संग सामञ्जस्यो स्थापित भेलैक आ कतोक सम्प्रदायकेँ तँ आत्मसात्ते करबाक चेष्टा कयलक।

निष्कर्ष

साराश रूपमे देखैत छी जे वैदिक कालमे अन्तरिक्षक सघन मेघमे चमकैत विद्युत, ओकर संग भूयमान झंझावात, घनघोर गर्जन ओ पर्जन्य (वर्षा)क देवताक रूपमे रुद्रक कल्पना भेल छल। ई रुद्र देवता अति उग्र, भयकर ओ विनाशक छलाह। क्रमहि विघ्न, भयप्रद स्थिति ओ रोग-व्याधिक

कर्त्ता सेहो भ' गेलाह। किन्तु तकरे समानान्तर हुनक शुभ ओ मांगलिक रूप सेहो छल जे क्रमश: विस्तृत होइत गेल। रुद्रक उग्र तत्त्वक प्राबल्य छल अवश्य, किन्तु शिवतत्त्व सेहो विद्यमान छल। पशुपति, महाभिषग्, वृषभ आदि नामे रुद्र, शिव वा सौम्य छलाह। वैदिके कालमे, वेदमे उल्लिखित कतोक अन्य स्वतन्त्र देवता सभ तथा अन्यान्य आर्येतर जनजातीय समरूप देवता सभ रुद्रक संग एकाकार होइत चल गेल। शतरुद्रियमे एतत्सम्बन्धी प्रचुर प्रमाण सुरक्षित अछि। ब्राह्मण ग्रन्थ सभमे रुद्रक अष्टमूर्त्ति ओ तनिक आठ रूपक कल्पना कयल गेल। एहि सभमे 'गवेधुक होम' ओ 'त्र्यम्बक हबि' नामक रुद्रसम्बन्धी यज्ञविधानक वर्णन अछि। उपनिषद्मे रुद्रक शिव ओ सौम्य तत्त्व अत्यन्त विस्तृत भ' गेल। आब ओ रुद्र-शिव भ' गेलाह। रुद्र-शिवके परमब्रह्मक रूप प्रदान क' दार्शनिक चिन्तनक केन्द्रबिन्दु बना देल गेल। श्वेताश्वतर उपनिषद्मे ओ सांख्यपुरुष कहल गेलाह।

कर्मकाण्डक क्षेत्रमे रुद्रक उग्र ओ भयावह रूपक पूजन होइत छल। अधिकांश सूत्र ग्रन्थमे अनिवार्य रूपमे वर्णित 'शूलशव होम' सन भयावह यज्ञ-विधान तकर प्रमाण थिक। किन्तु हुनक सौम्य रूपकेँ नकारल नहि गेल अछि। विभिन्न सूत्रग्रन्थमे रुद्रक अष्टमूर्त्तिक विवरण भेटैत अछि, यद्यपि-नामावलीमे अन्तर देखल जाइछ। सूत्रे ग्रन्थ सभमे रुद्र-शिवक पत्नी ओ पुत्रक कल्पना भ' गेल छल। स्कन्द ओ विनायक देवताक अस्तित्व प्रकट भ' गेल जे परवर्ती कालमे शिवक पुत्र बनि गेलाह। गोटेक ठाम अन्तरिक्षक प्राकृतिक घटनाक प्रतीक रुद्र-देवताक मूर्तिक कल्पना सेहो भेटैत अछि।

एही क्रममे देखल गेल जे सिन्धुघाटीक सभ्यताक कोनो पशुपति देवताक समावेश रुद्रमे भ' गेल। सिन्धुघाटी ओ पश्चिम एशियामे उर्वरताक प्रतीक रूपमे मान्य लिंगोपासना रुद्र-शिवक संग सम्बद्ध भ' गेल जे लिंगो-पासना शैवमत ओ शिवपूजाक अनिवार्य तत्त्व बनि गेल।

सूत्र ग्रन्थमे रुद्र पत्नीक एकटा क्षीण कल्पनाक दर्शन भेल छल। तैत्तिरीय आरण्यकमे ओ स्थूल रूप धारण कयलक आ रुद्रशिवकेँ अम्बिकापति ओ उमापति कहल गेलनि। उमा हैमवती शिवपत्नी रूपमे पार्वती, गिरिजा बनलीह। रुद्र शिव योगेश्वर बनि गेलाह। विद्या ओ कलाक देवता बनलाह। पार्वती देवी रूपमे शक्ति-सम्प्रदाय ओ तन्त्र सम्प्रदायक अधिष्ठात्री बनलीह।

रामायण-महाभारत ओ पुराण सभमे रुद्रशिवक दार्शनिक पक्ष ओ

हिनकासँ सम्बद्ध कथा समूहक पुष्ट रूपक दर्शन होइत अछि। ई कथा समूह ओ दर्शन उत्तरोत्तर वृहत् होइत गेल आ ओएह लोकाराधन एवं शैव साहित्यक आधार भूमि बनि गेल।

भारतमे शैवधर्म अनेको बेर राजधर्म भेल आ एकर प्रसार दक्षिण-पूर्व एशिया धरि भ' गेल। एतेक विशाल देश ओ कालव्यापी धर्मक उपासना-पद्धतिमे भिन्नता होयब स्वाभाविक। अतः शैवोपासनाक क्षेत्रमे अनेक सम्प्रदायक जन्म भेल जाहिमे शैव, पाशुपत, कारुक सिद्धान्ती, कापालिक, प्रत्यभिज्ञा दर्शन, लिंगायत वा वीर शैव, द्रविड़ शैवधर्म आदि प्रसिद्ध अछि।

□

Scanned by CamScanner

द्वितीय अध्याय

मिथिलामे रुद्र-शिव

ऐतिहासिक सन्दर्भ

रुद्र-शिवक व्यक्तित्व निर्माणमे पूर्वोत्तर भारतक महत्त्वपूर्ण योगदान रहल अछि। पूर्वोत्तर भारत वा प्राच्यदेशमे विदेह, मगध, अंग, बंग, कलिंग आदि जनपदक गणना होइत छल। वैदिक वाङ्मयमे एहि भूभागक विशेष उल्लेख नहि भेटैत अछि। ऋग्वेदमे (३।५३।१४) कीकट देश आ तकर राजा 'प्रमगन्द'क उल्लेख अछि। यास्कक निरुक्त (६।३२)मे कीकटक अर्थ अनार्य-देश कहल गेल अछि। वायु पुराणक गया माहात्म्यमे कीकटक तात्पर्य मगध कहल गेल अछि।[1]

मगध ओ अंगक सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख अथर्ववेदमे (५।२२।१४) अछि जाहिमे ज्वरकेँ ओहि देशमे जाय हेतु कहल गेल अछि। मगधसँ बनल मागध शब्दक विभिन्न अर्थमे प्रयोग अथर्ववेदक पन्द्रहम काण्डमे, यजुर्वेदक वाजसनेयि संहिता (३।८), तैत्तिरीय ब्राह्मण (३।४।१।१) आदिमे अछि। बोधायन धर्मसूत्र (१।२।१३)मे मगध ओ अंग देशक वासीकेँ संकीर्ण योनिक कहल गेल अछि। कात्यायन श्रौतसूत्र (२२।४।२२, लाट्यायन श्रौतसूत्र (८।६।८६), कौशीतकी आरण्यक (७।१४), मनुस्मृति (१०।११), गौतम (४।१७) आदिमे मगध देश ओ मगधवासीकेँ हेय दृष्टिसँ देखल गेल अछि। वैदिक कालक बहुत पश्चात् धरि मगध आदि प्राच्य देश आर्यक हेतु वर्जित प्रदेश छल।

प्राच्यदेशमे सर्वप्रथम आर्य-प्रवेश विदेह जनपदमे भेल छल। ऐतरेय ब्राह्मण (८।१४)मे आर्य-देशक चर्चाक क्रममे 'विदेह'क स्वतन्त्र रूपसँ कोनो उल्लेख नहि अछि। अपितु काशी, कोसल, मगध ओ अंग देशक संगहि विदेहोकेँ 'प्राच्यदेशेमे अन्तर्भुक्त क' देल गेल अछि।

विदेह जनपदक पहिल वर्णन शतपथ ब्राह्मण (१।४।१।१०-१९)मे आयल अछि। विदेह-माथव अपन पुरोहित गौतम-रहूगणक संग सरस्वती नदीक तटसँ अग्नि-वैश्वानरक अनुसरण करैत सदानीराक तीर पर अयलाह। ओहिसँ पूर्व कोनो ब्राह्मण सदानीरा नदीकेँ पार नहि कयने छलाह। ओएह सर्वप्रथम वैश्वानरक आदेशसँ सदानीरा पार क' विदेह जनपदक निर्माण

---

1. जयन्ती स्मारक ग्रन्थ, पृ० ५१-५२।

कयल। अर्थात् शतपथ ब्राह्मणक रचना कालधरि विदेह जनपदमे आर्य निवास पूर्ण भ' गेल छल।

प्रश्न उठैत अछि जे एहि घटनासँ पूर्व वा समकालमे प्राच्यदेशमे कोनो मानव जातिक निवास छल अथवा नहि ? अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं सूत्रग्रन्थमे जत' कतहु अङ्ग, मगध आदिक उल्लेख अछि, ओहि ठाम ओतहुक निवासी सभकें हेय दृष्टिसँ देखल गेल अछि वा हीन धारणा व्यक्त कयल गेल अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे एहि भूभागमे आर्येतर जन-जाति वा वैदिकेतर आर्य जातिक निवास छल अवश्य।

अथर्ववेदक पन्द्रहम काण्डकें व्रात्यकाण्ड कहल जाइछ। एहि काण्डमे व्रात्यक विस्तृत चर्चा विशिष्ट स्थानक उल्लेख कयल गेल अछि। एहि व्रात्य-लोकनिक निवास स्थान प्राच्यदेश – विशेषक' मगध प्रदेश छल।[१]

शतपथ ब्राह्मणे (१३।८।१।५)मे पूर्व देशवासीकें 'आसुर्य' कहल गेल अछि। ओ प्राच्यजन विद्रोही स्वभावक छल।[२] अथर्ववेद कालमे सरस्वती नदीक तटसँ मगधपर्यन्तक मध्य देशमे 'असुर' जनक निवास छल। असुर सभक सम्पर्क मगध ओ अङ्गसँ छलैक। पाछाँ वैदिक आर्यसँ परास्त भ' मगधमे आश्रय ग्रहण कयलक।[३]

डा० सुनीति कुमार चटर्जीक अभिमत छनि जे प्रागैतिहासिक कालमे प्राच्यदेशमे गंगासँ उत्तर भागमे किरात जनसमुदायक आगमन ओ निवास भेल छल। हुनका मतें—'वैदिक साहित्यमे किरातक उल्लेख अबैत अछि—

१. Vratyas in Ancient India—R. K. Choudhary, page-33. 'The Vratyas seem to have belonged to Magadh though they might have moved in all directions. They had unlimited scope for expansion in the east, as in the north they were bounded by the Himalayas, in the south by the Vindhyas. The available materials at our disposal enable us to state that Magadh was cradle of the Vratya culture.

२. Origin and Development of Bengali Language—S. K. Chatterji, page. 45

३. VAI. page.23.

सम्भवतः ई लोकनि भारतमे आर्योसँ प्राचीनतर छथि। भारतक उत्तर-पूर्व दिशामे किरात जातिक आदि स्थान छल—पूर्व-चीन प्रान्त। चीनी, भोट, स्यामी, बर्मी—ई सब किरात समक जाति थिक। प्रागैतिहासिक युगमे ई लोकनि ब्रह्मपुत्रक उपत्यका तथा तिब्बत बाटेँ भारतमे अयलाह। समग्र आसाम, पूर्व ओ उत्तर बंगाल, उत्तर बिहार, भोटान, नेपाल, कुमायूँ-गढ़वाल—एहि सब स्थान पर पसरि गेलाह।'[1]

मिथिलामे व्रात्य सभक कहियो उपस्थिति छल वा नहि ताहि विषयमे कोनो विशेष प्रमाण नहि अछि। किन्तु मनुस्मृतिमे विदेहमे निवास कयनिहार नि(लि)च्छविजनकेँ व्रात्य कहल गेल अछि।[2] अवश्ये मनुस्मृतिक रचना कालसँ पूर्व विदेहमे व्रात्यक आवास छल आ ओएह लिच्छवि जनक रूपमे परिवर्तित भ' गेलाह। तेँ हुनका लोकनिकेँ मनुस्मृतियो व्रात्य कहलक। अतः गंग सँ दक्षिणे नहि उत्तरोमे व्रात्य समक विस्तार मान' पड़त।

प्राच्यदेश—मुख्यतः मगधमे 'असुर' सभक प्राबल्य छल, ताहि विषयमे प्रचुर प्रमाण भेटैत अछि। बार्हद्रथ जरासन्धकेँ असुर मानल जाइछ जकर राजधानी राजगृह छल। गयामे गयासुरक आवास छल जकरा विष्णु निष्कासित क' दने छलथिन। असुर नामक एकटा जनजाति औखन छोटानागपुरमे निवास करैत अछि। डाल्टन महोदय एहि असुर जातिकेँ प्राचीन असुर समसँ सम्बन्ध जोड़ैत छथि। असुर सभ्यताक अनेकशः पुरातात्त्विक अवशेष राँची हजारीबाग जिला सभमे पाओल जाइत अछि।[3] मिथिलामे सेहो दुइ गोट गढ़ असुरगढ़ नामसँ प्रसिद्ध अछि। एहि गढ़ सभमे ऐतिहासिक महत्त्वक अवशेष सभ उपलब्ध होइत अछि।[4]

किरात जनसमुदायक निवास गंगोत्तर प्रान्तमे छल तथा औखन किरातजनक विशाल समुदाय मिथिलाक उत्तर-पूर्वी हिमालय-क्षेत्रमे निवास करैत अछि। संभव अछि जे आर्य लोकनिक मिथिला आगमनक पश्चात् ओ सभ पर्वतीय क्षेत्र मात्रमे सीमित भ' जयबाक हेतु विवश भ' गेल हो। किछु

१. भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी—डा० सुनीति कुमार चटर्जी, पृ०५४।

२. मनुस्मृति, १०।२२

झल्लो मल्लश्च राजन्याद् व्रात्यान्निच्छवि रेव च।

३. Bihar through the Ages—R. R. Diwakar, P. 82. 114.

४. Select Inscriptions of Bihar—R. K. Chaudhary, Appendix, P. 17

Scanned by CamScanner

अंश जे हिमालयक पाद-प्रदेशमे रहि गेल, सैह प्रायः थारु जन समुदायक रूपमे मिथिलाक उत्तरी सीमापर अवस्थित अछि।

व्रात्य, असुर ओ किरात जातिक कोन-कोन अवदान आर्य-संस्कृति ग्रहण कयलक से तँ अनुसन्धानक विषय अछि। किन्तु रुद्र-शिवक रूप-निर्माणमे एहि जन-जातिक योगदान अवश्ये रहलैक अछि। व्रात्य लोकनिक संस्कृति ओ धार्मिक विश्वास वैदिक आर्यलोकनिसँ भिन्न छल। परन्तु अथर्ववेदक व्रात्य काण्डमे रुद्र देवताक संग व्रात्य लोकनिक घनिष्ठ सम्बन्धक परिचय भेटैत अछि। विद्वान लोकनि वात्यक मध्य शैव धर्मक अवस्थितिक अनुमान कयलनि अछि।[1] व्रात्य लोकनि रुद्र-शिवक उपासक छलाह जनिक प्रधान रूप छलनि रुद्र, ईशान ओ महादेव जे वस्तुतः एक व्रात्यक' विभिन्न अभिव्यक्त रूप छल।[2]

मनुक अनुसार लिच्छवि लोकनि व्रात्य क्षत्रिय छलाह।[3] कतोक ठाम वज्जिजनकेँ सेहो व्रात्य मानल गेल अछि।[4] वज्जिजन केर दुइ अंग छल, लिच्छवि ओ वैदेह।[5] अतः कतोक विद्वान्क इहो धारणा छनि जे 'वैदेह' लोकनि सेहो व्रात्येमूलक छलाह।[6] मनुस्मृति (१०।२३)मे 'कारुष' नामक एक जातिकेँ व्रात्य वैश्य कहल गेल अछि।[7] 'कारुष' वा 'कारूष' नामक एकटा जनपदो छल जकर स्थिति कोसल ओ विदेहक मध्यमे अथवा मगधसँ अव्यवहित पश्चिम मानल जाइछ।[8] प्रायः मनु द्वारा उक्त व्रात्यवैश्य, कारुष जातिक ओ जनपद रहल होयत। कारुषसिद्धान्ती नामक शैव सम्प्रदायक सम्बन्ध सेहो एहि जातिसँ भ' सकैत छैक।

१. Origin and Development of Bengali Language, p. 46. '.........The presence of Saiva cuet amoung the Vratyas and certainly a cult quite different from that presented by the Vedic world.
२. VAI. P. 37
३ VAI. P. 28; मनुस्मृति, १०।२२ 'व्रात्यान्निच्छविरेव च'
४. VAI. P. 140.
५. History of Mithila--U. Thakur, P. 107-8.
६. Ibid P. 22.
७. मनुस्मृति १०।२३।
८. VAI. P. 120, 133-39.

पूर्व देशवासी जन सेहो व्रात्यस्तोम द्वारा शुद्ध कयल जा सकैत छल।[१] ई सिद्ध करैछ जे व्रात्ये जन-समूहमे असुरो सभक गणना होइत छल। सभसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि असुर सभक रुद्र शिवक संग घनिष्ठ सम्पर्क।[२] ऋग्वेद (५।४२।११)मे रुद्रकेँ असुर कहल गेलनि अछि। संभव अछि जे असुर सभक रुद्र-सभ देवता रुद्रक संग मीलि गेल हो आ रुद्रक एकटा नाम असुर सेहो पड़ि गेल हो। पारसी लोकनिक प्रधान देवता 'असुर' छलाह जे 'अहुर मज्दा' कहल जाइत छथि। दोसर, इहो भ' सकैछ जे रुद्रक कोनो विशेष रूप 'असुर' रहल हो जकर विशेष रूपसँ उपासक होयबाक कारणे ओहि समूह विशेषकेँ 'असुर' वा 'आसुर्य' कहल गेल हो। रामायण-महाभारत सँ ल'क' पुराण धरि रुद्र-शिव आ असुर जनक मध्य आत्मीय भावक चित्रण देखैत छी। एहिसँ ई अनुमान प्रबल भ' जाइछ जे असुर सभ रुद्र-शिवक एकान्त उपासक छल।

पुराणमे वाणासुरक शिवभक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। एहि वाणासुरक राजधानीक प्रसंग कतोक किंवदन्ती अछि। तदनुसार वाणासुरक राजधानी पड़ोसी नेपालमे ओ आरासँ चारि-पाँच कोस पच्छिम 'मसाढ़' नामक गाममे मानल जाइछ'।[३] आसामक तेजपुर नामक नगरकेँ सेहो शोणितपुर मानल जाइछ। ओहो तँ प्राच्येदेशमे अबैत अछि। वाणासुरक राजधानी जत' कतहु होउक किन्तु एहि क्षेत्रसँ ओकर कोनो ने कोनो सम्बन्ध अवश्य छल होयतैक। मिथिलामे एकटा नदीक नाम वाणासुरक नाम पर वाणगंगा (जकर तद्भव रूप वनगंगा वाबलगङा) अछि। दुइ गोट प्राचीन वाणेश्वर महादेवक स्थान अछि—एकटा माधोपुर (दरभंगा) तथा दोसर देवना गोपाल (सहरसा)मे।

वाल्मीकीय रामायण ((१।२४) मे 'मलद' ओ 'करुष' नामक दुइ गोट जनपदक उल्लेख भेटैत अछि जे मगधसँ पश्चिममे छल। रामायण कालमे ओकर नाममात्र शेष रहि गेल छलैक। करूषसभ व्रात्य छल से ऊपर देखल अछि। कहल जाइछ जे एहि उभय जनपदक निवासी शैव छल। 'कारीसाथ' ओ 'मसाढ़' गामकेँ ओकर अवशेष मानल जाइछ। 'ओहि ठाम पृथ्वीसँ

१. VAI.P. 23; शतपथ ब्राह्मण, ५।३।३।२।

२. VAI. P. 36

३. जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ, पृ० १५७, ४६४।

हजारो शिवलिंग बहरायल अछि। ई ओहि जनपदक निवासीक शैव होयब सिद्ध करैत अछि।[1]

एस्० सी० सरकार रामायणसँ पूर्व युगक किछु किंवदन्तीक उल्लेख कयलनि अछि; तदनुसार अज-एकपाद (शिवकहस्तिरूप) एवं कूर्म (विष्णुक एक रूप) क उपासकक मध्य संघर्ष भेल छल। ओकर घटनास्थल गंगा-गंडकीक संगम छल जकरा शिव ओ विष्णुकेँ समन्वित क' हरिहरक्षेत्र अथवा गजेन्द्र मोक्ष क्षेत्र कहल जाइछ।[2] हुनका मतेँ कामदहनक घटना सेहो हिमालयक एही क्षेत्रमे भेल छल तेँ एकरा कामाश्रम सेहो कहल जाइत छलैक।[3]

वाल्मीकीय रामायण (१।२३) मे कामाश्रम ओ कामदहनक घटनाक स्थान अङ्गदेश कहल गेल अछि।[4] अतः कामाश्रम ओ कामदहन घटनाक स्थान मिथिलाक सन्निधिमे छल से निश्चित।

किरात जनसमुदायक सम्बन्ध रुद्र-शिवसँ छल तकर प्रमाण महाभारतमे किरातार्जुन युद्धक कथामे भेटैत अछि। किरात देशमे शिव अर्जुनसँ युद्ध करैत छथि।[5] डा० यदुवंशीक अभिमत छनि जे— हुनक किरात वेशसँ हम ई अनुमान लगा सकैत छी जे महाभारत कालसँ पूर्व कोनो समय शिव एहि किरात जातिक एक देवताकेँ आतमसातक' लेने छलाह।[6]

यजुर्वेदक शतरुद्रिय (तैत्तिरीय संहिता-४,५।१; वाजसनेयि संहिता, अध्याय-१६)मे रुद्र-शिवकेँ 'गिरिशंत' 'गिरित्र,' 'गिरिश,' गिरिचर,' 'गिरिशय' आदि उपाधि देल गेल छनि। ई सभ रुद्र-शिवक पर्वत-निवासिता सूचित करैत अछि। एकटा उपाधि 'वनानांपति' ओ दोसर उपाधि 'कृत्तिवसान; केर

---

१. तत्रैव, पृ० ५०।

२. वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ११५; History, of Mithila, P. 115.

३. तत्रैव, पृ० ४६।

४. अशरीरः कृतः कामः क्रोधाद् देवेश्वरेण।
अनङ्ग इति विख्यातस्तदा प्रभृति राघव॥
सचाङ्ग विषयः श्रीमान् यत्राङ्गं स मुमोच ह।
तस्यायमाश्रमः पुण्यस्तस्येमे मुनयः पुरा॥
(वाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड, सर्ग-२३)

५. महाभारत, वनपर्व, अध्याय-३५, ३८-४०।

६. शैवमत, पृ० ७४।

Scanned by CamScanner

प्रयोग भेल अछि। ई रुद्र-शिवक चर्मवस्त्रधारी वनवासी होयबाक संकेत करैत अछि। किरात जाति पर्वतीय वनवासी तथा चर्मवस्त्रधारी होइत छल आ औखन अछि। तँ की ई किरात जातिक आत्मासात कयल गेल रुद्र-शिवक समरूप देवताक विशेषता छल ? ई संभव अछि। पौराणिक कालमे कैलासपर शिवक आवास, पत्नी रूपमे हिमालयपुत्री पार्वती इत्यादि किरात जातिक देन भ' सकैछ। कारण ई समस्त क्षेत्र किरात जातिक आवास भूमि छल। पार्वतीक माता मयनाक प्रतिरूप एकटा मयना-पर्वत सेहो अछि। ई मयनापर्वत मिथिलाक उत्तरी सीमा पर स्थित वराह-क्षेत्रसँ पाँच-सात कोस उत्तरमे किरात प्रदेशमे विद्यमान अछि।

एवं प्रकारेँ प्रागैतिहासिक ओ ऐतिहासिक कालमे मिथिलाक चतुर्दिक रुद्र-शिवोपासक जातिसभ विद्यमान छल। ओकर सभक प्रभाव एहि क्षेत्रपर पड़ब स्वाभाविक छल। संगहि ओहिमेसँ कतोक जातिक आवास मिथिला छल से देखल गेल अछि।

आब मिथिलामे रुद्र-शिवक स्थितिक पर्यालोचन अपेक्षित अछि। मिथिला रुद्र-शिवक स्वरूप-निर्माण ओ विकासक्रममे महत्त्वपूर्ण योगदान कयने अछि। ओ योगदान भेल छल शतरुद्रिय'क निर्माण द्वारा। शतपथ ब्राह्मणक रचना कालधरि विदेहमे आर्यलोकनि पुनर्वासित भ' गेल छलाह। ओहि आर्य लोकनिक संग वैदिक रुद्र देवताक उपासना सेहो आयल होयत। किन्तु ओहिसँ पूर्व, समकाल ओ परवर्त्तीकालमे विदेहक संगहि समस्त प्राच्यदेशमे जन-जाति वा वैदिकेतर आर्यजातिक निवास छल। ओहिमेसँ बहुतो जातिक देवता रुद्र-शिव वा तत्सम कोनो देवता छलाह। शतरुद्रियमे ओहि समस्त देवताक समीकरण प्राचीन वैदिक रुद्रक संगक' देल गेल। शतरुद्रिय शुक्ल यजुर्वेद (वाजसनेय संहिता) क महत्त्वपूर्ण अंग थिक। शुक्ल यजुर्वेदक संकलन-कर्त्ता याज्ञवल्क्य कहल जाइत छथि। शतपथ ब्राह्मण (१४।९।४।३३) मे कहल गेल अछि जे वाजसनेय याज्ञवल्क्य सूर्यक आराधना क' शुक्ल यजुर्वेद प्राप्त कयल।[1] महाभारत (शान्ति० ।३१२) मे वर्णन अछि जे याज्ञवल्क्य वैशम्पायनक शिष्य छलाह। गुरुसँ मतान्तर भ' गेलाक कारणे ओ गुरुसँ अधीत विद्याक परित्याग क' पुनः सूर्योपासना क' शुक्ल यजुर्वेदादि प्राप्त कयल विष्णुपुराण (३।५) श्रीमद्भागवत् (१२।६।६१-७४) एवं अन्य पुराण सभमे किछु कम-वेश अन्तरक संग ई कथा आयल अछि।

---

१. 'आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यनायन्ते'।

याज्ञवल्क्य मिथिलावासी छलाह, एहिमे सन्देहक स्थान नहि। जनकक संग याज्ञवल्क्यक सम्बन्ध अत्यन्त विश्रुत अछि। विदेह भूमि ओ जनकक सर्वप्रथम परिचय देनिहार शतपथ ब्राह्मण जनक-याज्ञवल्क्य-संवादसँ भरल अछि (११।६।२)। तहिना वृहदारण्यक-उपनिषद्मे सेहो जनकक राजसभामे अपन दार्शनिक सिद्धान्तक प्रतिपादन करैत याज्ञवल्क्यकेँ देखैत छियनि। ब्रह्मवादीक रूपमे गार्गी मैत्रेयीक प्रश्नक उत्तर द' क' एक सहस्र गोकेँ हाँकि क' ल' जाइत छथि (बृहदारण्यक-२।४,३।१।१-२,४।५)। याज्ञवल्क्य स्मृति (१।२) तँ स्पष्टे हुनका 'मिथिलास्थः सः योगीन्द्रः' घोषित करैत अछि।

अतः प्राच्यदेश स्थित विदेहवासी याज्ञवल्क्य शुक्लयजुर्वेदक संकलन क' ओकर शतरुद्रिय नामक अध्यायमे आर्य देवता रुद्र तथा हुनका संग समाविष्ट अन्य देवताक गुण, चरित्र, उपाधिक संगसंग प्राच्य देशवासी व्रात्य, असुर, किरात एवं अन्य जनजाति, विभिन्न प्रकारक कर्म (सुकर्म वा कुकर्म) कयनिहार आर्य-वहिष्कृत जातिक रुद्रक सम-स्वभाव ओ प्रकृतिवला देवता सभकेँ रुद्र देवतामे समेटि रुद्रकेँ विराट् स्वरूप प्रदान कयलनि। आर्यजातिक संगठन ओ सांस्कृतिक विस्तारक इतिहासमे याज्ञवल्क्यक ई कृति अद्वितीय घटना थिक। संभव लगैत अछि जे एही विचारधाराक कारणे अपन गुरुसँ मतान्तर भेल छलनि।

शतपथ ब्राह्मण ओ वृहदारण्यक उपनिषद्क याज्ञवल्क्य तथा याज्ञवल्क्य-स्मृतिक रचयिताक अभिन्नतामे सन्देह कयल जाइछ।[1] किन्तु एहि स्मृतिमे शुक्ल यजुर्वेदक अनुशरण कयल गेल अछि।[2] एही स्मृतिमे याज्ञवल्क्यकेँ आरण्यक रचनाक श्रेय देल गेल छनि (३।११०)। ई आरण्यक वृहदारण्यक भ' सकैत अछि।

एहि स्मृतिक 'गणपति कल्प प्रकरण' मे कर्म-विघ्न-सिद्ध्यर्थ विनायक महागणपतिक' पूजा-विधान देल गेल अछि। एहिठाम स्वाहा-समन्वित छओ गोट विनायकक नाम देल अछि— मित, संमित, शाल, कटङ्कट, कूष्माण्ड ओ राजपुत्र। विनायकसँ उपसृष्ट व्यक्तिकेँ बड़ अमंगल ओ अशुभ घटना सभ होइछ तेँ विधानपूर्वक ओकर पूजा शान्तिक प्रक्रिया देल गेल अछि। ओहि

---

१. याज्ञवल्क्य स्मृति-सं० नारायणशास्त्री खिस्ते, पृ० १-३; History of Dharmsastra ,Vol. I, P. 168-90.

२. History of Dharmsastra, Vol. I, P. 169

क्रममे विनायक-जननी अम्बिकाक दूभि, सरिसो ओ पुष्पादिसँ पूजन क' अर्घ्य ओ पुष्पांजलि द' रूप, यश, ऐश्वर्य, पुत्र, धन, सर्व काम-पूर्तिक याचनाक विधान देल गेल अछि । आगाँ पुनः सिद्धि-प्राप्त्यर्थ प्रत्यह आदित्य (सूर्य), स्वामी (कार्त्तिकेय) ओ महागणपतिक पूजाक विधान अछि (१।२७१-९४) ।

याज्ञवल्क्य स्मृतिमे गीतज्ञक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे कथंचित् योगसँ गीतज्ञ परमपद नहि पबैत अछि तँ रुद्रक अनुचर भ' हुनकहि संग आनन्दित होइछ—

गीतज्ञो यदि योगेन नाप्नोति परमंपदम् ।
रुद्रस्यानुचरोभूत्वा तेनैव सह मोदते ॥ (३।१६) ।

रुद्र-शिवक संग योग साधनाक सम्बन्ध देखि चुकल छी । एहि स्मृतिमे याज्ञवल्क्यक 'योगीश्वर' ओ 'योगीन्द्र' उपाधि देखैत छियनि । ई कोनो योग-शास्त्रक रचना सेहो कयने छलाह—

योगशास्त्रं च मया प्रोक्तं ज्ञेयं योगमभीप्सिता । (३।११०) ।

ई सभ सिद्ध करैत अछि जे याज्ञवल्क्य रुद्र-शिवक तत्त्वज्ञ छलाह एवं ओकर उपासना-क्षेत्रमे नव्य पथक संधान कयलनि । एहिसँ ई बात स्वतः सिद्ध भ' जाइछ जे प्राच्यदेशक संग विदेहभूमि[1] सेहो रुद्र-शिव-भावापन्न छल । यद्यपि ओहिमे बहुरूपता ओ बहुविधता छलैक जकरा याज्ञवल्क्य एक सूत्रमे ग्रथित क' एकरूपता प्रदान कयल जकर परिणाम थिक रुद्राध्याय वा शतरुद्रिय ।

मिथिलाक शिव-सम्पर्कक चर्चा परवर्त्तीकालमे सर्वप्रथम रामायणमे भेटैत अछि । मिथिलाक शासक जनकलोकनिक शिव-सान्निध्यक वर्णन अनेक रामायणमे भेटैत अछि । निमिक छठम पीढ़ीमे देवरात छलाह जनिका प्रति शिवक विशेष कृपाभाव छलनि । वाल्मीकीय रामायणक बालकाण्डमे शिव द्वारा देवरातकेँ न्यास रूपमे धनुष देबाक उल्लेख दुइ स्थलपर कयल गेल अछि। यद्यपि दुहूमे दुइ प्रकारक विवरण अछि । प्रथम प्रसंगमे कहल गेल अछि जे जाहि धनुषसँ शिव दक्ष-प्रजापतिक यज्ञमे समस्त देवताकेँ परास्त कयने छलाह, से धनुष देवरातकेँ न्यासरूपमे प्रदान कयलथिन (बाल० सर्ग ६६।८-१२) । दोसर प्रसंगमे कहल गेल अछि जे विश्वकर्मा द्वारा दुइ गोट धनुषक

१. Bihar Through The Ages, P. 225.

निर्माण भेल। देवगण एकटा धनुष शिवकें देलथिन जखन ओ त्रिपुरासुरकें मारबाक नेत बिदा भेलाह. दोसर धनुष विष्णुकें देलथिन। त्रिपुरासुर-वधक पश्चात् देवगण द्वारा दुहूक बलक जिज्ञासा भेलनि। तकर पूर्त्ति हेतु ब्रह्मा, शिव ओ विष्णुमे युद्ध करा देलथिन। किन्तु विष्णुक हुंकारेसँ शिवक धनुषक जृम्भन भ' गेलनि। अतः शिव अति क्रुद्ध भ' क' ओ धनुष-वाण देवरातकें द' देलथिन तथा विष्णुवला धनुष परशुरामक पितामह ऋचीक मुनिकें भेटलनि (बाल० सर्ग ७५।११-२१)। देवरात द्वारा न्यास रूपमे गृहीत ओहि शिव-धनुषकें राम भग कयने छलाह।

महारामायणमे कहल गेल अछि जे रावणेक भाँति सीरध्वज जनक सेहो प्रतिदिन शङ्करक पूजा कर' कैलास जाइत छलाह। वेद-विषयक विवादमे रावण जनकसँ पराजित भ' गेल। शङ्कर रावणकें चेता देलथिन जे अहाँ हिनकासँ युद्धोमे पराजित भ' जायब। गुरुक बात पर विश्वास क' रावण जनकक सामर्थ्यकें स्वीकार कयल आ सर्वत्र विजयी भेलो पर कहियो विदेह पर आक्रमण नहि कयल।[1]

कतिपय पुराण ओ तन्त्रग्रन्थमे मिथिलाक शैवतीर्थ ओ शिव-लिंगक चर्चा, उल्लेख, वर्णन वा माहात्म्य कहल गेल अछि। एहिमे बृहद्विष्णुपुराणक अन्तर्गत 'मिथिला माहात्म्य' उल्लेखनीय अछि। मिथिला-माहात्म्य २२ अध्याय मे पूर्ण अछि। एकर एक अध्यायमे कथा अछि जे एक बेर ब्रह्मा द्वारा निज पुत्री-गमनक चेष्टा पर क्रुद्ध भ' शिव त्रिशूलसँ हुनक माथ काटि देलथिन। किन्तु शिव कें ब्रह्महत्या लागि गेलनि आ ब्रह्माक माथ हुनका हाथमे सटि गेलनि। पार्वती अपन पतिकें ब्रह्महत्यासँ पीड़ित देखि विष्णुक ओत' निवेदन कयलनि। ओत' उपस्थित नारदक उपदेशक अनुसार शिव मिथिला नगरस्थ महाराजसरमे स्नान क' ब्रह्महत्याक पापसँ मुक्त भेलाह।[2]

एहिमे जनकक राजधानी मिथिलापुरक विस्तारसँ परिचय दैत ओकर चतुर्दिक् स्थित विशिष्ट शिवलिंग-शिलानाथ, कपिलेश्वर, कूपेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, जलाधिनाथ, क्षीरेश्वर, मिथिलेश्वर एवं भैरवक वर्णन अछि। एहू-ठाम देवरात द्वारा शिवकें तुष्ट क' धनुष प्राप्त करबाक उल्लेख कयल गेल अछि।

---

१. 'मिथिलाङ्क, पृ० १३५।

२. मिथिला-माहात्म्य, पशुपति प्रेस, काठमाण्डू, अ० १६, पृ० ४२-४५।

Scanned by CamScanner

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा 'मिथिला तीर्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थक रचना भेल छल। एहिमे मिथिलाक शैवतीर्थ सभक पौराणिक प्रमाण सभ एकत्र कयल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे मिथिलामाहात्म्योक्त उपर्युक्त शिवलिंग ओ तकर पूजाक संकल्प वाक्य ओ पूजा विधान प्रदत्त अछि। स्कन्द पुराणक हिमवत् खण्डक आधारपर मिथिलास्थ 'जलेश्वर', चण्डेश्वर; लिंगपुराणक आधारपर 'हलेश्वर' तथा कूर्मपुराणक आधार पर पुनः 'जलेश्वर'क संकल्पवाक्य एवं पूजा विधान अछि। यामलसारोद्धार नामक तन्त्रग्रन्थक आधार पर सिंहेश्वर, कपिलेश्वर, ईशाननाथ, मणीश्वर, कामदानाथ, भुवनेश्वर, कुशेश्वर, ओ भैरवक सकल्प वाक्य ओ पूजा-विधान अछि।

वृहद् विष्णुपुराणक मिथिला माहात्म्य जकाँ यामलसारोद्धार नामक तन्त्र ग्रन्थमे सेहो 'मिथिलाखण्ड' आयल अछि। ओहीमे मिथिलास्थ उपर्युक्त शिवलिंग सभक उल्लेख अछि। किन्तु मिथिलाखण्डमे किछु और शिवलिंगक उल्लेख अछि, यथा—शिलानाथ, गाण्डीवकेश्वर, जलाधीश (जलाधिनाथ ?) ओ जलेश्वर। यामलसारोद्धारक मिथिलाखण्ड पार्वती-नन्दिकेश्वर, शिव-नारद तथा शिव-जनकक संवादरूपमे अछि। एहि तन्त्रक अनुसार सीताराम-विवाहक अवलोकन हेतु शिव स्वयं मिथिला आयल छलाह। मिथिलाक चारू दिशाक पंचवृक्षमे उत्तर दिशाक मन्दार ओ देवदारु शिव अपनहि हाथेँ रोपने छलाह। मिथिलाक तीन गोट नदी—बिरजा, जमुनी ओ दुग्धवतीकेँ क्रमशः गणेश, भैरव ओ रुद्र-हनुमानक शरीरसँ निःसृत कहल गेल अछि।

तन्त्र चूडामणिमे कहल गेल अछि जे गण्डकी तीर पर सतीक गाल तथा मिथिलापुरीमे बाम स्कन्ध खसल छल।[1] ओहि दुहू स्थान पर सिद्धपीठ बनि गेल। कविवर लालदास एहि दुहू सिद्धपीठक वर्णन महेश्वरविनोदमे कयने छथि—

> खसल गण्डकी तीरमे देविक दहिना गाल जहाँ।
> भेलिह गण्डकी देवता चक्रपाणि रक्षपाल तहाँ॥
>
> तथा—मिथिलापुरमे बाम स्कन्ध खसिपड़ल महोत्तम।
> शक्तिमहादेवी महोग्र भैरव तहँ सत्तम॥[2]

---

१. मिथिला-तीर्थ-प्रकाश—श्रीकृष्ण शर्मा, पृ० ९३।

२. महेश्वर-विनोद—कविवर लालदास, पृ० ७४-७५।

Scanned by CamScanner

पुराण ओ तन्त्रधरिक मिथिलामे रुद्र-शिव-भावनाक अस्तित्वक प्रमाण ऊपर देखल गेल अछि, आब ऐतिहासिक प्रमाण द्रष्टव्य। मिथिलाक आरम्भिक इतिहास पुराणादिसँ भिन्न, अन्धकाराच्छन्न अछि। अतः ओहि कालक प्रचुर प्रमाण उपलब्ध नहि अछि। लिच्छवि विदेह लोकनिक वज्जि गणतन्त्र ईसा-पूर्व ६०० वर्षसँ ३२६ वर्ष धरि पूर्ण शक्तिशाली रहल, किन्तु ओहूसँ अधिक शक्तिशाली मगध सम्राट अजातशत्रु द्वारा छिन्न-भिन्न क' देल गेल। तत्पश्चात् मगधक ओ अन्य प्रान्तक शक्तिशाली राजवंश सभ, यथा—शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग, कण्व, आन्ध्र, प्रतिहार, कुषाण आदिक अधिकारक स्थापना ओ च्युति होइत रहल। एहि वंश सभक राजधर्मसँ मिथिला प्रभावित होइत रहल होयत। कोन वंशक की राजधर्म छल से विशिष्ठ अनुसन्धानक विषय अछि। किन्तु कुषाण वंशक राजधर्म छल शैव से विख्यात अछि। कुषाणवंशीय राजा लोकनिक शिव, वृषभ, त्रिशूल अंकित अजस्र मुद्रा सभ उत्तर भारतक विभिन्न भागमे उपलब्ध भेल अछि। बिहारक विभिन्न भागमे तथा मिथिलाक वैशाली क्षेत्रमे सेहो ई मुद्रा सभ भेटैत अछि। वैशालीमे प्रथम शतीक लगपासक एकटा मोहर भेटल अछि जकरा मध्यमे नन्दी-वृषभ अंकित छैक। ओहि पर अंकित अभिलेखसँ पता चलैछ जे ओ महाक्षत्रप रुद्र-सिंहक दुहिता तथा महाक्षत्रप रुद्रसेनक भगिनी भुप्रदमाक मोहर थिक।[1]

कुषाण ओ गुप्त वंशक अन्तरालमे उत्तर भारतमे नागवंश वा भारशिव तथा वकाटक राजवंशक अभ्युदय भेल छल। नागवंशीय लोकनि शैव छलाह। ओ सभ अपना कान्हपर शिवलिंगक भार-वहन क' भगवान् शिवकेँ प्रसन्न रखैत छलाह। शिवलिंगक भार-वहन करबाक कारणे ओ लोकनि भारशिव कहल जाय लगलाह।[2] बिहारमे 'भर' नामक एकटा निम्नकोटिक जातिक अस्तित्व अछि। ओ सभ पश्चिमोत्तर प्रान्तक 'भर' सभसँ अपन सम्बन्ध जोड़ैत अछि।[3] के० पी० जायसवालक मत छनि जे जब्बलपुरक

---

१. History of Mithila, P. 181-82.

२. शिवाङ्क, पृ० ६००।
अंसभार सन्निवेशित शिवलिङ्गोद्वहन परितुष्ट समुत्पादित राजवंशानां"

३. See, R. K. Choudhary's Paper—'History of Begusarai in Sri Ramcharitra Abhinandan Granth, P. 480.

Scanned by CamScanner

भारशिव शासक सभ बघेलखण्ड होइत गंगा किनार धरि पहुँचल छल ।[१] भारशिव वंशसँ एहि 'भर' सभक कोनो सम्बन्ध होयब संभव अछि ।[२] मि० ओपर्ट महोदयक मत छनि जे बिहारमे 'भर' सभ बारहम शताब्दी धरि कतहु कतहु शासन करैत छल। कोनो भर-सरदार गयाक बराबर पहाड़मे एकटा शिवलिंगो स्थापित कयने छल।[३] मिथिलामे सेहो भर जातिक अस्तित्वक प्रमाण भेटैत अछि। 'भर' नामपर भरवाड़ा, भरवाड़ी, भौर, भौरा, भराम आदि अनेको गाम अछि। कहल जाइछ जे ओही गाम सभमे कहियो भर सभक निवास छल। चम्पारण, तिरहुत, बेगूसराय, मधेपुरा आदिमे भर सभक डीह भेटैत अछि। वर्णरत्नाकरक नगरवर्णनामे 'भरहर' नामक भिखारिक उल्लेख अछि।[४] वर्तमान मिथिलामे राजपूतक एकटा वर्ग 'भरसुरिया' कहल जाइछ। एहि दुनूक सम्बन्ध 'भर' सभ सँ होयब संभव अछि।

गुप्तवंशक शासनकाल भारतक स्वर्ण युग मानल जाइत अछि। ओहि कालमे तीरभुक्ति गुप्त साम्राज्यक प्रमुख अंग छल। गुप्त लोकनि धार्मिक दृष्टिकोणमे 'परम भागवत' छलाह, किन्तु शैवमत आग्राह्य नहि छलनि। वस्तुतः गुप्त राजा लोकनि ब्राह्मण धर्मक पोषक छलाह आ ओकरे दुइ गोट प्रमुख अंग छल वैष्णव ओ शैवमत।

समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ-अभिलेखमे गंगावतरण तथा पशुपति रूपमे शिवक उल्लेख अछि।[५] हुनक पुत्र चन्द्रगुप्त (द्वितीय)क समयक उदयगिरि शिलालेखमे सूचना अछि जे ओहि गुफाक निर्माण शम्भु वा शिव भक्तक लेल भेल छल।[६] स्कन्दगुप्तक बिहार-स्तम्भ-अभिलेखमे सेहो शिवार्चनक संकेत अछि।[७] गुनाइगढ़ शिलालेख सँ पता लगैत अछि जे परवर्ती गुप्तराजा वैन्यगुप्त शैवमतक अनुयायी छल।[८] गुप्तकालक कतोक मुद्रा सभ उपलब्ध

---

१. History of India (C. 150 A.D.—350A.D.), Journal of the Bihar Orissa Research Society, Vol. XIX, Part. 1-3, 1933, P. 219.

२. History of Begusarai, P. 480

३. Ibid. P. 480.

४. वर्णरत्नाकर, नगरवर्णना, पृ० २।

५. Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. III - J. Fleet, P. 257.

६. Abid, P. 35

७. Ibid, P. 50

८. Indian Historical Quarterly, Vol. VI, P. 57.

Scanned by CamScanner

भेल अछि जाहि सँ तत्कालक शैवमतकेँ राजस्वीकृतिक प्रमाण भेटैत अछि। समुद्रगुप्तक एकटा मुद्रामे त्रिशूल अंकित भेटैत अछि।[1] कुमार गुप्तक उपास्य कुमार कार्तिकेय छलथिन। हिनक मुद्रा सभमे कुमार कार्तिकेय वा हुनक वाहन मयूर अंकित अछि।[2] कुमार गुप्त (द्वितीय)क मुद्रामे त्रिशूल अंकित भेटल अछि।[3] स्कन्द गुप्तक एकटा नन्द-वृषभ युक्त मुद्रा प्राप्त अछि।[4]

ई सूचित करैत अछि जे गुप्तशासन कालमे शैवधर्मकेँ सम्मान्य स्थान छलैक। किछु अओरो प्रमाण सभ उपलब्ध अछि जाहि सँ एहि शासन कालमे उत्तर बिहारमे शैवधर्मक प्राबल्य सूचित होइछ। वैशालीमे एकटा चतुर्मुख शिव-मूर्ति उपलब्ध भेल अछि जकरा गुप्तकालक मानल जा सकैछ। ओ मूर्त्ति नेपालक पशुपतिनाथक मूर्त्तिसँ साम्य रखैछ।[5]

वैशालीमे शिव ओ शैवधर्म सम्बन्धी प्रचुर सामग्री उपलब्ध अछि। कोनो समयमे वैशाली बौद्धधर्मक केन्द्र छल अवश्य, किन्तु हम इहो नहि बिसरि सकैत छी जे वैशालीक शासक लिच्छवि लोकनि व्रात्य क्षत्रिय छलाह। तेँ रुद्र-शिवोक उपासना कोनहु रूपमे अवश्य वर्त्तमान छल होयत। गुप्त शासन कालधरि लिच्छवि जातिक सर्वथा लोप नहि भेल छल। गुप्त कालमे प्रायः वैशालीक चारू कोनपर चारि गोट चतुर्मुख महादेवक स्थापना कयल गेल छल। वैशाली नगरक वर्तमान अवशेषमे उत्तर-पश्चिम भागमे बनियाक चौमुखी महादेव, पूर्वोत्तर भागमे बेनीपुर ओ कामन-छपराक बीचमे चौमुखी महादेव, कोसाक निकट अग्निकोणमे गुप्त महादेव तथा नैऋत्य कोणमे धराराक निकट गुप्त महादेव विद्यमान छथि।[6]

बसाढ़क किलाक पश्चिम दिस पैघ झील अछि जकरा पूब दिस एकटा टापू जकाँ छैक। ओही टापूपर स्थित शिवमन्दिरक प्रधान मूर्त्ति अछि नन्दी पर बैसल महादेव।[7] हरिकटोरा मन्दिरमे मयूरासीन कार्तिकेयक मूर्ति

---

१. गुप्तकालीन मुद्राएँ—डा० अनन्त सदाशिव अल्तेकर, पृ० ३६।
२. तत्रैव, पृ० १७, १२५-२६, १४२-४४।
३. तत्रैव, पृ० १५८-५९।
४. तत्रैव पृ० १७७।
५. Bihar Through the Ages, P. 281.
६. वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० २५, १५६-५७, नक्शा चित्रफलक– ६।
७. पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली – विजयकान्त मिश्र, पृ० १४।

Scanned by CamScanner

वर्त्तमान अछि।[1] टी० ब्लाखके विशालक गढ़क उत्खननमे एकटा गणेशक मूर्ति भेटल छलनि।[2] डा० अल्तेकर ओ सीताराम रायके १९५०क उत्खननमे सोनक दूटा बड़दक मूर्त्ति भेटल छलनि जे प्रथमसँ तृतीय शताब्दीक मानल जाइछ।[3] ओहो प्रायः शिवक नन्दी-वृषभक मूर्त्ति थिक।

टी० ब्लाखके उत्खननमे ७२० गोट माटिक मोहर भेटल छलनि जे चारिम-पाँचम शताब्दीक गुप्तकालक ब्राह्मी लिपिक अभिलेखसँ युक्त छल।[4] ओहिमे एकटामे दुनू पीठ पर लिंग ओ त्रिशूलक आकृति तथा 'आम्रातकेश्वर' अभिलेख छैक। ई मोहर कोनो शिवमन्दिरक छल होयत।[5] किछु आओर मोहर सभ अछि जकर अभिलेख सभसँ सिद्ध होइछ जे ओहो सभ शिवमन्दिरसँ सम्बद्ध छल। ओहि मोहर से तीन गोट पर निम्नलिखित अभिलेख अछि—

(क) जयत्यानन्तो भगवान साम्वा।

(ख) जितं भगवतोऽनन्तस्य नन्देश्वरी वर स्वामिनः।

(ग) नमः पशुपते श्रेष्ठिसार्थवाह कुलिक निगम।[6]

गुप्त राजवंशक दुर्वल भ' गेलापर क्रमशः कन्नौजक मौखरी, बंगालक शशांक ओ थानेश्वरक वर्धन राजवंकश आधिपत्य बिहार पर भेल। डा० उपेन्द्र ठाकुरक मत छनि जे मगध ओ तिरहुत सहित समस्त बिहार मौखरीक प्रत्यक्ष शासनमे छल तथा परवर्त्ती गुप्त लोकनि मौखरीक नियन्त्रणमे सामन्त शासक छल[7]।

---

१. वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ, चित्रफलक—२।

२. पुरातत्त्व की दृष्टिमे वैशाली, पृ० १५।

३. तत्रैव, पृ० ४२, चित्रफलक—२९ ख।

४. तत्रैव, पृ० १८

५. वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थमे बी० सी० लाकेर निबन्ध।
Vaishali in Ancient Literature, P. 31.
"......One Specimen hearing the figure of a ling with a 'Trisul' on either side and legend 'Amratkeshwer' evidently belong to a temple".

६. Select Inscriptions of Bihar, P. 10 and Introduction P. 6

७. History of Mithila, P, 195

मगधक मौखरी शासकगणमे शैवधर्म विशेष मान्य छल।[१] मौखरी अनन्त वर्मन नागार्जुन पहाड़क वदात्तिका गुफामे अर्द्धनारीश्वरक तथा गोपी गुफामे कात्यायनीक मूर्ति स्थापित कयने छल तथा भवानीक नामसँ एकटा ग्राम दान कयने छल।[२] असीरगढ़सँ प्राप्त एकटा मोहरमे सर्व्ववर्माकेँ महेश्वर भक्त कहल गेल अछि।[३] नालन्दासँ प्राप्त एकटा मोहरमे अवन्तिवर्माकेँ 'परम माहेश्वर' कहल गेल अछि।[४]

मौखरीक पश्चात् बंगालक राजा शशांक मगध पर अधिकार क' लेलक। शशांक केर सहसरामसँ प्राप्त मोहरमे उपरिभागमे नन्दी-वृषभ अंकित अछि। शशांकक नन्दी-वृषभ, चन्द्र ओ शिव अंकित मुद्रा सेहो भेटल अछि। युवान्-च्याङक यात्रा विवरणसँ ज्ञात होइछ जे ओ बोधि-वृक्षक पूर्वीय मन्दिरमे बुद्धमूर्त्तिकेँ हटाय शिवमूर्त्ति स्थापित क' देने छल।[५]

छठम शताब्दीमे वर्धन राजवंशक अभ्युदय भेल। ओहि वंशक प्रतापी राजा हर्षवर्धनक अधिकार मगध-मिथिला धरि भ' गेल छलैक।[६] हर्षवर्धन बौद्धधर्मक प्रति अत्यन्त आदर रखितो शैवमतानुयायी छल। नालन्दासँ प्राप्त एकटा मोहरक अभिलेखमे हर्षकेँ 'परम माहेश्वरः महेश्वर इव सर्व्वसत्त्वानुकम्पः कहल गेल अछि।[७]

परवर्त्ती गुप्त शासक लोकनि आठम शताब्दी धरि बिहारक विभिन्न भागमे छिन्न-फुट शासन करैत रहल। देववारनाक अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे आदित्यसेनक पुत्र देवगुप्त, पौत्र विष्णुगुप्त एवं प्रपौत्र जीवितगुप्त (द्वितीय) 'परममाहेश्वर' छल।[८] आठम शताब्दीमे पालवंशक उदय भेल तथा समस्त

---

१. Socio-Religions, Economic and Literary Condition of Bihar (from Ca, 319 A.D. to 1000 A.D.)—Bhagwati saran Verma, P. 66
२. CII. P 221-28
३. Corpus Inscriptinum Indicarum, Vol III. P. 221-28
४. Select Inscriptions of Bihar, P. 19
५. भगवतीशरण वर्मा, पृ० ६६
६. History of Mithila, P. 197
७. Select Inscriptions of Bihar, P. 24
८. Ibid, P. 31-32; Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol.III, P. 215.

Scanned by CamScanner

प्राच्य भारत पालवंशक राजनीति ओ धर्मनीतिसँ आपन्न भ' गेल। मिथिला पर पालवंशक शासन विषयक प्रभूत मूर्ति, ताम्रपत्र आदि मिथिला क्षेत्रमे उपलब्ध भेल अछि। पाल राजा सभ अपना हेतु 'परमसौगत' विशेषणक प्रयोग करैत छल। ओ सभ बौद्धधर्मक पोषणो खूब कयलक। किन्तु तथापि अन्यो मत ओ धर्मक प्रति आस्थावान् छल। धर्मपालक राज्यक २६म वर्षमे गयामे केशव द्वारा चतुर्मुख महादेवक स्थापना कयल गेल छल।[१] देवपाल शैवधर्ममे रुचि रखैत छल।[२] नारायणपालक राज्यक ५४म वर्षमे राणक उच्चक पुत्र दारुक द्वारा पार्वतीक मूर्ति-दान कयल गेल छल[३]। महीपाल प्रथमक चतुर्थ राज्यवर्षमे विनायकक मूर्त्ति स्थापित कयल गेल छल।[४] गयाक अक्षयवट मन्दिरक विग्रहपाल (तृतीय)क पाँचम राज्यवर्षक अभिलेख ॐ ॐ नमः शिवाय' सँ आरम्भ होइछ तथा ओहिमे वटेश एवं प्रपितामहेश्वर नामक दुइ गोट शिवलिंग स्थापनाक सूचना अछि।[५] गोविन्दपालक गया-प्रस्तर-लेखमे सेहो सभसँ ऊपरमे शिवलिंग अंछि।[६]

उपर्युक्त दृष्टान्त सभ सिद्ध करैछ जे पाल राजा सभ शैवधर्मक प्रति साधारण अभिरुचि नहि रखैत छल, अपितु शिवलिंग, शिव-मूर्त्ति आदिक स्वयं स्थापना करैत छल। मिथिलाक बहुतो प्राचीन शिवलिंग ओ शिव, पार्वती, गणेश, नन्दी-वृषभ आदिक मूर्त्तिमे पालकालिक तक्षण-कलाक आदर्श भेटैत अछि। ई सभ पालशासन कालमे मिथिलामे प्रचलित शैवधर्मक लोकप्रियताक परिचायक थिक। एहि क्रममे सभसँ महत्त्वपूर्ण तथ्यक उद्घाटन होइत अछि नारायणपाल (८६३ इ०-९१० इ०) क १७म राज्यवषक भागलपुरसँ प्राप्त ताम्रपत्र। एहि ताम्रपत्रसँ ज्ञात होइछ जे ओ कलशपतोमे शिवभट्टारकक सहस्रायतनक निर्माणक' ओकर पूजा, वलि, चरु, सत्र, नवकर्म, शयन, आसन, भैषज्य, परिष्कार, अनवद्य भोगक हेतु 'पाशुपत आचार्य-परिषद्' केँ तीरभुक्तिक 'कक्ष विषय' मे 'मुकुतिका' नामक ग्राम शिवोत्तर रूपमे

१. Ibid, P. 10
२. भगवतीशरण वर्मा, पृ० ७१
३. Select Inscriptions of Bihar, P. 12
४. भगवतीशरण वर्मा, पृ० ७३
५. Select Inscriptions of Bihar, Intro. P. 13 and Inscriptions P. 78 81.
६. Ibid, P. 15

प्रदान कयने छलाह।[१] 'सहस्रायतन'सँ लगैत अछि जेना हजार गोट शिवमन्दिरक निर्माण कयल गेल छल।' मुकतिका ग्रामक स्थिति जे तीरभुक्तिक 'कक्ष' विषयमे निर्दिष्ट अछि तेँ कलशपोतकेँ सेहो कतहु तीरभुक्तिएमे होयबाक चाही। मिथिलामे जे कतोक प्राचीन शिवस्थान सभ अछि वा उत्खननमे शिव-मन्दिर सभ भेटैत अछि से नारायणपालक सहस्रायतनक भूमिसात अवशेष हो तँ कोनो आश्चर्य नहि।

कर्णाटवंशक स्थापनासँ पूर्व पालयुगक अवसानक सन्निधिमे 'सोमान्वयपजार्जुन वंशोद्भव महामाण्डलिक संग्राम द्वारा शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण कुमरस्वामीकेँ 'वणिगामा' ग्राम दान देल गेल छल। ई विषय पनिचोभ (दरभंगा) मे प्राप्त एकटा ताम्रपत्रसँ ज्ञात होइछ। संग्रामगुप्तक वंश सम्भवतः परवर्त्ती गुप्त वंशक कोनो प्रशाखा छल जे मिथिलाक कोनो भागमें सामन्तीय अधिकारक उपभोग करैत छल। ओहि ताम्रपत्रमे ओहि वंशक हेतु तथा ओहि वंशक यज्ञेशगुप्त 7 दामोदर गुप्त 7 देवगुप्त 7 राजादित्यगुप्त 7 कृष्णगुप्त 7 संग्रामगुप्तक हेतु 'परम माहेश्वर बृषभध्वज' विशेषणक प्रयोग कयल गेल अछि।[२] ई ओहि वंशक प्रगाढ़ शिव भक्तिक परिचायक थिक।

गुप्त एवं पालयुगक अनेकशः शिव, पार्वती, गणेश, एकमुख लिंग एवं चतुर्मुख लिंग आदि मिथिलाक शिवमठ, डीह, पोखरि आदिमे प्राप्त होइत रहल अछि। बहेड़ामे तँ एकटा शिवमन्दिरेक अवशेष प्रकाशमे आयल अछि जाहिमे जलधरी, प्रणाली, गणेश ओ किछु भग्न प्रतिमा सब बाहर भेल अछि।[३] उत्तर मुंगेरमे बेगूसरायसँ बारह मील उत्तर वीरपुरमे कारी पाथरक नन्दी-वृषक ऊर्ध्वमुख मूर्त्ति, नृत्यरत अष्टभुजी गणेशक प्रतिमा भेटल अछि। ई अत्यन्त विलक्षण मूर्त्ति अछि।[४] एहि प्रकार मूर्त्ति सभ हावीडीह, कोर्थु, भीठ भगवानपुर ओ अन्य शैवतीर्थ सभमे भेटैत अछि। द्विभुज, चतुर्भुज ओ षड्भुज प्रतिमा सभ सेहो मिथिलामे प्रचुर संख्यामे पाओल जाइछ। वन-

१. Ibid. P. 58-64.

२. Ibid. P. 113-117,

३. Some Recent Discoveries in North Bihar—R. K. Choudhary, Journal of the Bihar Research Society, Vol XLIII, Part-3-4, 1957, P. 370.

४. Ibid, P. 373.

Scanned by CamScanner

गाँव-महिसीक उग्रतारा मन्दिरमे भैरव, गणेश ओ पार्वतीक प्राचीन मूर्त्ति रक्षित अछि।[१] जयमंगलागढ़मे शिवपार्वतीक एक विशिष्ट मूर्त्ति अछि जाहिमे पार्वती दहिना हाथ शिवक दहिना कान्ह पर द' हुनक वाम जांघ पर सुखासनमे बैसल छथि तथा शिव बाम हाथसँ ध' पार्वतीक आलिंगन कयने छथि।[२] एहि प्रकारक उमा-महेश्वर मूर्त्ति मिथिलामे बहुतो ठाम देखल जाइछ।[३] एकमुख लिंग तथा चतुर्मुख लिंग वैशाली क्षेत्र, बेहट (बरौनी), पुरसौलिया (मधुबनी), जमथरि (लोहना रोड) आदि स्थानमे वर्तमान अछि।

मैथिल दार्शनिकक शैवत्व

मिथिलाक दार्शनिक सभक शैवधर्मक प्रति केहन दृष्टिकोण छल होयत ताहि सम्बन्धमे किछु तथ्यक अवलोकन क' लेब उपयोगी होयत। सांख्य दर्शनक सम्बन्ध शैवधर्मक संग छल। श्वेताश्वतर उपनिषद्‌मे देखल गेल अछि जे ओहिमे प्रतिपादित 'पुरुष' शिवे थिकाह। महाभारतमे सेहो शिव ओ सांख्यदर्शनक सम्बन्ध देखल गेल अछि। सांख्यदर्शनक आदि आचार्य सांख्यसूत्रक निर्माता कपिलमुनि मानल जाइत छथि। कपिलमुनिक निवास स्थान मिथिला मानल जाइत अछि। संगहि कपिलेश्वर नामक शिवलिंग हुनकहि द्वारा संस्थापित कहल गेल अछि। यामलसारोद्धारमे एहि कथाक सूचना अछि।[४]

मिथिलामे न्याय, मीमांसा, ओ वैशेषिक दर्शनक प्रचार विशेष रूपसँ रहल अछि। ताहूमे न्यायदर्शन पर मिथिलाक एकाधिकार जकाँ रहल अछि।[५] न्यायदर्शनक कर्त्ता अक्षपाद गौतम तँ मैथिल छलाहे,[६] वैशेषिक दर्शनक निर्माता

---

१. Ibid, P. 380.

२. History of Begusarai, P. 484.

३. See, Journal of the Bihar Research Society, Vol. XLIII Part 3-4, 1957, P. 64.

४. तथैवा राधितं लिङ्गं कपिलेन द्विजन्मना।
ईप्सितं साधितं यत्तत्कपिलेश्वर संज्ञितः॥
(यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड)

५. मिथिलाङ्क, राहुल सांकृत्यायनक निबन्ध 'बौद्ध नैयायिक, पृ० ११-१२।

६. मिथिलाङ्क, पृ० ११, ३१, ८९-९०; जयन्ती स्मारक ग्रन्थ, पृ० ४;
स्कन्दपुराण—आसीदब्रह्मपुरी नाम्ना मिथिलायां विराजिता।
तस्यां लसति धर्मात्मा गौतमो नाम तापसः॥

Scanned by CamScanner

कणाद सेहो मिथिले मानल जाइत छथि ।[1] वैशेषिक-सूत्र-भाष्यक अन्तमे भाष्य-कार प्रशस्तपाद सूत्रकार कणादकें वन्दना करैत कहलनि अछि जे ओ योग आ आचारसँ महेश्वरकें प्रसन्न क' वैशेषिक शास्त्रक रचना कयलनि । योग ओ आचार पाशुपत सम्प्रदायमे मान्य अछि । अतः कणाद पाशुपत वा शैव सम्प्रदायक अनुयायी रहल होयताह ।[2]

एकटा प्राचीन लेखक हरिभद्र 'षड्दर्शन समुच्चय' मे गौतम एवं कणादक दर्शनकें शैवधर्मक प्रचारक कहने छथि तथा षड्दर्शन समुच्चयक टीकाकार गुणरत्न (१४म शताब्दी) वैशेषिककें पाशुपत ओ न्यायदर्शनकें शैव कहने छथि ।[3] अक्षपाद गौतमक न्यायसूत्रपर वात्स्यायन न्यायभाष्यक रचना कयने छलाह । ओहि न्यायभाष्यपर उद्योतकर टीका लिखने छलाह । उद्योतकर अपन टीकाक अन्तमे अपनाकें 'पाशुपताचार्य' कहने छथि ।[4] उद्योतकरो मैथिले मानल जाइत छथि ।[5]

आगाँ चलि क' एही अध्यायमे देखब जे षड्दर्शनटीकाकार वाचस्पतिमिश्र ओ प्रसिद्ध नैयायिक उदयन आ दार्शनिक सभ अपन-अपन ग्रन्थमे कोन रूपमे शिवक वन्दना कयने छथि ।

एहि सभसँ सिद्ध होइत अछि जे मैथिल दार्शनिको लोकनिक विचारधारा कोनो ने कोनो रूपमे अवश्ये शैव भावापन्न छलनि । वस्तुतः ई दार्शनिक लोकनि याज्ञवल्क्यक संस्थापित परम्पराक अव्याहत शृंखलाक रूपमे रहलाह अछि ।

मिथिलाक संस्कृत शैव साहित्य

मिथिलामे व्याप्त शैवभावनाक अभिव्यक्ति संस्कृत साहित्यमे प्रचुर मात्रामे भेल अछि । एहि ठामक मनीषीलोकनि शिव-पार्वतीत्यादिकें आलम्बन बनाय विभिन्न प्रकारक श्लोक, स्तुति, नाटक, काव्य आदिक रचना करैत रहलाह । संगहि एहि ठामक धर्मशास्त्री लोकनि शिव-विषयक पूजा-पटल वा

---

१. मिथिलाङ्क, पृ० ३१ ।
२. भण्डारकर, पृ० ११७ ।
३. उपरिवत् ।
४. उपरिवत् ।
५. मिथिलाङ्क, पृ० ११-१२ ।

Scanned by CamScanner

पूजा-पद्धतिक रचना करैत रहलाह अछि। संस्कृतक ओहि शैव साहित्यकें निम्नलिखित वर्गमे बाँटि सकैत छी—

१. मंगल ओ स्फुट श्लोक
२. काव्य
३. स्तुति
४. नाटक
५. टीका ग्रन्थ
६. पूजा पटल वा पूजा पद्धति

मंगल ओ स्फुट श्लोक

ग्रन्थक रचना वा प्रतिलिपिमे निर्विघ्न समाप्ति हेतु सभसँ पहिने देव-वन्दना आवश्यक मानल गेल अछि—

'मङ्गलादीनि मङ्गलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते।'

वा 'विघ्न विघातकत्वम्मङ्गलम्।'

ग्रन्थकार वा प्रतिलिपिकार सभसँ पहिने अपन इष्ट वा श्रद्धेय देवताक स्मरण अथवा वन्दना कैए क' अग्रिम कार्य करैत छथि। ग्रन्थारम्भमे कोनो ने कोनो देवताक नमन करबाक परिपाटी समस्त भारतमे रहल अछि। मिथिलोमे ओहि परिपाटीक पालन स्वाभाविक। मिथिलामे लिखित ग्रन्थ सभमे विशेष काल शिव, गणेश, पार्वती, कार्त्तिकेय, भगवती, परमात्मा, सरस्वती, कृष्ण, राधा-कृष्ण, राम, सीता, सीताराम, गंगा, हनूमान, सूर्य, पंचदेवता, गुरु, पिता ग्रह-नक्षत्रादिकें नमस्कार करबाक परिपाटी अछि। मिथिलाक प्राचीन हस्तलेख ओ हस्तलिखित ग्रन्थ सभ ओ हस्तलिखित ग्रन्थक विवरण सभक अवलोकन कयलासँ शिव ओ हुनक परिवार-विषयक नमस्कृति-वाक्यक जे स्वरूप भेटल अछि ताहिमेसँ किछु एत' प्रस्तुत अछि—

ओं नमः शम्भवे। ओं नमः शिवाय। ओं महारुद्राय नमः। ओं नमो हरये। ओं शिवाहनं। श्री शिवो जयति। ओं नमो विश्वनाथाय। ओं नमः श्रीमदमरनाथाय नमः। शङ्कराय नमः। नमस्तस्यै गिरिजापतये। ओं नमश्शिवायामित तेजसे। ओं नमो जटेशाय। ओं नमो नटेशाय। ओं नमो भवानी शङ्कराभ्यां। ओं नमो भवानीशङ्कराभ्याम्। ओं नमः शिवाभ्याम्। ओं नमः शिवायै। ओं नमो भवान्यै। ओं नमः शाङ्कर्य्यै। श्रीमदुमायै नमः। ओं नमो गिरन्द्रिनन्दिनी पदारविन्दरेणवे। नमो महेशान्यै। ओं गौरीशङ्कराभ्यां नौमि। ओं गणपतये नमः। ओं नमो गणेशाय नमः। ओं नमो गजाननाय। ओं विघ्नना-

Scanned by CamScanner

शिने श्री गणेशाय नमः। ओं नमो भगवते श्री पार्वती नन्दनाय। ओं नमः सिद्धिविनायकाय। ओं नमः श्री शिवासूनवे। ओं नमः विघ्नेशाय। ओं नमो गणेशाय। ओ नमो महागणाधिपतये। ओं नमो लम्बोदराय। ओं नमो एकदन्ताया। श्री गणेशो विजयताम्। श्री गणेश मनिशं समाश्रये। ओं नमो हेरम्बाय। ओं नमः शिवाय सोमाय गणानांपतये नमः। इत्यादि।[1]

नमस्कृति वाक्यसँ भिन्न ग्रन्थकार लोकनि ग्रन्थारम्भमे जे अपन इष्ट देव-देवीक वन्दना कयलनि अछि से महत्त्वपूर्ण अछि। मिथिलामे रचित एहन ग्रन्थक प्राचुर्य अछि जाहिमे शिव परिवारक कोनो ने कोनो सदस्यक स्तुति कयल गेल अछि। एही प्रकारेँ ग्रन्थान्तमे अथवा ग्रन्थक अध्याय सभक आदि-अन्तमे सेहो आन श्रद्धेय देवताक स्तुति करबाक परिपाटी अछि। ओहूमे अनेक ठाम शिव-परिवारक सदस्यक स्मरण कयल गेल अछि।

मंगलाचरणमे शिवस्तुतिक सभसँ प्राचीन उदाहरण नवम शदीक प्रसिद्ध दार्शनिक वाचस्पति मिश्रक कृतिमे भेटैत अछि। शिवक वन्दनासँ अपन दार्शनिक ग्रन्थक आरम्भ कयनिहार ओ स्फुट शिवविषयक श्लोकक रचयितामे हिनक स्थान सर्वप्रथम अछि। पातंजलि योगसूत्र' क टीकाकेर मंगलमे जगत्-उत्पत्ति-हेतु, क्लेश-कर्म-विपाक-रहित, हितक, वृषकेतु आदि विशेषणसँ अलंकृत शिवक वन्दना अछि। भामती टीका नामक विश्रुतग्रन्थमे वेद ओ भवक युगपत् वन्दना कयल गेल अछि। वाचस्पति ने केवल अपन ग्रन्थेक मंगलाचरणमे, अपितु स्फुट श्लोकोमे शिवक प्रति अपन भक्तिभाव प्रदर्शित कयने छथि। एगारहम शताब्दीक श्रीधरदास कृत 'सदुक्ति कर्णामृत' मे शिवयो प्रश्नोत्तरम्' शीर्षकसँ एकटा शिव-विषयक श्लोक अछि जकर कर्त्ता वाचस्पति कहल गेलाह अछि। ओ श्लोक निम्न रूपक अछि—

निर्विघ्नं घन सार सार विशद स्वर्लोक कल्लोलिनी
कल्लोल प्रतिमल्ल बाहु चलनैर्व्याप्तान्तरालश्रियः।
शम्भो सम्भवदङ्गहार तरलोत्तंसामृतांशुद्रव—
प्राणत्प्राणि कपाल चापलदृशो हासोर्मयः पान्तुवः॥[2]

---

१. डिस्क्रिप्टिव कैटलग ऑफ मैन्युस्क्रिप्ट्स इन मिथिला, बिहार रिसर्च सोसाइटीक समस्त भाग; डिस्क्रिप्टिव कैटलग ऑफ एन्सिएंट मैन्युस्क्रिप्ट्स, भाग-१, चन्द्रधारी म्यूजियम (दरभंगा) तथा अपना लगक प्राचीन हस्तलेख सभसँ संकलित ई नमस्कृतिवाक्य।

२. श्रीधरदास प्रणीत सदुक्ति कर्णामृतम्-सं० पण्डित रामावतार शर्मा, पृ०८।

Scanned by CamScanner

वाचस्पति अनेक ग्रन्थक रचयिता मानल जाइत छथि। ई श्लोक सेहो कोनो ग्रन्थेक मङ्गलाचरण लगैत अछि।

दशम शताब्दीमे बौद्ध नैयायिककेँ अन्तिम बेर पराजित क' निरस्त कयनिहार उदयनाचार्य अपन ग्रन्थ सभक मंगलमे, ग्रन्थक विभिन्न अध्यायक आदि ओ अन्तमे शिवक वन्दना कयने छथि। आत्मतत्त्व विवेकक मंगलाचरणमे, न्यायकुसुमाञ्जलिक मंगलाचरण, द्वितीय ओ चतुर्थ स्तवकक अन्तमे; तात्पर्य परिशुद्धिनामक ग्रन्थक द्वितीय ओ पंचम अध्यायक आरम्भमे शिवक वन्दना-श्लोक अछि। उदयनक एहि श्लोक सभमे भक्ति तत्त्व ओ काव्य तत्त्व दुहू विद्यमान अछि। तात्पर्य परिशुद्धि नामक ग्रन्थक दुहू श्लोक उदाहरण स्वरूप उद्धृत अछि—

अपक्षणातिने विश्वज्ञानध्वान्त विघातिने।
नमः सर्वशरण्याय प्रमाणाय पिनाकिने॥

तथा— रगानुगत संभेदौ चन्द्रसूर्यानिलेक्षणौ।
नमामि गिरिजेशानौ यामिनी वासराविव॥[१]

शिवविषयक मंगल श्लोकक रचयितामे सभसँ प्रमुख नाम चण्डेश्वरक अबैत छनि। ई अपन समस्त 'रत्नाकर' ग्रन्थमे अनिवार्य रूपेँ शिववन्दना विषयक मंगल श्लोक देने छथि। ओहि श्लोक सभमे शिवक विविध रूपक वर्णन कयने छथि। गृहस्थ रत्नाकरमे गृहस्थ शिवक अत्यन्त लालित्यपूर्ण वर्णन करैत स्तुति कयने छथि—

उज्झित्वा दिशमम्बरं वरतरं वासो वसानश्चिरं
हित्वाभ्यैक्ष्यमनातुरो रतिकरस्थानं समालम्भिता।
त्यक्त्वा भस्म कृताङ्गराग सुरभिः श्रीखण्डसारद्रवै-
देवी पातु हिमाद्रिजापरिणयं कृत्वा गृहस्थः शिवः॥

अन्य अनेको स्मार्त्तनिबन्धकार अपन-अपन ग्रन्थमे मंगल रूपमे शिवक स्तुति कयने छथि। एहि सभमे प्रधान निबन्धकार सभ थिकाह वर्धमान उपाध्याय (दण्डविवेक ओ द्वैतविवेकमे एके श्लोक अछि), म० म० शङ्करमिश्र

१. मिथिला संस्कृत रिसर्च इंस्टीट्यूट, दरभंगाक संग्रहमे सुरक्षित हस्त-लेखसँ उद्धृत।

Scanned by CamScanner

(छन्दोगाह्निकोद्धार), केशव मिश्र (द्वैतपरिशिष्ट), गदाधर (ग्रहयागपद्धति), अमृतनाथ (कृत्यसार समुच्चय तथा प्रायश्चित्तसार समुच्चयमे शिवक ओ वादसारसमुच्चयमे गणेशक वन्दना), दुर्गादत्त (कालीप्रतिष्ठा-शिव ओ गणेश वन्दना), पक्षधर (तिथिचन्द्रिकामे गणेशक एवं तत्त्वनिर्णयमे गौरीक वन्दना) इत्यादि।

मिथिलामे रचित ज्योतिषोक ग्रन्थ सभ मंगलमे शिव, गणेश, पार्वती आदिक वन्दना कयल गेल अछि। किछु प्रमुख ग्रन्थकार लोकनिक कृतिमे एतद् विषयक पूर्ण मंगलाचरण भेटैत अछि, यथा— कृष्णदैवज्ञकृत जातपद्धत्युदाहरणम् तथा बोजपल्लव (दुहमे एके श्लोक), जीवनाथ कृत तत्त्वदीपिका ओ भावकुतूहल, हरदत्तकृत दैवज्ञबान्धव, नीलाम्बर कृत पञ्चाङ्ग (वा मकरन्द) वासना, नाह्निदत्त कृत बालबोधिनी, हरपति कृत व्यवहार प्रदीपिका, पक्षधर कृतशिशुबोध, नीलगोविन्द कृत शिशुबोधिनी इत्यादिमे शिवविषयक मंगल श्लोक अछि।

मिथिलामे रचित संस्कृत भाषाक काव्य, नाटक, छन्द-अलंकार ओ टीका ग्रन्थक मंगलाचरणमे शिव वा शिव-परिवारक देवताक वन्दना भेटैत अछि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम प्रहसनक आरम्भमे शिवक अर्द्धनारीश्वर स्वरूपक वर्णन ओ वन्दना अछि। ओइनवार राजा कीर्त्तिसिंहक आश्रित दामोदरमिश्र 'वाणीभूषण, नामक छन्दःग्रन्थ तथा भीष्ममिश्रक 'वृत्तदर्पण' क आरम्भिक मङ्गल-श्लोक शैव भावापन्न अछि। हरिहर उपाध्यायक 'प्रभावती परिणय' मे पहिने गङ्गाक तखन शिवक वन्दना अछि। हुनके भर्तृहरिनिर्वेद' नाटकमे शिव संसर्गमे स्थित गङ्गाक वन्दना अछि। कृष्णदत्तक कुवलाश्वीय' नाटकमे क्रमशः गौरी ओ शिवक वन्दना कयल गेल अछि। पन्द्रहम शताब्दीमे शिवसिंहक मन्त्री अच्युतक पौत्र ओ रत्नपाणिक पुत्र रविउपाध्याय काव्यप्रकाशक टीकामे शिव ओ गौरीक वन्दनासँ आरम्भ कयने छथि। एही शताब्दीमे एकटा महत्त्वपूर्ण टीकाकार भेलाह धर्माधिकरणिक जगद्धर। ई अनेको नाटक ओ काव्यक टीका-रचना कयने छलाह। हिनक टीका ग्रन्थसभक आरम्भ शिवक स्तुतिएसँ भेल अछि। एतेक धरि जे गीतगोविन्द व्याख्यापर्यन्तमे शिवक वन्दना कयने छथि—

करकलित भुजङ्गो मस्त विन्यस्तगङ्गो
विदित नट तरङ्गो दत्तदैतेय भङ्ग।
चिर विगलदनङ्गस्त्यकत सङ्गोऽङ्ग नाङ्गो
भवतु भवविभूत्यै शम्भुरुन्मत्तगङ्ग ॥

अन्य टीका ग्रन्थमे अचल उपाध्यायक क 'आर्यासप्तशती व्याख्या' ओ प्रज्ञाकर मिश्रक 'नलोदयव्याख्या' क मंगल श्लोक शिवविषयक मंगल-श्लोकमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। परन्तु एहिठाम शिवविषयक कृति सभक मंगल श्लोकक चर्चा नहि कयल गेल अछि।

मिथिलामे स्फुट श्लोक सभ कण्ठाग्र करबाक प्रथा बड़ प्राचीन अछि। बाल्यावस्था सँ, नेनाकें जखन बोल फुटैत छैक तखनेसँ विभिन्न प्रकारक स्तुति, वन्दना, नीति-श्लोक, स्तव आदिक अभ्यास कराओल जाइत छैक। एहि श्लोक सभक विषय विविध देव-देवी रहैत छथि जाहिमे शिव, पार्वती, गणपति, कार्त्तिकेय आदिक विषय प्रधान रहैछ। नेना सभकें पहिल श्लोकक अभ्यास जे कराओल जाइछ से पार्वती-वन्दना विषयक रहैत अछि। ओ अत्यन्त प्राचीन ओ प्रशस्त, लोक प्रचलित श्लोक अछि। जे निम्न रूपक अछि—

सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी ।
उग्रेण तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः ॥

तत्पश्चात् 'कर्पूर, गौरं करुणावतारं....' वला शिवस्तुति आ तखन गणेश वन्दनाक 'खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरं ...' श्लोक रटाओल जाइछ । एहन औरो कतोक श्लोक सभ लोक-प्रचलित अछि। मैथिल शिव-भक्त ओ पण्डित लोकनि द्वारा समय-समयपर अनेकशः स्फुट श्लोकक रचना होइत रहल, किन्तु कालप्रवाहमे बहुतो रचना वा रचनाकारक नाम बहि भासि क' विलीन भ गेल। कतहु सुरक्षित नहि रहि सकल। किछु जे सुरक्षितो रहल से पण्डित जनकक मुख-परम्परामे । तथापि कतोक कृति मैथिलजन द्वारा संकलित श्लोक-संग्रह-ग्रन्थ सभमे रक्षित अछि। मैथिल पंडित, कबि, लेखक ओ भक्त लोकनि द्वारा निर्मित एहि स्फुट श्लोक सभमे शिव वा शिव-परिवारक देव-देवीक प्रति भक्ति-भावनाक अतिरिक्त प्रतिभाक चमत्कार, पाण्डित्यक प्रखरता, कल्पनाक कमनीयता, रसोद्बोधक रमणीयता, सहृदयता सौरभ, अलंकारक अपूर्व छटा दृष्टिगोचर होइत अछि।

एहि प्रकारक लघुकृति सभक जँ स्वतन्त्र संग्रह कयल जाइत तँ ओ अवश्ये विशिष्ट कोटिक संग्रह होइत। विविध प्रकारक प्रतिभाक अपूर्व संगम होइत। किन्तु एहन कोनो सग्रह अद्यापि दृष्टिगोचर नहि भेल अछि। भविष्यमे उपलब्ध हो तँ से भिन्न बात थिक। मौखिक परम्परासँ इतर, प्राचीन पोथी

सभक आदि वा अन्तक अतिरिक्त पत्र वा अवशिष्ट स्थानमे, किंवा स्वतन्त्रो पत्र सभमे स्मरणार्थ टीपि क' राखल, स्फुट श्लोक भेटैत अछि। ई सभ संकलन-श्रम-साध्य अछि । विविध विषयक एवं विभिन्न कविक रचित स्फुट श्लोक सभक सग्रहमे शिव विषयक श्लोक सभ अवश्य भेटैत अछि। एहन संग्रह सभमे प्रमुख अछि, 'रसिकजीवन', 'हरिहर सुभाषित' 'विद्याकर साहस्रकम्' आदि।

काव्य

मिथिलाक संस्कृत शैव साहित्यक क्षेत्रमे कालिदासक नाम सर्वोपरि अछि। कालिदास अपन प्रत्येक ग्रन्थमे, अपन प्रत्येक नाटकक नान्दीश्लोकमे शिवक वन्दना कयने छथि। हुनक समस्त महत्त्वपूर्ण कृति थिक 'कुमारसम्भव' महाकाव्य। एहिमे शिव ओ पार्वतीक जाहि उदात्त स्वरूपक चित्रण कयल गेलनि अछि से एकटा महान् प्रतिभाशालिए कविसँ सम्भव अछि। कालिदासक समयमे लोकमे शिव-पार्वतीक ओएह भावमय चित्र प्रायः व्याप्त छल जे चित्र परवर्तीकालमे राधा-कृष्णक भेल।

कुमारसम्भव एहू हेतु महत्त्वपूर्ण अछि जे ओहिमे मैथिल जीवनसँ साम्य रखनिहार चित्र अंकित अछि । परवर्त्तीकालमे मिथिलामे शिव-पार्वती परिणयक जे श्रेयस् रूप अर्चित होइत रहल; मैथिलीमे तद्‌विषयक विशाल साहित्यक निर्माण होइत रहल अछि तकर मूलरूप 'कुमारसम्भव' मे भटैत अछि।

किन्तु कालिदास कोन भूभागक निवासी छलाह से ओखन विवादेक रहल अछि। विभिन्न प्रान्तीय निवासी कालिदासकें अपन अपन प्रान्तक वासी सिद्ध करबाक हेतु तर्क उपस्थित करैत रहलाह अछि । मिथिला बासियो कालिदासकें मैथिल सिद्ध करबाक पक्षमे तर्क उपस्थित करैत छथि। किन्तु अकाट्य प्रमाण एखन धरि कोनो प्रान्तवासी उपस्थित नहि क' सकलाह अछि। एहना स्थितमे कालिदासक मैथिलत्वक दावीकें सहजे उपेक्षित नहि कयल जा सकैछ। यदि प्रमाण द्वारा सिद्ध भ' जाय कालिदास मैथिले छलाह तँ निश्चये ओ मिथिलाक शैव साहित्यक आदि प्रणेता मानल जयताह।

मिथिलामे शिवविषयक अनेको संस्कृत काव्य ग्रन्थ रचल गेल। ओहि काव्यग्रन्थमे गीतक प्रधानता अछि। गीतगोविन्दक प्रभाव केवल भाषाकाव्येपर नहि पड़ल, अपितु संस्कृतो पर पड़ल। मिथिलामे गीतमय संस्कृत शैव काव्यक प्रेरणामे केवल गीतगोविन्दे नहि रहल प्रत्युत मैथिलीक शिवगीत सेहो रहल।

Scanned by CamScanner

चौदहम शताब्दीक भानुदत्तक रचित गीत गौरी पति एहि कोटिक उपलब्ध प्रथम रचना थिक । जहिना राधा-कृष्णकें आलम्बन बनाय जयदेव मधुर कोमल कान्त पदावलीक रचना कयलनि तहिना भानुदत्त मिश्र गौरी-शिवकें आलम्बन बनाय सर्गबन्ध गीतकाव्यक रचना कयलनि । यदि एहि शिवगीतक रचनामे भानुकवि लोकजीवनमे व्याप्त भाषा गीतसँ प्रभावित भेल होयताह तँ दोसर दिस परवर्त्ती मैथिली कविकें प्रभावान्वित कयने होथि तँ से असम्भव नहि । किन्तु गीतगोविन्दक अनुसरण करबामे कवि पूर्ण सजग छथि, तें जयदेव यदि विष्णुक दशावतारक वर्णन कयने छथि तँ भानु शिवक अष्टमूर्त्तिक । भानु कविक परम्परामे भीम वाभीष्म कविक (उपाधिमे कतहु शर्मा, कतहु मिश्र ओ कतहु उपाध्याय भेटैत अछि) रचित गीतशंकर उपलब्ध अछि । गीतशंकरे, नामसँ एकटा होर कविक सेहो रचना भेटैत अछि । उनैसम शताब्दीमे हरिनगरवासी चन्द्रदत्त झा 'काशीगीतकाव्यम्' क रचना गीतगोविन्दक शैली पर कयने छलाह । शिवलीला-वर्णन विषयक ई काव्य कतोक ठाम काशीशिवस्तोत्र सेहो कहल गेल अछि । किन्तु उपलब्ध प्रतिक अन्त मे 'काशीगीतम्' सैह कहल गेल अछि । कवि अपनहु कहने छथि—

उक्तं यज्जयदेव पण्डितकवेरत्रोचितं तन्मया ।
सर्वं तादृशमेव केवलमिहव्या लेखि पद्यं शुभम् ॥

स्तुति

शैवसाहित्यक परम्परामे रचित सभसँ महत्त्पूर्ण अंग थिक स्तुति काव्य । एहि प्रकारक प्रचुर रचना मिथिलामे संस्कृतक माध्यमसँ भेल । सतरहम शताब्दीमे हलधरदास नामक एक अन्धकवि एकटा हलधरेश्वर महादेवक स्थापना ओ शिवस्तुति'क रचना कयने छलाह । दोसर महत्त्वपूर्ण कृति मानल जाइछ म० म० गोकुलनाथ उपाध्यायक 'शिव-स्तुति' वा 'शिव-शतक' । एहिमे एक-एक श्लोकमे शिवक विभिन्न रूपक चित्रण कुम्हार, कृपण, कृषक, कवि, कलश, अमृत, जोलहा, थानेदार, पहेरदार, अनाथ, दरिद्र, भिक्षु, वृक्ष, बूढ़-बाबा, वानर, बेटीक बाप, भूतनाथ, सूत्रधार, स्वामी आदिक साङ्ग रूपक द्वारा कयने छथि । कविक दार्शनिक चिन्तन ओ कवित्वक गम्भीर स्वरूप प्रतिश्लोकमे पदे-पदे परिलक्षित होइत अछि । कविवर जीवन झा एहि शिव-स्तुतिक रसना नामक टीका कयने छलाह । उनैसम शताब्दीक आदि भागमे कविरत्न खगेश मिश्र 'काशी विश्वेश्वर शिखरिणी वृत्तस्तवशतक' तथा

काश्यभिलाषाष्टक' क रचना कयने छलाह। पहिल रचना शिखरिणी छन्दमे अछि आ स्तवन क्रममे हिमवत् खण्ड ओ मिथिलाक अनेको प्रसिद्ध शिवलिंग यथा पशुपति, चण्डेश्वर कपिलेश्वर, सिंहेश्वर आदिक वन्दना कयल गेल अछि।

स्तुति एक परम्परामे उनैसम शताब्दीमे म० म० श्रीकृष्णठाकुर द्वारा 'अमरनाथ शतकम्' केर रचना कयल गेल छल। एहिमे एक सय श्लोकमे शिवक स्तुति कयल गेल अछि।

नाटक

मिथिलामे संस्कृत भाषामे कतोक शिव विषयक नाटक सभ लिखल जाइत रहल अछि। चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीसँ एहि प्रकारक नाटकक परम्परा भेटैत अछि। म० म० शङ्कर मिश्र दुइ गोट नाटक—'गौरी दिगम्बर प्रसहन' ओ 'मनोभव पराभव' रचना कयने छलाह। एहिमे गौरी दिगम्बर प्रहसन तँ अत्यन्त प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय भेल। 'पार्वती परिणय' नामक नाटक वाणकविक रचित थिक। ई वाणकवि कादम्बरीकार वाणभट्ट थिकाह वा पन्द्रहम शताब्दीक मैथिल वाण ? ई एकटा विवादक विषय रहल अछि। किन्तु एतबा धरि अवश्य जे मैथिलवाण कवि छलाह अवश्य। हुनक संस्थापित वाणेश्वरी भगवती अद्यापि वर्त्तमान छथि।

उनैसम शताब्दीक अन्तिम भागमे शिवनन्दन झा गजानन चरित' नामक नाटकक रचना कयने छलाह। एहो सन्निधिकालमे रविनाथ शर्मा 'अर्च्यलम्बोदर' नाटकक रचना कयलनि से सूचना स्वर्गीय गगानाथ झा 'गणेशसम्भव' ग्रन्थक भूमिकामे देने छथि।

टीकाग्रन्थ

टीका ग्रन्थमे सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि सोलहम शताब्दीमे जयदेवक गीत गोविन्दपर कृष्णदत्तक 'गङ्गाख्या गीतगोविन्दव्याख्या'। एकरे किछु प्रतिमे 'शशिलेखा' सेहो कहल गेल अछि। गीतगोविन्दमे राधा-कृष्णक प्रेमविलासक वर्णन भेल अछि, से ई वैष्णव लोकानमे विशेष ओ आदृत होइत रहल। कृष्णदत्त एहि प्रसिद्ध काव्यक शिवपक्षावगाहिनी टीकाक रचना कयलनि। 'शशिलेखा' नामान्वित प्रतिमे कहल गेल अछि—

विशदित शिव पक्षां गीतगोविन्द टीकां।
रचयति शशिलेखां मैथिलः (कृष्णदत्तः)॥

Scanned by CamScanner

इह नवविध टीका व्यञ्जितः कृष्णपक्षो ।
विवृत उभय पक्षैकाभिधेय पदं वा ॥

'गङ्गाख्या' नामान्वित प्रतिमे टीकाकार कहैत छथि—

गमयति पदमेषा वैष्णवं शाम्भवं वा ।
जयति जयति गङ्गा गीत गोविन्द टीका ॥

शैव ओ वैष्णवक पारस्परिक अनादर भावक परिहार क' दुहूक मध्य सौहार्द उत्पन्न करबाक दिशामे कृष्णदत्तक ई विलक्षण प्रयास छल। गीत गौविन्दक शिवपक्षावगाहिनी टीका जकाँ शैवलोकनिक हेतु अत्यन्त श्रद्धास्पद 'शिवमहिम्न' स्तोत्रक विष्णुपक्षीय टीका सेहो कयने छलाह। अपन दुहू टीकाक उद्देश्य पाण्डित्य प्रदर्शन नहि, प्रत्युत शैव ओ वैष्णव लोकनि मध्य एक-दोसराक उपास्यदेवताक प्रति आदर भाव उद्बुद्ध करब छल। एहि वस्तुके स्वयं कहने छथि—

शैवं नाद्रियते सुधीरभिमतं प्रायोऽधुना वैष्णवः ।
शैवो नैव च वैष्णवं निज निजासद्वासना वासितः ॥
मन्वेंऽर्थं मधुसूदनोपि मुरजित्पक्षे महिम्नः स्तुतिं ।
व्याचख्ये जयदेव सूक्तिमपि तां शैवे पथे योजये ॥

मिथिलामे कालिदासक कुमार सम्भव महाकाव्य विशेष लोकप्रिय रहल। मिथिलामे एकर प्राचीन हस्तलेख सभ विशेष संख्यामे उपलब्ध होइत अछि। नेपालक रष्ट्रीय अभिलेखालयमे एवं देश-विदेशक विभिन्न संग्रहालयमे मिथिलाक्षर मे लिखित वा मिथिला देशीय प्रतिलिपि सभ बेसी संख्यामे देखल जाइत अछि। अतः ओकर टीका सेहो मिथिलामे बेसी लिखित गेल। 'कुमार सम्भव'क मैथिलकृत टीकामे सोलहम शताब्दीक रघुपतिक 'कुमार सम्भव व्याख्यासुधा', अठारहम शताब्दीक भीष्म उपाध्याय वा भीष्मशर्माक कुमार सम्भव टीका' उनैसम शताब्दीक श्रीकृष्णझाक कुमार सम्भव अन्वय लपिका टीका' अत्यन्त प्रसिद्ध अछि।

पूजापटल वा पूजापद्धति

शिव पूजा पटल वा शिवपूजा पद्धति मिथिलाक समस्त निबन्ध ग्रन्थमे अंग रूपमे भेटैत अछि। किन्तु एहन स्वतन्त्र निबन्ध ग्रन्थ जाहिमे केवल शिवक पूजाक विधान वर्णित हो—तेहनो ग्रन्थ सभ लिखल गेल। एहिमे सभसँ प्राचीन

Scanned by CamScanner

अछि। 'शिववाक्यावली' वा शैवमानसोल्लास' जकर रचयिता चण्डेश्वर छलाह। चण्डेश्वर अपन सप्तरत्नाकरक प्रत्येक खण्डक मङ्गलाचारणमे शिवक वन्दना कयने छथि। नेपाल विजय क' अपनहि हाथेँ पशुपतिक पूजन कयने छलाह जकर गर्वपूर्वक उल्लेख अपन ग्रन्थमे कयने छथि। एहिसँ हुनक शिवक प्रति प्रगाढ़ आस्था सिद्ध होइछ। अतः सप्तरत्नाकरकार चण्डेश्वरे 'शैवमान-सोल्लसक' रचना कयने होथि से पूर्ण सम्भव अछि। तत्पश्चात् हुनकहि वंशज मैथिलीक महान् कवि विद्यापति 'शैव सर्वस्वसार' ओ 'शैवसर्वस्वसार प्रमाण भूत पुराण संग्रह' क रचना कयने चलाह। वस्तुतः प्रथम ग्रन्थक प्रमाण सभक संग्रह द्वितीय ग्रन्थमे अछि तेँ दुनू मूलतः एके ग्रन्थ थिक। एहि ग्रन्थमे शिव-पूजन-विधान बड़ विस्तारसँ देल गेल अछि। वर्त्तमान मैथिल समाजमे शिवलिंगक महास्नानक विधिमे 'शैवसर्वस्वसार' हिक पद्धतिक अनुसरण कयल जाइछ।

पन्द्रहम शताब्दीक प्रसिद्ध निन्बन्धकार वाचस्पति मिश्र तीर्थचिन्तामणि' मे विभिन्न तीर्थक माहात्म्य ओ कृत्यक वर्णन अछि। ओहीमे एकटा खंड काशीपर अछि। ओ खंड स्वतन्त्र ग्रन्थक रूपमे 'काशीप्रकाश' नाम सँ मिथिलामे प्रचलित अछि। रघुनाथ रचित 'काशीतत्त्व कौमुदी मिथिलामे प्रचलित छल। एही कोटिमे शङ्करक कृति 'शिवपूजा माहात्म्य' सेही अबैत अछि। यद्यपि एहि दुहू व्यक्तिक निवास मिथिले छल से प्रमाण सापेक्ष्य अछि।

अनेको छोट-छोट पद्धति ग्रन्थ सभ सेहो मिथिलामे प्रचलित रहल अछि जकर लेखकक पता नहि लगैछ यथा—गणेश प्रतिष्ठा, सिद्धविनायक पूजा, गौरी शङ्कर प्रतिष्ठा, शिव प्रतिष्ठा विधिः, पार्थिवेश्वर पूजन विधिः, शिवव्रतोद्यापन विधिः, शिव प्रासाद प्रतिष्ठा विधिः इत्यादि।

पद्धतिक श्रेणीमे वृहत्काय ग्रन्थ अछि कल्याणशर्माक 'शिव प्रतिष्ठा पद्धति'। कल्याण शर्मा अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे महाराज राघव सिंहक आदेशसँ शिवप्रतिष्ठा पद्धतिक रचना कयने छलाह और ओकरे अनुसार सन ११३३ सालमे भौरामे राघवेश्वर ओ अन्यान्य शिवलिंगक स्थापना भेल छल।

अओरो अनेको छोट-छोट ग्रन्थ सभ मिथिलामे लिखल जाइत रहल अछि राजकीय चन्द्रधारी संग्रहालय (दरभंगा)मे निम्नलिखित ग्रन्थ सभ रक्षित अछि —भाद्रशुक्ल चतुर्थी गणेश पूजा पद्धति चिन्तामणि शिवलिंग पूजा पद्धति, शिवरात्रि व्रतविधि, रुद्री लघुरुद्रयादि स्वरूप विचार।

Scanned by CamScanner

मिथिलाक शैव व्रत ओ पर्व

मिथिलामे शैव, शाक्त, वैष्णव एवं अन्य अनेक साम्प्रदायिक व्रत ओ पर्व सभ प्रचलित अछि । ई सभ कहिया सँ कोन रूपेँ आरम्भ भेल तकर विवरण देब कठिन अछि। किन्तु उपब्ध सामग्रीक आधार पर परम्पराकेँ रेखांकित कयल जा सकैछ । एहि सभमे शैवव्रत ओ पर्व मात्र वर्त्तमान सन्दर्भसँ सम्बद्ध अछि। शैवव्रत ओ पर्व पदसँ हमर तात्पर्य आ समस्त व्रत ओ पर्व अछि जे शिव ओ हुनक परिवारक देव-देवी अर्थात् पार्वती, गणेश, कार्त्तिकेय, भैरव आदिसँ सम्बद्ध अछि। एहि प्रकारक व्रत ओ पर्वक विस्तृत परिचय चौदहम शताब्दीक महामहत्तक चण्डेश्वर रचित कृत्यरत्नाकरमे भेटैत अछि । कृत्यरत्नाकरमे चैतमाससँ आरम्भ क' वर्ष भरिक मैथिल कृत्यक विवरण अछि। ओहिमे शैव कृत्यक सेहो प्रचुर मात्रामे वर्णन अछि।

चैत मासमे जाया-पती द्वारा गौरीव्रत, शुक्ल द्वितीयाकेँ उमा-शिव-पूजा, तृतीयाकेँ देवी-शंकरक दोलन, चतुर्थीकेँ गणेशपूजन, पंचमीकेँ नाग-पूजा, षष्ठीकेँ कार्त्तिक पूजन, अष्टमीकेँ वृषभदान, एकादशीकेँ वृषपूजन करबाक विधान अछि। चैते मासमे उमा-शिवक प्रतिमा-निर्माण क' तृतीया, चतुर्थी ओ पंचमीकेँ गौरीमहोत्सव मनयबाक विधि देल गेल अछि। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा-तृतीयाकेँ पति-पत्नी द्वारा सौभाग्यशयन व्रत करबाक हेतु कहल गेल अछि जाहिमे गौरीशंकरक पूजा कर्त्तव्य। ई पूजा प्रतिमास सात, आठ वा बारह वर्ष धरि करबाक विधान कहल गेल अछि।[1]

वैसाख मासमे रुद्रव्रत प्रशस्त मानल गेल अछि। एही मासक शुक्ल तृतीयाकेँ शङ्कर, गङ्गा, कैलास, हिमाचल ओ भगीरथक पूजन, पूणिमाकेँ सोमव्रत पूर्वक सायंकाल सोममूर्त्तिक पूजन विहित अछि। वैसाख ओ कार्त्तिक मासक अयनादि पर्वमे शिवलिंग पूजनक विस्तृत विधिक वर्णन कयल गेल अछि।[2]

जेठ-अखाढ़मे कोनो विशेष शैव कृत्य नहि कहल गेल अछि। किन्तु साओन मासमे अनेक शैवकृत्यक वर्णन देल गेल अछि। कृष्ण पंचमीकेँ मनसापूजा ओ नागपूजा विहित अछि । लोक—विश्वासक अनुसार मनसादेवी उमा-कन्या

---

१. कृत्यरत्नाकर—चंडेश्वर, सं० कमल कृष्ण स्मृति तीर्थ, पृ० ८५, ९३-९४, १०९, ११३-१८।

२. तत्रैव, पृ० १५१; १५५, १६६-६७।

मानल जाथि तेँ मनसा पूजा शैवे कृत्य मानल जायत। नाग शिवसँ सम्बद्ध मानल जाइछ। शुक्लपंचमीकेँ भविष्यपुराणक वचनानुसार नाग-पूजाक विधि देल अछि। भविष्ये पुराणक अनुसार अष्टमी व्रतक विधान अछि। श्रावण शुक्ल सप्तमीकेँ उपवास ओ अष्टमीकेँ विप्रभोजन करा क' ई व्रत आरम्भ होइत छल। प्रत्येक मासक शुक्ल पक्षक अष्टमीकेँ तत्तत् मासक प्रशस्त ओ विहित पुष्पादिसँ शिवार्चन एवं अर्चन कालमे शिवक द्वादश नामक कीर्त्तनक विधान कहल गेल अछि।[१]

भादव मासमे शुक्ल चतुर्थीकेँ शिष्टवचनानुसार हर्य्याली व्रतक विधान अछि जे वस्तुतः आधुनिक कालक हरताली व्रत थिक। सुभगा ओ कन्याक हेतु ई व्रत विहित अछि। शुक्ल पंचमीकेँ आलेख्य नागपञ्चमी व्रत ओ दष्टोद्धरण पञ्चमी व्रत, षष्ठी (एकर षष्ठी कल्प सेहो कहल गेल अछि) केँ कार्त्तिकेय पूजाक निर्देश अछि। एहि मासमे उमा महेश्वर ओ विष्णु शंकर नामक दुइ गोट व्रत महत्त्वपूर्ण अछि। उमामहेश्वर व्रत सपत्नीक करबाक थिक आ भादवक अतिरिक्त आसिन ओ अगहनमे मृगशिरा, पूर्व फाल्गुनी, अनुराधा, ज्येष्ठा नक्षत्रमे अथवा अष्टमीकेँ कर्त्तव्य कहल अछि। विष्णु शंकर व्रत सेहो उमामहेश्वरे व्रत जकाँ करणीय अछि। शुक्ल अष्टमीकेँ दूर्वाष्टमी व्रतक विधान अछि जाहिमे दूर्वासँ शिव, गौरी ओ गणेशक पूजन विहित।[२]

कन्याराशिमे सूर्यक संक्रमण भेलापर आश्विन कृष्णाष्टमीकेँ पापहरा आ शिवआनन्द वर्द्धिनी कहल गेल अछि आ एहि तिथिकेँ विहित विभिन्न कृत्य कयने शिवप्रीति-लाभ कहल गेल अछि। आसिने मासमे स्कन्द पुराणोक्त भैरवोत्पत्ति ओ भैरवोत्सवक वर्णन कयल गेल अछि।[३]

कार्त्तिक मासमे चतुर्दशी ओ अमावास्याकेँ शिवायतनमे विशेष रूपेँ दीपदानक विधान अछि। शिष्टवचनानुसार सेहो एहि मासमे अनेक दिन ओ तिथिमे शिवाराधन विहित अछि। शुक्ल प्रपिपदाकेँ शिव ओ गौरीक द्यूत क्रीड़ा भेल छल तेँ ओहि दिन द्यूत क्रीड़ा विहित मानल गेल अछि। स्कन्द षष्ठीकेँ दक्षिणाभिमुख मन्त्र सहित कार्त्तिकेयकेँ अर्घ्य दातव्य। एही मासमे

---

१. तत्रैव, पृ० १७५-७८, २३३, २३४, २३५-३७।
२. तत्रैव, पृ० २७१–७७, २८०–८५।
३. तत्रैव, पृ० ३१०, ३८६-८५।

वृषव्रत ओ ताहिमे वृषोत्सर्ग कयने शैव पदक प्राप्ति होइछ।[1] बारहमास व्यापी कृष्णाष्टमी व्रत अग्रहण मासमे आरम्भ क' बारहो मासमे क्रमशः शकर, शम्भु, महेश्वर, महादेव, स्थाणु, शिव पशुपति, उग्र, शर्व्व, त्र्यम्बक, हर ओ ईशानक पूजन कर्त्तव्य । अग्रहणसँ दुइ गोट व्रत अओर आरम्भ कयल जाइछ—अवियोग व्रत ओ शिव चतुर्दशी व्रत। अवियोग व्रतमे शुक्ल पक्षक द्वितीया-तृतीयाकें सपत्नीक शिव-पार्वती-पूजन कर्त्तव्य थिक आ अग्रहणसँ आरम्भ क' बारहो मासमे क्रमश. शम्भु-गौरी, गिरीश-पार्वती, भव-भवानी, महादेव-उमा, शंकर-ललिता, स्थाणु-लोकमाता, रुद्र-रुद्राणी, पशुनाथ-शची, नीलकंठ-सुनन्दा. भीम-कालरात्रि, शिव-दुर्गा एवं ईशान-शिवाक आराधना करबाक विधान अछि। शिवचतुर्द्दशीसँ आरम्भ क' वर्ष भरि करबाक हेतु कहल गेल अछि ॥[2]

पौषकृत्यमे शिवक घृताभिषेक ओ जागरण कयने शिववत् सुखी होयबाक फल कहल गेल अछि। शुक्ल अष्टमी बुध दिन पड़ने महाभद्रा तथा आद्रा नक्षत्र युक्त अष्टमी रहने जयन्ती अष्टमी कहल जाइछ। ई दुनू 'महाभद्रा तिथि थिक आ शिव विशेष रूपें पूज्य थिकाह। शुक्ल अष्टमीकें शिवरथ यात्राक विधान अछि जे ज्येष्ठ मासक वैष्णव रथ यात्राक समान महत्त्व-पूर्ण मानल गेल अछि।[3]

माघ मासमे गौरी पूजनकें विशेष महत्त्व देल गेल अछि। एखनहु परम्परासँ मिथिलामे गौरी पूजा सम्बन्धी अनेक व्रत माघहि मासमे कयल जाइत अछि। कृत्यरत्नाकरमे एहि मासमे गौरीपूजा, गुडव्रत, उमा चतुर्थी एवं रस-कल्याणिनी व्रत स्त्रीवर्गक हेतु महत्त्वपूर्ण कृत्य कहल गेल अछि। गौरी पूजाक क्रममे चण्डेश्वर कोनो पुराणक वचन नहि कहि केवल शिष्ट वचन उद्धृत कयलनि अछि। ई व्रत माघ शुक्ल द्वितीयाकें होइत छल। गुडव्रत तृतीयाकें एवं उमा चतुर्थी (शुक्ल) एके क्रममे होइत छल तें चण्डेश्वर एकरा सभकें गौरी पूजा कहने छथि। रसकल्याणिनी व्रत मत्स्यपुराणक वचनानुसार लिखल गेल अछि। माघ शुक्ल तृतीयासँ प्रातःकाल गौरी-पूजन आरम्भ कयल जाइत छल तथा पुनः अग्रिम वर्ष माघ मास सम्प्राप्त भेला पर निस्तार होइत छल। ई व्रत बहुत किछु 'तुषारी' पूजाक समान छल अथवा 'तुषारी' पूजाक

१. तत्रैव, पृ० ४०८-९, ४११-१२, ४१५-१६, ४३१।
२. तत्रैव, पृ० ४४८-५५, ४६६-७१।
३. तत्रैव, पृ० ४७८, ४८०-८२।

Scanned by CamScanner

पूर्व रूप कहल जा सकैत अछि। माघ मासमे शिवालयमे वा शिवलिंगक निकट विभिन्न प्रकारक दानक महत्त्व कीर्त्तन कयल गेल अछि।[1]

फागुन मासमे शिवरात्रि ओ सौभाग्य व्रत महत्त्वपूर्ण अछि। शिवरात्रि कृष्ण चतुर्दशीकें विहित अछि। ब्रह्मपुराण ओ अग्निपुराण दहूमे एहि तिथिक शैवकृत्यक वर्णन अछि। ब्रह्मपुराणक आधार पर एहि तिथिमे बहुविध शिवार्च्चन-पूजा ओ तज्जन्य महत्फलक विवरण दैत एकरा शिवरात्रिक संज्ञा देल गेल अछि। चंडेश्वरक अपन टिप्पणी सँ तत्कालीन शिवरात्रि महोत्सवक व्यावहारिक रूपक परिचय भेटैत अछि—

> अत्र त्रयोदश्यामेकाहारः चतुर्दश्यामुपवासः रात्रिप्रहर चतुष्टये पूजा चतुष्टयम्। प्रजागरादि च शिवालये। अन्यत्रापि शिव-लिङ्ग उत्थाप्य व्रतमिदं कुर्व्वन्ति। यथाशक्ति घृतादिना लिङ्गस्नानं शिवमूर्त्ति पूजा चेति।[2]

अमावास्याकें स्वतन्त्र रूपें रुद्राग्नि पूजा कर्त्तव्य छल। चंडेश्वर कृत्य समुच्चयक प्रमाण दैत कहने छथि—

> इयञ्चामावास्यां रुद्राग्नि पूजा स्वतन्त्रैव। कृत्यसमुच्चये फाल्गुनकृत्य सङ्कुलनावसरे लिङ्गपूजा रुद्रादि देव गृहादि भूषा चेत्यादौ स्वतन्त्र कर्म्मण मध्य पाठात्[3]

शुक्ल तृतीयाकें सौभाग्य व्रत विहित कहल अछि जाहिमे लक्ष्मी-विष्णु वा उमा-रुद्र पूज्य छथि।[4] चैत्र मासक सौभाग्य-शयन व्रतक समाने उद्देश्य ओ विधि, किन्तु किछु अंशमे भिन्नता सेहो अछि।

मासकृत्य सँ भिन्न प्रकीर्ण कृत्यमे अनेक शैव कृत्यक विधान देने छथि। भविष्यपुराणमे भादवक अष्टमी, कार्त्तिकक पूर्णिमा, अग्रहणक द्वादशी, चैत्रक त्रयोदशीकें षष्ठिका पूजाक विधान अछि। किन्तु चंडेश्वरक कालमे षष्ठिका पूजा पुराणोक्त विहित तिथिकें नहि, प्रत्युत आचारतः पुत्रजन्मक छठम दिनमे प्रदोष कालमे होम' लागल छल—

---

१. तत्रैव, ४९८, ४९९-५०३, ५१३-१४।

२. तत्रैव, पृ० ५२१।

३. तत्रैव, पृ० ५२२।

४. तत्रैव, पृ० ५२३-२४।

Scanned by CamScanner

आचारात् पुत्रजन्मदिन षष्ठदिने प्रदोषे षष्ठिका पूजा ।[1]

इएह परम्परा ओखन धरि 'छठिहार' वा 'छट्ठी'क रूपमे प्रचलित अछि। षष्ठिका, कार्त्तिकेयक संरक्षिका छलीह । अत: षष्ठिकासँ पुत्रक रक्षाक निवेदन कयल जाइछ—

गौर्य्या: पुत्रो यथा स्कन्द: शिष्ट: संरक्षितस्त्वया ।
तथा ममाप्ययं बालो रक्ष्यतां षष्ठिके नम: ॥

षष्ठिका पूजामे गणपति सहित षोडश मातृकाक आवाहन, पूजन, पुत्र रक्षाक प्रार्थना, षट्कृत्तिकाक पूजन कयल जाइत छल। 'यथा कुलाचारं' कहि चंडेश्वर कुलक प्रथा ओ लोक-व्यवहारकेँ मान्यता देने छथि।[2] तिथि नक्षत्र-देवता पूजामे चंडेश्वर चतुर्थीकेँ गणेशक, पंचमीकेँ नागक, षष्ठीकेँ कार्त्तिकेयक, अष्टमीकेँ हरक ओ आर्द्रा नक्षत्रमे शिव विशेष रूपेँ पूज्य थिकाह ।[3]

वर्त्तमान कालमे मिथिलामे प्रचलित शैव व्रत ओ पर्वक सूचना मिथिला देशीय पंचांगमे देल रहैत अछि। साधारणत: निम्नलिखित व्रत ओ पर्वक उल्लेख पंचांग सभमे कयल जाइत अछि—

साओन—एहि मासमे सोमवारीक माहात्म्य अछि । मासक प्रत्येक सोमकेँ प्रदोषकालमे शिव-पार्वती पूजन विहित अछि ।

कृष्ण पंचमी—नागपूजा, मनसादेव्युत्थान
शुक्ल तृतीया-चतुर्थी—मधुश्रावणी व्रत
शुक्ल पचमी—नागपूजा

भादव—कृष्ण चतुर्दशी—श्री भैरवपूजा
शुक्ल तृतीया—हरितालिका (तीज) व्रत

अगहन—कृष्ण पंचमी—मनसादेवी शयन
कृष्ण अष्ठमी—काल भैरवाष्टमी
शुक्ल प्रतिपदा—हरशो व्रत
शुक्ल तृतीया—उमामहेश्वर व्रत

---

१. तत्रैव, पृ० ५४३ ।
२. तत्रैव, पृ० ५४४-४५ ।
३. तत्रैव, पृ० ५५५-५८ ।

माघ शुक्ल चतुर्थी – कुन्द कुसुमसँ पार्वती पूजन

फागुन—कृष्ण चतुर्दशी—शिवरात्रि—गौरी विवाहोत्सव

जेठ—शुक्ल चतुर्थी—उमापूजा

शुक्ल चतुर्दशी—रुद्रपूजा

एकरा अतिरिक्त सार्वमासिक चतुर्थीकेँ गणेश व्रत ओ चतुर्दशीकेँ चतुर्दशी व्रत ओ प्रदोष कालमे शिवदर्शन ओ शिव-पूजाक निर्देश अछि। भादव शुक्ल चतुर्थीकेँ गणेश पूजा विशेष प्रशस्त आ तेँ एकरा गणेश चौठ सेहो कहल जाइछ।

किन्तु पंचांगकार लोकनि मिथिलाक किछु व्रत ओ पर्वकेँ अनुल्लिखित छोड़ि दैत छथि, यथा—

नवरात्रे पार्थिव शिवलिंग पूजन, माघमे कुमारिका द्वारा तुषारी पूजन एवं नव विवाहिता द्वारा साँझ भतरासि (वर्षव्यापी गौरी पूजाक आरम्भ ओ निस्तार), मकर राशिक सूर्यमे रविवासरकेँ शिवदर्शन-पूजन, जूड़िशीतलमे (मेषसंक्रान्तिक दोसर दिन) शिवाभिनय ओ शिव-कीर्त्तन-भजन आदि।

उपर्युक्त सूचीमे देखैत छी जे चंडेश्वर द्वारा परिगणित बहुतो व्रत आ पर्व अनुपस्थित अछि। सार्वमासिक शुक्लाष्टमी ओ कृष्णाष्टमी व्रत अप्रचलित भ' गेल। ओकरा स्थानमे चतुर्दशी व्रत ओ गणेश व्रत प्रचलित अछि। चंडेश्वर गौरी विवाहोत्सव चैतमे विहित कयने छथि, किन्तु आब ओ फागुनेमे शिवरात्रि दिन सम्पन्न होइत अछि। श्रावणक सोमबारी व्रत ओ मधुश्रावणी संभवतः चंडेश्वरक कालमे शास्त्रीय मान्यता प्राप्त नहि कयने छल। मधु-श्रावणी तँ औखन लोकाचारे अछि। तुषारी पूजा ओ साँझ-भतरासिकेँ पंचांगकार लोकनि छोड़ि दैत छथिन, किन्तु ई चंडेश्वर द्वारा वर्णित क्रमशः गौरीपूजा ओ रसकलागिनी व्रतक परिवर्तित वा विकसित रूप थिक। मधुश्रावणी, हरताली, हरगो, तुषारी, साँझ-भतरासि स्त्रीक व्रत ओ पर्व थिक। कारण, एहिमे गौरी-पूजाक प्रधानता रहैछ और गौरी मैथिल महिलाक आराध्या थिकीह। शेष व्रत ओ पर्व स्त्री-पुरुष सभ क' सकैत अछि। एहि सभमे शिवक वा साम्बशिवक प्राधान्य रहैछ।

Scanned by CamScanner

उपासनाक क्षेत्रमे मैथिल जीवनमे की स्थान अछि तकर निदर्शन म० म० डा० उमेश मिश्रक निम्नलिखित वक्तव्यसँ होइत अछि—

'शक्ति एवं विष्णुक उपासनासँ कल्याण अवश्य होइछ किन्तु मोक्ष देनिहार तँ महादेवे छथि। शक्ति ओ विष्णुक उपासना कठिन होइछ हिनका सबहिक अन्तरङ्ग रहस्य जानब कठिन अछि। सभ वर्ण सभ अवस्थामे हिनका लोकनिक सविधि पूजन नहि क' सकैत अछि। परन्तु अपन-अपन कल्याणक हेतु तँ देवताराधन सभकाँ परम इष्ट होइछ। तथा देवमूर्त्ति सर्वथा आत्मीय भाव बिना अनुभव कयने हुनकामे ओहन श्रद्धा ओ ओहन भक्ति होयब कठिन छैक तेँ सभा वर्णकेँ महादेवक उपासनामे अधिक प्रेम होइछ। महादेवक अराधनामे आडम्बर नहि, केवल जल, फूल ओ बेलपात मात्रसँ आ तृप्त होइ छथि। थोड़बहु उपासनासँ शीघ्र प्रसन्न होइत छथि। तेँ आशुतोष हुनकर नाम थिकनि।[1]

शिवपूजन कतेक सरल अछि ताहि प्रसंग मिथिलामे लोकमुखमे एक श्लोक प्रचलित अछि—

मूर्त्तिर्मृदा विल्वदलेन पूजा मुखेन वाद्यं सलिलेन पाद्यम्।
फलतु सायुज्य वरप्रदानं नि:श्वस्य विश्वेश्वर एवदेव: ॥

आगाँ महामहोपाध्यायजी मैथिल जीवनमे व्याप्त शैव भावना ओ आचारक सम्बन्धमे कहैत छथि—

'महादेवहिक उपासनामे विशेष रूपेँ लोक परस्पर भेदभावकेँ अल्पमात्रामे अनुभव करैत अछि। असत् शूद्रक अतिरिक्त आर्य जातिक सभ लोक शुचि-पूर्वक शिवलिङ्गक स्पर्श क' सकैत छथि। एहि भावना सभसँ अपरिचित मैथिल समाज नहि अछि। इएह कारण थिक जे प्रत्येक गृहस्थ घरमे पार्थिव शिवलिङ्गक नित्य पूजन होयब कल्याणकारक मानल जाइछ। इष्टसिद्धिक हेतु लोक महादेवकाँ बेलपात चढ़यबाक कबुला करैत अछि। ललाटमे भस्म लगायब प्रत्येक आबाल वृद्ध ब्राह्मणक कर्तव्य थिकनि। शक्ति ओ विष्णु-ओक पूजाक अन्तमे महादवक पूजा करब आवश्यक बुझना जाइछ। कोनो आपत्तिक अवसर लाखक लाख संख्यामे महादेवक पार्थिव मूर्तिक पूजा सभ

१. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता, भाग-२, पृ० १४।

ग्राममे सभ वर्णमे प्रसिद्ध अछि। चतुर्दशीक व्रत करब विशेष क' शिवरात्रिक उपवास ओ शिवदर्शन तँ प्रत्येक मिथिलावासी अपन मुख्य कर्त्तव्य बुझैत छथि। प्राण वियोगक समयमे शिवक सान्निध्य बड़ उत्तम मानल जाइछ। प्रत्येक शुभ कार्यमे महेशवानी ओ नचारी गायब आवश्यक बुझना जाइछ। विश्वक कल्याणहुक निमित्त महादेवक विविध प्रकारेँ पूजन कयल जाइछ। मैथिल विद्वान्लोकनि शतरुद्रीय मन्त्रेँ नर्मदेश्वरक स्नपन करब अपन परम धर्म बुझैत छथि।'[1]

उपर्युक्त उद्धरणसँ मैथिल जीवन-पद्धतिमे समरस भेल शैव भावनाक एकटा चित्र भेटि जाइछ किन्तु क्रमबद्ध ओ पूर्ण रूप उपलब्ध नहि होइत अछि। एहि हेतु मैथिल आचार-विचारकेँ किछु और सूक्ष्मतासँ पर्यवेक्षण अपेक्षित अछि।

समाजक अग्रणी रहल अछि द्विजवर्ग। द्विजवर्गक महत्त्वपूर्ण ओ आवश्यक नित्यकृत्य थिक सन्ध्योपासना। सन्ध्योपासनामे प्राणायाम कयल जाइछ। प्राणायाममे तीन क्रिया—पूरक, कुम्भक ओ रेचक होइत अछि। तीनू क्रियामे त्रिदेवक ध्यान कयल जाइछ—पूरकमे नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक, कुम्भक क्रियामे हृदयमे कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माक एवं रेचक क्रियामे ललाटमे श्वेत वर्ण त्रिनेत्र शिवक।[2] वाजसनेयि लोकनिक लेल देव तर्प्पणमे ब्रह्मा ओ विष्णुक तर्पणक पश्चात् रुद्रक तर्प्पण क' अन्यक तर्पणक विधान अछि। पितृतर्प्पण सम्पन्न क' पुनः सूर्य-ब्रह्म-विष्णुक पश्चात् वैदिक मन्त्रसँ रुद्रकेँ जलदेबाक परम्परा अछि।[3] मैथिल जीवनमे सन्ध्या-तर्प्पणक पश्चात् पंचदेवता-पूजाक व्यवहार अछि। पंचदेवतामे पूज्य थिकाह—सूर्य, गणपति, अग्नि, दुर्गा ओ शिव।[4] 'ब्रह्मणसर्वस्व' मे हलायुध सन्ध्या, ब्रह्मज्ञय-तर्प्पण, सूर्यार्घ्यदानक पश्चात् क्रमशः सूर्य, नवग्रह, विष्णु ओ त्र्यम्बक-पूजाक विधान देने छथि। याज्ञवल्क्यक मत उद्धृत करैत हलायुध कहने छथि जे नवग्रह पूजा काम्य अछि तेँ गणपति-पूजाक पश्चाते नवग्रह पूजा भ' सकैछ।[5]

---

१. उपरिवत्।

२. आह्निक कृत्यम् —चिरंजीवशर्मा, पृ० १२।

३. तत्रैव, पृ० २०, २६।

४. तत्रैव, २८-३१।

५. ब्राह्मणसर्वस्व—हलायुध, सं० दुर्गामोहन भट्टाचार्य, पृ० १२५-४९।

Scanned by CamScanner

पंचदवता पूजा हलायुधक पश्चाते प्राय: ग्रहण कयल गेल। ई पंचदेवता पूजा मिथिलामे ततेक महत्त्वपूर्ण अछि जे कोनो देवकर्म वा पितृकर्म, बिना पंचदेवता-पूजाक नहि भ' सकैछ।

कतोक व्यक्ति नित्यकृत्य वाणलिंग, नार्मदलिंग, वा संस्थापित लिंग सेहो राखि पूजा करैत छथि। एहन स्थितिमे शिवक आवाहन ओ विसर्जन नहि कयल जाइछ। केवल सविधि पूजन होइछ।[1] सभसँ अन्तमे पार्थिव शिवलिंगक पूजन आवश्यक मानल जाइत अछि। एहिमे सर्वप्रथम कृतमुखक पूजा होइछ। तखन 'हर'क नमन क' मृत्तिका-ग्रहण, 'महेश्वर'क नमन क' एके हाथें वेदी सहित शिवलिंग-निर्माण ओ 'शूलपाणि'क नमनपूर्वक शिवलिंगकें सुप्रतिष्ठित कयल जाइछ। ओहि पर अक्षत द' क' ध्यान कयल जाइछ—

ॐ ध्यायेन्नित्यम्महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिव्वँसानं
विश्वाद्यं विश्व बीजं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अक्षतसँ 'पिनाकधृक्'कें नमन क' आवाहन, 'पशुपति'क नमन क' पाद्यार्घ्याचमनीयादि अर्पण तथा 'शिव'क नमन क' गन्ध-अक्षतादि अर्पण कयल जाइछ। एकरा पश्चात् अष्टमूर्त्तिक पूजा कयल जाइछ। पार्थिव शिवलिंगक चारुकात पूर्व दिशासँ आरम्भ क' वामावर्त्तें अग्निकोण पर्य्यन्त आठो दिशामे शिवक आठ नामसँ हुनक आठ मूर्त्तिक ध्यान क' पूजा कयल जाइछ। ओकर क्रम निम्नलिखित अछि—

दिशा		शिवक नाम		मूर्त्ति
पूर्व	—	शर्व्व	—	क्षितिमूर्त्ति
ईशान	—	भव	—	जलमूर्त्ति
उत्तर	—	रुद्र	—	अग्निमूर्त्ति
वायव्य	—	उग्र	—	वायुमूर्त्ति
पश्चिम	—	भीम	—	आकाशमूर्त्ति
नैऋत्य	—	पशुपति	—	यजमानमूर्त्ति
दक्षिण	—	महादेव	—	सोममूर्त्ति
अग्नि	—	ईशान	—	सूर्य्यमूर्त्ति

१. आह्निक कृत्यम्, पृ० ३२।

अन्तमे 'महादेव'क नमन क' महादेवे नाम सँ विसर्जन कयल जाइछ। 'चण्डेश्वर'क नमन क' निर्म्माल्य फेकल जाइछ।'[1] विसर्जित शिवलिंग, निर्म्माल्य आदि स्वयं पूजनकर्त्ता द्वारा अन्यत्र फेकब वर्जित अछि। तेँ अन्ये व्यक्ति ओकरा उठबैत अछि।

एहि पूजामे ई विलक्षणता अछि जे सोलह गोट भिन्न-भिन्न नामसँ शिवपूजाक विभिन्न प्रक्रिया सम्पन्न होइछ। कोनो नाम दोहराओल नहि जाइछ। पार्थिव शिवपूजनक खास-खास प्रक्रियाक हेतु शिवक विभिन्न नाम सुनिश्चित अछि। एकर व्याख्या अनुसन्धानक भिन्ने विषय थिक।

शिव-वास-विचार

सोद्देश्य पार्थिव शिव-पूजन वा कोनो शिव-कर्म निश्चित तिथिए पर होयब अनुकूल फलदायक मानल जाइछ, अन्यथा अनिष्टक संभावना। तिथि विशेषकेँ शिवक वास स्थल विशेष पर मानल गेल अछि। ई वास सात गोट अछि—कैलासमे, गौरीक संग, वृषभपर, सभामे, भोजन पर क्रीड़ा ओ श्मशानमे। एहि जाहि तिथिकेँ कैलासमे, गौरीक संग वा वृषभपर वास रहैत छनि ताहि तिथिमे शिवपूजन कल्याणकर, शेष तिथिमे अनिष्टकर होइछ। अतः कोनो शिव-कर्म्मारम्भमे शिववासक गणना करब आवश्यक। गणना करबाक विशेष प्रक्रिया छैक, तदनुसार शुक्लपक्षक २, ५, ६, ९, १२ ओ १३ तिथि तथा कृष्णपक्षक १, ४, ५, ८, ११, १२, ३० तिथि शिव-पूजा हेतु शुभ तिथि मानल गेल अछि।[2]

---

१. तत्रैव, पृ० ३९-४२।

२. तिथिञ्च द्विगुणी कृत्य वाणैः संयोजत्ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्॥
एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ।
तृतीये वृषमारूढ़े सभायाञ्च चतुर्थके॥
पञ्चमे भोजनेचैव क्रीडायाञ्च रसात्मके।
श्मशाने सप्तमे चैव शिववासः इतीरितः॥
कैलाशे लभते सौख्यङ्गौर्य्याञ्च सुखसम्पदः।
वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात्सभा सन्तापकारिणी॥
भोजने च भवेत्पीडा क्रीडायाङ्कष्टमेव च।
श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवंव्विचारयेत्॥

पार्थिव शिवलिंग

पार्थिव शिवलिंग पूजन मैथिल जीवनक महत्त्वपूर्ण विशेषता थिक। वैयक्तिक रूप सँ संकट निवारणार्थ वा कोनो कामना-पूर्ति हेतु तथा सार्वजनिक रूपसँ देवी आपदा, यथा—महामारी, अगिलगी सँत्राण पयबाक लेल; रौदी आदिमे जलवर्षण हेतु अथवा समाजक सुख-कल्याण हेतु सहस्त्र, लक्ष ओ कोटि सख्यक पर्थिव शिवलिंगक पूजा मिथिलामे होइत अछि। एहन अवस्थामे चेकी महादेव,क निर्माण होइत अछि। पर्थिव शिवलिंग बनयबा लेल ब्राह्मणकेँ श्वेत, क्षत्रियकेँ लाल, वैश्यकेँ पीत ओ शूद्रकेँ कृष्णवर्णक मृत्तिका विहित अछि। किन्तु व्यवहारमे ई विभेद नहि देखल जाइछ।[1]

पार्थिव शिवलिगक अतिरिक्त गरुडपुराणमे द्रव्यभेदेँ ३६ प्रकारक शिवलिंगक वर्णन आयल अछि।[2] सभक अपन-अपन फल छैक जकर कामनासँ लोक तत्तत् शिवलिंगक पूजन करैत अछि।

जंगम ओ स्थावर लिंग

मिथिलामे पार्थिव लिंगक अतिरिक्त जंगम ओ स्थावर शिवलिंगक पूजन होइत अछि। जंगमलिंग ओना पाशुपत ओ लिंगायत सम्प्रदायानुयायी लोकनि धारण करैत रहलाह अछि। मिथिलामे ओहि रूपेँ धारण करबाक परिपाटी नहि रहल अछि। किन्तु धातु वा प्रस्तरक लघु शिवलिंग, वाणलिंग वा नर्म्मदेश्वरक पूजन होइछ जकरा सुविधानुसार स्थानान्तरित कयल जा सकैछ।

स्थावर लिंग

ई शिवलिंग सामान्यतः प्रस्तरक होइछ आ कोनो स्थान विशेष पर स्थित रहैत अछि। ई तीन प्रकारक अछि—

शिववासमभिज्ञाय प्रवृत्तः शिव कर्म्मसु।
नतत्फलमवाप्नोति ह्यनुष्ठान शतैरपि॥

मिथिलादेशीय षडङ्कशतरुद्रीय विधिः—कन्हैयालाल कृष्णदास, लहेरियसराय, पृ० ७१-७२।

१. शिवाङ्क, पृ० १५०।

२. तत्रैव, पृ० १४९-५०

१. अज्ञात मूलक
२. अंकुरित वा अंकुरी
३. संस्थापित

१. अज्ञात मूलक शिवलिंगमेसँ किछु तँ पुराण-तन्त्र आदि ग्रन्थमे उल्लिखित अछि जकर चर्चा पूर्वे भेल अछि। किन्तु किछु शिवलिंग एहन अछि जकर उल्लेख प्राचीन साहित्यमे नहि अछि। ओकर स्थापना कहिया ककरा द्वारा भेल छल तकर कोनो पता नहि अछि तथापि अत्यन्त प्रसिद्ध, पूजित ओ महिमामय अछि

२. अंकुरी महादेव ओ कहल जाइछ जे कोनो उत्खनन वा जोत कोड़मे अकस्मात् ऊपर भ जाइछ। वस्तुतः एहन शिवलिंग कोनो समयमे संस्थापित भेल रहैछ, किन्तु समयक अन्तरालमे मृत्तिकाच्छन्न भ' जाइछ आ पुनः संयोगात् प्रकट होइछ।

३. संस्थापित शिवलिंग कोनो व्यक्ति विशेष द्वारा सविधि संस्थापित कयल जाइछ। ओहि लिंगक नामकरण ओ मन्दिर वा मठक निर्माण कयल जाइछ। एहन अनेको ऐतिहासिक शिवलिंग मिथिलामे विद्यामान अछि। एकरा अतिरिक्त मिथिलाक गाम-गाममे वृहत् संख्यामे एहन संस्थापित शिवलिंग अछि। एहन कमे गाम होयत जाहि ठाम गोटेक शिवमन्दिर वा शिवलिंग नहि हो। शिवमन्दिर-विहीन गामक विषयमे सामान्य जनक हेय धारणा छैक। 'पाञ्चरात्र' मे तँ स्पष्ट निर्देश अछि जे जाहि ग्राम वा नगर मे भगवान् शंकरक आलय नहि हो ओत' कोनहु वैष्णव आपद्धमँहु रातुक हेतु निवास नहि करय।[1]

प्रत्येक स्थावर शिवलिंगक नाम रहैत छैक। ओ नाम 'ईश्वरान्त' अथवा 'नाथान्त' होइत छैक। कतहु कतहु 'ईश्वरनाथ' सेहो नामक अन्तमे लागल रहैत छैक।

स्थावर शिवलिंगक स्वरूप

मिथिलाक शिवलिंग सभक स्वरूप शास्त्रमे वर्णित प्रकारक होइत अछि।

---

१. तत्रैव, पृ० २०

ओ छोट पैघ मात्र होइछ, आकृतिमे भेद नहि रहैछ। किन्तु किछु शिवलिंग एहन अछि वा उत्खननमे प्राप्त भेल अछि जे, एकमुख, चतुर्मुख वा पंचमुख अछि। किछु ठाम शिवलिंगक एक दिस पार्वतीक मुख उत्कीर्ण अछि। एहन शिवलिंग वैशाली क्षेत्र, जमथरि (मधुबनी), पुरसौलिया (मधुबनी), बेहट (बेगूसराय), गंगा सागर (दरभंगा नगर) मे अछि।

शिव-विग्रह

शिव-विग्रहक स्थापनाक प्रचलन मिथिलामे नहि देखल जाइछ। अतः एकर संख्या बड़ थोड़ अछि। पालयुगीन उमामहेश्वरक विग्रह उत्खनन आदिमे भेटल अछि अवश्य, मुदा ओकरो संख्या बहुत बेसी नहि।

मिथिलाक शिवालयक स्वरूप

मिथिलामे शिवालय, शिवमठ वा शिवमन्दिरक निर्माणक बड़ प्राचीन परम्परा अछि। नवमशताब्दीमे नारायण पाल तीरभुक्ति एक सहस्र शिवायतन बनाय पूजा-अर्चा हेतु तीरभुक्तिक 'कक्ष' विषयमे 'मुकुतिका' नामक ग्राम शिवोत्तर मे देने छलथिन, ओहि शिवायतनक कोनो रूप रेखा उपलब्ध नहि अछि। बीस-बाइस वर्ष पूर्व बहेड़ा (दरभंगा) मे एकटा प्राचीन मन्दिरक भग्नावशेष उत्खनित भेल छल जाहिमे एक विशाल जलधरी ओ गणेश-प्रतिमा भेटल छल। आनो ठाम कतोक मन्दिरक भग्नावशेष सभ देखल गेल अछि। ओहिमेसँ बहुतो नारायणपालक सहस्र शिवायतनेमेसँ होत कोनो आश्चर्य नहि।

साम्प्रतिक कालमे जे प्राचीन मन्दिर सभ विद्यमान अछि वा निर्मित होइत रहल अछि तकर एकटा विशिष्ट शैली छैक। ओहिमे एकटा देहरि होइत छैक तकरा बाद गर्भगृह। गर्भगृह मे मध्यमे शिवलिंग ओ चारू कात अन्य देव-प्रतिमा सभ रहैछ। शिवलिंग जलधरी पर स्थित रहैछ। जलधरीक जल प्रणाली उत्तराभिमुख रहैछ। जलप्रणालीक मध्यमे गतिमान नागक आकृति अंकित रहैछ। शिवलिंगक चारू कात भित्तिलगमे. भित्तिमे गणेश, पार्वती आदिक मूर्त्ति रहैछ, मुख्य द्वार पर भैरवक मूर्त्ति रहैछ। बृषभ मूर्त्ति कतहुँ बाहरमे रहैछ, कतहु शिवलिंग लग। प्राचीन कालक शिवायतनमे मन्दिरक उपलब्ध भग्नावशेषमे पंचदेवता पूजनक आभास भेटैत अछि। साधारणतः देखल जाइछ जे एहन ठाम शिवलिंगक अतिरिक्त गणेश, भगवती सूर्य ओ विष्णुक प्रतिमा सेहो रहैत अछि।

शिवमन्दिर सभमे वाह्यमंडप वा देहरिक आगाँ आभ्यन्तर भाग गर्भगृह होइत छैक, कतहु-कतहु परिक्रमा सेहो रहैत छैक। वाह्यमंडपमे बँटा टाङल रहैत छैक। कतेक ठाम जँ मन्दिर छोट रहलैक तँ शिवलिंगक ठीक ऊपर घंटा टाङल रहैछ। मन्दिरक वाह्य आकार चतुष्कोणक रहैत छैक से वर्गाकार ओ आयताकार दुहू होइत छैक। आलयक अधोभागसँ ऊपर जा क' कीतँ चतुष्कोण के रहैछ वा स्तूपाकार भ' जाइत छैक। से क्रमशः संकीर्ण होइत जाइत छैक आ सभसँ ऊपर जा क' शिखरक रूपमे परिणत भ' जाइत छैक। शिखर पर विकसित अष्टदल, षोडशदल वा शतदल कमल रहैत छैक। ओहि कमल पर एक वा एक सँ अधिक कलश रहैत छैक। सभसँ ऊपर धातु निर्मित त्रिशूल रहैत छैक।

मिथिलाक शैव तीर्थ

मिथिलाक सामान्यजन भारतक विभिन्न शैव तीर्थक यात्रा करिते रहैत अछि। उत्तरमे पशुपतिसँ दक्षिणमे रामेश्वरम् धरि तथा पूर्वमे शक्तिपीठ कामारूप कामाख्यासँ पश्चिममे अमरनाथ धरिक तीर्थाटन मिथिलावासी करैत अछि। एहूमे वैद्यनाथ धाम, काशी-विश्वनाथ, केदारनाथ, पशुपतिनाथ ओ रामेश्वरम्क यात्रा विशेष रूपेँ कयल जाइछ। विशेष उत्साही ओ साहसी, श्रीसम्पन्न व्यक्ति द्वादश ज्योतिर्लिंगक दर्शन करैत अछि।

वैद्यनाथधामक यात्रा तँ मैथिलक हेतु सामान्य आचरण मानल जाइत अछि। वैद्यनाथकेँ ज्योतिर्लिंग ओ कामर्लिंग मानल जाइत छनि। कामना-पूर्त्ति हेतु वा कामना-पूर्त्ति भेला पर मैथिल जन वैद्यनाथक दर्शन क' जल रिसाल करब अपन परम पुनीत कर्त्तव्य मानैत अछि। साओन मासक सोमवारी नवरात्र, वसन्त पञ्चमी, मकर राशिक सूर्यमे रविवासरकेँ, शिवरात्रिक अवसरपर हजार-हजारक संख्यामे मिथिलाके लोक कान्हपर कामरु ल' वैद्यनाथधामक पैदल यात्रा करैत अछि। एहन यात्रिकेँ कमरथुआ कहल जाइछ। कमरथुआ सभ मैथिलीमे रचित नचारी-महेशवाणी तथा विशेष भावक गीत कमरथुआ गीत गबैत जाइत अछि। वैद्यनाथ वस्तुतः मैथिलक प्रधान देवता थिकाह तेँ एहि ठामक प्रधान पण्डा ओ अन्य पण्डा सभ मैथिल थिकाह। ओ लोकनि सैकड़ो वर्षसँ वैद्यनाथक पूजन-अर्चनपर एकाधिपत्य रखने छथि। एहो धामक निकट वासुकीनाथ नामक शिवलिंग अछि। ओहो अत्यन्त पूज्य मानल जाइछ आ वैद्यनाथोक यात्री ओतहु जाइते अछि।

मिथिला क्षेत्रमे सेहो अनेको शैवतीर्थ सभ विद्यमान अछि जाहि ठाम आबालवृद्ध वनिता मैथिल तीर्थाटन करैत अछि। 'मिथिला तीर्थ प्रकाश'मे एहन शैव तीर्थक निम्न प्रकारक सूची देल गेल अछि—

शिवलिंगक नाम		मौजे		प्रगना
सिंहेश्वर	—	सिंहेश्वरपुर	—	निसषपुर कोडा
शिलानाथ	—	जयनगर	—	बछौर
जलेश्वर	—	भारी	—	महतरी
कुशेश्वर	—	रौता	—	हिरनी
ईशाननाथ	—	दबामी	—	मिहिला
मिथिलेश्वर	—	कुसुमा	—	कोराडी
भुवनेश्वर	—	नाहर	—	हाटी
चण्डेश्वर	—	हरड़ी	—	भौर
कपिलेश्वर	—	जनकपुर	—	कोराडी
हलेश्वर	—	सीतामढ़ी	—	मिहिला
कामेश्वर	—	बन	—	सप्तरी
कल्याणेश्वर	—	कलना	—	भाला
क्षीरेश्वर	—	बन	—	कोराडी
कामदानाथ	—	उचचैठ	—	जरैल
मणीश्वर	—	मनमा	—	नानपुर
भैरव	—	राजखण्ड	—	तिसठि

एहि सूचीमे परिगणित 'हलेश्वर' ओ 'कामेश्वर'क संकल्पवाक्य, ग्रन्थमे नहि देल गेल अछि। दोसर दिस ग्रन्थमध्य 'कूपेश्वर' ओ 'जलाग्निनाथ'क संकल्पवाक्य ओ पूजा-विधान देल गेल अछि, किन्तु सूचीमे परिगणित नहि कयल गेल अछि। मिथिला तीर्थ-प्रकाशक रचयिता विज्ञापनमे कहने छथि— 'जकर मूलवचन पाओल किन्तु स्थान लोप भ' गेल तथा जे स्थान विद्यमान अछि हो एवं प्रसिद्धो अछि, परंच लेख नहि पाओल तकर नाम एहिमे संग्रह नहि कयल।'[1] तदनुसार एहि ग्रन्थमे आधुनिक कालमे प्रसिद्ध शैवतीर्थक उल्लेख नहि कयल गेल अछि, यथा—गरीबनाथ (मुजफ्फरपुर),

१. मिथिला तीर्थप्रकाश—श्री कृष्ण शर्मा, विज्ञापनक पृष्ठ द्रष्टव्य।

वाल्मीकिश्वर (भैंसा लोटन), भुवनेश्वर (शिवहर), कपिलेश्वर (ककरौड़), गाण्डीश्वर (शिवनगर), वाणेश्वर (माधोपुर), मदनेश्वर (मदना), वाणेश्वर (देवना गोपाल), मदनेश्वर ओ बटेश्वर स्थान (पूर्णियाँ), पिण्डीश्वर (विराट-नगर, मोरङ्ग) आदि।

वैद्यनाथ ओ वासुकीनाथक अतिरिक्त सृष्टिनाथ, बूढ़ानाथ, अजगवीनाथ आदि प्रसिद्ध शिवलिंग आ शैवतीर्थ गंगाक दक्षिण अवस्थित रहनहु मैथिली भाषी क्षेत्रमे रहने उल्लेखनीय अछि।

मिथिला-तीर्थ-प्रकाशमे मिथिलास्थ विभिन्न नदी स्नान क' हरिहर अथवा शिवक पूजा करबाक शास्त्रीय वचन-प्रमाण-पूर्वक संकल्पवाक्य ओ पूजा विधान देल गेल अछि, यथा—

कौशिकी स्नान पूर्वक हरिहर पूजन, ज्यष्ठे त्रियुगायां प्रातःस्नान पूर्वक शिव-पूजन, कमला स्नान पूर्वक हरिहर पूजन. यमुनी स्नान पूर्वक हरिहर एवं शिवपूजन विमलानदी स्नान पूर्वक हरिहर पूजन पौषेजलाधिका स्नान पूर्वक शिवपूजन. दुग्धवती स्नानपूर्वक हरिहर पूजन, फाल्गुने मण्डला स्नान पूर्वक शिव पूजन, वाग्मती स्नान पूर्वक हरिहर पूजन, गण्डकी स्नान पूर्वक हरिहर पूजन।

मिथिलामे रुद्र-शिव सम्बन्धी जनविश्वास ओ व्यवहार

मिथिलामे रुद्र-शिवक की स्थान रहल अछि तकर दिग्दर्शन कयल गेल अछि। तथापि मिथिलामे रुद्र-शिवक सम्बन्धमे कतोक एहन जनविश्वास ओ व्यवहार प्रचलित अछि जाहिमे हुनक आदिम स्वरूपक बिम्ब भेटैत अछि। वैदिक ओ उत्तर वैदिक वाङ्मयमे रुद्र-शिव केँ **'तवस्तमस्तवसाम्'** (बृद्धोमे वृद्ध) तथा **'पुरुषपरातन'** कहल गल छनि। मिथिलामे ओ भाव औखन अछि तेँ एत' रुद्र-शिव **'बूढ़'** तथा **'बाबा'** बनि गेलाह। **महादेव बाबा, भोला बाबा, बाबाधाम, बाबाक मन्दिर. बाबाक पूजा बाबाक प्रसाद बाबाक कृपा**, आदिमे **'बाबा'** शब्द **'शिव'** अर्थमे रूढ़ भ' गेल अछि। तहिना **बूढ़, बूढ़ा, बुढ़बा, बूढ़ानाथ** आदि सँ सेहो शिवक बोध होइछ।

आदिम रुद्र वर्षा ओ झंझावातक देवता छलाह। मिथिलामे ओ भाव अक्षुण्ण अछि। वर्षाक अभाव वा रौदी भेला पर ग्राम्य कृषकगण द्वारा

Scanned by CamScanner

सामूहिक पार्थिव लिंग पूजन, तापस भोजन, शिवलिंगक जलशयन आदि कयल जाइछ। लोक विश्वासक अनुसार शिव प्रसन्न भ' वर्षा प्रदान करैत छथि। रुद्रक सम्बन्ध कृषि ओ उर्वराशक्तिसँ छल। एकर झलक मिथिलामे भेटैत अछि। लागल चास वा खरिहानमे लागल अन्नक ढेरीकेँ महादेवक ढेरी मानल जाइछ। जखन खरिहानमे तैयार अन्नक ढेरी लगौल जाइछ तँ ओहि पर गोबरक शिवलिंग बना क' राखि देल जाइछ। ओहुना जखन रौदमे सुखयबालेल पसारल जाइछ तँ ओहि पर महादेवक प्रतीक पाथरक लोढ़ी राखि देल जाइछ। एहन धारणा अछि जे एहि सँ अन्नक मात्रामे ह्रास नहि होइत छैक। कतोकठाम व्यवहार अछि जे पैघ भोजमे भातक ढेरीपर पाथरक लोढ़ी राखि देल जाइत छैक। एहू व्यवहारमे उपर्युक्त धारणा काज करैछ। एहि क्रममे एकटा और धारणाक उल्लेख अपेक्षित। मिथिलामे महादेवकेँ सकल जीवकेँ आहार वितरण कयनिहार मानल जाइछ। एहि सम्बन्धमे महादेव ओ पार्वतीक एक लोककथा प्रचलि अछि—

'महादेव सभदिन भोरे बाहर जाइत छलाह आ अबेर क' घुमैत छलाह। पार्वती एकर कारणक जिज्ञासा कयलथिन। महादेव कहलथिन जीवाजन्तुकेँ आहार बटबामे देरी भ' जाइत अछि।' पार्वती पुछलथिन जे कोनो जीव छुटैत नहि अछि ? महादेव कहलथिन—नहि।' पार्वती ओहि दिन रातिएमे एकटा फनिगाकेँ सम्पुटमे बन्द क' राखि देलनि। दोसर दिन महादेव आहार बाँटि अयलाह तँ पार्वती पुछलथिन जे—आहार बाँटल भ गेल ? क्यौ छुटबो कयल ? महादेव कहलथिन—क्यौ नहि।' एहि पर पार्वती कहलथिन जे—एकटा छुटि गेल। हम एकटा फनिगा केँ बन्द क' क' रखने छी। महादेव ओहि फनिगा के खोलि क' देखऽ कहलथिन। पार्वती सम्पुट खोलि क' देख' गेलीह तँ ओहू फनिगाक मुहमे एकटा हरियर खढ़ लागल छलैक।'

बाड़ी-झाड़ी ओ खेत आदिक वर्षक पहिल उपजाक पहिल अंश शिवार्पित कयल जाइछ। ई सभ शिवक कृषि देवता ओ वनस्पतिक वृद्ध द्वारा पालन-कर्त्ता होयबाक स्मरण दियबैत अछि।

वैदिक रुद्र पशुपति छलाह। औखन मिथिलामे रुद्र-शिव पशुपति छथिहे। बड़दकेँ प्रतीक रूपसँ महादेव मानल जाइछ। गाय-महिसिक पहिल दूधक ढार महादेवकेँ देबाक प्रथा अछि। तहिना घृत सेहो चढ़ावल जाइछ। गाय-महिसिक दूधमे व्यक्तिक्रम भेलापर वा पशु सम्बन्धी अन्य कोनो बाधा भेला

पर महादेवकें दूध, घृत, संख्याक उल्लेखपूर्वक लोटाक जल, विल्वपत्र, सोना वा चानीक ठोप, गंगाजलक भार आदि चढ़यबाक कबुला कयल जाइछ। उपाधिग्रस्त माल-जालकें महादेवक भस्म वा नीर सेहो देल जाइत छैक। एहिसँ पशुक विभिन्न व्याधि, उपद्रव शान्त भ' जाइछ से लोकमे विश्वास अछि। एहिठाम रुद्रक विनाशक, उपद्रावी, रोगव्याधिक देवता तथा महाभिषग् रूपक स्मरण भ' अबैत अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे पूज्य रुद्र-शिवमे विनाशक, उपद्रावी ओ रोग व्याधिकारक तत्त्वक शमन भ' गेल अछि आ हुनक महाभिषग् रूप प्रशस्त भ' गेल। महादेव विघ्नविनाशक, अशुभ-निवारक ; रोग, महामारी, भूत-प्रेतादि उत्पातक शमनकर्त्ता भ' गेलाह अछि। महामारी आदिक शमनार्थ पार्थिव शिव-लिंग पूजन सामूहिक रूपसँ होइत अछि। व्यक्तिगत जीवनमे रोग, उत्पात, भौतिक उपद्रव, ग्रह आदिक शान्तिक हेतु पार्थिव शिवलिंग-पूजन ओ कबुला-पाती कयल जाइत अछि। तन्त्र-मन्त्रसँ सेहो एकर शान्ति करबाक परिपाटी अछि। एहिमे प्रयुक्त मन्त्र सभक अन्तमे अनिवार्य रूप सँ ईश्वर-महादेव ओ गौरा-पार्वतीक दोहाइ देल जाइछ। भौतिक उपद्रवमे रुद्रक जाय सेहो कराओल जाइछ। एहिसँ सम्बद्ध एकटा लोकोक्तियो अछि— **'जाबत जयबह रुद्र-रुद्र, ताबत खयबह बहियाशूद्र'**। अकाल बेगामे जँ कागा डकैत छैक तँ ओहिसँ कोनो अशुभ घटनाक संभावना मानल जाइछ। अतः कागाक बजला पर लोक 'शिव-शिव' उच्चारण कर' लगैत अछि।

आदिकालक रुद्र देवताक सम्बन्ध सन्तानोत्पत्तिसँ छल। उर्वरा-शक्तिक कोनो देवता रुद्रक संग मिलि गेल छल। आधुनिक काल धरि महादेव सन्तानदाता मानल जाइत छथि। एहि हेतु महादेवकें प्रसन्न करबाक लेल अनेक प्रकारक अनुष्ठान ओ कबुलापाती कयल जाइछ। मिथिलाक अनेको प्रसिद्ध पुरुषक जन्म शिव-कृपा-प्रसाद मानल जाइत अछि। विद्यापति, म० म० शङ्कर मिश्र, कवीश्वर चन्दा झा आदिक सम्बन्धमे एहने किंवदन्ती अछि।

गौरी-पूजा

मिथिलामे शिव-पत्नी गौरीक पूजा स्त्री वर्गक आवश्यक कृत्य रूपमे मान्य अछि। मिथिलाक समस्त नारी समाज सौभाग्यक अधिष्ठात्री देवीक रूपमे गौरीक उपासना करैत अछि। गौरी अपन प्रबल इच्छा शक्ति, साधना ओ तपस्याक बल पर शिव समान ईप्सित वर ओ अचल, अखंड सौभाग्य प्राप्त

Scanned by CamScanner

कयने छलीह । आदर्श दम्पती हर गौरी मिथिलाक नारी वर्गक काम्यविन्दु । अतः सकल सिद्धिदात्री आराध्य गौरीक आराधना ओ उपासना अनुकूल ईप्सित वर, चिर सौभाग्य ओ सुखी परिवारक उपलब्धि हेतु मिथिलाक कुमारी ओ सधवा लोकनि करैत आबि रहलीह अछि।

कुमारि कन्या हरसों व्रत ओ तुषारी पूजा करैत अछि । हरसों व्रत गौरी-शंकरक व्रत थिक ई कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदासँ अग्रहण शुक्ल प्रतिपदा धरि होइत छैक । तुषारीमे गौरीक पूजा कयल जाइछ । ई मकर संक्रान्ति सँ एक मास धरि होइत छैक ।

नव विवाहिता कन्याक गौरी पूजाक विभिन्न अवसर वर्ष भरि उपस्थित होइत रहैत छैक कन्याक विवाह दिन गौरी निर्माण कयल जाइछ आ ओकर पूजा दस मास धरि होइत छैक । तकरा बाद जलमे भसा देल जाइत छैक । बट सावित्रीमे बनल गौरी दोसरे दिन भसा देल जाइछ । नागपंचमीमे जे गौरी बनैत छैक तकर पूजा भरि मधुश्रावणी होइत छैक । पुनः मधुश्राणी पर्व दिन सेहो गौरी बनैत छैक आ पूजनक पश्चात् दुनूकेँ भसा देल जाइत छैक । मकरसंक्रकान्ति दिन सेहो गौरी निर्माण होइत छैक । जकरा दोसर दिन भसा देल जाइत छैक । किन्तु साँझ क' नित्य गौरी पूजाक क्रम वर्ष भरि चलैत रहैत छैक । अगिला वर्ष मकर संक्रान्ति दिन पुनः गौरी निर्माण क' एहि वर्ष व्यापी गौरी पूजाक निस्तार कयल जाइछ, ततः पर एहू गौरीकेँ भसा देल जाइत छैक ।

सबदिना पूजनक हेतु कोनो पर्वक अवसर पर वा कोनो शुभ तिथिकेँ गौरीक निर्माण कयल जाइत छैक आ सधवा द्वारा ओकर यावज्जीवन पूजन कयल जाइत छैक ।

गौरी-निर्माणक प्रक्रियामे वैशिष्ट्य देखल जाइछ । दसमासी गौरी ओ सबदिना गौरी अभङ्ग सींस सुपाडीसँ बनाओल जाइछ । शेष सभ गौरी हरदि पीसि क' ओकर गोल, नाम, त्रिकोण वा चौखुट्ट आकारक बनाओल जाइत छैक । गौरी-निर्माण कालमे तथा औत्सविक गौरी-पूजा बेरमे भगवती एवं गौरीक गीत गाओल जाइत अछि । सब दिना गौरी-पूजामे गीतक प्रयोजन नहि होइत छैक । ई गौरी गीत अन्य भगवती गीतसँ भिन्न आ विशिष्ट प्रकारक होइत अछि । गौरी-पूजा सिन्दूर, बेलपात ओ पुष्पादिसँ कयल जाइत छैक । एहिमे सिन्दूर अनिवार्य रहैत अछि । गौरी पूजनक

लौकिक मन्त्रो छैक जकर पाठ पूजन बेरमे आवश्यक मानल जाइछ। मन्त्र अछि—

उत्तर भर स अइली गउरी
हहाइत अइली फुहाइत अइली
चानन डारि तोड़ैत अइली
सिनुरक धार दैत अइली
चानन डारि अपने लेलनि
सिनुरक धार हमरा देलनि

लोक साहित्यमे प्रचुर मात्रामे गौरी गीत भेटितहि अछि, ओकर प्रभावें शिष्टो साहित्यमे गौरी गीतक रचना होइत रहल अछि। जकर गान महिला-गण करैत अछि। अतः विस्तरेण गौरी-पूजाक परिचय अपेक्षित छल।

निष्कर्ष

एहि अध्यायमे देखल गेल जे प्राच्यदेशक संगहि विदेशोमे आर्य-प्रवेश सँ पूर्व व्रात्य, असुर, किरात आदि आर्येतर जनजातिक निवास छल जकर सभक उपास्य की तँ रूद्र देवता छलाह अथवा तत्सम कोनो देवता। मैथिल याज्ञवल्क्य जखन शुक्ल यजुर्वेदक संकलन कयलनि तँ ओकर शतरुद्रिय सूक्तमे ओहि जनजातीय देवता सभकें रुद्रक संग एकीभूत क' ओकरा सभकें आर्य-मान्यता प्रदान क' देलनि। याज्ञवल्क्य स्मृतिमे विनायक देवता ओ रुद्र देवताक सेहो चर्चा कयने छथि। रामयण-महाभारत, पुराण ओ तन्त्रमे मिथिलामे रुद्र-शिवक पूजाक अनेकशः उल्लेख भेटैत अछि, जाहिमे जनकक शिव सम्पर्क प्रसिद्ध अछि। ऐतिहासिक कालमे सेहो अनेक शैवमतावलम्बी राजवंशक आधिपत्य मिथिला पर रहलैक ओ अनेको पुरातात्विक सामग्री मिथिला क्षेत्रमे भेटल जाहिसँ एत' शिव पूजाक अस्तित्व प्रमाणित होइत अछि। दर्शनक क्षेत्रमे मिथिला अग्रणी रहल अछि। सांख्य दर्शनक ऋषि कणाद, वैशेषिक दर्शनक ऋषि कपिल ओ न्याय दर्शनक रचयिता गौतम मिथिलावासी छलाह। सांख्यक संग शिवक सम्बन्ध श्वेताश्वतर उपनिषद्मे देखल गेल अछि। न्याय ओ वैशेषिक दर्शनक सम्बन्धमे सेहो विभिन्न आचार्यक धारणा रहलनि जे ओ शैव वा पाशुपत मतक अनुयायी छल। मिथिलामे संस्कृतमे शैव साहित्य-रचनाक परंपरा नवम शताब्दीक षडदर्शन

टीकाकार वाचस्पति मिश्रसँ भेटैत अछि। यदि सिद्ध भ' जाय जे कालिदास मैथिल छलाह, तँ ई परम्परा चारि-पाँच शताब्दी और पाछाँ चल जायत। मिथिलामे विविध प्रकारक शैव व्रत ओ पर्व सभ प्रचलित अछि जकर विस्तृत विवरण चौदहम शताब्दीक चण्डेश्वर कृत कृत्यरत्नाकरमे भेटैत अछि। वैदिक आर्य ओ व्रात्य-असुर-किरात एवं अन्य आर्येतर जनजातिक संयोगसँ जाहि रुद्र-शिवक निर्माण भेल तकर क्रमिक विकास ओ आराधना-उपासनाक अविच्छिन्न परम्परा मिथिलामे रहल, जकर अभिव्यक्ति शैवव्रत ओ पर्व, पार्थिव शिव लिंगपूजन, जंगम ओ स्थावर शिवलिंग, शैवतीर्थ, शिव मन्दिर, शिव सम्बन्धी जनविश्वास एवं गौरी पूजामे भेटैत अछि। शिव सम्बन्धी जनविश्वासमे वैदिक रुद्रक विभिन्न कार्य, स्वरूप ओ चरित्रक अवशेष अद्यापि सुरक्षित अछि। मैथिली शैव साहित्यक निर्माणमे ई समस्त वस्तु प्रेरक तत्व ओ पृष्ठभूमिक रूपमे काज करैत रहल अछि।

तृतीय अध्याय

शिव-भक्तिक स्वरूप

भगवदनुराग

अपन अराध्यक प्रति अखंड श्रद्धा, एकान्त अनुराग, प्रीति ओ स्नेह अर्पित करब भक्ति थिक। भगवानक प्रति कर्त्तव्यबुद्धि सँ जे नियम स्थिर कयल जाइछ ओ विधि कहल ज इछ तथा स्वाभाविक रुचिसँ जे वृत्ति उत्तेजित होइछ ओकरा राग कहल जाइछ। अर्थात् इष्ट वस्तुक प्रति स्वाभाविक तन्मयताकेँ राग कहल जाइछ एवं जकरा प्रति ओ राग धावित होइछ सैह इष्ट होइछ। ... जड़ देहक प्रति सेहो राग होइछ, किन्तु जडोन्मुख होयबाक कारण संसारमे बन्धनक कारण होइछ। किन्तु जीवक स्वाभाविक राग प्रवणताजँ भगवान दिस भ' जाय तँ ओ तरि जाइत अछि।[1]

भक्तिक परिभाषा

ऋषिमुनि लोकनि भक्तकेँ परिभाषित करबाक प्रयत्न करैत रहलाह अछि। भगवनुरागे भक्ति थिक। नारद एहि भक्तिकेँ परम प्रेमरूपा ओ अमृत स्वरूपा कहलनि अछि जकरा पाबि मनुष्य सिद्ध, अमर ओ तृप्त भ' जाइछ।[2] शाण्डिल्य परा-अनुरक्तिकेँ भक्ति कहलनि अछि।[3] व्यास पूजादिमे अनुरागकेँ भक्तिक संज्ञा देलनि अछि।[4] गर्गक अनुसार आराध्यक कथादिमे

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ० ७८।
2. नारद भक्ति सूत्र
   'सात्वस्मिन् परमप्रेमरूपा अमृत स्वरूपा च।' २।३
   'यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति अमृतो भवति तृप्तो भवति।' २।४
3. शाण्डिल्य भक्ति सूत्र, सूत्र—२
   'सा परानुरक्तिश्वरे।'
4. नारद भक्ति सूत्र, सूत्र—१६
   'पुजादिष्वनुराग इति पाराशर्य :।'

उत्पन्न अनुरागकेँ भक्ति कहल गेल अछि ।[१]

ईश्वर-प्राप्ति ओ मोक्षक चारिगोट साधन मानल जाइत अछि— ज्ञान, कर्म, योग ओ भक्ति । एहिमे भक्तिकेँ शेष तीनूसँ श्रेष्ठ साधन मानल गेल अछि ।[२] भक्तिक श्रेष्ठता निहित अछि ओकर सरलता ओ सहज साध्यतामे । अन्य साधनमे साधनाक जे कठोर प्रक्रिया अछि तकर भक्तिमे अभाव रहैत छैक । अतः भारतीय जनमानसमे अन्य साधनक अपेक्षा भक्ति अधिक ग्राह्य भेल । चिरकालसँ ओहि भक्तिक अभिव्यक्ति भारतीय वाङ्मयमे होइत रहल अछि जकर परिणाम स्वरूप विशाल भक्ति साहित्यक निर्माण भेल ।

मैथिली शैव साहित्यक आराध्यदेवता

मैथिली शैव साहित्यक आराध्यदेव थिकाह शिव ओ हुनक परिवारमे, परिगणित देव-देवीगण । शिव परिवारमे पार्वती, गणेश, कार्त्तिकेय, वीरभद्र भैरव एवं अन्य गण ओ योगिनी सभ गण्य छथि । शिव-पार्वतीक परिणय-प्रकरणमे मेना ओ हिमालयक चर्चा विशिष्ठ रूपेँ होइत अछि । पार्वतीक माता-पिता ओ शिवक सासु-ससुर होयबाक कारणे ओहो शिवपरिवारेक अंग थिकाह, किन्तु समस्त शैव साहित्यमे परात्पर ब्रह्मक रूपमे शिव ओ हुनक शक्ति स्वरूपा पार्वतीएक अराधना कयल गेल अछि । हुनकहिमे अखिल विश्वक सृष्टि-स्थितिप्रलय सन्निहित मानल गेल अछि । शिवक क्रियात्मिका शक्ति थिकथिन पार्वती ।

शिव-शक्तिक अविनाभावत्व

पार्वती शक्ति थिकीह, शिव शक्तिमान् । दुहूमे अविनाभाव सम्बन्ध छनि । ने शिवक विना शक्ति रहि सकैछ ने शक्ति विना शिव । तेँ कहल गेल अछि—

> **एवं परस्परापेक्षा शक्ति शक्तिमतो स्थिता ।**
> **न शिवेन विना शक्तिर्न च शक्त्या विना शिवः ।।**[3]

---

१. तत्रैव, सूत्र—१७
'कथादिष्विति गर्गः ।'

२. तत्रैव, सूत्र—२
'सातु कर्मज्ञान योगेभ्योऽधिकतरा ।'

३. शिवपुराण, वायवीय संहिता (उत्तरखंड), अध्याय—४ ।

Scanned by CamScanner

वृहज्जावालोपनिषद्मे सेहो इएह कहल गेल अछि। शिव ओ शक्ति दुहू एक दोसराक आधार पर छथि। शिव शक्तिमय छथि तथा शक्ति शिवमय। शिव ओ शक्ति, एहन कोनो स्थान नहि, जत' व्याप्त नहि होथि—

शिवश्चोर्ध्वमयः शक्तिरूर्ध्वशक्तिमयः शिवः।
तदित्थं शिवशक्तिभ्यां नाव्याप्तमिह किञ्चन॥[1]

सौन्दर्य लहरीमे शङ्कराचार्य कहने छथि जे—शिव यदि शक्ति-सहित होथि तँ करबामे, नहि करबामे अथवा अन्यथा करबामे समर्थ होइत छथि अन्यथा ओ चेष्टा पर्यन्त नहि क' सकैत छथि—

शिवः शक्त्यायुक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।
न चे देवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि॥[2]

अतः समस्त चराचर जगतकेँ शिव-शक्तिक अभिव्यक्त रूप कहल गेल अछि।[3] जतेक पुल्लिङ्ग प्राणी अछि से सब महेश्वर छथि, जतेक स्त्रिलिङ्ग प्राणी अछि से भगवती उमा छथि। संसारक समस्त पुरुष शंकर ओ समस्त स्त्री महेश्वरी छथि। समस्त व्यक्त जगत उमाक स्वरूप थिक ओ अव्यक्त जगत महेश्वरक स्वरूप थिक। एहिमे शिवक अर्द्धनारीश्वर रूपक रहस्य सन्निहित अछि।[4]

जेना-पिताक बिना पुत्रक जन्म नहि होइछ तहिना भव ओ भवाणी बिना एहि चराचर जगतक उत्पत्ति नहि होइछ।[5] तेँ कालिदास शिव-पार्वतीक **'जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ'** कहि क' वन्दना कयने छथि।[6]

---

१. वृहज्जाबालोपनिषद्, ब्राह्मण—२, श्लोक—९।
२. सौन्दर्य लहरी–शंकराचार्य।
३. शिवपुराण, वायवीय संहिता (उत्तर खंड), अध्याय–४; रुद्रहृदयोपनिषद् सेहो द्रष्टव्य।
४. उपरिवत्। 'पुल्लिङ्गं सर्वमीशानं स्त्रीलिङ्ग भगवत्युमा।'
'व्यक्तं सर्वमुमारूपमव्यक्तं च महेश्वरः।'
'शङ्करः पुरुषाः सर्वे स्त्रियः सर्वा महेश्वरी।'
५. उपरिवत्।
६. कुमार सम्भवम्, मंगल श्लोक।

जेना जरैत दीपशिखा समस्त गृहकेँ प्रकाशित करैत अछि तहिना शिव-पार्वतीक तेज व्याप्त भ' सम्पूर्ण जगतकेँ प्रकाश देनिहार अछि। इएह दुनू, शिवा ओ शिव सर्वरूप छथि। सभक कल्याण कयनिहार छथि। अतः सदा एहि दुनूक पूजन नमन ओ चिंतन कर्त्तव्य।[1] तेँ मिथिलामे 'कलौ चण्डी महेश्वरौ'क धारणा परिव्याप्त अछि।

पौराणिक शिव श्रो मैथिली शैव साहित्य

मैथिली शैव साहित्यक सम्बन्धमे एक महत्त्वपूर्ण वस्तु ध्यान देबाक योग्य अछि। एहिमे विवृत शिवक स्वरूप साधारणतः पौराणिक अछि। स्कन्द, लिंग, शिव पुराणादिमे जाहि रूपमे शिव-ओ शिव-परिवारक वर्णन कयल गेल अछि; जाहि रूपमे शिवक विविधलीला, कार्य, गुण, महात्म्य, दार्शनिक स्वरूप, पूजन, अर्चन, उपासना आदिक वर्णन कयल गेल अछि; जाहि रूपमे शिव-तत्त्व ओ शिव भक्तिक विचार कयल गेल अछि ताहिसँ समस्त मैथिली शैव साहित्य प्रभावापन्न अछि। प्रत्युत ई कहब समीचीन होयत जे ओहिसँ प्रेरणा ओ रस ग्रहण क' विकसित-पल्लवित भेल अछि। अतः शिवक पौराणिक स्वरूपक किछु परिचय अपेक्षित भ' जाइछ।

शिवावतार

शिव पुराणमे शिवक विविध अवतारक वर्णन भेल अछि जाहिमे पञ्चावतार, दशावतार, एवं एकादश रुद्रावतार अत्यन्त प्रसिद्ध अछि।

पञ्चावतार श्रो पञ्चवक्त्र

श्वेतलोहित कल्पमे **सद्योजात**, रक्त कल्पमे **वामदेव**, पीतवासा कल्पमे **तत्पुरुष**, शिव कल्पमे **अघोर**, तथा विश्वरूप कल्पमे **ईशान** रूपमे परमेश्वर शिव अवतार लेने छलाह। ईशान संज्ञक स्वरूप सदा कर्णवाणी ओ सर्वव्यापी आकाशक अधीश्वर थिकाह। पुरुष नामक रूप त्वक् पाणि एवं स्पर्श गुण विशिष्ट वायुक स्वामी थिक। अघोर नामधारी रूप शरीर, रस रूप ओ अग्निक अधीष्ठान थिक। वामदेव संज्ञक रूप रसना, वायु, रस ओ जलक स्वामी थिक। सद्योजात नामक रूप प्राण, उपस्थ गन्ध ओ पृथ्वीक ईश्वर थिक। इएह पाँचो रूप शिवक पञ्चवक्त्र कहल जाइछ।[2]

---

१. शिवपुराण, वायवीय संहिता (उत्तर खंड), अध्याय–४।

२. तत्रैव, अध्याय–१, तत्रैव शतरुद्र संहिता, अध्याय–१।

दशावतार ओ दश महाविद्या

शिवक दशावतार महत्त्वपूर्ण मानल जाइछ। एहि दसो अवतारक अपन-अपन शक्ति छलथिन जनिका दस महाविद्या कहल जाइछ। ई दश महाविद्या तन्त्र साधना ओ वाङ्यमे अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त कयने छथि। शिवक ओहि दसो अवतारक नाम अछि—**महाकाल, तार, बालभुवनेश, षोडश श्री विद्येश, भैरव, छिन्नमस्तक, धूमवान्, बगलामुख, मातङ्ग, कमल।** हिनका सभक शक्तिक नाम क्रमशः अछि—**महाकाली, तारा, बालाभुवनेशी षोडशी श्री विद्या, भैरवी, छिन्न मस्ता, धूमावती, बंगलामुखी, मातङ्गी** तथा **कमला**[1]

एकादश अवतार वा एकादश रुद्र

एहि ठाम शिवक एकादश अवतार वा एकादश रुद्रक चर्चा अपेक्षित अछि। एकादश रुद्रक विकासक इतिहास पूर्वक अध्यायमे देखल गेल अछि। पुराण कालमे एकादश रुद्रकें अवतार मानि लेल गेल। शिवपुराणमे एकादश रुद्रकें कश्यप द्वारा सुरभीक कुक्षिसँ उत्पन्न कहल गेल अछि। एहि एकादश अवतार वा एकादश रुद्रक नाम अछि—**कपाली, पिङ्गल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित,** शास्ता अजपाद अहिर्बुध्न्य, **शम्भु, चण्ड** तथा **भव।**[2]

अष्टमूर्त्तिक व्यापक स्वरूप

अष्टमूर्त्तिक रूपमे रुद्र-शिवक विकास वैदिक कालसँ ल' पुराण धरि कोन रूपमे भेल तकर रूपरेखा आरम्भिक अध्यायमे देखि लेने छी। पुराणमे आबि एकर रूपे नहि भेल अपितु एकर दार्शनिक व्याख्या देबाक सेहो प्रयास कयल गेल। शिव पुराणमे शिवाष्टमूर्त्तिक व्यापक रूप देखाओल गेल अछि। भगवान परमेश्वरक अष्टमूर्त्तिएक स्वरूप ई जगत् थिक। जेना सूतमे मणि गाँथल रहैछ, तहिना ई विश्व ओहि अष्टमूर्त्तिसँ व्याप्त भ' क' स्थित अछि। शिवक ओ प्रसिद्ध अष्टमूर्त्ति थिकनि— **शर्व भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान,** ओ **महादेव।** शिवक एहि अष्टमूर्त्ति द्वारा **पृथ्वी, जल अग्नि, वायु, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य** ओ **चन्द्रमा** अधिष्ठित अछि।

---

१. तत्रैव, शतरुद्र संहिता, अध्याय—१६-१८।
२. उपरिवत्।

शिवक पृथ्वीमय रूप सम्पूर्ण चराचर जगतकेँ धारण करैछ। ई विश्वम्भरात्मक रूप **'शार्वी'** मूर्त्ति थिकनि। हुनक जलमयी मूर्त्ति वा सलिलात्मक रूप समस्त जगत्केँ जीवन प्रदान करैत अछि तेँ हिनका **'भावी'** मूर्त्ति कहल जाइछ। शिवक तेजोमय शुभ मूर्त्ति विश्वक वाह्याभ्यन्तर व्याप्त भ' स्थित अछि। ई घोर रूप रहने **'रौद्री'** मूर्त्ति कहल जाइछ। वायु रूपमे भगवान् शिव स्वयं गतिशील होइत, जगत्केँ गतिशील करैत ओकर भरण-पोषण करैत छथि। वायु हुनक उग्रमूर्त्ति थिक तेँ एहि मूर्त्तिकेँ **'औग्री'** मूर्त्ति कहल जाइछ। शिवक आकाश मूर्त्ति समग्र विश्वकेँ अवकाश देनिहार सर्वव्यापी ओ भूत समुदायक भेदिका अछि। भीमनामसँ प्रसिद्ध ई मूर्त्ति **'भैमी'** कहल जाइछ। सम्पूर्ण क्षेत्रमे निवास कयनिहार, सम्पूर्ण आत्माक अधिष्ठान पशुक पाशक उच्छेदक शिवक मूर्त्ति **'पशुपतिमूर्त्ति'** कहल जाइछ। सम्पूर्ण जगतकेँ प्रकाशित कयनिहार द्युलोकमे भ्रमण कयनिहार, भगवानक सूर्य रूपकेँ **'ईशान'** मूर्त्ति कहल जाइछ। अमृतपूर्ण किरणसँ समस्त विश्वकेँ आप्यायित ओ आह्लादित कयनिहार शिवक चन्द्र रूपकेँ शिवक **'महादेव'** मूर्त्ति कहल जाइछ। भगवान् शिव अपन अष्टमूर्त्ति द्वारा समस्त विश्वकेँ अधिष्ठित क' विराजमान छथि। समस्त विश्व शिव रूप थिक। जेना वृक्षमूलक सेचनसँ ओकर शाखा पुष्ट होइत छैक तहिना शिवक पूजनसँ हुनक स्वरूपभूत जगत्क पोषण होइछ। जेना पुत्र-पौत्रादिक प्रसन्न रहने पिता-पितामहादि प्रसन्न रहैत छथिन तहिना विश्वक प्रसन्नतासँ भगवान प्रसन्न होइत छथि। देहधारीक कष्टसँ भगवान् शिवक अष्टमूर्त्तिकेँ कष्ट होइत छनि।[1]

शिवक जगत् सम्बन्धी पंच नित्य सिद्ध कृत्य

भगवान् शिव अपन विभिन्न कृत्य द्वारा जगत्क संचालन करैत छथि। शिव पुराणमे शिवक जगत् सम्बन्धी पाँच गोट कृत्य कहल गेल अछि जकरा नित्य सिद्ध कृत्य कहल जाइछ। ओ पाँचो नित्यसिद्धकृत्य थिक—

१. **सृष्टि**—संसार-रचनाक प्रारम्भ।

२. **स्थिति**—सृष्टिक शिवसँ पालित भ' सुस्थिर रूपमे रहब।

---

१. उपरिवत्, अध्याय-२—३; तत्रैव, वायवीय संहिता (उत्तर खंड), अध्याय—३।

३. **संहार**—सृष्टिक विनाश ।
४. **तिरोभाव**—प्राणक उद्धार वा उत्क्रमण ।
५. **अनुग्रह**—संसारमे मोक्ष वा मुक्ति ।

एहिमे प्रथम चारि गोट कार्य सृष्टिक विस्तारार्थ तथा पाँचम–अनुग्रह, मोक्षक हेतु अछि । ओ अचल भावसँ शिवेमे स्थिर रहैछ । शिवक एहि पाँचो कृत्यक दर्शन पंचभूतमे होइछ—भूतलमे सृष्टिक, जलमे स्थितिक, अग्निमे संहारक, वायुमे तिरोभावक तथा आकाशमे अनुग्रहक । पाँचो कृत्यक भारवहन करबाक हेतु शिव **पञ्चवक्त्र** छनि । ब्रह्मा ओ विष्णु तपस्या द्वारा शिवसँ क्रमशः सृष्टि ओ स्थिति कृत्य पओलनि । शिवक विभूति स्वरूप **'रुद्र'** ओ **'महेश्वर'** अन्य कृत्य क्रमशः **'संहार'** ओ **'तिरोभाव'** प्राप्त कयल । परन्तु **'अनुग्रह'** नामक कृत्य शिव मात्रमे निहित अछि ।[1]

षडैश्वर्य

महेश्वर शिवक छओ गोट मानसिक ऐश्वर्य कहल गेल छनि– **सर्वज्ञता, तृप्ति**, अनादिबोध, **स्वतन्त्रता, अलुप्त शक्तिसँ संयोग** तथा अपना **अन्तःमे अनन्तशक्ति धारण** ।[2]

जीव ओ मोक्ष

प्रकृति, बुद्धि, त्रिगुणात्मक अहंकार तथा पाँच तन्मात्राकेँ **प्रकृत्यष्टक** कहल गेल अछि । एहि आठ तत्त्वक समूहसँ देहक उत्पत्ति होइछ । देहसँ कर्म उत्पन्न होइछ एवं कर्मसँ पुनः नूतन देहक उत्पत्ति होइछ । एहि प्रकारेँ देहसँ कर्म, कर्मसँ देहक उत्पत्तिक चक्र चलैत रहैछ । एहि प्रकृति आदि बन्धनसँ बान्हल जीव **'बद्ध'** कहबैछ, ओहिसँ छूटल जीव **'मुक्त'** कहबैछ । प्रकृत्याद्यष्टक महाचक्रसँ आवृत्त, कर्मणशसँ बान्हल जीव शुभाशुभ कर्मक अनुसार सुख-दुख पबैत रहैछ । भगवान् महेश्वर प्रकृतिसँ परे एहि महाचक्रक कर्त्ता थिकाह । एहि महाचक्रमे चक्रवत् भ्रमणसँ निवृत्तिक हेतु चक्रकर्त्ताक स्तवन-आराधन कर्त्तव्य । एहीसँ बद्धजीव मुक्त होइछ, मोक्ष

---

१. तत्रैव, विधेश्वर संहिता, अध्याय–१० ।
२. उपरिवत्, अध्याय–१८ ।

Scanned by CamScanner

प्राप्त होइछ। मोक्ष पाँच प्रकारक होइछ—

१. **मुक्ति**—कर्मसँ ल' प्रकृति पर्यन्त वशमे होयब।
२. **सालोक्य**—कर्मजन्य शरीर वशमे होयब ओ शिवलोकमे वास।
३. **सामीप्य**—तन्मात्रा सभ वशमे होयब, जगदम्बा सहित शिवक सामीप्य ओ आयुध एवं क्रियादि शिवक समान होयब।
४. **सार्ष्टि**—बुद्धि प्रकृतिक कार्य थिक, सबुद्धि वशमे होयब।
५. **सायुज्य**--प्रकृति वशमे होयब। ओहिसँ शिवक सर्वज्ञता, तृप्ति आदि मानसिक ऐश्वर्य स्वतः प्राप्त भ' जायब जकरा पाबि मुक्त पुरुष अपन आत्मामे विराजमान रहैत अछि।[1]

शिवाराधन एवं ओकर विविध प्रकार

मोक्ष-प्राप्ति शिवक कृपा प्रसादसँ संभव। ओएह कृपा प्रसाद प्राप्त करब जीवक इष्ट, शिवपद-प्राप्ति साध्य, तदर्थ शिवसेवा साधन तथा नित्य, नैमित्तिक फलसँ निःस्पृह व्यक्ति साधक थिक।[2]

शिवपुराणमे विविध प्रकारक साधनक व्याख्यान कयल गेल अछि। शिव पुराणक माहात्म्यमे शिवक ध्यान, गुण-गान तथा शिवकथा-श्रवणसँ भव-उत्तारण कहल गेल अछि—

तेजन्म भाजः खलु जीवलोके ये वै सदा ध्यायन्ति विश्वनाथम्।
वाणी गुणान् स्तौति कथां शृणोति श्रोत्रद्वय ते भवमुत्तरन्ति ॥[3]

विद्येश्वर संहितामे श्रवण-कीर्त्तन-मननकेँ सारभूत महासाधन कहल गेल अछि। नाम-गुण-लीलाक काणसँ श्रवण, वाणीसँ कीर्त्तन ओ मनसँ मनन कर्त्तव्य अछि—

श्रोत्रेण श्रवणंतस्य वचसा कीर्त्तनं तथा।
मनसा मननं तस्य महासाधनमुच्यते ॥[4]

---

१. उपरिवत्।
२. उपरिवत्, अध्याय—३
३. शिवपुराण-माहात्म्य, अध्याय—७।
४. शिवपुराण, विद्येश्वर संहिता, अध्याय—३।

Scanned by CamScanner

एहिमे मननकें सर्वश्रेष्ठ साधन कहल गेल अछि। शंकरक पूजा, नाम जप, गुण-रूप-विलास-नामक युक्तिपरायण चित्तक द्वारा जे निरन्तर परिशाधन वा चिन्तन होइछ सैह मनन कहल गेल अछि।[1]

श्रवण-कीर्त्तन-मनन आदिमे असमर्थ व्यक्ति लिंग वा मूर्त्तिक स्थापना क' ओकर नित्य पूजन क' संसार-सागरसँ पार भ' सकैत अछि। लिंग ओ मूर्त्तिक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे ब्रह्मरूप शिवक दूइ गोट भाव ओ रूप छनि। ब्रह्मभावक 'निष्कल' रूप तथा महेश्वर भावक 'सकल' रूप। निष्कल वा निराकार रूपक प्रतीक लिंग थिक तथा सकल वा साकार रूपक प्रतीक— मूर्त्ति, विग्रह वा प्रतिमा थिक।

शिवलिंग, शिव प्रतिमा ओ शिव भक्तमे शिव भावना क' हुनक प्रसन्नताक हेतु पूजन कर्त्तव्य। पूजन शरीरसँ, मनसँ ओ धनसँ संभव अछि। अतः लिंग वा प्रतिमाक सेवा-आराधना निम्न प्रकारें कयल जा सकैछ—

१. यथाशक्ति धन राशि शिवलिंग वा शिव प्रतिमाके अर्पण।

२. निरन्तर पूजा

३. भक्तिभावसँ मण्डर, गोपुर, तीर्थ, मठ एवं क्षेत्रक स्थापना क' उत्सव कर्त्तव्य।

४. वस्त्र गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा अनूप आदिसँ युक्त भक्ष्य भोजन, अन्न नैवेद्यमे अर्पण करब।

५. छत्र, ध्वजा, व्यजन, चामर एवं अन्य अंग सहित राजोपचार जकाँ सामग्री सभ अर्पण करब।

६. प्रदक्षिणा, नमस्कार एवं यथा शक्ति जप करब।

७: आवाहनसँ विसर्जन धरि समस्त कार्य प्रतिदिनभक्ति-भावसँ सम्पन्न करब।[2]

शिव भक्ति श्रो शिव धर्म

भगवान्क कृपासँ भक्ति होइछ आ भक्तिसँ भगवान्क कृपा। कृपा-प्रसादसँ जे भक्ति होइत छैक से भोग ओ मोक्ष, उभय प्रदान कयनिहार होइछ।

---

१. उपरिवत्।

२. उपरिवत्, अध्याय ५-९।

Scanned by CamScanner

महेश्वर शिवक प्रसन्न भेला पर पशु (जीव) मे बुद्धि पूर्वक किछु भक्तिक आविर्भाव होइछ। तखन जीव अनुभव करैछ जे भगवान् शिवे हमर स्वामी थिकाह। तखन ओ विविध प्रकारक शैवधर्मक आचरण करैछ। ओहिमे निरन्तर संलगन रहने हृदयमे पराभक्तिक आविर्भाव होइछ। पराभक्तिसँ परमेश्वर शिवक परम प्रसाद प्राप्त होइछ। ओहि प्रसादसँ जीवनक समस्त पापसँ मुक्ति भ' जाइछ तथा परमानन्दक प्राप्ति होइछ। अतः किंचितो शिवभक्तिसँ जीवन-चक्रसँ मुक्ति भ' जाइछ। अङ्ग सहित (साङ्गा) आ अङ्ग-रहित (अनङ्गा) जे शिव-सेवा सैह भक्ति थिक। ओकरो तीन भेद होइछ— मानसिक, वाचिक ओ कायिका शिवक रूपादिक चिन्तन मानसिक सेवा, जप आदि वाचिक सेवा तथा पूजन आदि कर्म कायिक सेवा थिक। एकरे 'शिवधर्म' कहल गेल अछि। पुनः शिवधर्म पाँच प्रकारक सेहो कहल गेल अछि— तप, कर्म जप, ध्यान तथा ज्ञान।[1]

(तपः कर्म जपोध्यानं ज्ञानञ्चेति समासतः।)

मूर्त्ति आदिमे जखन भजन-पूजन होइछ तँ 'वाह्य' कहल जाइछ। ओएह जखन मनक द्वारा होइछ आ केवल स्वानुभूतिक विषय रहैछ तँ 'आभ्यन्तर' कहल जाइछ। शिवमे आसक्त चित्त 'मन' थिक। शिवनामक जप-कीर्त्तनमे संलग्न वाणी यथार्थ वाणी थिक। शास्त्रोक्त त्रिपुण्ड्रादि चिह्नसँ युक्त निरन्तर शिव पूजामे संलग्न शरीरे 'शरीर' थिक। शिवक पूजा कर्म थिक शिवक हेतु शरीर कृश करब तप' थिक। पंचाक्षर मन्त्र (नमः शिवाय) क आवृत्ति, (ऊँ) क अभ्यास, रुद्राध्याय आदिक पाठ जप थिक। शिव-स्वरूपक चिन्तन, स्मरण 'ध्यान' थिक। शिवागमक अर्थकेँ नीक जकाँ जानि हृदयंगम करब ज्ञान थिक।[2]

भक्तक प्रकार

भक्त चारि प्रकारक होइछ अछि—आर्त्त, जिज्ञासु अर्थार्थी तथा ज्ञानी। एहिमे उत्तरोत्तर श्रेष्ठ अछि। ज्ञानीकेँ सर्वश्रेष्ठ भक्त कहल गेल अछि।[3]

---

१. शिवपुराण, वायवीय संहिता (उत्तरार्द्ध), अध्याय-७।
२. उपरिवत्, अध्याक-१०
३. शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सतीखण्ड), अध्याय-४३।

Scanned by CamScanner

ज्ञानी ओ थिक जे विज्ञ न द्वारा परात्पर ब्रह्मरूप शिवके जनबाक चेष्टा करैत अछि। विज्ञाने परम तत्त्व थिक जकर उदय भेलासँ **'ब्रह्म छी'** एहन दृढ़ निश्चय भ' जाइछ। ओहि विज्ञानक माता थिकैक शिव भक्ति। भक्तिक विरोधीके कहियो ज्ञानक प्राप्ति संभव नहि।[1]

भक्तिक प्रकार

भक्ति दुइ प्रकारक होइछ **'सगुणा'** ओ **'निर्गुणा'**। जे **वैधी** (शास्त्र विधि सँ प्रेरित) एवं **स्वाभाविकी** (हृदयक सहज अनुरागसँ प्रेरित) भक्ति होइछ से श्रेष्ठ अछि। किन्तु ताहिसँ भिन्न कामनामूलक भक्ति निम्न कोटिक मानल गेल अछि। सगुणा-निर्गुणा भक्तिक **नैष्ठिकी-अनैष्ठिकी, विहिता-अविहिता** आदि अनेक प्रकारें भेदोपभेद कयल गेल अछि[2] जकर विस्तारमे जायब अपेक्षित नहि अछि।

भक्तिक श्रेष्ठता

भक्तिकें ईश्वर-प्राप्तिक सर्वश्रेष्ठ साधन मानल गेल अछि। विशेषतः कलियुगमे भक्तिकें अत्यधिक महत्ता प्राप्त छैक। तें स्वयं शिव सतीकें कहैत छथिन—

त्रैलोक्ये भक्ति सदृशः पन्था नास्ति सुखावहः।
चतुर्युगेषु देवेशि कलौतु सुविशेषतः ॥[3]

शिवभक्त-लक्षण

शिवक यथार्थ भक्तक आठ गोट लक्षण कयल गेल अछि—शिवभक्त जनमे प्रीति, शिवपूजाक अनुमोदन, स्वयं शिव-पूजनमे प्रवृत्ति, शिवक निमित्त शारीरिक चेष्ठा, शिवकथा-श्रवणमे भक्ति भाव, कथा-श्रवणमे स्वर-नेत्र-अंग आदिमे सात्त्विक भावक उदय, नित्य शिवक स्मरण तथा शिवाश्रयमे जीवन-निर्वाह। ई चिह्न जँ म्लेच्छोमे होइक तँ ओएह विप्रशिरोमणि एवं महामुनि थिक। ओएह यथार्थ संन्यासी थिक, ओएह पण्डित थिक।[4]

---

१. उपरिवत्, अध्याय-२३।
२. उपरिवत्।
३. उपरिवत्, श्लोक-३८।
४. उपरिवत्, अध्याय-२३।

एकादश आसक्ति

आराध्यमे एकान्त अनुराग वा परम आसक्तिक बिना ई लक्षण सभ उदित होयब कहियो संभव नहि अछि। अनुराग वा आसक्तिए भक्तिक मूलाधार थिक। ओकरा बिना आराध्यमे तन्मयताक स्थिति नहि आबि सकैछ। (नारद भक्तिक सूत्रमे एगारह प्रकारक आसक्तिक गणना कयल गेल अछि — **गुणमाहात्म्याक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, सख्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्म-निवेदनासक्ति, तन्मयतासक्ति** तथा **परमविरहा सक्ति**।[1] वस्तुतः एहि एगारह प्रकारेँ ईश्वर-आ सक्ति भ' सकैत अछि। एगारह प्रकारक प्रेमाभक्ति भ' सकैत अछि।

नवधा भक्ति

श्री मद्भागवतमे नओ प्रकारक (नवधा) भक्तिक चर्चा कयल गेल अछि — **श्रवण कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य** एवं **आत्मनिवेदन**।[2] ठीक एहि प्रकारेँ शिवपुराणमे सेहो भक्तिक विस्तारसँ चर्चा कयल गेल अछि। ओहि ठाम नवधा भक्तिकेँ भक्तिक अंगक रूपमे मानल गेल अछि। तदनुसार **श्रवण कीर्त्तन स्मरण सेवन दास्य अर्चन वन्दन सख्य** तथा **आत्मार्पण**—भक्तिक ई नओ गोट अंग थिक।[3]

श्रवण—भगवन्नाम, चरित एवं गुण आदिक मनोयोगपूर्वक निष्ठासँ सूनब (**श्रवणं नाम चरित गुणादीनां श्रुतिर्भवेत्**)।

कीर्त्तन—भगवन्नाम, लीला, गुण, माहात्म्य आदिक उच्च स्वरसँ उच्चारण करब। (**नामलीला गुणादीनामुच्चैर्भाषातु कीर्त्तनम्**)।

---

१. नारदभक्ति सूत्र,-८२।

२. श्रीमद्भागावत, ७।५।२३।

३. शिवपुराण, रुद्रसंहिता (सती खण्ड) अध्याय-२३।२२-२३

श्रवणं कीर्त्तनं चैव स्मरणं सेवनं तथा दास्यं तथार्चनं देवि वन्दनं मम सर्वदा।

सख्यात्मार्पणं चेति नवाङ्गानि विदुर्बुधाः॥

विस्तृत परिचय हेतु साधनाङ्क (कल्याण विशेषांक) द्रष्टव्य, पृ० १०९-१११।

स्मरण—येनकेन प्रकारेण मनक संग आराध्यक सम्बन्ध स्थापित करब (**यथाकथं चिन्मनसासम्बन्धः स्मृतिरुच्यते**)।

सेवन—शिवपूजनार्थ पुष्पचयन, जलानयन, आलय-सम्मार्ज्जन, निर्म्माल्य-अपनयन इत्यादि कार्य।

दास्य—भगवान् शिवकें अपन कर्म अर्पित क' हुनक अनन्य सेवामे अपनाकें लगा देब (**दास्यं कर्मार्पणं तस्य कैङ्कर्यमपि सर्वथा**)।

अर्चन—पूजनार्थक अर्च धातुमे करण अर्थमे ल्युट् प्रत्ययक योगसँ अर्चन शब्द निष्पन्न अछि। अतः गन्ध-पुष्पादि उपकरण विविध उपचार-पूर्वक परमेश्वर शिवकें अर्पण करब अर्चन थिक।

वन्दन—परमेश्वरकें श्रद्धाभावसँ प्रणाम, अभिवादन वा नमस्कार आदि करब।

सख्य—परमेश्वरमे अखड विश्वास तथा हुनक संग मैत्री सन व्यवहार ओ आचरण करब (**विश्वासो मित्रवृत्तिश्च सख्यं द्विविधमीरितम्**)।

आत्मार्पण—अहंकारक परित्याग क' अपन तन, मन, धन, परिजन सहित परमेश्वरक शरणापन्न भ' श्रद्धा ओ प्रेम पूर्वक अपनाकें हुनका चरणमे अर्पित करब।

प्रेमोदयक क्रम ओ पंचस्वभाव

भक्तमे भगवान्क प्रति प्रेमोदय होइछ। एहन भक्तक संख्या इतिहासमे वड़ अल्प देखल गेल अछि जकरामे भगवत्-कृपा-प्रसादसँ अकस्मात् प्रेमक उदय भ' गेल होइक। साधारण स्थितिमे भगवत्प्रेमोदय क्रमशः होइत अछि। ओकर क्रम अछि—१ **श्रद्धा** २. **साधुसंग** ३. **भजनक्रिया** ४. **अनर्थ-निवृत्ति** ५. **निष्ठा** ६. **रुचि** ७. **आसक्ति** ८. **भाव** तथा ९. **प्रेम**। प्रेमोदय भेला उत्तर भक्तमे पाँच प्रकारक स्वभाक उदय भ' सकैछ—**शान्त**, **दास्य**, **सख्य**, **वात्सल्य** एवं **मधुर**। एहि पाँचो स्वभावक अपन-अपन रति होइत छैक, क्रमशः **शान्ति प्रीति प्रेम अनुकम्पा** एवं **कान्ता** वा **मधुरा**। काव्य शास्त्रीय सात रस—हास्य, अद्भत, वीर, करुण, रौद्र, भयानक ओ वीभत्स भगवत्प्रेममे सहायक भ' गौणरस नाम ग्रहण करैत अछि। श्रृंगार ओ शान्त रस उपर्युक्त पाँचो स्थायी भावक आश्रयण करैत अछि। काव्यशस्त्रीय श्रृंगार ओ शान्तरस तथा भक्त

शृंगार ओ शान्तरसमे तात्त्विक भेद अछि। पहिल जडोन्मुख होइत अछि आ दोसर चिन्मुख।[1]

मैथिली शैव साहित्यमे मधुरा भक्तिक अभाव

वैष्णव भक्तिमे मधुरा भक्तिक जे विस्तार अछि से मैथिली शैव साहित्यमे उपलब्ध नहि। पार्वतीक पतिभक्तिमे एहि भावक किछु दर्शन भ' सकैछ। किन्तु ओहो राधा माधव वा गोपी-कृष्णक भावक समकक्षता नहि प्राप्त क' सकैछ। स्वकीया पार्वतीमे परकीया भावक कल्पनो ने कयल जा सकैछ जखन कि परकीया भाव मधुरा भक्तिक आधार-तत्त्व थिक। मैथिली शैव-साहित्यमे जत' कतहु शृंगारक समावेश अछि से शिवपार्वतक लीला-विस्तारक विक्षेप मात्रक अंकन अछि। वस्तुतः मैथिली शैव साहित्यक शृंगार रसो उपरिकथित सात रसमे सम्मिलित भ' शान्ते रसक अवलम्बन करैत अछि।

दास्यक व्यापकता

शेष चारि गोट स्वभाव शान्त, दास्य, सख्य ओ वात्सल्य मैथिली शैव-साहित्यक भक्ति ओ शान्तरसक आधारभूत तत्त्व मानल जा सकैछ। एहि प्रकरणमे आचार्य गोपीनाथ कविराजक मन्तव्य अत्यन्त महत्त्वक अछि। हुनकामे तँ भक्ति ओ शान्तरसक आधारभूत तत्त्व थिक दास्यभाव। बिना दास्यभावक ने भक्तिक उदय भ' सकैछ ने परिपक्वता। कविराजजी भक्ति ओ दास्यक सम्बन्धमे विस्तारसँ विचार करैत कहने छथि—

'त्रिकदर्शनमे दास्यात्मक भक्तिए स्वीकार कयल गेल अछि। भगवान्—प्रभु, पिता वा गुरु थिकाह। भक्त दास, पुत्र अथवा शिष्य थिक। केवल त्रिकदर्शनमे नहि शैवागम मात्रमे एही भावक प्रधानता देखि परैछ। वीर शैवादिमतोमे इएह सिद्धान्त स्वीकृत देखल जाइछ। शाक्तागमोमे मूलतः एहि विषयमे कोनो भेद नहि देखि परैछ। हँ, पितृभावक स्थानमे ओहिमे मातृ-भावक कल्पना कयल जाइछ, इएह विशेषता अछि। परन्तु एहि भावत्रयीमे दास्य भावे मूलभूत अछि अत एकरे प्राधान्य देखाओल गेल अछि। कहबाक आवश्यकता नहि जे भक्तिक मूल तत्त्वे दास्य भावाश्रित अछि, एकरा स्वीकार करहि पड़त। शान्त भक्ति भक्तिक एक स्फुरण अवस्था मात्र थिक। किंचित्

---

१. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ० ७९-८०।

विकसित होइते ओहिपर दास्य भावक रंग चढ़ि जाइछ। अद्वैतसँ द्वैतक तरङ्ग एही भावमे उठैछ। फेर भने कतबो विकास होउक, ई रंग नहि छुटैत छैक। यद्यपि गौड़ीय बैष्णव प्रभृति सम्प्रदायमे सख्य वात्सल्य ओ माधुर्यो भाव मानल गेल अछि तथापि ई सत्य अछि जे सभ भावक मूलमे ई दास्यभाव अनुस्यूत अछि। भूत सृष्टिमे जाहि प्रकार वेदान्तक अनुसार आकाशसँ वायु वायुसँ अग्नि, इत्यादि क्रमसँ पृथ्वीक अविर्भाव होइछ रस विकासमे सेहो एही प्रकारेँ शान्तसँ दास्य, दास्यसँ सख्य इत्यादि क्रमसँ रसपुष्टि होइछ।'

'शान्त भावक विशेष गुण, निष्ठा दास्य भावमे अनुवृत होइछ आ ओकर अपन गुण सेवा सेहो ओहि समय विकसित भ' उठैछ। सख्यमे शान्त एवं दास्य दुनुक गुण अनुवृत्त होइछ तथा अपन गुण असङ्कोचक सेहो विकास होइछ। एही प्रकारेँ माधुर्यमे सभ रसक गुण अर्थात् निष्ठा, सेवा, असङ्कोच, लालन वर्त्तमान रहैछ तथा एकर अतिरिक्त ओकर विशेष गुण आत्मसमर्पणो स्फूर्त्त भ' उठैछ।'

'त्रिक दर्शन दास्यात्मक भक्तिकेँ मानिक' भक्तिक मूल तत्त्वकेँ मानि लेलक अछि।'

'प्रश्न भ' सकैछ जे ई रस केवल शान्तरस थिक अथवा दास्यो थिक? एहि प्रश्नक समाधान, पहिने जे किछु कहल गेल अछि, ओहि सँ भ' जाइछ। भक्तिक मूलमे दास्यभाव रहबे करत। शान्तभावकेँ भक्तिक बीज भाव कहल जा सकैछ से ठीक, किन्तु ओ परिस्फुट भक्ति नहि थिक। दास्य बोध जाबत नहि भ' जाइछ अपनाकेँ एक अनन्त वस्तुक संग अभिन्न बूझियो क' जावत तदाश्रित रूपसँ बोध नहि भ' जाइछ तावत भक्ति राज्यक आरम्भे ने होइछ। शान्तभाव तकरे सूत्रपात करैत अछि। किन्तु ई अनन्तवस्तु अपन आत्मासँ भिन्न और किछु नहि थिक। तेँ जाहि ब्रह्मभावसँ शान्तरस तदन्तर दास्यादिक आविर्भाव होइछ, शान्त अथवा दास्यादिमे ओएह ब्रह्मभाव अनुवृत रहैछ।'[1]

एहिरूपमे देखैत छी जे भक्तिक आधारभूत तत्त्व थिक दास्यभाव। आराध्यक आराधनामे दास्यबोधे भक्ति सम्बन्धी विभिन्न आचार, क्रिया, स्वभाव ओ भावक रूपमे प्रस्फुटित भ' विकसित ओ पुष्ट होइत अछि। दास्यमे आरा-

---

१. पण्डित गोपीनाथ कविराजक निबन्ध 'काश्मीरीय शैवदर्शन के संबंध में कुछ बातें', शिवाङ्क (कल्याण), पृ० ८५-८६।

च्यक ऐश्वर्यबोध अत्यन्त आवश्यक तत्त्व अछि। वैष्णव भक्तमे मधुर भाव सँ भजन कयनिहारक हेतु भगवानक लीला मात्र प्रधान स्मर्त्तव्य थिक, हुनक श्रृंगार-चेष्टा, विलास-लीला, प्रेमगाथा गेय थिक। ओहिमे भगवान्क प्रेयस् रूप मात्र भक्तक मनोराज्यमे अधिष्ठित रहैछ। किन्तु दास्य भावसँ भजन कयनिहार भक्तमे भगवान्क प्रेयस् रूप सेहो रहि सकैछ, श्रेयस् रूप तँ अनिवार्य रूपेँ रहैछ। अं जावत भगवान्क ऐश्वर्यमय श्रेयस् रूपक स्मरण, कीर्त्तन, अर्चन, वन्दन सेवन नहि करत ताबत ओकरामे अहंकार-क्षय, दैन्य, शरणापन्नता, आत्मार्पण आदिक अभ्युदय तीव्र रूपमे नहि भ' सकतैक। शिव भक्तिमे शिवक ऐश्वर्य बोध तीव्रतर रहैत छैक। ओ शिवक सर्वशक्तिमान् क्षमावान्, आशुतोष, शरणागत-वत्सल तथा करुणायतन रूपकेँ विषिष्ठ रूपमे स्मरण करैत अछि।

पार्वती अव्यक्त रूपमे शिवक शक्ति थिकीह। किन्तु व्यक्त रूपमे शिव-पत्नीत्वेन भक्त छथि। नारदोक्त एकादश आसक्ति, श्रीमद्भागवत तथा शिवपु-राणोक्त नवधा भक्तिक संग चरम कोटिक दास्य भाव ओ शिवक ऐश्वर्य बोध पार्वतीमे विद्यमान छनि तेँ पार्वतीक भक्ति सर्वश्रेष्ठ अछि। ओकर समता संसारक अन्य कोनो भक्त नहि क' सकल। अन्य भक्तमे एहि सभक अंश-विषेषमात्र विद्यमान देखल गेल।

शैवसर्वस्वसारमे शिव भक्तिक क्रियात्मक स्वरूप

मिथिलामे न्याय-मीमांसा आदि दर्शन पर चिन्तन-मनन होइत रहल, किन्तु भक्ति सम्बन्धी शास्त्रीय चिन्तनक कोनो विशिष्ठ प्रयास नहि कयल गेल। शिव, दुर्गा, विष्णु आदिक स्थापना, पूजा इत्यादि विषयक ग्रन्थ सभ लिखल गेल अवश्य, किन्तु ओहि ग्रन्थ सभमे आचार मात्रक विवरण देल गेल अछि। आराध्य देवक पूजन, अर्चन, वन्दन, व्रत, उपवास, उत्सवादिक सप्र-माण विधान देल गेल अछि। एहि दृष्टिएँ विद्यापतिक 'शैव सर्वस्वसार' नामक ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण अछि। एहिमे शिवधर्म अर्थात् शिवक सेवा, पूजा, आराधना आदिक विस्तृत विवरण देल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे शिवक स्मरण कीर्त्तन, यात्रा, दर्शन, स्पर्श—एहि पंचकृत्यक वर्णनक पश्चात् शिव-सेवा ओ शिवाराधनक कृत्यक वर्णन कयल गेल अछि। तदनुसार शिवक भक्त लोकनिक हेतु—आलय-सम्माज्र्जन, निर्म्मालय-अपनयन, अभ्यङ्ग, उद्वर्त्तन, स्नपन; पूजाकाले त्रिसन्ध्यानृत्य, पार्थिवादि शिवलिंग-पूजनमे ध्यान, आवाहनादि,

Scanned by CamScanner

अर्घ्य, अनुलेपन, अनुलिप्य संवीजन, पुष्प-विल्वपत्र-माल्यादि अर्पण, धूप दीप, नैवेद्य, सिद्धान्त, पानक सलिल, ताम्बूलादि अर्पण फलकथन-पूर्वक कर्त्तव्य कहल गेल अछि।

ऊपर देखल गेल अछि जे शिव-पूजन शरीर, मन तथा धनसँ कयल जयबाक चाही। शैव सर्वस्वसारमे शिवपूजनमे धनसँ होम'वला विविध प्रकारक शिवनिमित्तक दान सभक विवरण देल गेल अछि। शिव सम्प्रदानक वस्तु सभमे परिगणित अछि—वस्त्र, यज्ञोपवीत दर्पण, मायूरव्यजन, तालवृन्त, चामर, दीपिका, शङ्ख, भेरीमृदंगादि, स्त्रीसंगीतक, गोमय गो, वृषभ, भूमि, ग्राम, नगर, देश, खट्वा, शिवालये घण्टाबन्धन, छत्र; वितानक, महाध्वज, मौक्तिक, मण्डप, धान्य, अजावृषभ-श्वर-मेषाणामन्यतम, बहुरत्न इत्यादि।

उपर्युक्त दानीय वस्तुक विवरणक पश्चात् शिवक नीराजन, आरात्रिक, जप, प्रदक्षिण, प्रणाम, नमस्कार, ध्यान, रुद्राक्षधारण—एहि अष्ट कृत्यक विधान देल गेल अछि। तत्पश्चात् शिवायतन करण, लिंगस्थापन, जीर्णायतन स्थापन, शिवक्षेत्र वाप्यादिकरण—एहि चारि कृत्यक फल कहल गेल अछि। ततः पर शिवलिंग समीप नद्यादि स्नान तथा भूति स्नानक फल कहल गेल अछि। अन्तमे शिवव्रत, शिवरात्रि, सोमव्रत, कृष्णाष्टमीव्रत, प्रतिमासंकल्प तथा जयासन मन्त्रक विवरण देल गेल अछि।[१]

मिथिला तीर्थप्रकाशमे शिवभक्ति सम्बन्धी विभिन्न कृत्यक विवरण देल गेल अछि। ओहिमे शिवतीर्थक यात्रा ओ शिवाराधनमे पंचकृत्य दर्शन, पूजन, प्रदक्षिण, प्रणाम तथा प्रार्थनाक विधान देल गेल अछि।[२]

एहि प्रकारक विधि सभक वर्णन अन्यो शिव विषयक निबन्धग्रन्थ सभमे आयल अछि। विस्तार ओ पुनरुक्ति होयबाक कारणे सभक विबरण अपेक्षित नहि अछि।

शिवाभिनय ओ तकर दर्शन

मैथिली शैव साहित्यमे शिवभक्तिक व्यावहारिक ओ क्रियात्मक स्वरूपक

---

१. द्रष्टव्य, विद्यापति—वाङ्मयमे संकलित पण्डित श्री जीवानन्द ठाकुरक निबन्ध, पृ० १२५-१३२।

२. मिथिला तीर्थ प्रकाश, पृ० ८१-८४।

Scanned by CamScanner

संग ओकर भावपक्षक दर्शन होइत अछि। ऊपर विस्तारसँ शिवभक्तिक जाहि स्वरूपक चर्चा भेल अछि तकरे कोनो ने कोनो अंगक प्रतिपन्न रूप मैथिली शैव साहित्यमे सर्वत्र उपलब्ध होइत अछि। एहि सम्बन्धमे एक नवीन वस्तुक प्रतिपादन जगज्ज्योतिर्म्मल कयने छथि। ओ शिवभक्तिमे शिवाभिनयकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान देने छथि। वदन हरगुण-गानक' श्रवण तकरा सुनि क' धन्य होइत अछि। कर युगल शिवक अभिनय क' क' ओ नयन युगल तकर दर्शन क' धन्य होइत अछि। चरण धन्य ओ जे हर भक्ति करय। अर्थात् शिवक अभिनय करब ओ अभिनयक दर्शन करब दुहू शिव भक्तिक अंग थिक —

वदन धन्य मोर हरगुण कहिए श्रवण धन्य सेहे सुनिएरे ॥
करयुग धन्य कैए तसु अभिनय नयन धन्य सेहे देखिएरे ॥
चरण धन्य हर भगति करिअजे दुरित दुष्खदुर जैहञोरे ॥[१]

मिथिला ओ नेपालमे रचित ओ अभिनीत शिव विषयक नाटकक प्रयोजन आनन्द ओ मनोरंजनसँ अधिक शिव भक्ति रहल अछि। शिवलिंग वा शिव प्रतिमाक दर्शन पूजन आदि तथा शिव लीलाक कथाक प्रत्यक्षवत् दर्शन, श्रवण, कीर्त्तन, खनन आदि तत्त्वक एकत्रैव समावेश शिवाभिनयमे रहैत छैक। अतः शिव भक्तिक सरल ओ सुलभ साधन थिक शिवाभिनय। अतः शिवलीलात्मक नाट्यकृतिक रचयिता, कृति एवं अभिनयक कारयिता, अभिनेता अभिनय-प्रेक्षक ओ एहिसँ सम्बद्ध सहयोगी जनकेँ नारदोक्त आसक्तिक अनुभूति तथा नवधा भक्तिमेसँ कोनो ने कोनोक अवसर अवश्य प्राप्त भ' जाइछ।

मैथिली शैव साहित्यक उद्देश्य

मैथिली शैव साहित्यमे पुराणोक्त शिव कथाक अंकन ओ शिवक रूप-गुण-माहात्म्य युक्त स्तवनक दीर्घ परम्परा रहल अछि। एहिमे उपरि विविक्त शिवभक्ति-तत्त्वक अभिव्यंजना होइत रहल अछि। शिवभक्त कवि लोकनि अपन हृदयक भक्ति-भावना ओ शिव-प्रीतिकेँ वागर्थक माध्यमसँ साम्बसदा शिवक चरणमे अर्पित करैत धन्य होइत रहलाह अछि। ओ लोकनि मैथिल शिवभक्त समुदायक श्रवण-कीर्त्तन-स्मरण-वन्दन आदिक हेतु, शिव-

१. हरगौरी विवाह नाटक—सं० डा० रामदेव झा।

प्रीति एवं भुक्ति-मुक्ति लाभार्थ अजस्र शैव साहित्यक सर्जन करैत रहलाह अछि। एहिमे 'स्वान्तः सुखाय' ओ आत्महिताय'क संगहि 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'क भावना सन्निहित अछि।

Scanned by CamScanner

चतुर्थ अध्याय

मैथिली शैव साहित्यक स्वरूप

रसपक्ष ओ भक्ति पक्ष

मैथिलीमे रचित साहित्यक सामान्यतः दुई गोट वर्ग अछि। एक अछि लोकायत्त आ दोसर देवायत्त। सिमित क' एकरे दोसरो नाम देल जाइछ, प्रथम रसपक्ष ओ दोसर भक्तिपक्ष। जखन कवि सामान्य मानवीय भावनाकेँ लौकिक उद्देश्येँ अभिव्यक्त करैत छथि तँ ताहि काव्यकेँ लोकायत, लोकपक्षक वा रसपक्षक, काव्य कहल जाइछ। जखन परलौकिक दृष्टिएँ धर्म ओ मोक्षक उद्देश्येँ कवि मानव हृदयक श्रद्धा, आत्मसमर्पण ओ भक्तिक भावनाकेँ अभिव्यक्ति दैत छथि तथा ओ कोनो देव-देवीकेँ समर्पित रहैत अछि तँ ओहि काव्यकेँ देवायत्त, देवपक्षक वा भक्तिपक्षक कहल जाइछ।

आधुनिक मैथिली साहित्यमे भावजगतक विस्तार भेलैक अछि अवश्य, किन्तु प्राचीन काव्यक भावजगत सीमित छलैक। रसपक्षमे काव्यक विषय नायक-नायकिाक प्रेम-व्यापार धरि सीमित छलैक। एहि प्रेम-व्यापारक चित्रण दुइ प्रकारेँ होइत छल, एक तँ सामान्य नायक-नायिकाक माध्यमसँ आ द्वितीय राधाकृष्णक माध्यमसँ। एकर विशेष महत्त्व नहि छलैक जे आलम्बन सामान्य नायक-नायिका अछि वा राधा-कृष्ण। मुख्य वस्तु रहैत छलैक रति भाव। यद्यपि रसपक्षमे परिगणित अनेको व्यक्तिक काव्य मधुरा भक्तिक काव्य मानल जा सकैत अछि। गोविन्द दास ओ विष्णुपुरीक काव्य एही श्रेणीक थिक। शृंगार रससँ आप्लावित रहितो हुनक काव्य वंगीय वैष्णव धर्मसँ प्रभावित रहने भक्ति काव्य मानल जाइछ। मध्यकालमे रास-ग्वालरी आदि प्रकारक काव्यमे यद्यपि शृंगारक स्थिति छैक, मुदा ओहूमे भक्तिक प्रमुखता छैक। अतः राधाकृष्ण विषयक शृंगार काव्य दुइ रूपक भ' सकैछ—**रसपक्षक ओ भक्तिपक्षक।**

लोक भक्ति-साहित्य

भक्ति पक्षक काव्यपर विचार कयने अनेक तथ्यक उद्‌घाटन होइछ।

देव-विषयक रतिभावे भक्ति थिक। कोनो देवताक प्रति व्यक्त-अव्यक्त श्रद्धा भक्ति कहल जायत। एहि प्रकारक श्रद्धाप्त काव्य भक्ति काव्य थिक। देवादि विषयक रतिभाव युक्त काव्य भक्ति काव्य थिक। मैथिलीमे दुइ कोटिक भक्ति काव्य अछि लोक भक्ति-काव्य ओ शिष्ट भक्ति-काव्य। एहि दूनूमे विविध प्रकारक गद्य, पद्य, व्रत कथा आदि समाविष्ट भ' सकैत अछि तेँ भक्ति-काव्यक अपेक्षा भक्ति-साहित्य कहब अधिक समीचीन होयत।

लोक जीवनमे देवी-देवता ओ आराध्य देवताक बाहुल्य देखना जाइत अछि। कुलदेवता, ग्रामदेवता,, जातीय देवता, उपाधि देवता, नदी-वृक्षादिक देवता, नागदेवता, पर्व देवता आदि अनेक प्रकारक देवता लोकजीवनमे श्रद्धा ओ भक्तिक विषय छथि। सभक अर्चना-अभ्यर्थनाक हेतु लोकजीवनमे गीत, कथा, माहात्म्य प्रचलित अछि। ओ सभ भक्ति साहित्य थिक, किन्तु जेँ ओकरा शिष्ट साहित्यक रचयितागण अपन लेखनक विषय वा आलम्बन नहि बनाओल,, शिष्टजन समुदाय द्वारा परिगृहीत नहि भेल तेँ ओ लोक भक्ति साहित्य थिक। लोक जीवने ओकर सर्जन, प्रसरण ओ उपयोगक आधार थिक।

शिष्ट भक्ति-साहित्य ओ प्रेरणास्रोत

एहि वर्गक साहित्यमे वर्णित देव-देवीगण शास्त्रमे परिचर्चित रहलाह अछि। हुनका सम्बन्धमे शास्त्रीय ओ दार्शनिक स्तरपर चिन्तन मनन होइत रहल अछि। प्राचीन भारतीय वाङ्मयमे हुनका सभकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान देल गेल छनि। एहि प्रकारक देव-देवीगणकेँ केन्द्र विन्दु मानि जे साहित्य रचल गेल अछि से शिष्ट भक्ति-साहित्यक अन्तर्गत परिगणित अछि। वर्ण्य विषयक अनुसार एकर तीन गोट धारा बनि गेल। ओ तीन धारा थिक –शैव भक्ति साहित्य, शाक्त भक्ति-साहित्य ओ वैष्णव भक्ति साहित्य। वैष्णव भक्ति-साहित्यक दुइ शाखा अछि—कृष्णाश्रयी शाखा ओ रामाश्रयी शाखा। एही चारू धारामे मैथिलीक समस्त भक्ति-साहित्य समाहित अछि।

मिथिलामे नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म वा अन्य कोनो देव कर्म, पितृकर्म, संस्कार आदिमे सर्वप्रथम पञ्चदेवताक पूजन होइछ। पंचदेव पूजनक पश्चात् विष्णुक पूजा होइछ। सायंकालमे शिवक पूजा कयल जाइछ जकरा प्रदोषपूजा कहल जाइछ। एहिसँ भिन्न, प्रत्येक व्यक्तिकेँ दीक्षामन्त्र

लेम' पड़ैत छैक। दीक्षामन्त्रक अनुसार प्रत्येक व्यक्तिक अपन-अपन इष्टदेवता होइत छथिन। ई दीक्षामन्त्र तीन कोटिक होइछ शाक्त, वैष्णव ओ शैव। एहिमे शाक्त दीक्षा मिथिलामे सामान्य धर्म मानल जाइछ। मिथिलामे अधिकांश लोकक कुलदेवता सेहो शक्तिए रहैत छथिन। वैष्णवी दीक्षा विशिष्ट मानल जाइछ। अर्थात् शाक्त दीक्षासँ भिन्न भ' क' लोक ई दीक्षा ग्रहण करैत अछि। शैव दीक्षा सभक लेल विहित नहि अछि।

समन्वयक प्रवृत्ति

मिथिलाक भक्ति-भावनामे समन्वय ओ सहिष्णुताक स्थिति एक वैशिष्ट्य थिक। पंचदेवताक पूजा करितो कुलदेवी रूपमे भगवतीक अछैतो, लोक कोनो इष्टदेवक दीक्षामन्त्र ल' सकैत अछि आ जाहि इष्टक दीक्षा लेने रहैत अछि ताहिसँ भिन्नो कोनो देवताक प्रति भक्ति-भाव राखि सकैत अछि। कोनो देवताकें आराध्य मानि पूजा-पाठ, उपासना-आराधना क' सकैत अछि आ करैत अछि। एहिमे कतहु कोनो अन्तर्विरोध नहि देखल जाइछ, नहि मानल जाइछ। तें मैथिल अपन ललाटपर चन्दन, भस्म ओ सिन्दूर तीनू लगबैत अछि।

मैथिली भक्ति-साहित्योक प्रसंगमे इएह प्रवृत्ति देखल जाइछ। एक कविकें शिव, शक्ति ओ विष्णु—तीनूक प्रति भक्ति भाव व्यक्त करैत पबैत छियनि। स्वयं विद्यापति एकर सर्वोत्तम उदाहरण छथि। विशिष्ट रूपमे शिवक उपासक रहितो भगवतीक वन्दना ओ कृष्णक अभ्यर्थना करैत देखैत छियनि। उमापति कृष्ण भक्ति मूलक पारिजात हरण नाटकमे मंगल गीतमे भगवती ओ शिवक वन्दना स्वतन्त्र रूपें कयलनि अछि। एहन उदाहरण सभसँ मैथिली साहित्य भरल अछि। समन्वयक भावना एहूसँ गम्भीर अछि। एके ठाम शिव ओ भगवतीक, शिव ओ विष्णुक विलक्षण रूपें समन्वय क' भक्ति-भावक आदर्श रूप उपस्थित कयल गेल अछि।

ऊपरसँ देखलापर शैव ओ शाक्त सम्प्रदाय भिन्न-भिन्न रूपमे विकसित बुझना जाइछ। किन्तु ऐतिहासिक तथ्य ई अछि जे दुहूमे अविनाभाव सम्बन्ध अछि। शाक्त साधनाक विवेचना कयनिहार समग्र तन्त्र वाङ्मयक वक्ता ओ श्रोता छथि शिव-पार्वती शिव-पत्नी—**पार्वती, उमा, गौरी** आदि नामसँ अभिहित भ' शाक्त दर्शन ओ आचारक अधिष्ठात्री थिकीह आ शक्ति हेतु प्रयुक्त विविध नामसँ अभिहिता छथि। शिव बिरहित शाक्त दर्शनक ओ

शक्ति विरहित शैवधर्मक कल्पने ने कयल जा सकैछ। अतः मिथिलामे शक्ति सहित शिव, साम्बसदाशिवक पूजाक प्रशस्ति अछि। मैथिली साहित्यमे साम्बसदाशिवक, अभिव्यक्ति विविध रूपमे होइत रहल अछि। साम्बसदाशिव, शिव, पार्वती एवं हिनक परिवारक देव-देवीगणकें आलम्बन बनाय जे साहित्य रचित भेल से शैव साहित्य थिक। मैथिलीमे सुदीर्घकालसँ विपुल शैव साहित्यक निर्माण होइत रहल अछि।

मैथिली शैव साहित्यक विभिन्न काल-खण्ड

सुदीर्घ परम्परामे व्याप्त मैथिली शैव साहित्यक ऐतिहासिक क्रमसँ विवेचना करबाक लेल ओकरा विभिन्न कालखण्डमे विभक्त करब अपेक्षित अछि। एहि हेतु किछु आधारक अपेक्षा भ' जायत। मैथिली साहित्यक अध्ययन कयनिहार लोकनि मैथिली साहित्यक जे काल-विभाजन कयने छथि से प्रस्तुत अध्ययनमे सहायक नहि अछि। एकरा लेल स्वतन्त्र आधारक खोज अपेक्षित अछि।

मैथिली साहित्यक आविर्भाव काल सामान्यः आठम-नवम शताब्दी मानल जाइछ जे क्रमशः विकसित होइत-होइत कर्णाट राजवंशक (१०९७-१३२५ ई०) सम्पोषण पाबि, पूर्ण किसित अवस्थाकें प्राप्त कयलक ज्योतिरीश्वरक वर्ण रत्नाकर सन गद्यग्रन्थमे।

कर्णाटवंशक पश्चात् ओइनवार राजवंशक (१३२५-१५२६ ई०) शासन कालमे मैथिली राजभाषा ओ अन्तर प्रान्तीय भाषाक स्तर प्राप्त क' लेलक। विद्यापति ओ गोविन्ददास सन् महान् कविक आविर्भाव भेल। मैथिलीक काव्य माधुरी समस्त पूर्वोत्तर भारतकें आप्यायित क' देलक आ मैथिली वैष्णव सम्प्रदायक भाव-वाहिनी भाषा बनि गेल। असम, बंगाल, उड़ीसा ओ नेपालमे अजस्र मैथिली साहित्यक, निर्माण होम' लागल जकर परम्परा तीन-चारि शताब्दी धरि चलैत रहल।

खास मिथिलामे सेहो मैथिली साहित्यक अविराम परम्परा बनल रहल। यद्यपि उनैसम शताब्दी धरि विद्यापतिक परम्रागत शैली-भाव, भाषा, छन्द आदिसँ समस्त साहित्य प्रभावापन्न रहल। एहि चारि पाँच शताब्दीक अन्तरालमे विद्यापति सन कोनो महन् प्रतिभाक जन्म नहि भ' सकल जे युग निर्माण क' सकैत।

Scanned by CamScanner

नेपालमे मल्लराजवंशक शासन कालमे स्वतन्त्र रूपें मैथिली साहित्यक परम्परा विकसित भेल जाहिमे अनेको कवि, नाटककार अपन प्रतिभाक योग देलनि। ओहि ठाम जगज्ज्योतिर्म्मल, वंश-मणि, भूपतीन्द्र मल्ल आदि सन साहित्यकार अविर्भूत भेलाह।

उनैसम शताब्दीमे आबि कवीश्वर चन्दा झा सन विधुल प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकारक उदय भेल जाहिसँ मैथिली साहित्यकें नव दिशा भेटलैक। कवीश्वर आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानल जाइत छथि। कवीश्वर पचास वर्ष धरि अपन अनवरत साहित्य-सर्जनसँ साहित्य क्षेत्र कें प्रभावापन्न कयने रहलाह। हुनक जीवनक अन्तिम अवधिमे, अर्थात् हुनक मृत्यु (१९०७ ई०) सँ पहिनहि पत्रकारिताक आरम्भ भेल। ओहिसँ मैथिली साहित्यक विकासक गति तीव्र ओ परिवर्त्तनशील भ' गेलैक। नव नव विधा एवं साहित्य निर्माण दिस साहित्यकार अपन पद-निक्षेप कयलनि।

एहि समस्त तथ्य समूहकें ध्यायमे राखि मैथिली शैव साहित्यकें निम्नलिखित काल-खण्डमे विभक्त क' सकैत छी—

१. प्राक् मैथिली शैव साहित्य
२. आदिकालीन मैथिली शैव साहित्य
३. मध्यकालीन मैथिली शैव साहित्य
४. नेपालीय मैथिली शैव साहित्य
५. आधुनिक मैथिली शैव साहित्य

१. प्राक् मैथिली शैव साहित्य

आठम-नवम शताब्दीसँ मैथिली भाषाक स्वरूप निर्माण होब' लागल छल आ चौदहम शताब्दीक मध्यकाल धरि मैथिली आधुनिक भारतीय आर्य भाषाक सांगोपांग रूप प्राप्त क' लेलक। मैथिली आधुनिक भारतीय आर्य भाषाक स्वरूप वर्णरत्नाकरमे पूर्णताकें प्राप्त क' लेने छल। एहि कालक भाषाकें प्राक् मैथिलीक संज्ञा देल गेल अछि। हम प्राक् मैथिलीक अन्तिम काल सीमा १३५० ई० मानैत छी। एहि अवधिमे जे साहित्य रचित भेल तकरा प्राक् मैथिली साहिय कहल जाइत अछि। ओही आधार पर एहि कालावधिमे प्राक् मैथिलीमे रचित शैव साहित्यकें प्राक् मैथिली साहित्य अभिधान समीचीन होयत। एहि कालक धार्मिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठाधार एहि कालक शैव विचार धारा ओ शैव साहित्य वस्तुतः मैथिली शैव साहित्यक भूमिकाक

Scanned by CamScanner

काज कयलक तें मैथिली शैव साहित्यक ई भूमिकाकाल मानल जयबाक चाही तथा ओकर पृष्ठभूमि एवं भूमिकाक रूपमे विवेचन होयबाक चाही।[1]

२. आदिकालीन मैथिली शैव साहित्य

आदिकालक समय-सीमा-१३५० ई० सँ १५५० धरि मानल जा सकैत अछि। राजनीतिक दृष्टिसँ ई ओइनवार राजवंशक शासन काल छल। एहि कालमे रचित शिव विषयक साहित्यकेँ आदिकालीन मैथिली शैव साहित्य कहब उचित होयत। एहि अवधिमे रचित शैव साहित्यक एकमात्र विधा गीत रहल अछि। अन्य विधाक सर्वथा अभाव देखना जाइछ किन्तु गीतहुमे वहुविधता देखल जाइत अछि। विविध प्रकारक छन्द, राग ओ भासक प्रयोग होइत रहल। एहि कालक शैव काव्यक रचयितामे विद्यापतिक स्थान सर्वोच्च छनि। वस्तुतः मैथिली शैव साहित्यक आदि कवि थिकाह विद्यापति। विद्यापति प्रचुर परिमाणमे शिवगीतक रचना कयने छलाह अवश्य परन्तु ओएहटा शिवगीतकार छलाह, से नहि मानल जा सकैत अछि। विद्यापतिक अतिरिक्त अन्य अनेको कवि एहि कालक शैव साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि जाहिमे भवेश, विष्णुपुरी, जयदेव, धाराधर, कविरतन, कृष्णराए, करण महेश, नव कविराज, गोविन्द, सदानन्द, सुकल तथा बुधिनाथक शिव गीत उपलब्ध अछि। भविष्यद्व अनुसन्धान एहि सूचीकेँ और पुष्ट ओ दिर्घ वना सकैत अछि। गीतक परिमाण बढा सकैत अछि। उपर्युक्त कविगणमे अधिकांश असाधारण व्यक्तित्व सम्पन्न छलाह। एहि कालक प्रत्येक कविक गीनमे निजी वैशिष्ट्य भरल छनि। काव्यत्व ओ भक्ति, उभय दृष्टिएँ उपर्युक्त कविक शिवगीत उच्चकोटिक छनि। ओहि गीत सभमे सामान्यतः शिवलीला—पूर्वराग, मेना विलाप, विवाहक विविध विधि, विवाह, गार्हस्थ्य, रस-विलास आदिक वर्णन अछि। कतोक गीतमे शिवक-स्तवन वदन अथवा हुनका प्रति आत्म-निवेदनक भाव वर्णित अछि। विद्यापति हरिहरक वन्दना कयने छथि तँ रतन एवं गोविन्द कवि अर्द्धनारीश्वरक। विद्यापति शिवक नृत्यक संभावित परिणामक वर्णन कयने छथि तँ सदानन्द कवि ओहि नृत्यसँ भेल परिणामक चित्रण कयने छथि।

विद्यापतिक शिव गीतक संख्या अधिक रहबाक कारणे शिव-पार्वती

---

१. विस्तृत परिचयक हेतु पंचम अध्याय द्रष्टव्य।

वर्णनमे विषयक बाहुल्य-वैविध्य, भावक विस्तार रहब स्वाभाविक अछि। परन्तु आदि कालक अन्य कविक किछु एहनो गीत अछि जकर समानान्तर भावक गीत विद्यापतिक गीत समूहमे अलभ्य अछि। एहि कोटिक गीतमे जयदेव कविक लक्ष्मी गौरीक विवाह भवेश कविक गौरीक शिव-सहशयनमे उत्पन्न बाधाक वर्णन एवं गोविन्द कविक शिव-पार्वतीक द्यूत-क्रीड़ाक वर्णन उल्लेखनीय अछि। किछुमे शिवक वीरभद्र ओ भैरव रूपक वर्णन सेहो अछि। प्रसिद्ध वैष्णव सन्त विष्णुपुरी केवल राधाकृष्णक मधुर भावक उपासक ओ कवि नहि छलाह अपितु शिवहुक प्रति भक्तिभाव रखैत छलाह जकर अभिव्यक्ति हुनक तीन गोट गीतमे भेल अछि। ओहि शिवगीतमे विष्णुपुरी अपनाकेँ 'शिवदास' घोषित कयने छथि जे मिथिलाक मनःस्थिति ओ चिन्ता-धाराक आकलनक हेतु महत्त्वपूर्ण उपादान सिद्ध होयत।

अन्ततः आदिकालक जतबा शैव-साहित्य उपलब्ध अछि ताहिसँ सिद्धांत बनैत अछि जे आदि काल तथा परवर्त्तीकालमे शैव साहित्यक सर्वश्रेष्ठ ओ सर्वाधिक लोकप्रिय कविक रूपमे विद्यापति प्रतिष्ठित रहलाह अछि। परवर्त्ती कविक शिवगीत-रचनाक प्रेरणास्रोत रहलाह अछि।

३. मध्यकालीन मैथिली शैव साहित्य

१५५० ई०सँ १८५० ई० पर्यन्तक तीन शताब्दीक कालखण्डकेँ मैथिली शैव साहित्यक मध्यकाल मानल जा सकैत अछि। पूर्वापेक्षा एहि कालक शैव साहित्यमे कतोक नवीन तत्त्वक समावेश भेल। एहि कालक प्रथम एक शताब्दीमे साहित्य-निर्माणक गति बड़ मन्थर रहलैक, ओ से मन्थरता शैव साहित्यहुक निर्माणमे विम्बित भेल। किन्तु क्रमहि ई मन्थरता हट' लगलैक, साहित्य निर्माणमे वृद्धि होब' लगलैक आ सतरहम शताब्दीक उत्तरार्द्धसँ उनैसम शताब्दी केर मध्य धरि शैव साहित्यक रचना प्रचुर परिमाणमे भेल।

मध्यकालीन शैव साहित्यमे गीतहिक रचना सर्वाधिक मात्रामे भेल। ई कहब सर्वथा उपयुक्त होयत जे मध्यकालक समस्त शैवसाहित्य गीतकाव्ये थिक। गीत मात्रक प्रधानता रहल। परन्तु ओहू गीतमे छन्द-वैविध्य, भाव, भाषा ओ भासक वैविध्य आयल। विद्यापतिक रचना-सरणि अनुगमनीय छल किन्तु ओहिसँ भिन्नो प्रकारक शिवविषयक गीतक रचना कवि लोकनि द्वारा भेल। कतिपय शिवविषयक नाटकक रचना सेहो भेल आ ओहि कालक रंगमंचपर सफलता पूर्वक ओकर अभिनियो होइत रहल। जनसमाजमे ओ खूब लोकप्रिय भेल तथापि ओहि नाटक सभक रूप-रचनामे गीतहिक स्थान सर्वोपरि रहल।

Scanned by CamScanner

एहि कालक हरगौरी-गीतावलीपर सामाजिक जीवन ओ रीति-नीतिक छाप गम्भीर रूपें पड़ल। परमेश्वर शिवक वर्णन सामान्य पुरुषोक रूपमे कयल जाय लागल। हिमालय, मैना, गौरी नारद आदिक चारित्रिक विशेषता दिव्य ओ पौराणिक नहि रहि सामान्य मनुष्यक सदृश चित्रित भेल अछि। मध्यकालक शिवविषयक गीत शिव भक्तिक अभिव्यक्तिक माध्यम तँ छले, संगहि विधि-व्यवहार, रीति-नीति, एवं संस्कृतिक अनिवार्य ओ अपरिहार्य अंग बनि गेल। विशेष रूपसँ मैथिल समाजक वैवाहिक संस्कारमे शिव-विषयक गीतकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान भेटलैक। ओहिसँ प्रेरित भ' मैथिली कवि लोकनि विवाह सम्बन्धी विविध लौकिक ओ वैदिक विधि सभक हेतु जे गीत रचलनि तकर आलम्बन शिव, पार्वती, हिमालय, मैना आदिकेँ बनओलनि शिवमे जमाताक, पार्वतीमे कन्याक, हिमालय-मेनामे कन्याक माता-पिताक छवि प्रतिविम्बित भेल। एकर सभक परिणाम स्वरूप भाव ओ भासक परिधि-विस्तार भेलैक परन्तु से वैवाहिके वर्णनक सीमा धरि।

मध्यकालक प्रायः समग्र शैव साहित्य गेयधर्मी काव्य थिक। स्वतन्त्र गीत, नाटकक मंगलगीत, नाटकक प्रासंगिक गीत अथवा शिव विषयक नाटकक गीत—सकल गेयधर्मी अछि। केवल कान्हारामक नाटकमे पाठ्य-छन्दक प्रयोग बहुलता अछि।

एहि कालक शैवसाहित्य समग्र रूपमे प्रकाशित नहि अछि। राग-तरंगिणीमात्र प्राचीन संग्रहक रूपमे प्रकाशित अछि। आधुनिक कालमे मध्यकालिक गीतक आधुनिक संकलन सभ बहरायलो अछि तँ संख्या बड़ थोड़। ताहूमे प्रामाणिकता अनिश्चित। इतिहास निबन्ध, परिचयात्मक टिप्पणी, मध्य कालक नाटकक प्रकाशन इत्यादिक क्रममे प्रसंगतः शिव विषयक गीत प्रकाशित होइत रहल अछि। अधिकांश गीत हस्तलिखित साहित्यक संग्रह, महिला गाइनि लोकनिक व्यक्तिगत संग्रह एवं लोककंठमे विद्यमान अछि।

भाषाक दृष्टिएँ परिनिष्ठताक ह्रास देखल जाइछ। अनेको वैरागी सन्तलोकनि मिथिला भाषामे मध्यदेशक भाषाक सङ्क्रमण करा देलनि। एहिसँ एकटा मिश्र भाषाक प्रयोग—प्रचलन भेल जकरा 'वैरागी भाखा' अथवा 'बबजिआ बोली'क संज्ञा देल जाइछ।

समस्त मध्यकालिक शैव साहित्यमे साम्बसदा शिव भक्तिक भावना परि-

Scanned by CamScanner

व्याप्त रहल अछि। वैष्णव ओ शाक्त भावनासँ निर्विरोध सम्बन्ध एहि कालक शैव साहित्यक विशेषता रहल अछि। वस्तुतः मध्यकालक शैव साहित्य मिथिलाक धार्मिक विचार धाराक प्रतिनिधि साहित्य परम्पराक रूपमे विकसित भेल। एहि कालक प्रमुख कवि लोकनि थिकाह— उमापति, रामदास, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, छत्रनाथ, रामरूप दास, सुवंश लाल, कविलाल, शिवदत्त, कान्हा राम, आदि।

४. नेपालीय मैथिली शैव साहित्य

नेपालमे मल्लराजवंशक छत्रच्छायामे मैथिली साहित्यक विशाल भागक निर्माण भेल छल। ओकर विकास एकटा स्वतन्त्र साहित्यधाराक रूपमे भेल। एहि धारामे शिव विषयक गीत ओ नाटकक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। रचना कालक दृष्टिएँ नेपालक मल्लकालीन मैथिली साहित्य, मैथिली शैव साहित्य मध्यकालहिक अन्तर्गत अबैत अछि परन्तु जें एकर अपन स्वतन्त्रधारा रहलैक स्वतन्त्र अस्तित्व ओ प्रभाव रहलैक तें स्वतन्त्रे रूप सँ एकर विवेचना समीचीन अछि।

नेपालमे मैथिली साहित्यक निर्माण विश्वमल्ल (१५४७ ई०) सँ आरम्भ क' गोरखा राजा पृथ्वीनारायण शाहक समस्त नेपाल उपत्यकाविजयकाल (१७६९ ई०) धरि होइत रहल। एहि अवधिमे नेपालक तीनू शाखा—भक्तपुर, काठमाण्डू ओ ललितपुरमे साहित्य रचना भेल किन्तु ओहूमे भक्तपुरीय मल्लराजवंश साहित्य रचनाक क्षेत्रमे सर्वश्रेष्ठ स्थान बना लेलक। परिमाण ओ स्तर दुहू दृष्टिएँ ओकर वर्चस्व तथा सर्जन-सातत्य अक्षुण्ण रहलैक। तदपेक्षा कान्तिपुर (काठमाण्डू)क परम्परा न्यून रहलैक। ललितपुरक स्वतन्त्र राजसत्ताक अवधि यद्यपि बड़ थोड़ रहलैक तथापि आनुपातिक दृष्टिएँ ओकर साहित्य-सर्जन-परम्परा कम गौरवमय नहि रहलैक।

नेपालमे दुई प्रकारक काव्यक रचना प्रचुर परिमाणमे भेल—गीतावली एवं नाटक। दुहू प्रकारक काव्यमे शिवकें महत्त्वपूर्ण ओ गरिमामय स्थान देल गेलनि। हिमालय प्रदेश शिव-पार्वतीक वास ओ क्रीड़ाक भूमि रहल अछि। हिमाद्रि अंचलमे सहस्रो पौराणिक शिवलिंग सब अवस्थित अछि। एहने परिवेशमे नेपाल अवस्थित अछि। नेपालक अधिदेवता भगवान् पशुपतिनाथे रहैत अयलाह अछि। अतः स्वभाविक रूपें नेपालक संस्कृति, सभ्यता साहित्य, कला, आचार, विचार एवं मासिकता पर शैवधर्मक प्रभाव पड़ैत

Scanned by CamScanner

रहल अछि। मैथिली भाषा-साहित्यके आश्रय-प्रश्रय देनिहार मल्लशासक लोकनि अन्यो देवी-देवताक प्रति श्रद्धा-भक्तितर खैत शिवक प्रति विशेष आस्थावान् छलाह। शिवक प्रति विशेष भक्तिभावना ओ अगाध श्रद्धा रखैत छलाह। तें हुनका लोकनि द्वारा रचल अथवा रचबावल गेल मैथिली काव्यमे शिव स्वाभाविक रूपमे प्रतिष्ठित रहलाह। समस्त शिव परिवार, यथा—पार्वती, गणेश, कार्त्तिकेय, भैरव, नन्दी, भृंगी, जया, विजया, हिमालय, मेना आदि कें साहित्यक वर्ण्य विषय बनाओल गेलनि।

नेपालक साहित्यमे शिवमे बहुविध रूप चित्रित भेल अछि। शिव विषयक गीतावलीमे कतोक अंशमे वर्णित शिव मिथिलाक साहित्यमे वर्णित शिवसँ भिन्न नहि छथि तथापि कतोक अंशमे नेपालीय मैथिली गीतावलीक शिव ओ हुनक लीला-वर्णनमे वैशिष्ट्य अछि। मिथिलाक परिछनि प्रकारक गीतमे वर्णित शिवक रूप नेपालक गीतमे विरल अछि। मिथिलामे शिव विषयक नाटकक संख्या अल्प रहल। किन्तु नेपालमे ओकर संख्या अपेक्षाकृत अधिक अछि। विविध प्रकारक शिव विषयक पौराणिक कथानक ल' नाट्य-रचना होइत रहल। ओहूमे मिथिले जकाँ शिव-पार्वती विवाहक कथा बेसी लोकप्रिय रहल किन्तु ओहिठाम दक्षयज्ञ, सतीक आत्मदाह, शिवक व्यामोह, कुमार जन्म एवं अन्य-अन्य कथानक सेहो स्थान पबैत रहल।

नेपालमे शिव नाटेश्वर वा नटनायक रूपमे रंगशालाक अधिदेवता रूपमे पूज्य रहलाह। ओत' मैथिली रंगशाला अत्यन्त उन्नत अवस्थामे छल। ओहि रंगशालाक हेतु प्रचुर संख्यामे नाटकक रचना होइत रहल। ओहि नाटक सभक पूर्व रंगमे मंगल ओ नान्दी पुष्पाञ्जलि गीतमे अनिवार्यतः शिवहिक वन्दना करबाक परिपाटी रहल। एहि रूपमे वृहत्‌मात्रामे शैव साहित्यक निर्माण भेल। एहि वर्गक काव्यमे शिवक अर्द्धनारीश्वर रूप; शिवक ताण्डव ओ प्रदोष नृत्य; शिवक ध्यान, स्तुति ओ माहात्म्यक वर्णन कयल गेल अछि। अनेक ठाम शिवलीलाक वर्णन युक्तमंगल गीतक प्रयोग सेहो भेल अछि।

नेपालीय नाटकक अन्तमे भरत वाक्यक संग अथवा ओकर स्थानापन्नाँ शान्ति गीत ओ आरती गीतक प्रयोग-परिपाटी भेटैत अछि। पूर्व रंगहि जकाँ एकरा उत्तर रंग किंवा रंगोत्तर विधिक संज्ञा देल जा सकैत अछि। एहि उत्तर रंगमे शिव अथवा भवानीक, अथवा दुहूक वन्दना, स्तुति कयल गेल अछि। नाटककार द्वारा भव-भवानीक समक्ष क्षमायाचना, दैत्य कथन, आत्म-

Scanned by CamScanner

निवेदन, संसारक नीस्सारता औ नाट्यत्रुटी परिशोधनक भाव गीतक माध्यम सँ प्रस्तुत कयल गेल अछि।

शिवेतर विषयक नाटकमे सेहो अनेक स्थलपर प्रसंगतः शिव-पार्वतीक अवतारणा कयल गेल अछि। एकरा प्रासगिक शिवकथा कहब उपर्युक्त। नाटकक ई प्रासंगिक शिव-कथा सब, नाटकक पौराणिक कथावस्तु रहने मूल-कथानुरोधें समाविष्ट कयल गेल अछि तथापि नाटककार एहि प्रासंगिक कथामे शिव-पार्वतीक शृंगार रसोचित हाव-भाव ओ क्रियाकलापक जे चित्रण कयलनि अछि से सर्वथा नाटककारक स्वकीय कल्पनाक उद्भावना थिक।

नेपालक बहुतो कवि शिव गीतक रचना कयलनि किन्तु ताहिमे विशिष्ठ स्थान रखनिहार थिकाह जगज्ज्योतिर्म्मल्ल। जगज्ज्योतिर्म्मलक शिव गीतमे भाव ओ विषयक बहुरूपता तथा भक्तिक प्रगाढ़ता विद्यमान छनि। अन्यो कवि सभ मैथिल विद्यापति, विष्णुपुरी, गोविन्द, सदानन्द, करणमहेश इत्यादि कविक शिव गीतसँ प्रेरणा ल' क' रचना करैत रहलाह। नाट्यकृतिअहुमे जगज्ज्योतिर्म्मलक 'हरगौरी विवाह', भूपतीन्द्र मल्लक 'गौरीविवाह नाटक', वंशमणि उपाध्यायक गीत दिगम्बरनाटक, जितामित्र मल्लक, 'सतीवियोग नाटक', नन्दलालक 'जालन्धरोपाख्यान नाटक', कृष्णानन्दक 'धर्मदतचरित्र नाटक' इत्यादिक स्थान सर्वोपरि अछि।

नेपालीय शैव साहित्यमे भक्ति-भावनाक प्रगाढ़ता अछि। शिवक परमेश्वरत्वक व्यापक स्वरूपक व्यंजना ध्यान, स्तुति, माहात्म्य कथन ओ शिव-लीला वर्णनक माध्यम सँ भेल अछि। साम्बसदा शिवक युगलमूर्त्तिक आराधना प्रत्येक साहित्यकार कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य कयने छथि। बहुतो ठाम शिवक लिंगमूर्त्तिक सेहो कीर्त्तन कयल गेल अछि। एतेक होइतो नेपालक कवि शिव-पार्वतीक लीला-वर्णनमे शृंगाररसकें बहिष्कृत करबाक प्रयत्न नहि कयलनि। शिव ओ पार्वतीक रतिभावक चित्रण सहज रूपमे कयने छथि। मिथिलाक कवि जकाँ ओ लोकनि शिव-पार्वतीक स्वाभाविक शृंगार भावनाकें चित्रित करबामे कतहु संकुचित-संभ्रमित नहि भेलाह अछि, जकरा नेपालीय शैवसाहित्यक उल्लेखनीय विशेषता कहल जा सकैत अछि।

ई सब होइतहु औखनधरि नेपालमे रचित मध्यकालक समस्त मैथिली साहित्यकें देखबा-पढ़बाक, रसास्वादन करबाक सौविध्य-सौलभ्य सामान्य पाठककें के कहय जे अनुसन्धातागणकें नहि भेटि सकलनि अछि। से

Scanned by CamScanner

भेलापर नेपालक मैथिली शैवसाहित्ये नहि अपितु समग्र मैथिली साहित्यक स्वरूप अन्यसँ अन्यतर प्रमाणित होइत चल जायत।

५. आधुनिक मैथिली शैव साहित्य

आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक ओ आधुनिक शैवसाहित्यक अग्रणी साहित्यकार कवीश्वर चन्दा झाक जन्म १८३० ई०मे भेल छलनि। १८५०मे कवीश्वर युवावस्थामे प्रवेश क' रहल छलाह। प्रतिभाशाली होयबाक कारणे ओही वयसमे काव्य-स्फुरण होमय लागल छलनि। दोसर दिस, मध्यकालीन काव्यशैली उनैसम शताब्दीक मध्येसँ क्षयिष्णु होमय लागल छल। अतः मैथिली साहित्यक मध्यकालक अन्तिम समय-सीमा ओ आधुनिक कालक आरम्भिक कालविन्दु १८५० ई० मानल जाइत अछि आ से उचितो अछि। आधुनिक मैथिली शैव साहित्यहुक समय-सीमा इएह मानब संगत अछि।

१८५० ई० धरि भारतमे अंगरेजी सत्ता जमि गेल छल। कम्पनी सरकारक मेकाले द्वारा प्रवर्त्तित शिक्षा-योजना तथा विभिन्न इसाइ मिशिनरी द्वारा भारतीय सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा तथा हिन्दू धर्मकेँ बदलि इसाइयतक प्रचारक अनवरत चेष्टा कयल जा रहल छल। इसाइ मिशिनरी सभ लोकभाषाक माध्यमसँ इसाइ धर्मक प्रचार-कार्य चलब' लागल छल। भारतीय जनमानसकेँ प्रभावित कर' वला लोकभाषामय इसू भक्ति-गीतक रचना सेहो कयल जाय लागल छल। जॉन साहेबक एहन बहुतो गीतक प्रचार तिरहुतमे भेल छल। एहि सबसँ हिन्दू समाज आशंकित भ' क' आत्मरक्षाक प्रयत्न कर' लागल जकर परिणाम स्वरूप समस्त भारतमे सामाजिक-धार्मिक-राष्ट्रीय आन्दोलक आविर्भाव भेल। विभिन्न प्रकारक संस्था सब समाज, सभा, इत्यादि नामसँ देशक विभिन्न भागमे संघटित भेल।

मिथिलामे इसाइ धर्मक कोनो तेहन स्थायी प्रचार-प्रभाव नहि भ' सकल। परन्तु तदर्थ प्रयत्न नहि भेल से नहि कहल जा सकैत अछि। प्रसिद्ध इसू-भक्ति- गीत-रचयिता जॉन साहेबक स्थायी निवास मिथिलहिमे छल। बेतिया ओ मुजफ्फरपुरमे गिरजा घरक सेहो स्थापना भेल छल। स्थानीय रूपसँ इसाइ-प्रचार साहित्यकेँ सुलभ बनयबाक लेल देशक विभिन्न भागमे जे मिशिनरी प्रेस सभ स्थापित भेल छल ताहि क्रममे मुंगेर ओ मिथिलाक कोनो स्थानमे सेहो मिशन-प्रेसक स्थापना कयल गेल। मिथिलाक मिशन प्रेसक नाम छल 'तिरहुत मिशन प्रेस' जाहिसँ तिरहुता ओ नागराक्षर (कैथी लिपि मे कतिपय इसाइ-प्रचार-पुस्तकक लेखो छापा भेल छल।

Scanned by CamScanner

एहि प्रकारक अनुकूल-प्रतिकूल-वात्या चक्रसँ मिथिला अप्रभावित नहि रहि सकैत छल। अतः मिथिलोमे, किछु सीमित अर्थमे नव जागरण आयल तथा लोकभाषामे नव प्रेरणाक संग धार्मिक काव्यक सर्जन आरम्भ भ' गेल। एहि धार्मिक काव्यमे राम, कृष्ण, शिव, भगवती आदिक लीला, चरित, कथा, वन्दना, माहात्म्य तथा पौराणिक उपाख्यानादिक लेखन प्रधान छल। एही धार्मिक काव्यक सर्जन-प्रेरणामे शैव साहित्यक रचनाक प्रेरणा सेहो सन्निहित अछि।

आधुनिक कालक अग्रणी शैव साहित्य-प्रणेता भेलाह कवीश्वर चन्दा झा। हुनकहि अनुसरण करैत बहुतो कवि शैव काव्यक रचना कयलनि। कवीश्वरक शिवविषय काव्य गीतमय रहलनि। एहि गीतमयताक प्रभाव आधुनिको कालमे विशेष रूपें रहल। आधुनिको कालमे शिवविषयक पद्य साहित्यक प्राधनता रहल अछि। गद्य ओ नाटक आदिक स्वल्पते रहल अछि। पद्यो साहित्यमे गीते प्रधान रहल। प्रबन्ध काव्यक संख्या बड़ थोड़। प्रबन्ध काव्यक रचनामे कविवर लालदासक स्थान सर्बोपरि छनि। रुद्रानन्द मिश्र 'दीन' लालदासक परम्पराकें आगाँ बढ़ओलनि। एमहर, रुद्रक अवतार हनूमानक चरितकें आधार बना क' पंडित कालीकान्त झा 'श्री हनुमान चरित' महाकाव्यक रचना कयलनि अछि। तीस पर्व मे विरचित ई महाकाव्य कथा संयोजन, वर्णन ओ भाषाक प्रवाह, छन्दक सरलता एवं सर्वाधिक, वर्ण्य-वस्तुक नूतनताक दृष्टिएँ आधुनिक शैव साहित्यक उल्लेखनीय कृति मानल जा सकैत अछि।

संस्कृतक कतोक प्रसिद्ध शैव स्त्रोत, उपाख्यान ओ काव्यक अनुवाद सेहो होइत रहल अछि जाहिमे गणेश जन्म, रुद्राष्टाध्यायी, शिव महिम्न स्तोत्र तथा कुमार सम्भवम् उल्लेखनीय गद्यक क्षेत्रमे कोनो तेहन विशिष्ट स्वतन्त्र कृतिक निर्माण नहि भ' सकल। किछु कथा, व्रत कथा, परिचयात्मक निबन्ध ओ शैवतीर्थक यात्रावृत्तान्त एवं संस्मरण पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित होइत रहल अछि। नाटकोक क्षेत्रमे एहिसँ नीक स्थिति नहि कहल जा सकैत अछि। राजपंडित बलदेव मिश्रक किरतनिञा नाटक 'राज राजेश्वरी'क अतिरिक्त एकहु गोट शिवविषयक नाटक नहि भेटैत अछि। शिव-भक्त विद्यापति ओ अयाची मिश्रक शिवभक्ति सम्बन्धी किंवदन्तीक आधार पर किछु नाटकओ एकांकीक रचना अवश्य भेल अछि।

Scanned by CamScanner

जहाँधरि शिवक स्वरूपक प्रश्न अछि, से आदिकाल ओ मध्यकालक परिपाटी एहूकालमे विद्यमान रहल तथापि चन्दा झा ओ हुनक समान अन्य अनेक कवि शिवक ऐश्वर्य ओ दार्शनिक स्वरूपकेँ विकसित कयलनि। कविवर लाल दासक विचारधारा पूर्णतः दार्शनिक रहलनि अछि।

विचारधाराक दृष्टिएँ आधुनिक शैवसाहित्यमे नव उन्मेष सेहो भेल अछि। एहिमे नव चिन्तनवादी कविक योगदान महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानल जा सकैछ। नवचिन्तनवादी कविमे आस्थावादी ओ अनास्थावादी वा अनीश्वरवादी; दुहु प्रकारक प्रवृत्ति क्रियाशील रहल अछि। नवचिन्तनवादी कवि शैव काव्य, शैवविचारधारा, शिव-प्रतीक केर जनवादी, राष्ट्रवादी अथवा यथार्थवादी व्याख्या प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि वर्गक कवि द्वारा समकालिक सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति पर व्यंग्य करबाक लेल, सामाजिक विषमता, शोषण, अन्याय इत्यादि पर प्रहार करबाक लेल; शिव एवं शिवपरिवारकेँ प्रतीक रूपमे प्रयोग कयल गेल अछि।

नव उत्थानक शैव काव्यक रचयिताक रूपमे अनेक नवीन प्रतिभाक उदय भेल अछि परन्तु ई लोकनि अपरिपक्वावस्थामे छथि। अतः कोनो प्रकारक धारणा निश्चित करब एखन ने संभव अछि और ने उचिते। हिनका लोकनिमे असीम संभावना छनि किन्तु भविष्यक दिशा-निर्धारण करब अवशेष छनि।

आदिकाल ओ मध्यकालमे महिला कवियित्रीक की योगदान रहल तकर-कोनो प्रमाण नहि अछि। महिला लोकनि जे शैव काव्य रचलनि से भणिता-हीन अथवा छद्मभणिता युक्त गीतक रूपमे जनकण्ठमे विलीन होइत गेल। आधुनिक शैवसाहित्यमे महिला कवियित्रीक योगदान अवश्य अभिलिखित भेल अछि। परन्तु काव्यशास्त्र वा दर्शनक मानदण्डक आधार पर हुनका लोकनिक कृतिक समीक्षा नहि कयल जा सकैत अछि। ओ लोकनि लौकिक परम्पराक शृंखलामे अपनाकेँ रखलनि अछि। हुनका सबक कृतिमे भावना ओ भक्ति एक प्राधान्य अछि; भाव, भाषा ओ छन्दक नहि। इएह स्थिति लोक कवि हुनक सम्बन्धमे कहल जा सकैत अछि। किन्तु लोककवि जीबैत छथि काव्यशास्त्रीय आधार वा दार्शनिक चिन्तनक बलपर नहि, अपितु लोक जीवन ओ लोककंठ

Scanned by CamScanner

मे अपन सामरस्यक बल पर ।[१]

काव्य-रूप

समस्त शैव काव्यक सर्वेक्षण कयलापर देखल जाइछ जे ई तीन रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि—गद्य, नाटक एवं पद्य ।

गद्य साहित्य—गद्यक माध्यमसँ विशेष परिमाणमे शैव साहित्य नहि लिखल गेल। प्राचीनकालमे, वर्ण रत्नाकरमे शिव सम्बन्धी उल्लेख सभ भेटैत अछि। नेपालीय शैव साहित्यमे हरगौरी विवाह नाटकमे गद्यक प्रचुर प्रयोग अछि। एहिसँ भिन्न आधुनिके कालमे शिवसम्बन्धी किछु गद्य साहित्यक निर्माण भ' सकल अछि जाहिमे किछु पौराणिक कथा, व्रतकथा ओ परिचयात्मक निबन्धादि उल्लेख्य अछि ।

नाट्य साहित्य—मैथिली शैव साहित्यमे गद्यक अपेक्षा शिवसम्बन्धी नाटक अधिक संख्यामे रचल गेल। मध्यकालमे मिथिलामे रचल कविलाल, कान्हाराम ओ शिवदत्तक एक-एक गोट नाटक छनि। मुदा नेपालमे शिव विषयक नाटकक संख्या अधिक रहल। जगज्ज्योतिर्म्मल्ल, वंशमणि, भूपतीन्द्रमल्ल आदि नाटककार एहि क्षेत्रमे प्रमुख स्थान रखैत छथि। आधुनिको कालमे महादेवक मानवीय रूप उगनाकेँ केन्द्र बनाय किछु नाटक-एकांकी रचित ओ अभिनीत भेल अछि।

पद्य साहित्य—मैथिली शैव साहित्यक विशाल ओ प्रमुख भाग पद्यमे रचल जाइत रहल अछि। आरम्भिक कालसँ ल' अद्यपर्यन्त पद्येक विस्तार रहल अछि। एहू पद साहित्यक तीन गोट उपवर्ग अछि—

(क) प्रबन्धात्मक पद्य साहित्य
(ख) पाठ्य पद्य साहित्य
(ग) गेय पद्य साहित्य

(क) प्रबन्धात्मक पद्य साहित्य आधुनिके कालमे रचल गेल अछि। शिव विषयक विस्तृत कथावस्तुकेँ क्रमबद्ध पद्यमे अभिव्यक्त करबाक परि-

१. आदिकाल, मध्यकाल, नेपालीय ओ आधुनिक शैव साहित्यक विस्तृत विवेचनाक हेतु द्रष्टव्य अछि लेखक 'मैथिली शैव साहित्य', प्रकाशक—मैथिली अकादमी, श्रीकृष्णपुरी, पटना।

पाटीक आरम्भ कर्त्ता थिकाह कविवर लालदास। ओ अनेकशः शिवविषयक लघु आ दीर्घ प्रबन्ध काव्यक रचना कयने छलाह। हिनका अतिरिक्त गुणवन्त लालदास, रुद्रानन्द आदि सेहो शिव-विषयक प्रबन्ध कयलनि अछि।

(ख) पाठ्यपद्य ओहन शिव विषयक पद्य थिक जकर पाठ कयल जाय। ओना प्रबन्ध काव्यो पाठ्य काव्यक अन्तर्गत परिगणित भ' सकैछ, किन्तु ओहिमे विस्तृत कथावस्तुक विन्यास रहैत छैक। पाठ्य पद्य वस्तुतः स्फुट वा मुक्तक काव्य थिक जाहिमे शिवक कोनो गुण, कोनो रूप, कोनो शिव-कथाक क्षणविशेषक वर्णन रहैत छैक। गोपीनाथ, जीवन झा, गिरिजा नाथ, मुंशी रघुनन्दन दास, सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदिक रचित एहन पाठ्यपद्य सभ अछि। पाठ्य पद्य मुख्यतः आधुनिके कालमे प्रयुक्त भेल अछि।

(ग) शैव साहित्य पद्यो भागमे सभसँ महत्त्वपूर्ण अंश थिक गेय पद्य वा गीत। यदि कही जे शैव साहित्यक पर्याय थिक शिव-विषयक गीत तँ अत्युक्ति नहि होयत। शिव-विषयक स्वतन्त्र गीतक अतिरिक्त जतेक शिव-विषयक नाटक लिखल गेल से सभ की तँ गीतमय अछि अथवा ओहिमे गीतक बाहुल्य अछि। अन्यो विषयक नाटकमे मंगल ओ नान्दी गीतक रूपमे शिव-विषयकें गीत सभ प्रयुक्त अछि। नेपालमे तँ ई अनिवार्य परिपाटी रहल अछि। अतः ओतय नाटकमे प्रयुक्त नान्दी-पुष्पांजलि गीतक एक स्वतन्त्र वर्ग स्थापित भ' गेल। नेपालीय नाटक सभक अन्तमे आरती गीतक रूपमे सेहो शिव-विषयक गीतक समावेश कयल गेल अछि। शिव-विषयक गीतक प्रचार-प्रसार ओ लोकप्रियता ततेक भेल जे प्रबन्धो काव्यमे मध्य-मध्यमे गीत सभक प्रयोग होम' लागल।

एहि गीत सभमे विभिन्न राग-रागिणीक उल्लेख ओकर स्रोत ग्रन्थ सभमे भेटैत अछि तथापि मैथिलीक लोकप्रिय भास ओ गीत-प्रकार, यथा-मान, बटगमनी, सम्मर, सोहर, समदाउनि, उचिती, लगनी, चैत, मलार, परिछनि, कोबर आदिक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। किछु गीत-भेद एहन अछि जकर वर्ण्य वस्तु शिव-विषयक होयब अनिवार्य अछि। शिव-पार्वती-विषयक गीतक रूपमे गौरी-गीत, महेशवाणी ओ नचारी प्रसिद्ध अछि।

गौरी-गीत

गौरी-गीतमे पार्वतीक वन्दना रहैत अछि। हुनक कुमारी जीवनमे तपस्या ओ आराधना द्वारा अनुरूप वर-प्राप्तिक वर्णन रहैत अछि। ई गीत

Scanned by CamScanner

महिला वर्ग द्वारा गाओल जाइछ। मनोनुकूल वर ओ अचल सौभाग्यक कामनासँ नारी वर्ग एकर सामूहिक गान करैत अछि।

महेशवाणी ओ नचारी

महेशवाणी एवं नचारीक सेहो विषयवस्तु शिव-पार्वतीए रहैत छथि, किन्तु दुहूक बीच वर्ण्य विषय अथवा छन्दादिक अनुसार की अन्तर रहैत अछि से पूर्ण स्पष्ट नहि अछि। भाससँ किछु अन्तर देखाओल जाइत अछि। विभिन्न विद्वान् नचारी ओ महेशवाणीक प्रसंग विचार कयलनि अछि। म० म० डा० उमेश मिश्रक विचार छनि जे शिव ओ पार्वतीक विवाहित स्वरूप-सम्बन्धी भक्तिपद महेशवाणी थिक तथा शिवक शुद्ध भक्ति पद नचारी।[१] डा० श्री जयकान्त मिश्र नचारीकेँ प्रत्यक्ष शिवभक्तिक गीत तथा महेशवाणीकेँ शिव-सम्बन्धी गीत मानैत छथि।[२] डा० श्री पूर्णानन्द दास नचारी महेशवाणीक सम्बन्धमे कहने छथि—प्रदोष कालमे भक्तगण नचारी गाबि महादेवक पूजा करैत छथि। डमरू बजा क' नृत्य करब नचारीक महत्त्वपूर्ण अंग बनि गेल अछि। महेशवाणी मैथिल संगीत पद्धतिकेँ ल' क' चलैछ आ नचारी नृत्यक संग चल'वला गीत थिक। महेशवाणीक प्रथम पंक्तिक अन्तमे 'हे' तथा द्वितीय पंक्तिक आरम्भमे 'आहे' रहब आवश्यक। नचारीक प्रत्येक पंक्ति 'आगे माइ' सँ प्रारम्भ होइछ। विवाहक अवसर पर महेशवाणी तथा शिवमन्दिरमे विशेषतः नचारी आ कखनो काल महेशवाणी गाओल जाइछ। नचारीमे भक्तक क्षीण दशा अथवा हुनक आत्मनिवेदनक भाव व्यंजित रहैछ। परन्तु डा० दास कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुँचि पबैत अछि तेँ अन्तमे कहने छथि—जनसाधारणक बीच एहि दुनूमे नामक अन्तर अछि, एके गीतकेँ केओ महेशवाणी कहैत अछि आ केओ नचारी।[३] डाक्टर तेजनारायण लालक मतेँ महेशवाणीमे शिवक प्रति भक्ति-भावना प्रकट कयल गेल अछि आ नचारीमे शिव तथा पार्वतीक वियाह सम्बन्धी वर्णन ओ

---

१. विद्यापति ठाकुर–म० म० डा० उमेश मिश्र, पृ० १४२।

२. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भाग—१—डा० जयकान्त मिश्र, पृ० ८०।

३. मैथिली लोक साहित्य—डा० पूर्णानन्द दास, बिहार विश्वविद्यालयमे पी० एच० डी० उपाधि हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित) पृ० १८७।

Scanned by CamScanner

व्यंग्य विनोदक ओहिमे पुट छैक ....शिवक उपासनाक दुइ प्रकारक गीत अछि—महेशवाणी, जाहिमे शिवक प्रति भक्ति-भावना निहित अछि और नचारी, जाहिमे शिव पार्वतीक वियाहक उल्लेख अछि आ व्यंग्य-विनोद अछि · तिरहुत जकाँ महेशवाणी ओ नचारियो मिथिलाक देन थिक। एकर टेक छैक—हे।[1] एहि उद्धरणसँ महेशवाणी ओ नचारीक कोनो स्पष्टीकरण नहि भ' पबैत अछि, प्रत्युत अस्पष्टता और बढ़िये जाइत अछि। डा० जनार्दन मिश्रक विचारेँ नाचि क' शंकरक आराधना करबाक कारणे संभवतः नचारी कहल जाइछ।[2]

एतावता ई निश्चय होइत अछि जे महेशवाणी ओ नचारीक विषयवस्तु ओ स्वरूपक सम्बन्धमे ने कोनो स्पष्ट धारणा बनि सकल, ने मतैक्य भ' सकल अछि। विभिन्न विद्वानक विचारमे परस्पर विरोध देखल जाइत अछि।

नचारीक ऐतिहासिक महत्त्व अछि आ ओकरे दृष्टिमे राखि एकर परीक्षण आवश्यक अछि। नचारीक सभसँ प्राचीन उल्लेख पन्द्रहम शताब्दीक जौनपुरक कवि लक्खन सेनि द्वारा १४२४ ई०मे कयल गेल, सेहो विद्यापति-एक प्रसंगमे—

जै देव चले सर्ग की बाटा। औ गए घब सुरपति भाट ॥
नगर नरिंद्र जे गए उनारी। विद्यापति कइ गए लाचारी ॥[3]

एहिमे अन्तिम चरणक अर्थ होयत—विद्यापति नचारी रचि गेलाह। एहिसँ एतबय सिद्ध होइत अछि जे विद्यापतिक कवि कर्मसँ नचारी विशिष्ट रूपसँ सम्बद्ध छल। किन्तु नचारी छल की, तकर कोनो संकेत नहि अछि। सोड़हम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे अबुलफजलक आइन-ए-अकबरीमे विद्यापतिक कृतिक रूपमे नचारीक उल्लेख अछि जाहिमे ओकर विषयवस्तुक सेहो संकेत अछि। अबुलफजलक उक्ति अछि—तिरहुतक बोलिमे 'लहचारी' गीत कहल

१. मैथिली लोक गीतों का अध्ययन—डा० तेजनारायण लाल, पृ० ७३, १०७।
२. विद्यापति—डा० जनार्दन मिश्र, पृ० ५०।
३. कीर्तिलता और अवहट्ठ भाषा—शिवप्रसाद सिंह, पृ० १७८।

Scanned by CamScanner

जाइछ जे विद्यापत द्वारा रचित एवं अत्यन्त शृंगारिक अछि।

विद्वान् लोकनि अबुल फजलक नचारी-सम्बन्धी ज्ञान पर शंका करैत रहलाह अछि जे दिल्ली स्थित मुसलमान होयबाक कारणे ओ विद्यापतिक भक्ति गीत नचारी ओ हुनक शृंगारिक गीतकेँ एके मानबाक भ्रम कयने छल। किन्तु हम बुझैत छी अबुलफजलक उक्ति सत्यसँ दूर नहि अछि।

ओहिसमय धरि के कहय जे सतरहम शताब्दी धरि नचारी शिव-विषयक भक्ति गीतक रूपमे रूढ़ नहि भेल छल। वस्तुतः नचारी वर्त्तमान मैथिलीमे प्रचलित चैतावर, लगनी, तिरहुति आदि जकाँ प्रसिद्ध आ लोकप्रिय भास छल। ओहिमे विषयक बन्धन नहि छलैक। एकरा समर्थनमे नेपालक मल्ल राजा जगज्ज्योतिर्म्मल्ल (१६१३–१६३७)क गीत संग्रह 'गीत **पंचाशिका**'[२] ओ '**भाषा सङ्गीतम्**'[३] राखल जा सकैत अछि। '**गीत पंचाशिका**'मे नचारी कहि क' दस गोट गीत अछि जाहिमे गणेश, सूर्य, कृष्ण, हर, ईश्वरी, योग, तत्त्वज्ञान, अपराध क्षमापन, विप्रलम्भ शृंगार, नायिका ओ सखीक उक्त-प्रत्युक्ति वर्ण्य विषय अछि। '**भाषासङ्गीतम्**'मे सात गोट गीत नचारी कहि क' देल अछि जाहिमे पाँच गोट गीत शृंगार-रसक अछि, दुइ गोट गीत भक्ति-विषयक। अठारहम शताब्दीक सन्तकवि साहेबराम दासक सेहो '**नचारी**' शीर्षकसँ एकटा गीत अछि जकर वर्ण्य-वस्तु अछि कृष्णक रूप।[४]

---

१. AIN-I-AKABARI—BY ABUL FAJL, Trans. H. S. Jarrett, Revised by Sir Jadunath Sarkar, P· 65.
'Those in The dialect of Tirhut are called LaLchari, and are the Composition of Bidyapat and in Charecter highly erotic.'

२. राष्ट्रीय अभिलेखालय (काठमाण्डु) सूची—१/४६१, गीत—२, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १८, २०,२२,। गणेशस्तुति नचारी, सूर्य स्तुति नचारी, कृष्णस्तुति नचारी, हरस्तुति नचारी, ईश्वरी स्तुति नचारी, योगप्रकार नचारी, तत्त्वज्ञान कथन नचारी, भक्तस्येश्वर्यामिपराध क्षमापन नचारी, अन्यापदेश (विप्रलम्भ शृंगार) नचारी तथा नायिका सख्योरुक्ति-प्रत्युक्ति नचारी।

३. तत्रैव, सूची—३/९७।

४. साहेब रामदास गीतावली—सं० चन्दा झा, गीत—४१८, पृ० २०८।

एहि प्रमाणक आधार पर निस्संकोच कहल जा सकैछ जे नचारी पन्द्रहम शताब्दीसँ बहुत पूर्वेसँ प्रचलित छल और अठारहम शताब्दी धरि ई लोकप्रिय भास मात्र छल। एकर विषयवस्तु भक्ति वा शृंगार—किछु भ' सकैत छलैक। शिव-विषयक कोनो प्रतिबद्धता नहि छलैक। विद्यापतिक शृंगाररसक गीत सभ पूर्वमे नचारी भासपर विशेष गाओल जाइत छल होयत जे सुनि क' आइन-ए-अकबरीमे एकरा अत्यन्त शृंगारिक कहल गेल छल।

महेशवाणी नामेसँ द्योतित होइछ जे एकर शिव-विषयक वर्ण्यवस्तुसँ सम्बद्धता छैक। महेश विषयक वर्णनीय वस्तुक समावेश एकर अनिवार्य तत्त्व थिकैक। 'महेशवाणी' नामक सभसँ प्राचीन उल्लेख रत्नपाणिक उषाहरण नाटिकामे भेटैत अछि।[1] वाणासुर कृष्णसँ परास्त ओ क्षतविक्षत भ' क' शिवक शरणमे जाय 'महेशवाणी' गीत द्वारा आत्मग्लानि, पश्चात्ताप एवं आत्म निवेदन अपन आराध्य शिवक आगाँ रखैत अछि। 'महेशवाणी नामोल्लेख पूर्वक जे गीत ओहि ठाम गवाओल गेल अछि ताहिमे शिवक विवाह ओ गार्हस्थ्य आदिक वर्णन नहि प्रत्युत भक्ति-भावना मात्रक अभिव्यक्ति अछि। हास्य-व्यंग्यक कोनो चिह्न नहि अछि।

अतः ज्ञात तथ्यक आधारपर कहल जा सकैछ जे आरम्भमे नचारीक वर्ण्यवस्तुमे शिव-विषयक अनिवार्यता नहि छल, किन्तु महेशवाणीमे अनिवार्यता छल। महेशवाणीक संसर्गमे नचारी सेहो पाछाँ आबि शिव-विषयक गीत-प्रकारक रूपमे रूढ़ भ' गेल। शिव-विषयक भेलहु पर दुहूमे की मौलिक पार्थक्य अछि से निर्णय करब कठिन अछि। भास ओ छन्दक आधारपर किछु पार्थक्य अवश्य देखाओल जा सकैछ। हम किछु गीत-गायक ओ गितगाइनि सभक अन्तर्वीक्षामे परस्पर विरोधी विचार देखल। किछु सामान्य धारणा ई देखाओल गेल जे महेशवाणीमे शिवक पारिवारिक जीवनक चित्रण रहैछ तथा नचारीमे भक्तक मनोभाव ओ शिवक ऐश्वर्यक चित्रण। किन्तु विशेष गीत-गायब ओ गितगाइनकेँ एहिमे असमर्थता देखल गेल जे ओ शब्द द्वारा पार्थक्य स्पष्ट क' सकथि। ओ गाबि क' सुना देल जे ई महेशवाणीक भास थिक आ ई नचारीक। सारांशतः, सामान्यजन दुनूमे कोनो विशेष अन्तर नहि मानैत अछि, अन्तर मानबाक कोनो प्रयोजनो

---

१. उषाहरण नाटिका—रत्नपाणि, पृ० ३४।

ने रहैछ। युग्मक शब्द जकाँ 'नचारी-महेशवाणी' शिव-विषयक गीतक अर्थमे रूढ़ भ' क' स्वच्छन्दतासँ प्रयुक्त होइत अछि।

निष्कर्ष

मैथिलीमे दुइ वर्गक साहित्य अछि––रसपक्षक ओ भक्तिपक्षक। भक्ति-पक्षक साहित्योक दुइ उपवर्ग अछि—लोक भक्ति साहित्य ओ शिष्टभक्ति साहित्य। शिष्ट भक्ति साहित्यक तीन विभाग अछि–शैव, शाक्त ओ वैष्णव। वैष्णव भक्ति साहित्यक दुइ गोट शाखा अछि—रामभक्ति शाखा ओ कृष्णभक्ति शाखा। अतः मैथिलीक समस्त शिष्ट भक्ति साहित्यक चारि गोट धारा अछि। मिथिलाक सामाजिक जीवन ओ धार्मिक आचारमे एतज्जन्य कोनो प्रकारक विरोध विद्वेष, कटुता वा प्रतिस्पर्द्धा नहि, अपितु समन्वयक प्रबल प्रवृत्ति अछि। साहित्योमे तकर प्रभाव परिलक्षित होइछ। पूज्य ओ आराध्य देव-देवी गणमे रुद्र-शिवक, जनजीवनसँ सम्बद्ध तथा सरलपूजा विधानक कारणेँ विशेष श्रद्धा ओ भक्तिक पात्र रुद्र-शिव रहलाह अछि। तेँ शिवभक्ति साहित्यक रचना विशेष भेल। शैवभक्ति साहित्यक रचना-प्रक्रिया एक सहस्र वर्षसँ चलैत रहल अछि। अध्ययन सौकर्यक हेतु एकरा पाँच खंडमे बाँटल जा सकैछ–प्राक् मैथिलीकाल, आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल तथा नेपालक शैवसाहित्य मध्यकालक सृष्टि होइतो स्वतन्त्र रूपेँ विकसित भेल तेँ स्वतन्त्रे नेपालीय शैवसाहित्य। काव्य रूपक दृष्टिसँ तीन वर्ग अछि–गद्य, नाटक, पद्य। गद्यक मात्रा अल्प, नाटकक संख्या किछु अधिक तथा पद्य साहित्यक सर्वाधिक अछि। पद्य तीन प्रकारक अछि—–प्रबन्धात्मक, पाठ् ओ गेय। गेय पद्य थिक गीत जकर परिमाण ओ लोक-प्रियता सर्वाधिक अछि। एकर व्याप्ति नाटक ओ प्रबन्धो काव्यमे अछि। शिवविषयक एहिमे संगीत शास्त्रानुसार राग-रागिणीक प्रयोगक अतिरिक्त साहित्य आलोकमे प्रचलित विविध प्रकारक गीत सेहो प्रचुर प्रयोग भेल अछि। एहिमे नचारी-महेशवाणी शिव विषयक गीतक रूपमे रूढ़ अछि। नचारी अत्यन्त प्राचीन गीत भेद अछि, किन्तु प्राचीन कालमे एहिमे शिव विषयक वर्ण्य वस्तुक प्रतिबद्धता नहि छल। नचारी वस्तुतः लोकप्रिय भास मात्र छल आ परवर्त्ती कालमे शिव-विषयसँ सम्बद्ध भ' गेल। महेशवाणीक नामक प्रथम प्रयोग उनैसम शताब्दीमे भेटैत अछि। महेशवाणीमे वर्ण्यवस्तुक रूपमे

शिव विषयक प्रतिबद्धता छल। नचारी-महेशवाणी सम्प्रति शिव-विषयक गीतक अर्थमे युग्मक शब्दक रूपमे चलैत अछि किन्तु दुहूमे की मौलिक अन्तर, से अस्पष्ट अछि।

Scanned by CamScanner

पंचम अध्याय

प्राक् मैथिली शैव साहित्य

मैथिली भाषाक आविर्भाव

मैथिली भाषाक आविर्भाव काल आठम-नवम शताब्दी मानल जाइत अछि। मिथिलाक प्राचीन विद्वान् लोकनि दार्शनिक ओ धर्मशास्त्री निबन्धक रचना संस्कृतमे करैत छलाह तथा कठिन प्रसंग वा कठिन शब्दक व्याख्याक हेतु देशी शब्दक प्रयोग करैत छलाह। नवम शताब्दीक वृद्ध वाचस्पति 'निगड' शब्दक भाव स्पष्ट करबाक लेल हडि' देशी शब्दक प्रयोग कयने छलाह।[१] एहि प्रकारक मैथिलीक बृहत् शब्दावली सर्वानन्द कृत अमर कोषक टीकामे उपलब्ध होइत अछि।[२] 'चण्डेश्वर अपन सप्तरत्नाकरमे शताधिक देशी शब्दक प्रयोग कयने छथि।[३] एहि सँ ई सिद्ध होइत अछि जे जत' अर्थक अभिव्यक्तिमे संस्कृत असमर्थ भ' जाइत छल ओत' देशी भाषाक शब्द-सामर्थ्यक आश्रय लेल जाइत छल। किन्तु ई शब्दावली भाषाक स्वरूपक परिचय देबामे समर्थ नहि अछि। मैथिली भाषाक आदि स्वरूप ओ भावाभि-व्यंजना शक्तिक यथार्थ परिचय बौद्धगान ओ दोहामे भेटैत अछि। आठमसँ बारहम शताब्दी धरि पूर्वी प्रदेशमे पसरल बौद्ध सिद्ध लोकनि अपन दार्शनिक चिन्तन ओ उपदेशक अभिव्यक्ति तत्कालीन प्रचलित भाषामे दोहा ओ चर्यागीति लीखि क' कयने छलाह। डाकक नामसँ अनेको ज्योतिष विषयक प्राचीन पद्य सभ उपलब्ध भेल अछि जकर भाषा तत्कालीन लोक भाषा

---

१. ब्रह्मशंकर भाष्य-भामती टीका-निर्णय सागर प्रेस, २७० पारावार मध्य पातीहिसेतुः ताभ्यामवच्छिद्यमानो जल विधारको लोके दृष्टः, नतु बन्धन हेतु मात्रम् 'हडि' निगडादिष्वपि प्रयोग प्रसंगात्।

२. द्रष्टव्य, None Indo-Aryan Vocablos in Saruananda's Tika-Saruasua by Sukumar Sen, Indian Linguistics, Vol VIII Part-4, 1942-44, P. 185-209.

३. द्रष्टव्य, डा० उमेश मिश्रक निबन्ध 'चण्डेश्वर ठाकुर एण्ड मैथिली' इलाहाबाद यूनिवर्सीटी स्टडीज, जिल्द-६, पृ० ३४९-५७।

Scanned by CamScanner

थिक। एकरो समय एही सन्निधिमे मानल जाइछ।[1] बारहम शताब्दीमे विनय श्री नामक एक बौद्ध आचार्य विक्रमशिलामे रहैत अनेक गीतक रचना प्राचीन मैथिलीमे कयने छलाह।[2] विनय श्रीक गीतमे मैथिलीक रूप पूर्णतः स्पष्ट भ' गेलैक। दोसर दिस चौदहम शताब्दीमे रचित ओ संकलित 'प्राकृत पैंगलम्'क बहुतो पद्यमे प्राक्-मैथिलीक स्वरूपक दर्शन होइत अछि।[3] अन्ततः आठम-नवम शताब्दीमे जाहि मैथिली भाषाक अभ्युदय भेल छल से विकासक विभिन्न चरणकें पार करैत, सहवर्तिनी भाषा बंगला, उडिया ओ असमी आदिसँ अपन रूप स्वतन्त्र बनबैत चौदहम शताब्दीक आदि भागमे कविशेखर ज्योतिरीश्वर द्वारा रचित वर्णरत्नाकरमे पूर्णता प्राप्त कयलक। आरम्भसँ वर्णरत्नाकर धरिक भाषाकें प्राक्-मैथिलीक संज्ञा देल जाइत अछि।[4]

प्राक्-मैथिलीक अध्ययन केवल भाषाक विकास अथवा साहित्येतिहासेक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण नहि अछि अपितु ओहिकालक पूर्वोत्तर भारतक संगहिसंग मिथिलाक जनमानसक विभिन्न चिन्ताधाराक अनुशीलन ओ आकलनक दृष्टिएँ सेहो महत्त्वपूर्ण साधन प्रस्तुत करैत अछि। आधुनिक आर्यभाषाक विभिन्न साम्प्रदायिक साहित्य वा दर्शनक अनुसन्धानक हेतु तँ प्राक्-मैथिली साहित्यक अध्ययन अनिवार्य अछि।

राजनीतिक स्थिति

जाहि कालमे प्राक्मैथिलीक निर्माण प्रक्रिया चलि रहल छल ताहि कालक वातावरण अत्यन्त जटिल छल। राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आदि समस्त क्षेत्रमे उथल-पाथल मचल छल। कोनो क्षेत्रमे स्थैर्य नहि छल। गुप्तसाम्राज्यक पतन ओ शशांक-हर्षवर्द्धनक गत भेलाक पश्चात् एकटा शक्ति-शून्यताक स्थिति भ' गेलैक। इतिहास साक्षी अछि जे ओहि शून्यकें पाछाँ

---

१. मैथिल डाक-जीवानन्द ठाकुर।

२. दोहाकोष-राहुल सांकृत्यायन, परिशिष्ट—१, पृ० ३६३-६७; भूमिका, पृ० ३७-३९।

३. मैथिली भाषा ओ साहित्य-मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता, पृ० ७२-७३।

४. हि० मै० लि०, भाग-१, पृ० ९९-१२१।

Scanned by CamScanner

कोनो शक्ति नहि भरि सकल। बंगालमे पाल वंशक उदय भेलैक अवश्य, किन्तु ओहो क्षेत्रीये शक्ति बनल रहल। केन्द्रीय शक्तिक अभावमे उत्तर भारतमे अनेक छोट-छोट राजवंश सभक अभ्युदय ओ पराभव होइत रहलैक जकर धक्का मिथिलाकेँ लगैत रहलैक। एहि कालक राजनीतिक स्थितिक विवरण डा० उपेन्द्र ठाकुर देने छथि जे—

'विवेच्य कालक मिथिला वा तिरहुतक इतिहास अनवरत युद्ध एवं अव्यवस्थित लूटि-पाटिक संग बाह्य आक्रमणक इतिहास थिक। ई काल वस्तुतः एकटा पराभूत तथा दोसर आक्रमणकारी सैन्य शक्तिक संघर्षक एहन करुण दृश्य उपस्थित करैत छल जाहिमे प्रत्येक अपन शक्ति भरि लड़ैत एक-एक क' कटि मरैत छल। प्रायः प्रत्येक धृष्ट राजनीतिक दुस्साहसी कमसँ कम एक बेर अवश्ये विश्व विजेताक स्पृहणीय मुद्रा मिथ्या सम्मानक लोभेँ हिमालयक चरण प्रदेशधरि पहुँचबाक चेष्टा कयलक। एहि तरहेँ मिथिला तीव्र राजनीतिक कुचक्रक एक छोट अखाड़ा बनि गेल। एकर राजनीतिक क्षितिज विभिन्न शक्तिक समुज्ज्वल उत्थान ओ दुखद अवसानक साक्षी रहल। हर्षक मृत्युक पश्चात् क्रमशः तिब्बती, परवर्त्ती, गुप्तशासक, मोखरी, पाल, गुर्जर, प्रतिहार, राष्ट्रकूट ओ चन्देल द्वारा मिथिलाक शासन ओकर लूटि एवं ध्वंस होइत रहल। फल भेल जे ई समस्त भूखण्ड व्यवहारतः शक्ति शून्य ओ रक्ताक्त रहल।'[1]

उपरिकथित राजवंश सभमे पालवंशे एहन छल जे दीर्घकाल धरि पूर्वोत्तर भारतक अधिकांश भाग पर शासन करैत रहल। मिथिलामे राजनीतिक अस्थिरता छलैक तथापि राजनीतिक शासनक क्षेत्र ओ काल, दुहूक दृष्टिएँ अधिकांश भाग पालवंशेक अधिकारमे रहल। पालवंशक पतनक पश्चात् मिथिलाकेँ स्थिर राजनीतिक सत्ता प्रदान करबाक श्रेय कर्णाट वंशक राजा नान्यदेवकेँ भेटलनि। १०९७ ई०मे नान्यदेव मिथिलापर अधिकार कयल। हुनक वंशधरि लोकनि सवा दू सय वर्ष धरि मिथिलाक शासन करैत रहलाह। १३२४-२५ ई० मे नान्य वंशक अन्तिम राजा हरसिंहदेव दिल्ली-सुलतान गयासुद्दीन तुगलकसँ पराजित भ' गिरि-गह्वरक आश्रयण कयल आ ओही संग मिथिलामे कर्णाट वंश समाप्त भ' गेल।

१. History of Mithila, P. 214.

ऐतिहासिक तथ्यसँ सिद्ध होइत अछि जे १३५० ई० क पश्चात् ओइनवार वंशीय भोगीश्वरकेँ मिथिला पर स्थिर राज-सत्ता भेलनि ।

धार्मिक ओ सांस्कृतिक स्थिति

पालवंश धर्म, संस्कृत ओ कलाक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान देलक । एखन धरि ओहि अवदानक पूर्ण आकलन नहि भ' सकल अछि, किन्तु पूर्वोत्तर भारतमे जत' कतहु प्राचीन अवशेषक उत्खनन कयल जाइछ तँ पालयुगक शिलालेख, मूर्त्ति अथवा आने कोनो सामग्री अवश्ये उपलब्ध होइछ । पालवंशक राजालोकनि बौद्धमतावलम्बी छलाह । जेना गुप्तवंशक राजा लोकनि अपना हेतु 'परम भागवत' विरुदक प्रयोग करैत छलाह तहिना पाल राजागण अपना केँ 'परमसौगत' घोषित करैत छलाह । किन्तु ओ लोकनि अन्योधर्म ओ सम्प्रदायक प्रति ओतबे रुचि एवं श्रद्धा रखैत छलाह जतबा बौद्ध धर्मक प्रति । ई तथ्य पालवंशीय राजा लोकनिक अनेको शिलालेख ओ अन्य कृतिसँ प्रमाणित होइत अछि ।

गुप्तवंश ब्राह्मण धर्मानुयायी छल । ओकर तेज, बल, विक्रम ओ शौर्यसँ आमुद्रान्त आर्यावर्त्त आप्यायित छल । एहि वंशक छत्रच्छायामे कतोक शताब्दी सँ बौद्धधर्मसँ अप्रतिभ भेल ब्राह्मण धर्मक पुनरुत्थान भेल । दोसर दिस धर्मक पाया सभ क्रमशः ढह' लागल । पश्चात् बौद्धधर्मविरोधी शशांक सन प्रतापी राजाक अभ्युदयसँ बौद्धधर्म औरो पराभूत भ' गेल । किन्तु पालवंशक उदय सँ एकरा एकटा सबल आश्रय भेटि गेलैक आ ओ पुनः शक्ति संचयक चेष्टा कर' लागल । अनेको बिहार ओ विद्यापीठ सभ स्थापना ओ पुनरुद्धार भेल । पुनः ओहि सभमे तथागत-सम्प्रदायक आप्तवाणी गुंजायमान होम' लागल । तथापि पालशासक सभक एकान्त पक्ष-समर्थन नहि भेटि सकलैक । बौद्धधर्म अपन पूर्व स्वरूप, गरिमा ओ प्रभाव कथमपि नहि प्राप्त क' सकल । ओ क्रमशः सहजयान, वज्रयान, मन्त्रयान आदि विभिन्न सम्प्रदाय ओ आम्नायमे विभक्त होइत गेल । सिद्ध, योगिनी, महामुद्रा, तन्त्रसाधना आदिक महत्ता बढ़ैत गेलैक । अन्ततः तन्त्र-मन्त्र, ध्यान-धारणा, भैरवी-चक्र, गुह्यसाधना, चमत्कार आदिसँ बौद्धधर्मक रूप सर्वथा परिवर्तित भ' गेलैक । नामसँ बौद्ध रहितो व्यवहारमे ओ सर्वथा भिन्न एवं विकृत भ' गेल ।

दार्शनिक क्षेत्रमे, शास्त्रीय विचारधारा ओ चिन्तनक आधार पर मिथिलाक उद्योतकर, कुमारिल, प्रभाकर, मण्डन, वाचस्पति, उदयन ओ अन्ततः

गंगेश उपाध्याय ताहि प्रकारेँ बौद्ध दर्शन पर प्रहार कयल जे ओ क्रमशः निरस्त होइत विलुप्त भ' गेल । बौद्ध तर्कजाल ब्राह्मण मीमांसक ओ नैयायिक लोकनिक प्रतिभाक समक्ष कुण्ठित भ' गेल । फलस्वरूप पण्डित समाज पर बौद्ध दर्शनक किञ्चितो प्रभावक अवशेष नहि रहि सकल ।

जहिना-जहिना बुद्धिवादी समाजसँ बौद्ध विचारक लोकनि निराश होइत गेलाह तहिना-तहिना समाजक निम्न वर्गमे अपन प्रभावविस्तारक चेष्टा करैत गेलाह । गुह्यसाधना, ध्यान, धारणा, समाधि, योग-टानक चमत्कार, रहस्य-मय उक्ति, जनभाषामे रहस्यात्मक विचार-धारा-युक्त पद्य-रचना आदि साधनक बलपर अपन अस्तित्वक रक्षा करैत रहलाह ।

परन्तु ओहू क्षेत्रमे अत्यन्त सशक्त नाथपन्थक आविर्भाव भेल । नाथ-सम्प्रदाय सामान्य जनसमाजकेँ ओ सभ तत्त्व प्रदान कयलकैक जे सहजयानी-बज्रयानी बौद्ध सम्प्रदाय सभमे छलैक । नाथ सम्प्रदाय भारतक क्षितिज पर नवे आविर्भूत भेल छल तेँ ओहिमे नवीनतेज, नवीनशक्ति, चिन्तन ओ साधनाक नवीन पद्धति छलैक । संगहि ओ ब्राह्मणधर्मक विरोधी नहि, प्रकारान्तरेँ सहयोगिये छल । आन दर्शन ओ आचारक अधिकांश तत्त्व एहीं धर्मसँ ग्रहण कयने छल, अतः ब्राह्मण दार्शनिक सभक प्रहार नाथ सम्प्रदाय पर नहि भेलनि । परिणामतः निचला स्तरक जनसमूह नाथसम्प्रदायसँ अत्यन्त प्रभावित भेल आ क्रमशः समस्त उत्तर भारत—काश्मीरसँ कामरूप धरि एकर प्रभाव विस्तार भेलैक ।

मिथिलामे कर्णाटवंशक स्थापनाक पश्चात् क्रमहि बौद्धधर्म सर्वथा निर्मूल होइत गेल । बारहम शतकक अन्तमे विनयश्री नामक बौद्ध आचार्य मैथिलीमे दार्शनिक गीत सभक रचना कयने छलाह, किन्तु लगैत अछि जेना ओहि गीतक श्रोता, गायक ओ बोद्धा मिथिलामे केओ रहि नहि गेल छल । १२२४ ई०मे जखन तिब्बती बौद्धसन्यासी आचार्य धर्मस्वामी तिरहुत आयल छलाह तँ एत' वैशालियोमे बौद्धधर्मनुयायीक अभावे देखने छलाह । यद्यपि मगधमे ओहू समयमे बौद्धधर्म मात्र निहारक किछु संख्या विद्यमान छल ।[1] किन्तु मिथिलामे बौद्धधर्म नहि, ओकर स्मृतिमात्र शेष रहि गेल छल । वर्णरत्नाकरक रचना-काल धरि मैथिल दार्शनिक ओ बौद्धदार्शनिक मध्य कतोक शताब्दी-व्यापी

१. द्रष्टव्य, बायोग्राफी आफ धर्मस्वामी—डा० जी रोएरिक ।

शास्त्रार्थ ओ ताहिमे बौद्धसभक पराजयक स्मृति बड़ पुरान नहि भेल छल। वर्णरत्नाकरमे चौरासी सिद्ध वर्णन,[1] नायिका वर्णनमे 'कानक शोभा देखि बौद्ध ध्यानस्थित भेल',[2] सरोवर वर्णनमे 'बौद्धपक्ष अइसन आपात भीषण उदयनक पक्ष अइसन प्रसन्न'[3] इत्यादि उक्ति एकर प्रमाण थिक। चौरासी सिद्ध ब्राह्मण धर्मावलम्बीक हेतु अनुकरणीय ओ अनुशरणीय नहि होइतो स्मरणीय भ' गेल छलाह।

बौद्ध ओ शैवमत

अस्तंगत बौद्धधर्म रहस्यात्मक योगसाधना, ध्यान, धारणा, समाधि, महामुद्रा आदि तेहन तत्त्व सभ धारण क' लेने छल जे ओकर स्थानापन्न सनातन धर्मक तान्त्रिक शैव ओ शाक्तमे तँ भ' सकैत छल। संभवतः इएह कारण छल जे समाजक निम्नोस्तर पर्यन्तमे कोनो ने कोनो रूपमे शैवमते बौद्धमतसँ टकराइत रहल। जकर परिणाम भेल बौद्धधर्मक पतन ओ शैवधर्मक उत्थान। कल्याणी मल्लिकक मतेँ ई प्रक्रिया सातमसँ बारहम शताब्दी धरि चलैत रहल—

'बौद्धधर्म आलोचना करिले देखायाय, सप्तम शताब्दी हइते मुसलमान विजयेर पूर्व्वे द्वादश शताब्दी पर्य्यन्त बौद्ध धर्म्मेर क्रमशः पतन ओ शैवधर्म्मेर उत्थान हय।'[4]

बौद्ध ओ शैवधर्ममे संघर्षक स्थिति छलैक तकर अनेक प्रमाण अछि। प्रसिद्ध राजा शशांक (६०२-६०५ ई०) अपने शैव छल। हुएन-साङ्ग ओ बादक बौद्ध लेखक द्वारा उल्लेख कयल गेल अछि जे जखन ओ मगध पर अधिकार कयलक तँ बोधिवृक्षकेँ नष्ट क' देलक तथा बुद्धमूर्त्तिकेँ हटाय शिवक मूर्त्ति स्थापित कयलक। कहल जाइछ जे पाटलिपुत्रमे स्थित बुद्धक चरण-चिह्नकेँ सेहो मेटा देबाक चेष्टा कयने छल।[5] बौद्धेत्तर जनसमुदाय द्वारा बुद्धमूर्त्ति पर आघात कयल जाइत छल। एहि तथ्यक सूचना तेरहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे तिरहुत ओ मगधक भ्रमण कयनिहार तिब्बती यात्री धर्मस्वामीक

---

१. वर्णरत्नाकर, पृ० ५७-५८।

२. तत्रैव, पृ० ७।

३. तत्रैव, पृ० ३९।

४. नाथ सम्प्रदायेर इतिहास, दर्शन ओ साधन प्रणाली, पृ० ४१।

५. Bihar Through The Ages, P. 267.

जीवन वृत्तान्तसँ भेटैत अछि। धर्मस्वामी देखने छलाह जे बुद्धमूर्त्तिक रक्षाक लेल महाबोधि मन्दिरक आगाँ महेश्वरक मूर्त्ति उत्कीर्ण क' देल गेल छल।[१] धर्मस्वामी एकटा किंवदन्तीक उल्लेख कयने छथि जे विरूपा नामक एकटा बौद्धसिद्धकें सोमनाथ महादेवक पूजा करबाक हेतु विवश कयल गेलनि तँ ओ अपन सिद्धिक बल पर सोमनाथक मूर्त्तिकें चारि खण्ड क' देलनि। वस्तुतः बौद्धधर्मावलम्बी सभकें शैवधर्मसँ विशेष स्पर्द्धा छलैक। ओहि कालक अनेको एहन मूर्त्ति सभ भेटल अछि जाहिमे बौद्धधर्मक देवी-देवता द्वारा शिव, पार्वती गणेश आदिक अपमान कराओल गेल अछि।[२]

बौद्ध-शैवक संघर्षक संदर्भमे एकटा और तथ्य उल्लेखनीय अछि। बौद्धमताव लम्बीकें शास्त्र, दर्शन ओ तर्कक क्षेत्रमे पराजित कयनिहार नैयायिक ओ मीमांसक लोकनिमे अधिकांश शैवे छलाह। दोसर अध्यायमे देखल गेल अछि जे उद्योतकर, कुमारिल, वाचस्पति, उदयन इत्यादि शिवक भक्त छलाह जे हुनका सभक शिव-स्तुति विषयक श्लोक सभसँ सिद्ध अछि।

नाथ सम्प्रदाय बौद्ध सम्प्रदायक प्रतिस्पर्द्धी बनि क' ठाढ़ भेल छल से पूर्वे चर्चा कयल गेल अछि। नाथसम्प्रदाय अपन साधनाक कतोक तत्त्व बौद्ध एवं समकालिक अन्य प्रचलित सम्प्रदाय सभसँ भने ग्रहण कयने हो, मुदा छल धरि ओ मूलतः शैव सम्प्रदाय।[३] डा० शशिभूषण दास गुप्ता एहि सम्प्रदायक शैव मतावलम्बी होयबाक विस्तृत प्रमाण प्रस्तुत कयलनि अछि।[४] एहि सम्प्रदायक आराध्यदेव योगेश्वर शिव छलाह। एकर अधिष्ठाता आदिनाथ, मीननाथ, गोरखनाथ आदि योगी सभ रुद्रकुल-जात मानल जाइत छलाह। हुनका लोकनिक गोत्र शिव-गोत्र होइत छलनि तथा शिव वा नाथसँ उत्पन्न होयबाक कारणे नामान्तमे **'नाथ'** उपाधि धारण करबाक अधिकारी होइत छलाह।[५] नाथ सम्प्रदाय माननिहारक बौद्ध होयबाक कोनो संभावना नहिं देखि पड़ैछ। ओ सभ शिव-गोरक्ष मन्त्र जप करैत छलाह। शिव जकाँ

---

१ Biography of Dharm Svami, Intro P. 27 and Text, P 64.

२. Bihar Through the Ages, 343.

३. Obscure Religious Cults, P. 192.

४. I bid, P. 197-98.

५. नाथपन्थ—कल्याणी मल्लिक, पृ० ३।

Scanned by CamScanner

कर्ण कुण्डल धारण करैत छलाह तथा तीर्थं हुनका सभक शैव तीर्थ छल ।[1]

नाथ सम्प्रदाय वस्तुत: बौद्धधर्मक ब्राह्मण धर्मक संग समीकरणक पथ प्रशस्त कयलक। बौद्धधर्मावलम्बीके अपन साधनाक प्रतिच्छवि शैव मतमे भेटलनि। ब्राह्मण धर्मावलम्बीके शैवक रूपमे बौद्ध सभके ग्रहण करबामे कोनो बाधा नहि देखि पड़लनि। हिन्दू ओ बौद्धतन्त्रक शिव-शक्ति एवं प्रज्ञा-उपायक सम्बन्धमे एके प्रकारक धारणा देखल जाइछ। बोद्ध सहजियाक मते 'महामुद्रा'क साक्षातकार भेलहि पर सिद्धिलाभ सम्भव तथा ई महामुद्रा शून्य ओ करुणाक अभेद-बोध थिक। हिन्दू धर्ममे जे शिव ओ शक्ति सैह वज्रयान ओ सहजयानमे शून्य ओ करुणा थिक।[2]

शैवमतक शिव-शक्ति ओ बौद्धमतक प्रज्ञा-उपाय एके सत्यक दुइ नाम थिक। हिन्दू धर्ममे योगक आदि अध्यापक रूपमे जे स्थान शिवके छनि सैह तान्त्रिक बौद्धधर्ममे भगवान् बुद्ध वा भगवान वज्रसत्त्व वा हेवज्र वा हेरुकके छनि। नाथ सम्प्रदायमे नवनाथ-परम्परामे सर्वप्रथम स्थान आदिनाथके देल जाइत छनि। मानल जाइछ जे हुनकेसँ योगक समस्त रहस्य उत्पन्न भेल। किन्तु ई आदिनाथ हिन्दू धर्मक शिव ओ बोद्धधर्मक वज्रसत्त्व थिकाह। वस्तुत: आदिनाथ ओ भूतनाथ संज्ञा बौद्धधर्ममे वज्रसत्त्व वा हेवज्रक हेतु एवं हिन्दू धर्ममे शिवक हेतु प्रयुक्त होइत छल।[3]

लगैत अछि जेना शैवमत ओ बौद्धमतक समीकरणक कोनो अन्तःस्थ प्रक्रिया कतोक शताब्द सँ चलि रहल छल यथा अन्तत: शैवमतक माध्यमसँ बौद्धमत हिन्दू धर्मक सागरमे समाहित भ' गेल।

डा० गुरुदास भट्टाचार्यक मत छनि जे बुद्धदेवक प्रभावसँ नटराज रुद्र, ध्यानी शिवमे परिणत भ' गेलाह। अत:पर बौद्धधर्म ओ शैवधर्म, बौद्धमूर्ति ओ शैवमूर्त्ति परस्पर एक दोसराके प्रभावित करैत रहल।[4] एहि प्रकारक परस्पर प्रभावित बौद्ध ओ शैव मूर्त्ति सभ पूर्वोत्तर भारतमे बहुल संख्यामे

१. तत्रैव, पृ० ८।

२. नाथ सम्प्रदायेर इतिहास, दर्शन ओ साधन प्रणाली, पृ० १८९।

३. Obscure Religious Cult, P. 195.

४. बाङ्ला काव्ये शिव, पृ० ८०।

उपलब्ध अछि। राजशाहीक चित्रशालामे राखल षड्भुज लोकेश्वरक हाथमे वरमुद्रा, अक्षमाला, कमण्डलु ओ त्रिशूल छनि। जेना शिवक जटामे गंगा विराजमान छथि तहिना महास्थानक मञ्जुश्रीक जटामे ध्यानीबुद्ध अक्षोभ्य विराजमान छनि। त्रिपुरारक वज्रयानी हेरुक, भैरव-रुद्रेक रूपान्तर थिकाह। ओहो कपाली, वज्री, नरमुण्डमाल ओ खट्वांगधारी तथा मञ्जुश्री जकाँ अक्षोभ्यशिर छथि। अनेक स्थानमे बुद्धमूर्त्ति सम्प्रति शिवरूपमे पूजित छथि, यथा—हजारीबागक कलुहा पहाड़क भैरवनाथ, खुलना जिलाक शिववाटि गामक शिवमूर्त्ति, दिनाजपुरक भैरो बाबा, मुर्शिदावाद-कान्दीक रुद्रेश्वर, दार्जिलिगक दुर्जयलिंग आदि।[1] वैद्यनाथधाममे भैरव नामसँ पूजित मूर्त्ति भूस्पर्श मुद्रामे बुद्धमूर्त्तिए तँ थिक। विदेश्वर स्थानमे एकटा बुद्धमूर्त्ति भैरवक रूपमे पूजित होइत अछि।

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदिक विचार छनि जे समीकरणक प्रक्रियामे पैघ-पैघ बौद्धमठ सभ शैवमठक रूप धारण क' लेलक।[2] मन्त्रयान ओ वज्रयान जे बौद्धधर्मक अन्तिम प्रतिनिधि छल से क्रमहि शैवादिमतमे समाहित भ' गेल।[3] नेपाल माहात्म्यमे कहल गेल अछि जे, जे बुद्धक पूजा करैत अछि से शिवेक पूजा करैत अछि तथा नेपाली बौद्धक स्वयम्भू पुराणमे पशुपतिक पूजाकेँ बुद्धक पूजा मानल गेल अछि।[4]

पालवंश समयमे बौद्धधर्मक पोषणक संग शैवोधर्मकेँ प्रश्रय भेटल छलैक। पालराजा सभ अनेकशः शिवमन्दिरक निर्माण, शिवलिंग ओ शिव-मूर्त्तिक स्थापना कयने छलाह। शिवमठक संचालन ओ शिवक पूजा-अर्चाक हेतु ग्रामदान, भूमिदान ओ सम्पत्तिदान कयने छलाह। उपरिविवृत तथ्य ओ विवेचित विचार-सरणिक प्रकाशमे एहि तथ्यक व्याख्याता भेटि जाइत अछि जे पालवंशीय राजालोकनि बौद्धधर्मावलम्बी 'परमसौगत' होइतो शैवधर्मक प्रति एतेक अभिरूचि किएक देखओलनि।

---

१. तत्रैव, पृ० ८०-८१।
२. हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ० ४।
३. तत्रैव, पृ० २११।
४. तत्रैव, पृ० ७।

Scanned by CamScanner

शैवधर्म ओ शैवधर्मी नाथ पन्थमे बौद्धधर्मक निमज्जन, इतिहासक कोनो अभिनव घटना नहि थिक। ई ओहि प्रक्रिया ओ परम्पराक अन्तिम अध्याय थिक जाहिमे वैदिक देवता रुद्र आर्येतर ओ वैदिकेतर आर्यक 'असंख्याता सहस्राणि' देवताकेँ आत्मसात् करैत गेलाह, जाहिमे याज्ञवल्क्य अनेकश: छोट-छोट जनजातिक देवताकेँ रुद्रक संग एकाकार क' देलनि। ओहि क्रममे शिव, बुद्ध ओ हुनक विविध रूपकेँ अपनामे समेटि लेलनि। शैवधर्मंमे मीलि क' बौद्धधर्म अस्तित्व विहिन भ' गेल।

मिथिलामे नाथपन्थ

मिथिलामे नाथपन्थक की स्थान छल ताहि सम्बन्धमे कोनो निश्चित ओ विस्तृत प्रमाण नहि भेटैत अछि। जेना बंगाल वा पश्चिमी प्रदेशक लोक-भाषामे नाथ-सम्प्रदायक साहित्य भेटैत अछि तेना मिथिलामे नहि। एकर अर्थ ई नहि मानल जा सकैछ जे नाथसम्प्रदायक कोनो प्रभाव मिथिला पर नहि पड़ल होयतैक वा मिथिलाक लोकभाषामे नाथ-सम्प्रदायक कोनो साहित्य नहि रचल गेल होयत।

मिथिलामे गुदड़िया बाबाजी द्वारा सारंगीपर गाओल जाय वला 'भरथरीक गीत' नाथ-सम्प्रदायेक लोकसाहित्य थिक।[1] कविराह सम्प्रदाय ओ निम्नवर्गमे गुरु प्रधान धार्मिक पन्थ सभमे गोरख नाथक विशेष आदर अछि। कतोक निर्गुनियाँ गीत सभमे गोरखनाथक चर्चा वा उल्लेख भेटैत अछि।[2]

---

१. Introduction to the Folk Literature of Mithila—Dr. J. K. Mishra, Part - I, P. 35-36.

२. मिथिलामे प्रचलित एहि प्रकारक गीतमे सँ गोटेक उदाहरण द्रष्टव्य थिक—

पढ़ू मन ओ ना मा सी धं ॥
ओएह अंकार संसारहि सिरिजल ताहीमे सब रंग।
वैह पुरुख सबहैं सौं न्यारा बसहि सभैके संग ॥
पढ़ू मन ओ ना मा सी धं ॥
रामनरायन नाना माधव नानारूप धरं।
निराकार निरगुन अविनासी निरखथि सबके संग ॥

वर्णरत्नाकरमे चौरासी सिद्धक सूची देल गेल अछि। चौरासी सिद्धक सूची परवर्त्ती बौद्धधर्म ओ नाथ सम्प्रदाय दुनूमे प्रचलित छल, किन्तु दुहूक सूची अपन-अपन छलैक। किछु सिद्धनाम एहनो अछि जे दुनूमे समान रूपसँ पाओल जाइछ। वर्णरत्नाकरमे मीननाथ, गोरक्षनाथ, चौरङ्गीनाथ, चामारीनाथ जालन्धर आदि नाथ सिद्धक नाम चौरासी सिद्धमे परिगणित अछि।[1] अनेक विद्वानक मत छनि जे वर्णरत्नाकरक सिद्ध-सूची वस्तुतः नाथ-सम्प्रदायक सिद्ध-सूची थिक।[2] एहि सूचीमे एकटा नाम 'मगरध्वज' अबैत अछि।[3] अन्हराठाढ़ी (मधुबनी) ओ श्रीनगर (सहरसा)मे प्रस्तर स्तम्भ पर अभिलेख अंकित भेटल अछि—'मगर ध्वजजोगी ७००'।[4] म० म० परमेश्वर झाक अनुमान छलनि जे—'कदाचित् ७०० बौद्ध संघ छल होथि तेँ ओ लेख बौद्ध भिक्षुक विषयक हो से संभव,[5] किन्तु यदि वर्णरत्नाकरक सिद्ध-सूची नाथ सम्प्रदायक सूची थिक तँ 'मगरध्वजजोगी' नाथ सिद्ध रहल होयताह से सहज अनुमेय थिक। अतः अनुमान कयल जा सकैछ जे नाथ सिद्ध मगरध्वजक निवास मिथिलामे छलनि तथा संभवतः हुनका आम्नायमे दीक्षित सात सय योगी रहल होयथिन। ओहि योगी सभक हेतु जे मठ निर्मित भेल होयत तकर स्तम्भमे ई लेख अंकित क' देल गेल होयत।

मिथिलामे नाथ सम्प्रदायक अस्तित्व विषयक एकटा महत्त्वपूर्ण सामग्री विद्यापति विरचित 'गोरक्षविजय नाटक'मे भेटैत अछि। गोरखनाथ मत्स्येन्द्र नाथक शिष्य छलाह। एकदा मत्स्येन्द्रनाथ' सांसारिक मोह जालमे आबद्ध भ' गेलाह। सौन्दर्यमयी रमणी, राजसुख ओ पुत्र-मोहमे पड़ि अपन यौगिक स्वरूपे बिसरि गेलाह। गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथक दोसर शिष्य कानिपादक संग

पढ़ मन ओ ना मा सी धं ॥
पाँच तोतके बने पुतला ओमे रंग तरंग।
गोरखनाथ मिलहि सतसंगी गुरुके नाम अनंद (त) ॥
पढ़ मन ओ ना मा सी धं ॥

१. वर्णरत्नाकर, पृ० ५७-५८।
२. नाथ सम्प्रदाय—हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० ३१-३६।
३. वर्णरत्नाकर, पृ० ५८।
४. Select Inscriptions of Bihar, P. 124.
५. मिथिला तत्त्व विमर्श (पूर्वार्द्ध)—परमेश्वर झा, पृ० १०४।

Scanned by CamScanner

जा क' हुनक मोह-भंग क' उद्धार कयलथिन। गोरखनाथ द्वारा मत्स्येन्द्रनाथक उद्धारक ई कथा नाथ-सम्प्रदायमे वेश प्रसिद्धि पओने छल। ओही कथाक पन्द्रहम शताब्दीमे मिथिलामे प्रचलित मैथिल रूप विद्यापतिकृत, 'गोरक्षविजय नाटक' मे भेटैत अछि। अवश्ये विद्यापति मिथिलाक जनजीवनमे नाथ-योगी सभक प्रसृत प्रभाव देखने होयताह, गोरखनाथक चमत्कार ओ यौगिक शक्तिक विविध कथा सभ सुनने होयताह।

हजारी प्रसाद द्विवेदीक कथन छनि जे बंगालमे नाथ सम्प्रदायक मानिनिहारक कोनो अंश पाछाँ 'जुगी' नामक वयन जीवी जातिक रूपमे परिणत भ' गेल।[1] वर्णरत्नाकरक नगर वर्णनक क्रममे, भिखारिक गणनामे जगा ओ योगीक उल्लेख अछि। मिथिलामे औखन तूर-सूतक काज कयनिहार 'पटवा' जाति अछि जे अपनाकेँ कखनो 'जोगीगोसाञि' ओ कौखन 'संन्यासी' कहैत अछि। इहो सभ बंगालक 'जुगीए' वर्गक अछि वा नहि, नाथ-पन्थसँ सम्बन्ध छलैक वा नहि; एहि विषयक तथ्यातथ्यक निर्णय अनुसन्धान सापेक्ष अछि। किन्तु ई सभ होइते अछि शैव से निश्चित अछि।

नाथ सम्प्रदायक अनुयायी 'सेली' धारण करैत छल। ई 'सेली' शब्द मैथिलीमे युग्मक शब्द 'सेलीटोपी'मे अद्यापि जीवित ओ प्रचलित अछि, यद्यपि 'सेली'क मूल अर्थ विस्तृत भ' गेल अछि। विद्यापतिक हरगौरी पदावलीमे वर्णित महादेवक स्वरुप ओ आचरणमे नाथपन्थी योगी सभक वेश-भूषा ओ आचारक प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। अत: ई मानबामे कोनो तारतम्य नहि रहि जाइछ जे आलोच्य कालमे मिथिलोमे शैवधर्मावलम्बी नाथ साम्प्रदायक ओही रूपमे प्रचलन छल जाहि रूपमे बंगाल, पंजाब वा नेपालमे छल।

मिथिलामे शैवमत

आलोच्यकालमे मिथिलामे शिवक पौराणिक रूपक पूर्ण प्रतिष्ठा छल। मीमांसक ओ नैयायिक द्वारा स्तुत शिव पुराण-वर्णित परमब्रह्म परमेश्वर शिव छलाह। शिवक मूर्त्ति ओ लिंग उभय रूपमे पूजन होइत छल, किन्तु प्रधानता छल लिंगार्चनक। नारायणपालक एकटा अभिलेखसँ ज्ञात होइछ जे राजा

---

१. कबीर—हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० ७-१२।

Scanned by CamScanner

द्वारा तीरभुक्तिमे सहस्र शिवायतनक मिर्माण ओ लिंग स्थापन क' ओकर व्यवस्था हेतु 'पाशुपत आचार्य परिषद्' केँ शिवोत्तर रूपमे 'मुकुतिका' नामक ग्राम देल गेल छल। एहिसँ एतबा संकेतित होइछ जे मिथिलामे पालयुगमे पाशुपत सम्प्रदाय प्रचलिते नहि छल, अपितु ओकर प्रतिष्ठो छलैक।

कर्णाट कालमे चण्डेश्वर शिवार्चन विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक रचना कयने छलाह। चण्डेश्वर एहि ग्रन्थरचना द्वारा कर्त्तव्यमात्रक निर्वाह नहि, अपितु आत्मतुष्टि सेहो कयलनि। सप्तरत्नाकरक प्रत्येक ग्रन्थमे जाहि रूपमे शिवक वन्दना कयने छथि से हुनका शिवभक्ति सिद्ध करैत अछि। अपन भक्ति-भावनाक सम्पोषणार्थे ,शैवमानसोल्लास'क रचना कयने छलाह। नेपाल विजय क' अपनहि हाथेँ स्पर्श क' भगवान् पशुपतिनाथक पूजन कयने छलाह जकर उल्लेख 'कृत्यरत्नाकर'मे गौरवपूर्वक कयने छथि—

देवं विश्ववर प्रदं पशुपतिं संस्पृश्य योऽपूजयत्।

सम्भव अछि जे अपना हाथेँ पशुपति पूजनक स्पृहा मात्र हुनका नेपाल विजय करबाक हेतु प्रेरित कयने होनि। हुनक संस्थापित दुइ गोट शिवलिंग सेहो लोकमे निर्दिष्ट कयल जाइत अछि जनिक नामे चण्डेश्वर छनि। चण्डेश्वरकेँ शिवभक्ति प्रायः पैत्रिक उपलब्धि छलनि। हुनक पिताक वीरेश्वरक, संस्थापित दुइ गोट शिवलिंग कहल जाइछ। पुरुषपरीक्षामे, कहल गेल अछि जे वीरेश्वर काशी जाय शरीर त्याग कयने छलाह। वीरेश्वरक समकालिक कविशेखर ज्योतिरीश्वर सेहो शिवार्चन-तत्पर देखल जाइत छथि। ओहो अपन प्रसिद्ध रचना 'धूर्त्तसमागम'क मंगलमे भगवान् शिवेक वन्दना कयने छथि।

आलोच्यकालक अन्तिम शतकमे मिथिलामे अनेक प्रकारक शैवव्रत ओ उत्सवक प्रचलन छल जकर विवरण चण्डेश्वरक कृत्यरत्नाकरमे भेटैत अछि। एकर विस्तृत परिचय पूर्ववर्ती अध्यायमे देल गेल अछि। ओहिसँ मिथिलाक समाजमे व्याप्त शैवभावनाक नीक परिचय भेटैत अछि।

सारांशतः कहि सकैत छी जे सातम-आठम शताब्दी सँ ल' चौदहम शताब्दीक मध्यभाग धरिक अन्तरालमे मिथिलामे शैव भावनाक पूर्ण प्रसारक प्रमाण भेटैत अछि। वस्तुतः आलोच्यकालमे शैवमत ओ शिव भक्तिकेँ महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्यक सम्पादन करैत देखैत छी। श्रुति-स्मृति-पुराण- निर्दिष्ट धर्मसँ विच्छिन्न ओ विमुख तथा बौद्ध वज्रयानी सहजयानी आचर-चमत्कारसँ

Scanned by CamScanner

विमुग्ध सामान्य जनकें पुनः अपन पूर्वज धर्मक प्रति आस्थावान् बनयबामे शैवभावना ओ शैवधर्म ऐतिहासिक भूमिकाक निर्वाह क' सफलीभूत भेल।

किन्तु एहि कालमे, प्राक् मैथिली वा प्रोटो-मैथिलीमे स्वतन्त्र धाराक रूपमे शैव काव्यक निर्माण नहि भ' सकल। संभव अछि जे भेलो होयत तँ काल प्रवाहमे विनिष्ट भ' गेल होयत। यदि नेपाल वा तिब्बतक बौद्ध बिहार सभमे कतहु अदृष्ट पड़ल होयत तँ ओकरा लेल चिर भविष्य धरि प्रतिक्षा कर' पड़त। सम्प्रति, प्राक् मैथिलीक स्वरूप ओ सामग्रीक दर्शन सिद्ध साहित्य विनयश्रीक गीति, प्राकृतपैङ्गलम् एवं वर्णरत्नाकर मात्रमे होइत अछि। एहि सभमे शिव ओ शैवक प्रासंगिक उल्लेख मात्र यत्र-तत्र भेटैत अछि। केवल प्राकृतपैङ्गलम्मे शिव विषयक स्वतन्त्र पद्य सभ उल्लेखनीय संख्यामे अछि। किन्तु ओहि पद्यक रचयिताक सम्बन्धमे कोनो सूचना उपलब्ध नहि अछि। तथापि अनामक कविक शिव विषयक ओ पद्य सभ समाजक शैव चिन्ताधारक विभिन्न दिशाक नीक परिचय दैत अछि। अतः आगाँ, उपर्युक्त सामग्रीक शिव विषयक प्रासंगिक उल्लेख ओ प्राकृतपैङ्गलम्क शिव विषयक पद्य सभ पर दृष्टिपात करब अपेक्षित अछि।

बौद्ध सिद्ध श्रो शैवमत

चर्यागीत ओ दोहा सभमे बौद्ध सिद्ध लोकनि अपन मतवादक प्रतिपादन कयलनि अछि। किन्तु ओहिमे अन्यमत ओ तकर देव-देवी, आचार-विचार आदिक आलोचना ओ निन्दा कयल गेल अछि। ओहिमे ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश तीनूक प्रति अनास्था देखाओल गेल अछि। आठम शताब्दीक सिद्ध सरोरुहवज्र वा सिद्धसरहपाद तीर्थ, क्षेत्र, पीठ, उपपीठ, सरस्वती, गङ्गा, वाराणसी, प्रयाग, चन्द्र दिवाकर आदिक अवस्थिति बाह्य संसारमे नहि मानि एहि शरीरमे मानैत छथि।[1] हुनका मतें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनू भ्रान्ति थिक।[2] पाशुपत मतानुयायीक आलोचना करैत कहने छथि जे-- ई शिवक भक्त सभ देहमे छाउर रगड़ैत अछि, माथपर जटा रखैत अछि, दीपवारि घरमे बैसल रहैत अछि, ईशान कोनमे बैसि घंटा बजबैत रहैत अछि, आसन

१. दोहा-कोष—राहुल सांकृत्यायन, पृ० २२-२३।
२. तत्रैव, पृ० १४-१५।

लगा आँखि मूनि व्यर्थे लोकके ठकैत अछि। अनेक रण्डी-मुण्डी आ नाना-वेशधारी एहि गुरु सभक मतमे अछि।[1]

नवम शताब्दीक धामपा 'दाढई हरि हर बम्ह भडारा' कहि क' त्रिदेवक निन्दा कयने छलाह।[2] दशम शताब्दीक तिलोपा तीर्थ, तपोवन देवपूजा आदिक परित्याग क' बोहिसत्त्व (बोधिसत्त्व) बुद्धक आराधना करबाक उपदेश देबाक क्रममे त्रिदेव-पूजाक परित्यागक निर्देश देने छथि।[3]

एहि प्रकारक निन्दा ओ विरोधक प्रवृत्तिक अछैतो उत्तर बौद्ध धर्म क्रमशः शैव धर्मक निकट आयल जाइत छल। पूर्वे कहल गेल अछि जे बौद्ध धर्मक प्रज्ञा-उपाय, शैव धर्मक शिव-शक्तिसँ भिन्न नहि छल। शिव ओ बोधिसत्त्व, हेरुक वज्र वा वेवज्रमे कोनो अन्तर नहि छल। वस्तुतः बौद्ध सिद्ध सभ विचारधारा ओ चिन्तनक क्षेत्रमे जहिना दूर जाय चाहैत छलाह तहिना शैव धर्मसँ प्रभावापन्न भेल जाइत छलाह। एकर प्रमाण नवम शताब्दीक कान्हपाक नव आविष्कृत चर्यागीत मे देखल जा सकैत अछि। राहुल सांकृत्यायन एहि नव चर्यागीतक उद्धार कयलनि अछि। एहिमे हेरुक-वज्रक नृत्यक वर्णन अछि। हेरुक वज्रक नृत्यकालमे डमरूक हुंकार होइत छैक। वज्र योगिनीकेँ संग ल' वाम करमे खट्वांग ओ दक्षिण करमे डमरू धारण क' हेरुक नचैत छथि। नृत्य सज्जामे गण सभ चाम फाड़िक' ओकरा प्रसाधित कयल। भैरव काल रात्रिमे हेरुकक शरीर परओ चर्म पहिरओलक। नृत्य सँ मेरु टरि गेल। अष्ट मशान पदमर्दित भेल। पद भारसँ मेदिनी काँप' लागल। एहि गीतमे हेरुकक चर्म त्रसाधन, योगिनी, गण, भैरव, खट्वांग, डमरू, मशान आदि तत्त्व ओ नृत्यक परिणाम स्वरूप मेरुक डोलब, पृथ्वी कापब इत्यादि शिवक ताण्डव नृत्यक समाने अछि। मैथिली-साहित्यमे वर्णित नटराज शिव ओ कान्हपाक नटराज हेरुकमे कोनो अन्तर नहि अछि। गीत निम्न रूपक अछि—

---

१. तत्रैव, पृ० २-३।

२. चर्यापद—४७।

३. दोहाकोष—पी०सी० बागची (जर्नल ऑफ दी रिपोर्टमेंट ऑफ लेटर्स, जिल्द—२८, १९३५, कलकत्ता विश्वविद्यालय), पृ० ३, ४६-४७।

बेञ्चि भव पांजर तोडि अहेले ।
सो करूण बेलमाठइ लीले ॥
डमरुहि हुंकारे वाजइ ।
वज्रयोगिनी लेइ हेरुअ नाचइ ॥
फाडिअ गण चाम पसाहिउ ।
भैरव कालगति तणे पाडिउ ॥
वामे खट्वाङ्ग दहिण करे डमरू ।
नाचइ हेरुअ आलम्बइ कमलू ॥
टरिअ मेरु तरतरु मम ताकिउ ॥
आठ मसाण पअ मे चापिउ ॥
यासु पय भार मेदिनि कांपइ ।
हेरुअ रअ धरि कान्हिल नाचइ ॥ [1]

बौद्ध मत पर शैव प्रभावक ई ज्वलन्त साहित्यक प्रमाण मानल जयबाक चाही ।

असमक खासी जातिक स्त्रीगणक मुहसँ सूनल आर्यदेवक तथाकथित रचित एकटा शिवगीत हालेमे आयल अछि । गीतक उद्धृतांश निम्न रूपक अछि —

अखर बरम्ह सनातन सिवमत आतमरे ।
विपति विरुतथ विदारन भन निगमागम रे ॥
सिव सिव सिव भवतारन पदभजु पावन रे ।
संसय सकल निवारक तारक त्रिभुवन रे ॥
गउरीवर अति गोर घोर तम दापक रे । [2]

एहि गीतक भाषा होइतो बौद्ध सिद्ध आर्यदेव-रचित ई गीत नहि थिक । एहिमे अन्तिकालक बौद्ध धर्मक कोनो तत्त्व संकेतित नहि अछि । पूर्णतः शिव-भक्ति गीत थिक जे सिद्ध लोकनिमे कतहु नहि भेटैत अछि । एहि गीतक

---

१. दोहाकोष—राहुल सांकृत्यायन, पृ० ३६९ ।
२. मोतिआयल गीत-डा० बदरीनारायण झा, विद्यापति स्मृति पर्व (स्मारिका)-१९६७, मिथिला-मण्डल, बम्बइ, पृ० ११ ।

Scanned by CamScanner

भाव, भाषा ओ उक्ति भंगिमा स्वयं साक्षी अछि जे ई गीत प्राक् मैथिलीक नहि अपितु नव निर्मित थिक। तें एकरा गम्भीरतासँ नहि लेबाक चाही।

प्राकृतपैङ्गलम्क

प्राक् मैथिली साहित्यमे प्राकृतपैङ्गलम्क विशिष्ट स्थान अछि। ई एकटा छन्द विषयक ग्रन्थ थिक जाहिमे प्राकृत-अपभ्रंश भाषामे प्रयुक्त यावन्तो मात्रावृत्त ओ वर्णवृत्तक विभिन्न छन्दक लक्षण ओ उदाहरण सभ संकलित अछि। एहि ग्रन्थक भाषामे प्राकृत ओ अपभ्रंशक संग परवर्त्ती अपभ्रंश वा अवहट्ठक प्रयोग भेल अछि। एकर रचना तेरहम शताब्दीक पश्चात् भेल छल। तथापि यथार्थ रचनाकाल, रचयिता, रचना-स्थान, भाषा आदिक प्रसंगमे प्रचुर विवाद रहल अछि।

एहि ग्रन्थक नवीनतम संस्करणक सम्पादक भोला शंकर व्यास विभिन्न मतक पर्य्यालोचन क' देखलनि अछि जे एकर रचनाकालक सम्बन्धमे तीन प्रकारक विचार अछि—

क. चौदहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे रचित
ख. चौदहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध रचित
ग. पन्द्रहम शताब्दीकमे रचित[1]

एहि ग्रन्थक भूमिका लेखक डा० वासुदेव शरण अग्रवाल[2] ओ स्वयं डा० व्यास[3] स्वयं प्रथमे सिद्धान्तसँ सहमत छथि। भूमिकामे प्राकृत पैङ्गलम्क रचना-काल, रचना-स्थान, आदि पर निम्न रूपक अभिमत देल गेल अछि—

प्राकृतपैंगलम्क सग्रह मूल रूपमे राजपूतानामे संभवतः रणथम्भौरमे—हम्मीरक शासन कालक लगपासमे कयल गेल छल। अल्लाउद्दीन द्वारा पराजित भेला पर ओहि ठामक भट्टनिराश्रित भ' पूबदिस अयलाह। प्राकृतपैंगलम्क मूल रूप ओही समयमे एमहर आनल गेल छल तथा एकर अन्तिम परिवर्द्धित रूप मिथिला-नेपालक राजा हरसिंह देवक समयमे रथम्भौर सँ

---

१. प्राकृतपैंगलम्, भाग-२-सं० डा० भोलाशंकर व्यास, पृ० १०।
२. तत्रैव, (इंट्रोडक्शन) पृ० ३-४।
३. तत्रैव, पृ० २०।

आयल ब्रह्मभट्टक द्वारा कयल गेल जाहिमे हरिब्रह्मक चंडेश्वरसँ सम्बद्ध पद्य जोड़ि देल गेल। एहि प्रकारेँ प्राकृतपैंगलम्क संग्रहक राजपूतानाहिक छल, एकर संग्रहो रणथम्भौरमे ईसाक चौदहम शतीक प्रथम चरण १३००-१३२५ ई०) मे भ' चुकल छल। बादमे किछु अंश मिथिलोमे जोड़ल गेल।[1]

प्राकृतपैङ्गलम्क मात्रावृत्त प्रकारणमे पद्य १०५ ओ १०७ मे छप्पयक लक्षम अछि। प्रथम लक्षणक उदाहरणमे हम्मीरक वीरता-वर्णन विषयक पद्य संख्या-१०६ अछि तथा दोसर लक्षणक उदाहरणमे हरिब्रह्म रचित चंडेश्वरक प्रशस्ति विषयक पद्य संख्या-१०८ अछि। समस्त ग्रन्थमे हम्मीरक आठ बेर उल्लेख भेल अछि। एहि आधार पर व्यास जी एहि ग्रन्थक रचना राजपूतानामे हम्मीरक शासन-कालमे मानि लेलनि अछि। ओ लक्षणक पद्य १०५ ओ १०७ मे कोनो पार्थक्य नहि मानि, लक्षणक पद्य १०७ ओ तकर उदाहरणक हरिब्रह्म रचित चडेश्वर-प्रशस्ति विषयक छप्पयक पद्य-१०८ केँ प्रक्षिप्त घोषित क' देलनि आ एहि समर्थनमे टीकाकार वंशीधरक उक्तिक उद्धरण देलनि जे ई दुहू पद्य क्षेपक थिक।[2]

किन्तु सभसँ प्राचीन टीकाकार रविकर[3] तथा लक्ष्मीनाथ भट्ट[4] एहि दुनू पद्य—लक्षण (१०७) ओउ दाहरण (१०८)क सम्बन्धमे कोनो शंका नहि कयने छथि। वस्तुतः छप्पय छन्दक 'वस्तु' प्रभेदकेँ स्पष्ट करबाक लेल उपर्युक्त लक्षण-उदाहरण पद्यक अवतारणा कयल गेल अछि। दुनू लक्षणक मौलिक पार्थक्यकेँ टीकाकार वंशीधर ओ सम्पादक व्यास जी अनदेख क' देलनि। छप्पय छन्दक विभिन्न प्रभेदक वर्णनमे इएह लक्षण ओ उदाहरण प्रक्षेप कोना भ' गेल ?

यथार्थ ई लगैत अछि जे पिंगलक नामसँ चल अबैत कोनो प्राकृत छन्दः सूत्रकेँ हरिहर वा हरिहर ब्रह्म नामक कोनो आचार्य जे कर्णाट वंशक अंतिम राजा नरसिंह देव (१३२४ ई०)क महामहत्तक चंडेश्वरक समसामयिक ओ आश्रित छलाह, ओकरा सरल रूप द' तदर्थ उदाहरण सभक चयन क'

१. तत्रैव, पृ० १० ।
२. तत्रैव, पृ० १५ ।
३. तत्रैव, पृ० ३४४ ।
४. तत्रैव, पृ० ४०३ ।

Scanned by CamScanner

प्राकृत पैङ्गलमृक रचना कयलनि तथा मात्रावृत्तक १०८ संख्यक चंडेश्वर प्रशस्ति विषयक पद्यक समावेश कयलनि।

हरिहर ग्रन्थकर्त्ता छलाह तकर प्रमाण अछि। छप्पये प्रकरणमे 'वस्तु' छन्दक पैंतालिसम प्रभेदक विस्तारक सम्बन्धमे कहबाक कालमे ११५ मपद्यमे कहल गेल अछि—

अह्मा कइ पिंगल कहइ
चलइ ण हरिहर वंभ।[1]

एकर व्याख्या एकटा टीकाकार निम्न रूपेँ कयने छथि—

'अथ च ग्रन्थकर्त्ता हरिहर वन्दी न चलति न भ्रान्तो भवतीत्यर्थः।[2]

एहि ग्रन्थक रचना मिथिलामे तकर पुष्टि हेतु प्रमाणत्वेन दुइ गोट और पद्यक उल्लेख आवश्यक अछि। एकटा पद्यमे उपरिचर्चित चंडेश्वरक प्रशस्ति अछि तथा दोसर पद्यमे हुनक पिता वीरेश्वरक प्रशस्ति अछि। मात्रावृत्त प्रकरणमे 'गाहू' छन्दक उदाहरण ५३ संख्यक पद्यमे कहल गेल अछि—चन्द्रमा चन्दन ओ (मुक्ता) हार तावते अपन रूप प्रकाशित करैछ जावत चंण्डेश्वरक कीर्ति अपन स्वरूप नहि देखबैछ।[3] 'दोहा छन्दक उदाहरण ७९ संख्यक पद्यमे कहल गेल अछि—सुरतरु (कल्पवृक्ष) सुरभि (कामधेनु), स्पर्शमणि तीनू वीरेश (वीरेश्वर)क समान नहि अछि। ओ (कल्पवृक्ष) बाकल कठिन शरीरी (काठ) थिक, सुरभि पशु थिक तथा स्पर्शमणि पाथर थिक।[4]

वीरेश वा वीरेश्वर, वीरेश्वर ठक्कुर महासान्धि विग्रहिके छथि जनिक दानशीलता इतिहास प्रसिद्ध अछि।[5]

---

१. तत्रैव, पृ० १०४।

२. प्राकृत पैंगलम्—चन्द्रमोहन घोष, १९८।

३. प्राकृत पैंगल (व्यास), भाग—१, पृ० ५१।

चंदो चंदणहारो आवअ रुअं पआसंति।
चंडेसर वर कित्ती जाव ण अप्प णिसंसेइ॥

४. तत्रैव, पृ० ७१।

सुरअरु सुरही पारसमणि णहि वीरेस समाण।
ओ वक्कल ओ कठिण तणु ओ पशु ओ पासाण॥

५. मिथिला तत्त्व विमर्श (पूर्वार्द्ध), पृ० ४९–५२; पुरुषपरीक्षा अलस

उपर्युक्त पद्यद्वयक प्रक्षेप होयबाक कोनो संभावना नहि अछि जाहि हरिब्रह्म वा हरिहर ब्रह्म १०८ संख्यक छप्पय थिकनि तनिकहि उपयुक्त दुहू पद्य होयब युक्ति युक्त लगैत अछि।

मिथिमामे प्राकृत पैङ्गलम्क अनुसरण खूब भेल। एकर सभसँ प्राचीन टीकाकार रविकर वा श्रीपति छलाह ओ दीर्घघोष (दिघवय) मूलक मैथिल ब्राह्मण छलाह।[१] रविकर 'पिंगलसार विकासिनी'मे अपन वंशावली देने छथि—

शुलपाणि／रत्नाकर／दोहुवि／चंडेश／भीमेश्वर／हरिहर／रविकर।

एहिमे अपन पिता हरिहरक हेतु 'सुकवि' विशेषणक वर्णण कयने छथि।[२] संभवतः इएह सुकवि हरिहर चंडेश्वर ओ वीरेश्वरक प्रशस्ति पद्यक ओ प्राकृत पैङ्गलम्क रचयिता छलाह। पिताक कृति पर पुत्र रविकरक टीका रचना करब स्वाभाविक अछि। एही कुलमे दामोदर भेलाह जे ओइनवार राजा कीर्त्तिसिंहक आश्रयमे रहि 'वाणीभूषण' नामक संस्कृत छन्दो ग्रन्थक रचना कयलनि।[३] जाहिमे प्राकृत पैङ्गलम्क विशुद्ध अनुसरण कयल गेल अछि।[४] दामोदर वाणीभूषणमे दीर्घघोष कुल ओ रविकरक वैदुष्यक प्रभुत प्रशंसा कयने छथि।[५]

कथा—'आसीन्मिथिलायां वीरेश्वरोनाम मंत्री स च स्वाभावादानशील: कारुणिकश्च सर्वेभ्यो दुर्गतेभ्यो प्रत्यहमिच्छाभोजनं दापयति तन्मध्येऽलसेभ्योप्यन्नं दापयति।

१. प्राकृत पैंगलम्, भाग—२, पृ० २५-२६।

२. तत्रैव, भाग—१, पृ० ३७२।

३. वाणीभूषण—सं० प० शिवदत्त, काव्यमाला—५३, पृ० १३।

तरणी भवसि निमज्जतो दुरित पयोनिधि वारि।
दिशि दिशि विलसित तव यशोनव हिमरुचि रुचि धारि॥
नव हिमरुचि रुचि धारि महोऽपि न यस्य समानं
परवारण बलसिंह विदुषि वितरसि बहु दानं॥
परवारण बलसिंह जयसि भुवि जगदेकरणी
कीर्त्तिसिंह नृप जीव यावदमृत द्युति तरणी॥

४. प्राकृत पैंगलम्, भाग—२, पृ० १६।

५. वाणीभूषण पृ० ३६।

कीर्त्तिसिंहक आश्रयमे दामोदर प्राकृत पैङ्गलम्क छन्दके जँ संस्कृतमे परिभाषित कयलनि तँ विद्यापति कीर्त्तिसिंहक प्रशस्ति काव्य कीर्त्तिलतामे प्राकृत पैङ्गलम्क छन्दक सर्वत्र प्रयोग कयलनि। मिथिलामे प्राकृतपैङ्गलम् अनेकानेक प्रतिलिपि ओ मिथिलामे रचित अनेको टीका सभ उपलब्ध होइत अछि। ई सभ सिद्ध अछि ई ग्रन्थ मैथिल परम्पराक वस्तु थिक। मिथिलामे मैथिल द्वारा एकर रचना वा सम्पादन भेल छल। मिथिलामे ई जीवन्त रहल। औखन मिथिलाक जनजीवनमे 'पिंगल' शब्द अपन मूल अर्थमे जीवित ओ प्रचलित अछि। पिंगल शब्दक योगसँ बनल अनेक उपलक्षण ओ कहबी मैथिल लोकजीवनमे प्रयुक्त होइत अछि।[1]

अतः डा० हरमन जैकेबी 'प्राकृतपैङ्गलम्'क छन्दः परम्पराकेँ पूर्वी छन्दः परम्परा, भाषाकेँ पूर्वी अपभ्रंश आ रचयिताकेँ पूर्वी प्रदेशक वासी मानने छथि[2] तँ सर्वथा उचित अछि। डा० विजयचन्द्र मजुमदारो एकर भाषाकेँ पूर्वी अपभ्रंशे मानने छथि।[3] किन्तु हिन्दीक विद्वान् जैकोबी ओ मजुमदार सँ असहमत भ' एकर भाषाकेँ पश्चिमी अपभ्रंश वा पुरानी हिन्दी मानैत छथि। परन्तु तथ्यकेँ तर्कसँ आच्छन्न नहि कयल जा सकैछ। डा० भोला-शंकर व्यास 'प्राकृतपैङ्गलम्क भाषाशास्त्रीय अनुशीलन' नामक अध्यायमे विस्तार सँ विचार करैत पूर्वीय तत्त्वक सम्बन्धमे मन्तव्य देलनि अछि—

'इतना ही नहीं, इसमें कुछ नगण्य तत्त्व पूरबी भाषा वर्ग अवधी तथा मैथिली के भी मिल जाते हैं।[4] प्रा० पैं० में कुछ छिटफुट चिह्न पूरबी

दीर्घघोषकुल देवदीर्घिका पंकज रविकरो व्यराजत।
ईर्ष्ययैव दुहितुः पयोनिधेर्यत्र वासमकरोत्सरस्वती ॥

1 पिंगल होयब; पिंगल छाँटब; पिंगल पढ़ब; पिंगल करब;
कठपिंगल; जँ राड़ पिंगल पढ़य, तीन बात जंगल के कहय;
जँ राड़ पिंगल पढ़य तीन बात के हीन,
बोली चाली बैठनी लेल विधाता छीन।

२. Journal of Oriental Research Institute, Baroda, Vol. VI, Part 2-3, P. 92-97.

३. The History of Bangali Language, P. 248-56.

४. प्राकृतपैङ्गलम्, भाग—२, पृ० ९४।

Scanned by CamScanner

भाषाओं के भी मिल जाते हैं, किन्तु ये लक्षण प्रा० पैं० की खास विशेषता नहीं हैं। अतः कुछ पूरबी भाषा संबंधी तत्वों की छौं यत्र-तत्र कुछ पद्यों में मिल जाना असंभव नहीं है। संभवतः उन पद्यों के रचयिता, जिसमें ये तत्व मिलते हैं, अवधी या मैथिली क्षेत्र के हों। फिर भी कुल मिलाकर प्रा० पैं० के पद्यों में प्रयुक्त भट्ट शैली की मूलाधार भाषा पुरानी पश्चिमी हिन्दी की ही स्थिति का संकेत करती हैं।[२]

प्राकृत पैङ्गलम्मे प्राकृत, अपभ्रंश तथा नव्य आर्यभाषाक पूर्व रूप अवहट्टक मिश्र प्रयोग भेल अछि। एहिमे उदारहणक पद्य कोनो एक कविक रचित नहि थिक जे एक प्रदेशसँ संकलित अछि। अतः भाषाक एकरूपताक आशा करब असमीचीन। विभिन्न प्रदेशक, विभिन्न कविक विभिन्न कृतिसँ प्रयोजनानुकुल उदाहरण ग्रहण कयल गेलाक कारणे भाषा जन्य विभिन्नता स्वाभाविक। संगहि एकर मूलप्रतियो उपलब्ध नहि अछि। भिन्न-भिन्न प्रान्तमे जा क' तत्तत् प्रान्तीय भाषासँ संक्रान्त भ' जयबाक कारणेँ भाषाक मूल रूप रक्षित नहि रहि सकलैक। तथापि पूर्वीय भाषाक तत्वकेँ अपवाद वा नगण्य नहि मानल जा सकैत अछि। प्राचीन मैथिलीक लक्षणक सैकड़ो प्रमाण प्राकृतपैङ्गलम्मे विद्यमान अछि। अनाम कवि सभक जे रचना सभ अछि ताहिमे प्रचूर सख्यक पद्यक भाषा प्राचीन ओ मध्यकालीन मैथिलीसँ कनेको भिन्न नहि अछि। अतः डा० श्री सुभद्र झा प्राकृतपैङ्गलम्क सम्बन्धमे उचिते कहलनि जे ओकर कतोक उद्धृत पद्यमे कोनो सहन तत्व नहि अछि जे ओकरा प्राचीन मैथिली भाषासँ अभिहित होयबामे बाधक हो।[3] डा० श्री जयकान्त मिश्र[४] तथा राधाकृष्ण चौधरी[५] सेहो प्राकृतपैङ्गलम्क बहुसंख्यक पद्यकेँ प्राक्मैथिलीक सामग्री मानलनि अछि।

मिथिलामे रचित ओ संकलित होयबाक कारणेँ एकर अधिकांश उदाहरणक पद्य सभ मिथिलामे रचल गेल होयत अथवा तत्कालीन मिथिलामे

---

१. तत्रैव, पृ० ११६।
२. तत्रैव, पृ० ११७।
३. The Formation of Maithily, P. 41.
४. हि० मैं० लि०, भाग-१, पृ० १२८।
५. मैथिली भाषा ओ साहित्य, पृ० ७२-७४।

Scanned by CamScanner

प्रचलित छल होयत। अतः ओ पद्य सभ अवश्ये एहि क्षेत्रक साहित्यक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मनःस्थितिकेँ रूपायित कयने होयत। एहि ग्रन्थक पद्य सभक पारायण कयने स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ओहिमे शृंगार, वीर ओ भक्ति भावना विशेष प्रधान अछि। धार्मिक ओ भक्ति-भावना सँ युक्त पद्य सभक प्रसंगमे व्यासजीक अभिमत अछि – प्राकृतपैङ्गलम्क स्तोत्र मुक्तक ब्राह्मण धर्मक देशी-भाषा-निबद्ध स्तोत्र-परम्पराक संकेत करैत अछि। एहिमे देवी तथा शिवक स्तुतिसँ सम्बद्ध पद्य संख्यामे सभसँ अधिक अछि।[1]

एहिमे कृष्ण, राम ओ दशावतार विषयक कुल पाँच गोट पद्य अछि। देवियो वर्णनक पद्य विशेष संख्यामे नहि अछि। सर्वाधिक सख्यामे शिव-वन्दनाक पद्य अछि, व्यासजीक विचारेँ ई भक्ति-पद्य सभ कृत्रिम अछि, रुचि परिवर्त्तन लेल अछि—

'ई रचना ओहि दर्बारी कविक अछि जकरा भक्त नहि कहल जा सकैछ। ओ केवल ब्राह्मण धर्मानुयायी कवि अछि जे कखनो-कखनो आस्तिकताक व्यंजना लेल तत्तत् देवी-देवताक स्तुतिमे एक-आध पद्य गाबि उठैछ। रीतिकालीन कवि जकाँ ईहो अपन मुहक स्वाद बदलबाक लेल कखनो-कखनो भक्ति-श्रद्धाक बात करऽवला मात्र अछि।'[2]

एहि प्रकारक धारणा मिथिलाक तत्कालीन परिस्थितिक सन्दर्भमे नहि देखबाक कारणेँ भेल अछि। प्राकृतपैङ्गलम्क रचना-क्षेत्र नहि मानने एहन धारणा स्वभावत होयबे करत। प्राकृतपैङ्गलम्क शिव-वन्दना विषयक पद्यमे भक्ति भावनाक कृत्रिम रूप नहि मानल जा सकैछ। एहि युगक धार्मिक पृष्ठभूमिक विवेचना क्रममे देखल गेल अछि जे शैव भावनाक केहन प्रचार-प्रसार मिथिला ओ पूर्वांचलमे छल। वीरेश्वर, चण्डेश्वर, ज्योतिरीश्वर आदिक साहित्यक माध्यमसँ अभिव्यक्त शैव भक्ति-भावनाक अथवा आचार ओ क्रियाकलापमे व्यक्त शैव भक्ति-भावना हमरा लोकनि देखल अछि। अवश्ये शिव-भक्ति विषयक पद्यक गान जन समाजमे होइत छल। एहि सम्बन्धमे एकटा तथ्य विचारणीय अछि। वर्णरत्नाकरमे, नगरवर्णना नामक प्रथम कल्लोलमे, नगरमे गाओल जायबला गीत सभक सूचीमे एकटा 'चउपइ' गीतक उल्लेख अछि। ई गीत कोन प्रकारक छल ? एकर की विषयवस्तु

---

१. प्राकृतपैंगलम्. भाग–२, पृ० ६०।
२. उपरिवत्।

छलै ? एहि सम्बन्धमे निर्णय करबाक कोनो साधन नहि अछि। किन्तु **प्राकृतपैङ्गलम्**मे '**चउपइया**' नामक छन्दक विवरण भेटैत अछि। '**चउपइ**' ओ '**चउपइया**' एके वस्तु भ' सकैत अछि। '**चउपइया**' एकटा विशिष्ठ छन्द थिक। एहि छन्दक एक चरणमे ३० मात्रा होइत छलैक। एहन चारि चरणक एक छन्द होइत छलैक। एहन चारि गोट छन्द मिला क' '**चउपइया**' छन्द पूर्ण होइत छलैक। एकर अर्थ भेल जे '**चउपइया**'मे १६ चरण होइत छलैक।[1] एतेक पैघ छन्द समस्त **प्राकृतपैङ्गलम्**मे दोसर नहि अछि। अवश्ये ई गेय छन्द छल होयत। तेँ सहजे मानल जा सकैछ जे **चउपइ** नामक गीत **प्राकृतपैङ्गलम्**क **चउपइया** छन्द थिक। **प्राकृतपैङ्गलम्**म एकर समस्त रूपक उद्धरण त नहि, केवल चारि चरणक एक छन्दक उदाहरण देल गेल अछि। ओकर विषय वस्तुसँ **चउपइ** वा **चउपइया**क सामान्य वर्ण्य वस्तुक अनुमान कयल जा सकैछ। एहि उदाहरण पद्यमे शिवक वन्दना कयल गेल अछि। पद्य निम्न रूपक अछि—

जसु सीसहि गंगा गोरि अधंगा शिव पहिरिअ फणिहारा।
कंठ द्विअ वीसा पिंधणदीसा संतारिअ संसारा॥
किरणावलि कंदा वंदिअ चंदा णअणहि अणल फुरंता।
सो संपअ दिज्जउ बहुसुहकिज्जउ तुम्ह भवाणी कंता॥[2]

—जनिक शीशपर गंगा छथिन, अर्द्धाङ्गमे गौरी छथिन, ग्रीवामे सर्पहार पहिरने छथि। जनिक कठमे विष स्थित छनि, जनिक वस्त्र (पिंधणझाँपन) दिशा छनि तथा जे संसारकेँ तारैत छथि। जे किरणावलीक कंद (पुंज) चन्द्रमाक वन्दना कयलनि (शीशपर धारण कयलनि), जनिक आँखिमे अग्नि स्फुरित होइत छनि से भवानी पति अहाँकेँ संपत्ति देथि, बहुत सुख करथि।'

चउपइ वा **चउपइया** एक प्रकारक गीत छल होयत जकरा वाद्य यन्त्र वा विनु वाद्ययन्त्रक सहायता गाओल जाइत छल होयत। उपर्युक्त उदाहरणसँ अनुमान कयल जा सकैछ जे एकर वर्ण्य वस्तु देवी-देवताक भक्ति, विशेष रूपसँ शिव-पार्वतीक भक्ति होइत छल होयत। अनुमानतः नचारी-महेशवाणी परम्पराक पूर्व रूप रहल होयत। ई तत्कालीन भक्ति भावनाक अकु-

---

१. तत्रैव, भाग-१, पद्य—९७, पृ० ८८।
२. तत्रैव, पद्य-९८, पृ० ८९।

Scanned by CamScanner

त्तिमता सूचित करैत अछि ।

प्राकृतपैङ्गलम्क रचनाकालक पचास-पचहत्तरि वर्षक पश्चात् विद्यापति सन शिवभक्त कविक आविर्भाव भेल जे आदि कालसँ ल' आधुनिककाल धरिक शैव साहित्यक अधिष्ठाताक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह । विद्यापतिक शिव गीत-रचनाक प्रेरणा अवश्ये अतीत कालक ओ समकालिक लोक जीवनमे प्रचलित शिवगीत रहल होयत ।

अतः प्राकृतपैङ्गलम्क भक्ति-पद्य वा शिव-विषयक पद्यक भक्ति भावनाकेँ कृत्रिम वा मनोरंजक प्रयोग मानब उचित नहि । हमरा विचारेँ एहि ग्रन्थक रचयिता स्वयं शैव भावना सक्त छलाह । एकर प्रमाण अछि ओ लघु छन्दक उदाहरण सभ जे ग्रन्थकार स्वयं रचने होयताह । ओतेक छोट उदाहरण-पद्य सभ कतहुसँ उद्धृत करबाक कोनो प्रयोजन नहि छल । मात्रावृत्त प्रकरणमे मंगल प्रथम लक्षणक पश्चात् उदाहरणक प्रथमे पद्य शिव विषयक अछि ।[१] वर्णवृत्त प्रकरणमे आरम्भमे छोट-छोट छन्दक जतेक उदाहरण अछि से सभ शिव ओ उमा-विषयक अछि । ओकरा सभकेँ उद्धृत क' देब अनुचित नहि होयत ।

गौरी । रक्खो ॥[२]
—गौरी रक्षा करथु ।

हर हर । मम मल ॥[३]
—हे हर ! हमर पाप हरू ।

सई उमा । रखो तुमा ॥[४]
—सती उमा तोहर रक्षा करथुन ।

शंभु एउ । सुब्भ देउ ॥[५]
—ई शंभु शुभ देथु ।

---

१. तत्रैव, पद्य—३, पृ० ३ ।
२. तत्रैव, श्री छन्द, पद्य—२, पृ० १८१ ।
३. तत्रैव, मधु छन्द, पद्य—६, पृ० १८३ ।
४. तत्रैव, मही छन्द, पद्य—८, पृ० १८३ ।
५. तत्रैव, सारु छन्द, पद्य—१०, पृ० १८५ ।

Scanned by CamScanner

तुम्हाण अम्हाणं । चंडे सो रक्खे सो ॥[1]
—ओ चडेश तोहर हमर रक्षा करथि ।

संकरो संकरो । पाउणो । पाउ णो ॥[2]
—कल्याणकारी शंकर हमर सभक रक्षा करथु, हमर सभक रक्षा करथु ।

भवाणी हसंती । दुरित्तं हरंती ॥[3]
—हँसैत भवानी दुरित हरैत छथि ।

सो हर तोहर । संकट संहर ॥[4]
—ओ शंकर तोहर संकट संहारथि ।

देउ देउ सुब्भ देउ । जासुसीस चंद दीस ॥[5]
—जनिक शीशपर चन्द्रमा दृश्यमान छथि से देवकदेव शुभ देथु ।

गउरिअ कन्ता अभिणउ सन्ता ।
जइ परसण्णा दिअ महि धण्णा ॥[6]
—अभिनय-श्रान्त गौरी-कान्त जँ प्रसन्न छथि तँ आकाश ओ पृथ्वी धन्य अछि ।

ई लघु लघु छन्दक उदाहरण ग्रन्थकारक स्वयमेव रचित मानबामे कोनो बाधा नहि अछि । एही आधार पर इहो सिद्धान्त क' सकैत छी जे एहि ग्रन्थक शिव विषयक अन्यो पद्य सभमे कतिपय अपवादकेँ छोड़ि शेष समग्र पद्य ग्रन्थकारहिक होयत । से कृत्रिम भक्तिक नहि, सहज स्वाभाविक भक्तिक परिचायक थिक । संगहि मिथिलाक सामाजिक जीवनमे शिवभक्तिक व्यापक प्रचार सूचक थिक ।

प्राकृतपैङ्गलम्मे मैथिली शैवसाहित्यक प्रारम्भिक रूप विद्यमान अछि । मैथिली शैवसाहित्यमे शिव ओ शिव परिवारक जाहि रूपमे चित्रण होइत

---

१. तत्रैव, ताली छन्द, पद्य—१२, पृ० १८५ ।
२. तत्रैव, प्रिया छन्द, पद्य—१४, पृ० १८६ ।
३. तत्रैव, शशी छन्द, पद्य—१६, पृ० १८८ ।
४. तत्रैव, मन्दर छन्द, पद्य—२४, पृ० १९१ ।
५. तत्रैव, धारी छन्द, पद्य—३०, पृ० १९४ ।
६. तत्रैव, चतुरंसा छन्द, पद्य—४८, पृ० २०१ ।

Scanned by CamScanner

रहल अछि तकर बीजरूपक दर्शन एहि ग्रन्थक शिव-विषय पद्यमे होइत अछि। विद्यापति ओ परवर्त्ती कविक गीतमे शिव-विवाहक अवसर पर हुनक विरूपताक वर्णन विशेष रूपसँ भेटैत अछि। एहि भावक एकटा पद्य प्राकृतपैङ्गलम्मे निम्न रूपक अछि।—

माई रूए हेओ हिण्णो जिण्णो अ बुड्ढओ देओ।
संभु कामन्ती सा गोरी गहिलत्तणं कुणइ ॥[1]

सखीक उक्ति थिकैक—गय माय! रूपेँ हेय, हीन, जीर्ण आ बूढ़ देव! एहन शम्भुक कामना करैत गौरी व्यर्थे हठ करैत छथि।

भंगतराह शिव ओ विपद्ग्रस्त पत्नी पार्वतीक चित्रण मैथिली कविक प्रिय वर्ण्य विषय रहलनि अछि। एहि रूपक एकटा पद्य द्रष्टव्य थिक—

बालो कुमारो स छमुंडधारी उप्पाअहीणा हउँ एक्क णारी।
अहण्णिसं खाहि विसं भिखारी गई भविती किल का हमारी ॥[2]

पार्वतीक उक्ति अछि जे - बालक कुमार छौमुंडवला छथि, हम उपाय-हीना एकसरि नारी छी, भिखारि (शिव) दिन-राति विष खाइत रहैत छथि। हमर की गति आ भावी अछि?

प्राकृतपैङ्गलम्क शिव विषयक पद्यमे साधारणतः शिवक रूप-वर्णन अछि, ताहूमे विशेषतः हुनक अर्द्धनारीश्वर रूपक—

जा अद्धंगे पव्वई— (जनिक अर्द्धांगमे पार्वती)
गोरी अधंगा— (आध अंगमे गौरी)
गोरि नारि अद्धंग धरू - (गौरी नारीकेँ अर्द्धांगमे धारणा कयने छथि)
अद्धंगहि परिकर धरणु—(अर्द्धांगमे स्त्री धारण कयने छथि)
तरुणिवर तणुमह विलसइ--(तरुणि श्रेष्ठ तनमे सुशोभित छथिन)
जाआ जा अद्धंगा— (पत्नी जनिक अर्द्धांग)
गोरि अधंगं
गोरि अधंगा }— (गौरी अर्द्धांग)

१. तत्रैव, मात्रावृत्त पद्य—३, पृ० ३।
२. तत्रव, वर्ण वृत्त पद्य—११०, पृ० २४१।

Scanned by CamScanner

णाअरि जेण अधंगा— (नागरि जनिका द्वारा अर्द्धांगमे राखलि गेलीह)

गोरि अंगा— (गौरी अंगमे)

शिवक अर्द्धनारीश्वर रूपक वर्णन मिथिलाक साम्बसदाशिव-अर्चनाक अनुरूपे अछि। साहित्योमे परवर्त्ती कालक मैथिलीमे वर्णित अर्द्धनारीश्वर, नेपालक मैथिली नाटकक नान्दी-पुष्पांजलि प्रभेदक गीतक अर्द्धनारीश्वर वर्णन ओ शिव रूप प्राकृतपैङ्गलम्क प्रभावसँ पूरित लगैत अछि।

शिवक रूपमे पिंग जटावलि, शीर्षस्थ गंगा, ललाट पर चन्द्रमा, तृतीय नयनमे अग्नि, ग्रीवामे विष, शरीरमे विभूति, करमे त्रिशूल-डमरू, दिक्-परिधान, विषधरक आभूषण, वाहन वसहा, वेतालक संग चित्रणक मुख्य तत्त्व शिवविषयक पद्यमे अछि। शिवक एहि प्रकारक रूप-चित्रणपरक स्तुतिमे किछु अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि—

जसु कर फणिवइ वलअ तरुणिवर तनुमह विलसइ।
णअण अणल गल गरल विमज ससहर सिर णिवसइ ।।
सुरसरि सिर मह रहइ सअल जण दुरित दमण कर।
हसि ससिहर दुरिअ विहर हर अतुल अभय वर ।।[1]

— जनिक करमे फणिपतिक वलय छनि, शरीरमे तरुणि श्रेष्ठ (पार्वती) सुशोभित छथिन, आँखिमे अनल, गराँमे विष, शीश पर निवास करैत विमल चन्द्रमा, माथमे सुरसरि छनि, से सकल जनक दुरित (दुख)क दमन कयनिहार शशिधर हँसि क' दुरित हरथु अतुल अभयवर वितरण करथु।

एकटा दोसर पद्यमे पिंग वर्णक जटामे स्थापित गंगा, अर्द्धांगमे नागरि, शीशपर नोखगर (णोक्खा) चंद्रकला धारण कयनिहार शंकरसँ सौख्य (सोक्खा)क याचना कयल गेल छनि—

पिंग जटावलि ठाविअ गंगा।
धरिअ णाअरि जेना अधंगा ।।
चंदकला जसु सीसहि णोक्खा।
सो तुह संकर दिज्जउ सोक्खा ।।[2]

1. तत्रैव, मात्रावृत्त, पद्य—111, पृ० 102।
2. तत्रैव, वर्णवृत्त, पद्य—105, पृ० 233।

Scanned by CamScanner

घत्ता छन्दक उदाहरण—पद्यमे शिवक पुराण-वर्णित कार्यक वर्णन कयल गेल छनि—रणमे दक्ष, दक्षकेँ मारनिहार कुसुमधनुकेँ जितनिहार; जे अंधक, गंध आदि असुरक विनाश कयल, जे असुरक हेतु भयंकर छथि, जे पत्नी गौरीकेँ अर्द्धांगमे धारण कयल से शंकर रक्षा करथु।

रण दक्ख दक्ख हणु जिण्ण कुसुम धणु
अंध गंध विणस करु।
सो रक्खउ शंकरु असुर भअंकरु
गोरि णारि अद्धंग धरु।।[1]

प्राकृतपैङ्गलम्मे उद्धृत शिव-विषयक पद्यक कविकेँ केवल हुनक स्वरूप ओ पौराणिके चरित्र दिस ध्यान नहि छलनि, प्रत्युत जनमानसमे शिवक जे शुभ ओ सुख-सम्पत्तिदाता रूप आदृत छल तकरो अभिव्यक्ति दिस ध्यान छलनि। ओहि समय धरि मिथिलामे दुरितहरण, सुखदायक, वित्तदाता आदिक रूपमे शिवक आराधना होम' लागल छल। तेँ सकाम पूजाक लेल विविध प्रकारक व्रत, उपवास ओ उत्सवक विधान समकालीक निबन्ध ग्रंथ सभमे कयल गेल। ओहि मनोभावक अनुरूप **प्राकृतपैङ्गलम्**मे कहल गेल अछि—

जसु चंद सीस पिंधणह दीस।
सो संभु एउ तुह सुब्भ देउ।।[2]

तरल नयनी छन्दक उदाहरणमे शिवसँ अभिमत वरक याचना कयल गेल अछि—

कमल वअण तिणअण हर। गिरिवर सअण तिसुलधर।
ससहर तिलअ गल गरल। वितरउ मह अभिमत वर।।[3]

मिथिलामे हरि ओ हरक सह-उपासना सेहो होइत रहल अछि। विद्यापति ओ वंशमणिक हरिहर-वन्दना-विषयक गीत उपलब्ध अछि। **प्राकृतपैङ्गलम्** मे सेहो ग्रन्थान्तमे शिव ओ विष्णुक एक संग वन्दना कयल गेलनि

---

१. तत्रैव, मात्रावृत्त, पद्य—१०१, पृ० ९१।
२ तत्रैव, मात्रावृत्त, पद्य—१७६, पृ० १५२।
३. तत्रैव, वर्णवृत्त, पद्य—१३८, पृ० २५१।

Scanned by CamScanner

अछि —

जअइ जअइ हर वलइअ विसहर
तिलइअ सुंदर चंद मुणि आणंद सुह कंदं ।
वसह गमण कर तिसुल डमरु धर
णअणहि डाहु अनंगं रिउ भंगं गोरि अधंगं ॥

जअइ जअइ हरि भुज जुअ धरु गिरि
दहमुह कंस विणासा पिअवासा सुंदर हासा ।
बलि छलि महि हरु असुर विलअ करु
मुणि मणमाणस हंसा सुह भासा उत्तम वंसा ॥[१]

अर्थात् सर्पवलय धारण कयनिहार, सुन्दर चन्द्रमासँ तिलकित' मुनिक आनन्द ओ सुखकन्द जे हर वसहा पर गमन करैत छथि, त्रिशूल-डमरु धारण करैत छथि, नयनसँ अनंगकेँ डाहलनि, रिपुकेँ भंग कयलनि, अर्द्धांगमे गौरीकेँ रखने छथि ताहि हरक जय हो, जय हो।

जे हरि भुजयुगलसँ गिरिधारण कयलनि, जे कंसक विनाशक, पीतवसन-धारी, सुन्दर हास युक्त छथि, जे बलिकेँ छलि क' महि रहलनि, असुरकेँ विलय कयलनि, ओहि मुनी जनमानस हंस, शुभ्रकान्ति, उत्तम वंशीय हरिक जय हो, जय हो।

अधिक उदाहरण देबाक प्रयोजन नहि। जतबा कहल गेल अछि ताहिसँ एहि निष्कर्ष पर अबैत छी जे कर्णाट राजवंशक कालमे मिथिलाक सामाजिक जीवनमे ओ काव्य जगतमे शिवक पूज्य स्वरूप ओ वर्ण्यवस्तु स्थिर भ' गेल छल जकर अभिव्यक्ति प्राकृतपैङ्गलम् मे भेल अछि आ जे पाछाँ पाछाँ विद्यापति ओ हुनक परवर्ती कविक रचनामे विकसित रूपमे वर्णित चित्रित भेल। प्राकृतपैङ्गलमक रचना वा सम्पादन मिथिलामे भेल छल। अतः एकर भाषा, शिव विषयक पद्यक भाषा मिथिलाक भाषा छल। किन्तु मूल भाषाक आदि स्वरूप अक्षुण्ण नहि रहल, विभिन्न प्रान्तम भ्रमण करैत रहबाक कारणेँ तथा विभिन्न क्षेत्रक, विभिन्न कविक विभिन्न कृतिसँ उदाहरण सभ ग्रहण करबाक कारणे एकर भाषामे वैविध्य आबि गेलैक। तथापि प्राक् मैथिलीक बहुत रास तत्व सभ सुरक्षित छैक आ' तेँ ओ प्राक्-मैथिलीक सामग्री मानल जयबाक चाही। ओकर शिव विषयक पद्य प्राक्-मैथिलीक शैव साहित्य मानल जयबाक चाही।

---

१. तत्रैव, वर्णवृत, पद्य—२१५, पृ० ३०९।

वर्णरत्नाकर

एहि ग्रन्थक रचयिता थिकाह कविशेखर ज्योतिरीश्वर। कर्णाट वंशक अन्तिम राजा हर सिंह देवक समकालमे एकर रचना भेल छल। हर सिंह देवक राज्यवसान १३२४ ई० मे भेल छल। अतः एहि ग्रन्थक रचना चौदहम शताब्दीक प्रथम चरणमे होयबाक अनुमान अछि।

वर्णरत्नाकरमे प्राचीन मैथिली गद्यमे काव्योपयोगी विविध विषयक वर्णन सभ अछि। ओहि वर्णन सभसँ तत्कालीन समाजक रीति, नीति, आचार-व्यवहार, धर्म-संस्कृति आदिक नीक परिचय भेटैत अछि। मिथिले नहि प्रत्युत तेरहम-चौदहम शताब्दीक समस्त उत्तर भारतक हिन्दू समाज ओ जनजीवनक मनःस्थितिक मूल्यांकनक हेतु मूल्यवान सामग्री संरक्षित अछि।

वर्णरत्नाकरमे प्रासंगिक रूपमे शिवक अष्टमूर्त्ति, एकादश रुद्र, अष्टभैरव एवं वेताल-कपालकादि शिव-गणक वर्णन आयल अछि। ओहि सभक पर्य्यालोचन प्राक्मैथिली शैव साहित्यक अंग रूपमे करब अपेक्षित अछि। किन्तु ओहिसँ पहिने कवि शेखरक धार्मिक विचार-धाराक सूत्र प्राप्त करब उचित ओ आवश्यक होयत।

कविशेखर ज्योतिश्वर द्वारा विरचित दुइ गोट ग्रन्थ और भेटैत अछि। ओ थिक 'धूर्त्तसमागम' नामक प्रहसन तथा 'पंचसायक' नामक कामशास्त्रीय ग्रन्थ। धूर्त्तसमागमक आरम्भमे नान्दीश्लोकमे शिवक वन्दना कयल गेलनि अछि। प्रस्तावनामे कविक हेतु जे दुइ गोट विशेषण प्रयुक्त अछि से कवि शेखरक धार्मिक विचार-धाराकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। दुनू विशेषण अछि—

(क) 'पुरमथनचरणार विन्द द्वन्द्व वन्दारु कर पल्लवेन ....'

(ख) 'अनवरत सोम रसास्वाद कशाय कण्ठ कन्दली नरी नृत्यमान मीमांसा महोत्सवेन ....'

प्रथम विशेषणसँ हुनक शिवभक्त होयबाक ओ द्वितीय विशेषणसँ मीमांसक कर्मकाण्डी होयबाक सूचना भेटैत अछि।

पंचसायकमे अपन परिचय 'श्री कण्ठाच्चंनतत्पर:' कहि क' देने छथि। कोनो-कोनो प्रतिमे एकटा और अतिरिक्त पंक्ति भेटैत अछि—श्रीमानेषमहीपतिर्गिरि सुता पादाब्ज पूजा पर:।' पंचसायकक अन्तमे ग्रन्थ ओ ग्रन्थकारक प्रसिद्धि-कामना-विषयक श्लोकमे कथित अछि—

(क) यावच्चन्द्र कलाकिरीट हृदये शैला त्मजावर्तते ....

(ख) यावल्लेखां वहति शिरसा शंकरः शीतरश्मेः ....

एहि सभसँ निश्चित होइत अछि जे ज्योतिरीश्वर विष्णुक प्रति पूज्य भाव रखितो, वैदिक कर्मकाण्डी मीमांसक होइतो छलाह हरगौरीक भक्त, साम्बसदा शिवक उपासक।

वर्णरत्नाकर काव्योपयोगी विविध वर्णनक संग्रह थिक। प्रसंगात् अष्ट-मूर्त्ति, एकादश रुद्र, अष्ट भैरव, बारह वेताल, चौंसठि योगिनी ओ अनेकानेक गण सभक वर्णन ओ उल्लेख अछि। काव्य क्षेत्रमे एकर सभक वर्णन होइत छल होयत तेँ ज्योतिरीश्वर एकर सभक वर्णनक संग्रह करब अपेक्षित बुझने होयताह। तेँ ई सभ प्राक्मैथिली शैव साहित्यक प्रेरक सामग्रीक रूपमे मान्य होयबाक चाही।

आस्थान वर्णना नामक तृतीय कल्लोलमे नायक वा राजाकेँ ऐश्वर्यमे महादेवक समान मानल गेलनि अछि। अर्थात् ओहि कालमे महादेव ऐश्वर्य-देवता रूपमे मान्य छलाह। महादेवक विविध रूपमे पूजन होइत छल, ओहिमे अष्टमूर्त्तिक प्रधान स्थान छल आ उद्यतन काल धरि अछि। अष्ट-मूर्त्तिक कल्पनाक इतिहास वैदिक काल धरि जाइत अछि। अष्टमूर्त्तिमे शिवक आठ मूर्त्तिक कल्पना कयल गेल अछि। प्रत्येक मूर्त्तिक एक-एक नाम निश्चित अछि। ई नाम सभ ओहुना शिवक पर्यायवाची शब्द थिक। शुक्ल-यजुर्वेद (३९/८) मे रुद्र शिवक पृथक्-पृथक् नामक रूपमे ई सभ प्रयुक्त अछि किन्तु शतपथब्राह्मण (१/७/३/८)मे अष्ट मूर्त्तिक प्रत्येक मूर्त्तिक नाम सभ निश्चित भ' गेल छल, तदनुसार पशुपतिकेँ औषधि, उग्रकेँ वायु, मशानीकेँ विद्युत, भवकेँ पर्जन्य, महादेवकेँ चन्द्रमा, ईशानकेँ आदित्य, ओ रुद्रकेँ अग्नि मूर्त्ति कहल गेल अछि। कालिका पुराणमे शिवक अष्ट मूर्त्ति नहि, शरभ-रूपि शिवक अष्टपादक उल्लेख अछि। वटुकभैरव स्त्रोत्रमे शिवक एकटा नाम अष्टमूर्त्ति सेहो अछि तथा शब्दमालामे शिवक अष्टमूर्त्तिक नाम कहल गेल अछि।

अथाग्निः रविरिन्दुश्च भूमिरापः प्रभंजनः।
यजमानः खमष्टौच महादेवस्य मूर्त्तयः॥

वाणभट्ट हर्षचरितमे अष्टमूर्त्ति ओ हुनका चढ़ाओल जायवला अष्ट-पुष्पिकाक उल्लेख कयने छथि। कालिदासके शिवक अष्टमूर्त्तिक प्रति अत्यन्त भक्ति भाव छलनि तें रघुवंशमे दिलीपकें सिंह गर्व पूर्वक कहैत छनि जे हक अष्टमूर्त्ति शङ्करक प्रियगण कुम्भोदर छी। मालविकाग्निमित्र नाटकक मंगल श्लोकमे शिवकें आठ रूपमे ससारक पालन कयनिहार कहल गेलनि अछि। अभिज्ञान शाकुन्तलम्क मंगल श्लोकमे शिवक प्रत्यक्ष अष्ट-मूर्त्तिक वर्णन करैत वन्दना कयल गेल अछि।

शिवक अष्टमूर्त्ति काव्यक वर्ण्य विषय छल, अतः वर्णरत्नाकरोमे ओकर वर्णनक प्रयोजनीयता छल। वर्णरत्नाकरक 'श्मशान वर्णना' मे शिवक अष्ट-मूर्त्तिक वर्णन कयल गेल अछि—

॥अथाष्टमूर्ति वर्णना॥

पृथ्वी. अप. वायु. आकाश. चान्द. सूर्य. आत्मा॥[1]

ज्योतिरीश्वर शिवक आठम मूर्त्तिकें 'यजमान' नहि कहि 'आत्मा' कह-लनि अछि। ई सूची शिवपुराणसँ ग्रहण कयल गेल अछि जाहि मे 'क्षेत्रज्ञ'मूर्त्ति कें आत्माक अधिष्ठान कहल गेल अछि। एहि मूर्त्तिकें शिवपुराणमे 'पशुपति' नाम देल गेल अछि। मिथिलाक प्रचलित अष्टमूर्त्ति पूजनमे यजमान मूर्त्तिकें पशुपति' ए कहल जाइछ। किन्तु क्रमक दृष्टिएँ शिवपुराण ओ मिथिलाक अष्टमूर्त्तिक क्रमगणनामे पशुपतिकें छठम स्थान छनि, ज्योतिश्वर आठम स्थानमे रखलनि अछि। दोसर, प्रत्येक मूर्त्ति नामक उल्लेख नहि कयने छथि।

एकरा पश्चात्, वर्णरत्नाकरमे एकादश रुद्रक उल्लेख कयल गेल अछि। रुद्रशिवक विभिन्न रूपमे वर्णन ओ चित्रण वेद, ब्राह्मण ओ उपनिषद्मे उपलब्ध अछि। एकादश रुद्रक पूर्ण परिकल्पना सर्वप्रथम महाभारतमे भेटैत अछि। आदिपर्वमे (६७१२-३) एकादश रुद्रक सूची देल अछि—

मृगव्याधश्च सर्पश्च निर्ऋतिश्च महायशाः।
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पिनाकी च परंतपः॥
दहनो पेश्वरश्चैव कपाली च महाद्युतिः॥
स्थाणुर्भगश्च भगवान् रुद्रा एकादश स्मृताः॥

---

१. वर्णरत्नाकर, पृ० ५८।

तत्पश्चात् विभिन्न पुराण सभमे एकादश रुद्रक विवरण देल जाइत रहल अछि। किन्तु आश्चर्यक विषय जे सभ सूचीमे पारस्परिक, नामक अन्तर देखल जाइत अछि। गरूडपुराणक सूची अछि—अज, एकपाद, अहिब्रध्न, त्वष्टा, विश्वरूपहर, बहुरूप, अपराजित, वृषाकपि, शंभु, कपर्दी एवं रैवत। शिवपुराणक सूचि एहुसँ थोड़ेक भिन्नता रखैत अछि जाहिमे नामावली अछि—कपाली, पिङ्गल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, शास्ता अजपाद, अहिबुर्ध्न्य, शम्भु, चन्ड, तथा भव। तीनू सूचीमे किछु नाम तँ समान अछि आ किछु नाम तीनूमे भिन्न-भिन्न।

वर्णरत्नाकरमे एकादश रुद्रक सूची निम्न रूपक अछि—मृगव्याध. सर्प्प. निररिति अजैकपाद अहिर्व्वधु, पिनाकी. वनहल. इश्वर. कपाली, भव. स्थानु.[1] ॥

ई सूची स्पष्ट अछि जे महाभारसँ लेल गेल अछि किन्तु 'दहन' क स्थान मे वनहल' ओ 'भग'क स्थानमे 'भव' नाम स्थानापन्न क' देल गेल अछि।

शिवकें श्मशानवासी एवं श्मशानप्रिय कहल गेलनि अछि। मैथिली-साहित्यमे हिनक 'मशानी' रूप अत्यन्त प्रसिद्ध रहल अछि। तें वर्णरत्नाकरक श्मशान वर्णना नामक सातम कल्लोलमे अष्टमूर्त्ति ओ एकादश रुद्रक विवरण देल गेल अछि। किन्तु एहि वर्णनमे शिवक गण ओ योगिनीक वर्णन नहि होइत, डाकिनीक वर्णन नहि होइत, भैरव ओ वेतालक वर्णन नहि होइत, तँ वर्णन अपूर्ण राहि जाइत। शिवक सहचर गण सभ श्मशान वासी होइत अछि। अतः यथार्थ श्मशान-वर्णनक क्रममे शिवक सहचर भैरव, भूत, वेताल, कपाली, योगिनी, डाकिनी, शाकिनी आदिक वर्णन अपेक्षित छल। से ज्योतिरीश्वर श्मशानमे क्रीड़ारत, विचरण करैत अष्टभैरव चौंसठियोगिनी, बा'ह वेताल डाकिनी,साकिनी, कौल, क्रव्याद, कुलप, राक्षस, कट, पुतन, प्रेत, पिशाच, कूष्माण्ड, मातृक, उपरिसाधक, कपालिकादिक वर्णन कयलनि अछि। एहिमे सर्वप्रथम अष्टभैरवक उल्लेख अछि आठो नामक संग—

असिताङ्ग. रुरु. चण्ड. क्रोध. उन्मत्त. एकपाद. कपाली. त्रिपुरान्तक. आठओ ये भैरव तें अधिष्ठित.।[2]

---

१. उपरित्।

२. वर्णरत्नाकर, पृ० ५२।

वामनपुराणक अन्धकवर प्रदानक क्रममे अष्टभैरवक उत्पत्ति कहल गेल अछि। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणोक्त शारदीय दुर्गापूजामे अष्टभैरव पूजनीय कहल छथि। आठो भैरव थिकाह—महा, संहार, असिताङ्ग, रुरु, काल, क्रोध, ताम्रचूड ओ चन्द्रचूड। ओहि पुराणक दोसर स्थल पर ताम्रचूड ओ चन्द्रचूडक स्थानमे कपाल ओ रुद्रनाम स्थानापन्न अछि। तन्त्रसारमे असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण ओ संहार नामसँ अष्टभैरव वर्णित छथि। श्यामापूजामे तन्त्रसारोक्त अष्टभैरवक पूजन होइत अछि। साम्प्रतिक दुर्गापूजामे छओगोट नाम तन्त्रसारसँ (असिताङ्ग, क्रोध उन्मत्त कपालि भीषण ओ संहार), एकटा नाम (काल) ब्रह्मवैवर्त्तपुराणसँ तथा एकटा नवीन नाम 'वटुक' जोड़ि अष्ट भैरवक गणना पूर्ण कयल गेल अछि। वर्णरत्नाकरमे छओगोट नाम तन्त्रसारक क्रमसँ अछि किन्तु 'भीषण' ओ संहारक स्थानमे 'एकपाद' ओ 'त्रिपुरान्तक' नाम देल गेल अछि।

श्मशान बारहो वेतालसँ आकीर्ण्ण कहल गेल अछि, किन्तु नाम गनाओल गेल अछि नौए गोटक— अग्निमुख, उल्कामुख, दरीमुख, सूचीमुख, तालजंघ, कुम्भोदर कुण्डोदर कोकिलाक्ष।[१]

एहि वेताल सभक रूपक जीवन्त वर्णन ज्योतिरीश्वर कयने छथि। ओकर सभक मुह, आँखि, केश, कान, दाढ़, बाँहि, नख, आङ्गुर, हृदय, उदर आदिक वर्णनमे उपमानक नूतनता देखबामे अबैत अछि आ ओहिसँ वेतालक जे भयावह रूप मानस पटल पर अंकित होइछ से भयानक ओ वीभत्स रसक निष्पत्तिमे पूर्ण सक्षम रहैछ। ज्योतिरीश्वर द्वारा प्रयुक्त किछु शब्द अप्रचलितो अछि, अथगम्य नहिओ होइछ तथापि समस्त प्रसंग अपन सजीवताक छाप पाठक पर देबामे पूर्ण सक्षम अछि। वेतालक ओ भयावह एवं वीभत्स रूप स्वयं ज्योतिश्वरक शब्दमे अछि—

से कइसनाह वेतालह।
कंसारिक भाल पजरल अइसन मुह.
ओवारी दीप लेसल अइसन आँखि.
पर्व्वतदावानल लागल अइसन केश.
हथिकनाक पात असइन काम.

---

१. उपरिवत्।

फेव खाजुरीक केसर अइसन भौह.
सौदामिनीक तरङ्ग अइसन दाढ़
असिढाक डार अइसन बाह.
फरहदाक फूल अइसन नह.
आरोगक छीमुलि अइसन आङ्गुरि.
सिकण्टाक पसार अइसन हृदय.
धओरटाक छीवा पुलि अइसन तृक.
पाताल अइसन उदर.
खाजुरिक गाछ अइसन जांघ.
त्वच. अस्थि. शिरा एतन्मय शरीर.
सं(मं ?) सकवलइ क्षम. दुर्नीरीक्ष.
भयवह वेताल[1]

कौल, कापालिक आदि प्रायः वाममार्गी अघोरपन्थी शैव साधक सभ छल जे श्मशानमे साधना करैत छल। श्मशानमे एहन साधकक स्थिति 'जपइतें साधक' 'साधकक प्रबन्ध' कहि क' वर्णित कयल गेल अछि।

नगरवर्णनमे विभिन्न मन्द जातिक वर्णन अछि जाहिमे 'तापसिक' उल्लेख अछि। आधुनिको मिथिलामे शिवपूजक मैथिल ब्राह्मणकें तापस ब्राह्मण कहल जाइछ। दोसर पर्याय 'पंडा' सेहो छैक। शिवांश ग्रहण ओ शिवपूजनकें आजीविका बना लेबाक कारणे वर्णरत्नाकरमे मन्दजातिमे परिगणित भेल अछि। ओखन पंडा सभ सामान्य ब्राह्मणमे श्रद्धेय होइतो अपांक्तेय ओ असम्बन्ध्य अछि। वर्णरत्नाकरक कालधरि शिवपूजक ओ शिव प्रसाद ग्रहण कयनिहार एक जाति वा वर्ग विशेष रूढ़ भ' गेल छल।

दुर्ग वर्णनमे एकठाम गौरी, भैरव, गणपति तथा कुमार विजयक नाम आयल अछि। डा० भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता एहि प्रसंगमे कहलनि—दुर्ग वर्णनके प्रसंगमे द्वारपर गौरी, गणपति और कार्त्तिक के पूजन का उल्लेख ज्योतिरीश्वर ने किया है।'[2]

---

१. तत्रैव, पृ० ५२-५३।

२ वर्णरत्नाकर का सांस्कृतिक अध्ययन-भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता, पंजाब विश्वविद्यालयमे पी-एच० डी० उपाधि हेतु स्वीकृत शोधप्रबन्ध, पृ० ११४१।

Scanned by CamScanner

किन्तु मूल ग्रन्थसँ एहि उक्तिक पुष्टि नहि होइछ। मूल उद्धरण देखने ई स्पष्ट भ' जा सकैछ—गढ़. गौरी. भैरव. गणपति. महिषासुर. कुमारविजय. रनरङ्ग. दुर्गासिंह. वार्त्तारत. जयमङ्गलादि अनेक सयुक्त. यन्त्र. द्वार. अपद्वार अपसरण तें मन्डित।[1]

एहि ठाम पूजाक कोनो चर्चा वा संकेतो नहि अछि। उपरिवर्णित नाम सभ कोनो-कोनो यन्त्र सभ छल होयत अथवा प्रस्तर पर तक्षण कयल मूर्ति दृश्यावली सभ यन्त्र, द्वार, अपद्वार, अपसरण आदि स्थान पर लगाओल जाइत छल होयत। दुनू स्थिति शैव भावनाक द्योतक थिक।

ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरक सातमे कल्लोलमे प्रसंगक अनुसार लिङ्ग, स्कान्द आदि शैव पुराण; रुद्रयामल, गौरीयामल, शिवधर्म्म, शिवरहस्य, शिवधर्मोत्तर आदि शैवागमक उल्लेख कयने छथि। ततहि वर्णनमे वाराणसी, कामेश्वर, केदार, गौरतीर्थ, मैनाक, मल्लिकार्ज्जुन, सेतुबन्ध आदि शैवतीर्थक चर्चा कयने छथि।

अष्टादश सती वर्णनामे पार्व्वतीक गणना अछि। ई उल्लेख सभ प्रासंगिक रूपमे आयल अछि। पुराण, आगम आदिक जे मान्यता प्राप्त सूची छल ताहिमे एकर सभक गणना अनिवार्य छल। किन्तु तीर्थ वर्णनमे अगणित तीर्थमेसँ किछु केर उल्लेख आ ताहिमे कतोक शैव तीर्थक समावेश सूचित करैत अछि जे मिथिलावासीमे एहन शैवतीर्थ धरिक यात्रा करबाक आकांक्षा अवश्य रहैत छलनि।

वस्तुतः वर्णरत्नाकरमे जे शिवसम्बन्धी सामग्री सभक उल्लेख, विवरण वा वर्णन अछि से अल्प वा वृहत् रूपमे ग्रन्थक अंग रहितो प्राक् मैथिली शैव साहित्यक दिक् सन्धानमे पूर्ण सहायक सिद्ध होइत अछि।

---

१. वर्णरत्नाकर, पृ० ६७।

परिशिष्ट

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थक सूची

१. बेद, ब्राह्मण, उपनिषद् सूत्र, स्मृति, पुराण एवं तन्त्र ग्रन्थ पूर्ण विख्यात रहने ओकर सूची देब आवश्यक नहि बूझल गेल।

२. अप्रकाशित मूल ग्रन्थक प्राप्ति स्थान सम्बन्धी सूचना यथास्थान द' देल गेल अछि। तें ओकरहु सूची फराकसँ नहि देल गेल अछि।

३. वर्त्तमान सूचीमे 'मैथिली शैव साहित्य'मे प्रयुक्त ग्रन्थहुक नामावली समाविष्ट क' देल गेल अछि।

संस्कृत ग्रन्थ

अभिज्ञान शाकुन्तलम्—कालिदास

आत्मतत्वविवेक—उदयनाचार्य, सं० —यदुनाथ सार्वभौम, कलकत्ता शाके—१८२२।

आह्निककृत्यम्—चिरंजीवशर्मा, कन्हैयालाल, कृष्णदास, लहेरियासराय, दरभंगा।

कृत्यरत्नाकर—चण्डेश्वर, सं०—कमलकृष्ण स्मृतितीर्थ, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, पार्कस्ट्रीट, कलकत्ता, १९२५।

कुमारसम्भवम्—कालिदास।

छन्दोग सन्ध्या तर्पण—योगानन्द कुमर, मिथिला-मिहिर, दरभंगा. १९१३।

गणेशसम्भव—सं० गंगानाथ शर्मा, काशी, सं०—१९५९।

न्याय कुसुमाञ्जलि—उदयनाचार्य; सं० पद्म प्रसाद उपाचार्य, चौखम्बा संस्कृत सिरीज, बनारस, सं०—२०१३।

नाट्यसूत्र—भरत, बड़ौदा।

Scanned by CamScanner

पंचसायक—ज्योतिरीश्वर, सं० ढुण्ढिराजशास्त्री, चौखम्बा संस्कृत—सिरीज आफिस, बनारस सीटी, संवत्—१९९५।

पुरुषपरीक्षा—विद्यापति, सं० कवीश्वरचन्द्र झा, राजदरभंगा यन्त्रालय, दरभंगा, शाके १८१०, (ii) सं० रमानाथ झा, पटना विश्व-बिद्यालय, पटना, १९६०।

ब्राह्मशांकर भाष्य (भामती टीका)—वाचस्पति मिश्र, निर्णयसागर प्रेस, बम्बइ, शाके १८१७।

ब्राह्मण सर्वस्व—हलायुध, सं० दुर्गामोहन भट्टाचार्य, संस्कृत साहित्य परिषद्, कलकत्ता, १९६०।

भक्ति रत्नावली—विष्णुपुरी, सं० महेन्द्र नाथ लाहिड़ी, प्रयाग, संवत्—१९९९।

भृङ्गदूत—गंगानन्द, सं० चेतनाथ शर्मा, राजप्रेस, दरभंगा, १९१५।

महाभारत—गीता प्रेस, गोरखपुर।

महाभाष्य -पतंजलि।

मालविकाग्निमित्र—कालिदास।

मिथिलातीर्थ प्रकाश—श्रीकृष्ण शर्मा, सर्वसीमा, दरभंगा, सं०—१९४३।

मिथिला देशीय षडङ्ग शतरुद्रीय विधि—कन्हैयालाल-कृष्ण दास, लहेरियासराय।

मिथिलामाहात्म्य—पशुपति प्रेस, फसिकेव, काठमाण्डू, संवत् १९५८।

मिथिलामाहात्म्य (पूर्वभाग, तन्त्रोक्त—यामल सारोद्धारे मिथिला—खण्डः)—अनुवादक,—लालदास, यूनियन प्रेस, दरभंगा, १९०१।

रघुवशम्—कालिदास।

राजनीति-रत्नाकर—चण्डेश्वर, सं० के० पी० जायसवाल, बिहार, उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, द्वि० सं०, १९३६।

लिखनावली—विद्यापति, इउनियन यन्त्रालय, दरभगा।

वाणीभूषण—दामोदर मिश्र, सं० शिवदत्त, काव्यमाला—१३, बम्बइ, १८९५।

वाल्मीकीय रामायण।

Scanned by CamScanner

विद्याकर साहस्रकम्—विद्याकर मिश्र, सं० म०म० डा० उमेश मिश्र, इलाहाबाद यूनिसीटी, इलाहाबाद, १९४२।

विभागसार—विद्यापति, सं० गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९७६।

विवाद चन्द्र—मिसरू मिश्र, सं० रामकृष्ण झा, लहेरियासराय,

श्रीकाशीविश्वेवर शिरवरिणी वृत्तस्तवशतकं—काश्यभिलाषाष्टक—सहितम—कविरत्न खगेश मिश्र, यूनियन प्रेस, दरभंगा १८९७।

श्री गौरगणोद्देशदीपिका—कविकर्णपुर, सं० शशिभूषण वन्द्योपाध्याय, श्रीधाम, नवद्वीप, द्वि०सं०, श्री चैतन्याब्द—४५६।

श्री नटराज सहस्र नामभाष्यम्, भाग--१, २—सं० शिवानन्द ताण्डत्र दीक्षित तथा राजा सोमशेखर दीक्षित, सद्गुरु सेवाश्रम, मद्रास, १९५१।

शिवप्रतिष्ठापद्धति—कल्याणशर्मा, विद्यासागर यन्त्रालय, काशी, संवत्—१९५१

शिवस्तुति—गोकुलनाथ, अच्युत ग्रन्थ माला, काशी, संवत्— १९९९।

सदुक्ति कर्णामृत--श्रीधर दास, सं० रामावतार शर्मा, मोतीलाल बनारसी दास, लाहौर, १९३३।

सौन्दर्य लहरी—शंकराचार्य, अनुवादक—सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा।

हर्षचरित—वाणभट्ट।

हिमवत् खण्ड (स्कन्द पुराण मध्ये)—योगप्रचारिणी, गोरक्ष टिल्ला, वाराणसी, संवत्--२०१३।

मैथिली ग्रन्थ

अंकावली---सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा, १९६९।

अन्तर्नाद—सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा।

अयाची—काशीनाथ मिश्र, ग्रन्थालय, दरभंगा।

आनन्द विजय नाटिका—रामदास, (i) सं० महेश झा, राजप्रेस, दरभंगा, १३३३;

(ii) सं० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' वैशाली प्रेस, मुजफ्फरपुर;
(iii) सं० सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा।

उगना—ईशनाथ झा, राजप्रेस, दरभंगा, १९५६।

उद्गार—वेदानन्द झा, देवघर, संवत्-२०१५।

उनटापाल—चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' नवरत्न गोष्ठी, मिश्र टोल, दरभंगा, १९७४।

उषाहरण नाटिका—रत्नपाणि, सं० दीनानाथ झा, मैथिली-साहित्य पत्र कार्यालय, दरभंगा, १३४९।

कृष्ण केलिमाला नाटक—नन्दीपति, सं० जयकान्त मिश्र, अ० भा० मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, इलाहाबाद—२, १९६१।

कृष्णजन्म—मनबोध, सं० जी० ए० ग्रियर्सन, जर्नल ऑफ दी एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, जिल्द—५१, भाग—१, १८८२;
(ii) सं० धनेश्वर झा, यूनियन प्रेस, दरभंगा; (iii) सं० डा० उमेश मिश्र, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, १९३४; (iv) सं० रमानाथ झा, मैथिली मन्दिर, दरभंगा, १९४८; (v) सं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली मन्दिर, दरभंगा।

कमरथुआक पाथेय—यागेश्वर झा, पचगछिया, १३६८ साल।

कथा यूथिका—सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली मन्दिर, दरभंगा, १९६७।

कुंजविहार नाटक—सं० डा० रामदेव झा, 'मनीषा', कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय पत्रिका, १९७६।

कालिन्दी गीतावली—कालिन्दी देवी, सरिसव पाही दरभंगा, १९५७।

गंगाजल—सं० श्यामसुन्दर झा, श्री जवाहर पुस्तकालय, अलपूरा, ननौर, दरभंगा, १९६०।

गणनाथ पदावली तथा विन्ध्यनाथ पदावली—इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९३८।

गणेश खण्ड—लालदास, मैथिल प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी, १९०९।

गणेश जन्म—लालदास, मैथिल प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी १९११।

गीत काशीपति (गीतगोविन्दानुकरण मिथिला भाषा)—मुकुन्द शर्मा,

चनौर, दरभंगा, १३४२ साल।

गीतमंजरी—श्रीमधुप, प्र० रमेश ठाकुर, कोर्थू, दरभंगा।

गीत शप्तशती—कविचन्द्र, यूनियन यन्त्रालय, दरभंगा शाके-१८२४।

गीतावली—साहेबराम दास, सं० चन्द्र शर्मा, इउनियन यन्त्रालय, दरभंगा, शाके-१८२३।

गीतावली—विभाकर, विभाकर-प्रकाशन, मधुरा, पो० दीप, दरभंगा।

गीतिमाला—सं० उमानन्द झा, दरभंगा, १३६३ साल।

गोरक्ष विजय—विद्यापति, सं० म० म० डा० उमेश मिश्र तथा डा० जयकान्त मिश्र, अ० भा० मैथिल साहित्य समिति, प्रयाग, १९६१।

गौरी परिणय—शिवदत्त, डा० जयकान्त मिश्र, सुधाकान्त मिश्र, प्रयाग, १९६०।

गौरी परिणय—गुणवन्तलाल दास, भक्षी, मधुबनी, द्वि० सं० १९३३।

गौरीशंकर विनोद (नाटक)—तेजनाथ झा, दरभंगा, १३२० साल।

गौरी स्वयंवर नाटिका—कबिलाल, (i) सं० उपेन्द्र झा, दरभंगा प्रेस कम्पनी, दरभंगा, शाके-१८८०; (ii) सं० डा० जयकान्त मिश्र, अ० भा० मैथिली साहित्य समिति, प्रयाग, १९६१।

गौरी स्वयंवर—कान्हाराम, सं० डा० जयकान्त मिश्र, प्रयाग, १९६०।

चन्द्र पद्यावली—कवीश्वर चन्दा झा, सं० राजपण्डित बलदेव मिश्र, राजपुस्तकालय, दरभंगा, संवत्-१९८८।

चलू चलू बहिना—रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कन्हैयालाल-कृष्णदास, लहेरिया-सराय।

चौंकि चुप्पे—श्री मधुप, नवरत्न गोष्ठी, मिश्र टोला, दरभंगा, १९६६।

जतरा चारू धाम—सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा, १९६९।

दूर्वादल—बदरीनाथ झा, विद्या विनोद मंडल, नवकरही, दरभंगा, १९६९।

नन्दीपति गीतिमाला—सं० रामदेव झा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरिया सराय, १९६५।

Scanned by CamScanner

नया भजनावली—तेजनाथ शर्मा, कन्हैयालाल-कृष्णदास, दरभंगा, संवत्-१९६५।

नर्मदासागर सट्टक— जीवन झा, मिथिलामोद (१९०६)मे प्रकाशित।

नवीन मैथिली गीत संग्रह—सं० चन्द्रेश ठाकुर, मिथिला प्रेस, जनकपुर रोड, १९५७।

नागेश्वर भक्तिमाला—प्रदीप मैथिलीपुत्र, ग्रन्थालय, दरभंगा, १९६९।

निबन्धमाला—रमानाथ झा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, १९६३।

प्रतिपदा—सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभगा, सवत-२०१३।

प्रबन्ध संग्रह— रमानाथ झा, दरभंगा प्रेस कम्पनी, दरभंगा, १९६३।

प्रवेशिका मैथिली साहित्य—सं० हरिमोहन झा–गंगापति सिंह, पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय, १९३९।

प्राचीन गीत—सं० रमानाथ झा, अनन्त प्रकाशन, दरभंगा।

प्रेम परिचय, भाग-१—राजेन्द्र झा, प्र० नागेन्द्र झा, मंगरौनी, संवत्-१९९०।

पत्रहीन नग्न गाछ—वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', मैथिली-एकेडमी, इलाहाबाद, १९६७।

पतिव्रताचार अथवा स्त्रीधर्म शिक्षा—लालदास, श्रीकामेश्वर प्रेस, दरभंगा, १९१०।

पद्य-प्रसून—सं० चन्द्रनाथ मिश्र, 'अमर', मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा, १९५४।

परिचय-निचय—डा० शैलेन्द्र मोहन झा, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, द्वि० सं०, १९६६।

पारिजात हरण—उमापति, (i) मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी, दरभंगा, संवत्-१८९३; (ii) सं० जी० ए० गियर्सन, जर्नल आफ बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, जिल्द-३, खंड-१, १९१७; (iii) स० चेतनाथ झा, राजप्रेस, दरभंगा, १९१७; (iv) सं० कृष्ण नन्दन पीयूष, साहित्य-प्रकाशन; मालीबाड़ी, दिल्ली; १९६५;

Scanned by CamScanner

(v) सं० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, दरभंगा।

बंभोला के दरबारमे—वेदानन्द झा, विलासी टाउन, देवघर, संवत्-२०१४।

भक्ति-प्रकाश—तेजनाथ झा, इउनियन यन्त्रालय, दरभंगा, १९०१।

भक्ति-प्रकाश-रत्नावली—तेजनाथ झा, कन्हैयालाल-कृष्णदास, लहेरियासराय, १९१०।

भजनमाला—राजलक्ष्मी, राजदरभंगा, १९६१।

भजनामृत तरंगिणी—सत्यनारायण झा, प्र० त्रिलोकनाथ मिश्र।

भजन—श्री भोलाबाबा अर्थात् महेशवाणी—सं० गंगेश झा, कन्हैयालाल-कृष्णदास, लहेरियासराय।

भव प्रीतानन्द पदावली - भव प्रीतानन्द ओझा, देवघर, १९६८।

मङ्गल पञ्चाशिका—तन्त्रनाथ झा, दरभंगा।

मधुश्रावणी-पूजा-कथा—डा० तेजनाथ झा, कन्हैयालाल-कृष्णदास, लहेरियासराय, १९७५।

महादेवक विवाह—रुद्रानन्द मिश्र 'दीन' कर्णपुर, सहरसा, १९५७।

महादेव की नचारी—सं० सरसलाल झा, दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता-७, १९६१।

महेश्वर विनोद अर्थात् गौरी शम्भुविनोद—लालदास, प्र० वनखण्डी लालदास, खड़ौआ, पो० तमुरिया, दरभंगा, १९२१।

महेशवाणी, भाग-२—बाबू रघुवर सिंह, बुकसेलर; मधुबनी, १९३७।

महेशवाणी, भाग-२ – लोकवन्धु पुस्तकालय, जनकपुर रोड, मुजफ्फरपुर।

महेशवाणी, भाग-१, २—बम्बई पुस्तक प्रकाशन मन्दिर, मधुबनी।

महेशवाणी—लक्खी साह, प्रभुनारायण एण्ड सन्स, देवघर।

महेशवाणी-संग्रह—लक्ष्नी साहु।

महेशवाणी संग्रह—कवीश्वर चन्दा झा, डा० अमरनाथ झा, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद,

माटिक दीप—आरसी प्रसाद सिंह, तारामण्डल, मुजफ्फरपुर, १९६५।

मिथिला गीत संग्रह, भाग-१-४—सं० भोला झा, कन्हैयालाल-कृष्ण-दास, लहेरियासराय।

मिथिला गीतांजलि—सं० यदुनाथ झा 'यदुवर', मैथिली ग्रन्थमाला, मुरहो, सहरसा, १३३३ साल।

मिथिला-तत्त्व-विमर्श—म० म० परमेश्वर झा, परमेश्वर पुस्तकालय, तरौनी, दरभंगा, १९४९।

मिथिला भाषामय इतिहास—म० म० मुकुन्द शर्मा, चौखम्बा, बनारस।

मिथिला भाषा रामायण—कवीश्वर चन्दा झा, दरभंगा प्रेस कम्पनी, दरभंगा।

मैथिल डाक—सं० जीवानन्द ठाकुर, मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा।

मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता. भाग–१, २—म० म० डा० उमेश मिश्र, वैदेही समिति, दरभंगा, १९५५।

मैथिली गद्य सग्रह, भाग–३—सं० जयदेव मिश्र-सुरेन्द झा, मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा।

मैथिली गीत रत्नावली—सं० बदरीनाथ झा, ग्रन्थालय, दरभंगा।

मैथिली गीतांजलि—सं० कालीकुमार दास, हिन्दी साहित्य कार्यालय, लहेरियासराय, १९२७।

मैथिली गीतांजलि—नन्दिनी देवी, भौर, दरभंगा, १९६२।

मैथिली धूर्त्त समागम—ज्योतिरीश्वर, सं० डा० जयकान्त मिश्र, अ० भा० मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबाद-२; १९६०।

मैथिली पद्यसंग्रह—सं० रमानाथ झा, मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा, १९४१।

मैथिली भाषा ओ साहित्य—मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता-७, १९६१।

मैथिली सट्टक—जीवन झा, मैथिल हितसाधन (१९०५)मे क्रमशः प्रकाशित।

रस निर्झरणी—आनन्द झा, दीक्षित बुकडीपो, काशी, संवत् २००६।

रागतरंगिणी—लोचन, सं० राजपण्डित बलदेव मिश्र, राज प्रेस दरभंगा।

Scanned by CamScanner

रुक्मिणी परिचय—रमापति, सं० डा० जयकान्त मिश्र, अ० भा० मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबाद, १९६१।

लक्ष्मीवती गीतांजलि—ऋद्धिनाथ झा, सरस्वती भवन, कटिहार, १३३४ साल।

लोचन—सं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', भैरवस्थान विद्यापति गोष्ठी, रैयाम, १९६०।

वर्णरत्नाकर—ज्योतिरीश्वर, सं० डा० एस० के० चटर्जी-पण्डित बबुआजी मिश्र, रायल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता।

विद्यापति—वाङ्मय—सं० डा० मुनीश्वर झा, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता-७, १९६८।

विद्यापतिके देशमे—विद्यापति गोष्ठी, लहेरियासराय, १९५५।

विद्यापति-स्मृति-पर्व (स्मारिका)—मैथिल मण्डल, बम्बइ, १९६७।

विद्याविलाप—रणजित मल्ल, अ० भा० मैथिली साहित्य समिति, प्रयाग-२, १९५५।

विनय सुधा—सुदर्शन चौधरी, पिंडारुछ, दरभंगा, १९६०।

श्री कृष्णजन्म रहस्य—श्रीकान्त गणक, सं० म० म० डा० उमेश मिश्र डा० जयकान्त मिश्र, अ० भा० मै० साहित्य समिति, प्रयाग, १९६०।

श्रीकर भक्तितरंग—क्षेमधारी सिंह, प्र० तेजनाथ झा, मधुबनी, १९६३।

श्री शिव महिम्न स्तुति—मुकुन्द शर्मा, चनौर, दरभंगा, संवत्-१९८९।

श्री शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी (मैथिली अनुवाद)—वेदानन्द झा, साकची, जमशेदपुर, संवत्-२०१४।

शिवकीर्त्तन—बाबू नरेन्द्रनाथ झा, कोरियाही, सुरसंड, मुजफ्फरपुर, संवत्-१९८९।

शिवजी नचारी—सं० रामखेलावन साह, दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता-७

शिवमहिमा—सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली मन्दिर, दरभंगा, १९६९।

शिवविनोद भाग-१, २—मूसे ठाकुर, हरिपुर, डीहटोल, मधुबनी।

शिव विवाह—भुवनेश्वर झा 'भुवनेश', वल्लीपुर, दरभंगा।

सरस्वती—त्रिलोकनाथ मिश्र, गोसपुर, पो० प्रतापगंज, सहरसा।

Scanned by CamScanner

सामवती पुनर्जन्म—जीवन झा, प्र० हरिकान्त शर्मा, काशी, १९२० ।

सीता स्वयंवर कीर्त्तन—हरेकृष्णलाल दास, गूदर भवन, लहेरियासराय, १३४४ साल ।

सुदामा चरित—हरिनन्दन दास, सं० डा० शैलेन्द्र मोहन झा नूतन पुस्तक भवन, दरभंगा १९६९ ।

सुन्दर संयोग नाटक—जीवन झा, प्र० लक्ष्मण झा, देवी मन्दिर, रामनगर, तृ० सं०, १९३८ ।

हरगौरी विवाह नाटक—जगज्ज्योतिर्म्मल, सं० डा० रामदेव झा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, १९७० ।

हरितालो व्रतकथा—लाल दास, प्र० प्रभुनारायण दास, खड़ौआ, द्वि० सं०, १९५४,

हरिहर संकीर्त्तन—सं० काशीनाथ राय, वम्बइ पुस्तक प्रकाशन, मधुबनी।

हरेकृष्ण विनोद—हरेकृष्ण लाल दास, गूदर भवन लहेरियासराय, १९३७ ।

हिन्दी ग्रन्थ

अध्ययन और अन्वेषण—सं० डा० देवराज उपाध्याय, नेशनल पब्लिशिग हाउस, दिल्ली-७, १९६६ ।

कबीर—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर लिमिटेड, बम्बइ १९५५ ।

कीर्त्तिलता और अवहट्ठ भाषा—शिवप्रसाद सिंह, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, द्वि० सं०, १९६२ ।

गुप्तकालीन मुद्राएँ—डा० ए० एस० अल्तेकर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, १९५४ ।

जयन्ती स्मारक ग्रन्थ—स० शिवपूजन सहाय इत्यादि, विद्यापति-हिन्दी-सभा, लहेरियासराय, १९४२ ।

दोहाकोष—सं० राहुल सांकृत्यायन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, १९५७ ।

नाथ-सम्प्रदाय—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी-५, द्वि० सं०, १९६६ ।

प्राकृतपैंगलम्, भाग—१, २-स० भोलाशंकर व्यास, प्राकृत टेक्स्ट सिरीज-४, प्राकृत टेक्स्ट सोसाइटी, वाराणसी—५, १९६२।

पुरातत्त्व की दृष्टिमे वैशाली—विजयकान्त मिश्र, वैशाली संघ, वैशाली, १९६१।

भारत का भाषा सर्वेक्षण, खण्ड-१, भाग-१—जी० ए० ग्रियर्सन, अनुवादक उदयनारायण तिवारी, सूचना विभाग उत्तरप्रदेश, १९५९,

भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी—डा० सुनिति कुमार चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृ० सं०, १९६३।

महाकवि विद्यापति—शिवनन्दन ठाकुर, पुस्तकभंडार, लहेरियासराय और पटना, संवत् १९९८।

मैथिली लोकगीत—रामएकबाल सिंह 'राकेश', हिन्दी साहित्यसम्मेलन प्रयाग, संवत्-२०१२।

मैथिली लोकगीतों का अध्ययन—डा० तेजनारायण लाल, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १९६२।

रामरटन—दयाराम दास भक्तमाली, तरौनी दरभंगा।

लक्ष्मीनाथ की पदावली—स० ललितेश्वर झा, भारत प्रकाशन मन्दिर, लहेरियासराय, १९५७।

विद्यापति (हिन्दी रूपान्तर)—खगेन्द्रनाथ मिश्र एवं विमानविहारी मजुमदार।

विद्यापति—डा० जनार्दन मिश्र, प्र० रामनारायण लाल, प्रयाग, संवत्-२०१६।

विद्यापति म० म० डा० उमेश मिश्र, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, तृ० सं० १९६०।

विद्यापति की पदावली—सं० रामवृक्ष बेनीपुरी, पुस्तकभंडार, लहेरियासराय।

विद्यापति-पदावली, भाग-१, २—बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

विवेक पंचरत्न—लक्ष्मीनाथ गोसाईं, सं० छेदी झा 'द्विजवर', लक्ष्मीनाथ प्रकाशनमण्डल, वनगाँव, सहरसा।

Scanned by CamScanner

वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ (Homage to Vaishali)—सं जगदीशचन्द्र माथुर, योगेन्द्र मिश्र, वैशालीसघ, वैशाली, १९४८।

श्री रामचरित मानस—गीता प्रेस, गोरखपुर, २०१९।

शिवायन—सत्यनारायण झा, प्र० दिनेशदत्त झा, काशी, संवत्-२००२।

शैवमत—डा० यदुवंशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, १९६५।

सत्यशतक—जॉन, ट्रैक्ट सिरीज न०-१५, मीपिओन प्रेस, मुंगेर, १८८१।

संस्कृति के चार अध्याय—रामधारी सिंह 'दिनकर', राज्यपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, द्वि० सं० १९५६।

हिन्दी साहित्य और बिहार, खण्ड-१, २—सं० शिवपूजन सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्।

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास—जी० ए० ग्रियर्सन वाराणसी-२, १९६१।

बंगला ग्रन्थ

कीर्त्तिलता—विद्यापति, सं० हर प्रसाद शास्त्री, कलकत्ता, १९२४।

चर्यापद—सं० अतीन्द्र मजुमदार, नयाप्रकाश, २०६ कर्णवालिस स्ट्रीट, कलिकाता-६, बंगाब्द-१३६७।

नाथपन्थ—कल्याणी मल्लिक, विश्वभारती ग्रन्थालय, बंकिमचन्द्र चाटुर्ज्या स्ट्रीट, कलिकाता, १३८१ बंगाब्द।

नाथ सम्प्रदायेर इतिहास, दर्शन ओ साधन प्रणाली—कल्याणी मल्लिक, कलकत्ता, १९६०।

नेपाले बाङला नाटक—सं० ननीगोपाल वन्द्योपाध्याय, बंगीय, साहित्य-परिषद्, सर्कुलर रोड, कलकत्ता।

बाङला काव्ये शिव—गुरुदास भट्टाचार्य, इण्डियन एसोसिएटेड-पब्लिशिंग क० (प्रा० लि०,) कलकत्ता-७ (महात्मा गान्धी रोड)।

विद्यापति गोष्ठी—डा० सुकुमार सेन, साहित्य सभा, वर्धवान, बंगाब्द-१३५४।

विद्यापति पदावली-सं० नगेन्द्रनाथ गुप्त, वसुमति साहित्यमन्दिर, १६६

बहुबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२, वंगाब्द-१३४२ ।

विद्यापतिर शिवगीत—सं० सुधीरचन्द्र मजुमदार, कलकत्ता विश्वविद्यायल, कलकत्ता, १९६२ ।

नेपाली ग्रन्थ

अभिलेख संग्रह—इतिहास संशोधन मण्डल, महाबौद्ध, काठमांडू ।

इतिहास संशोधन —प्रमाण-प्रमेय, भाग-१-सं० धनवज्रवज्राचार्य, जगदम्बा प्रकाशन, श्रीदरबार ललितपुर, नेपाल, संवत्-२०१९ ।

जयरत्नाकर नाटकम्—सं० धनवज्रचार्य-ज्ञानमणि बज्राचार्य, नेपाल सांस्कृतिक परिषद्, काठमांडू, संवत्-२०१४ ।

दिव्य उपदेश-पृथ्वीकोर्अत्ति—योगप्रचारिणी सभा, गोरक्षटिल्ला, वाराणसी, शाके १८८१ ।

देवमालावंशावली—श्री पीरमहन्त क्षिप्रनाथ योगिराज, सिद्धाचल, मृग-स्थली, नेपाल, संवत्-२०१३ ।

नेपाल उपत्यका को मध्यकालीन इतिहास—सूर्यविक्रमज्ञवाली, रायल नेपाल एकेडमी, काठमांडू, भेपाल, संवत-२०१९ ।

नेपालको ऐतिहासिक रूप रेखा——बालचन्द्र शर्मा, वाराणसी, द्वि० सं०, संवत्-२०२२ ।

पाटन को मल्लकालीन इतिहास—लिलाभक्त मुनंकर्मी, लिला-अदर्स, नासमना, भक्तपुर, नेपाल, संवत्-२०२२ ।

पुरातत्त्वपत्र संग्रह, भाग-१,२—सं० शंकरमान राजवंशी, पुरातत्त्वर संस्कृति विभाग, काटमांडू, नेपाल ।

भाषा वंशावली, भाग-२ — शिक्षा मंत्रालय, पुरातत्त्व बिभाग, काठमांडू, नेपाल, संवत्-२०२३ ।

सेन वंशावली - सं० शंकरमान राजवंशी, वीरपुस्तकालय, काठमांडू,

पत्र पत्रिका

संस्कृत

मनीषा (त्रैमासिक), कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय पत्रिका ।

मैथिली

निर्माण (साप्ताहिक), लहेरियासराय ।
पल्लव (मासिक), लहेरियासराय ।
फूलपात (त्रैमासिक), काठमांण्डू ।
मिथिला (मासिक), लहेरियासराय ।
मिथिला दर्शन (मासिक), कलकत्ता ।
मिथिला-भारती (त्रैमासिक), पटना ।
मिथिला-मिहिर (साप्ताहिक), पटना ।
मिथिला-मोद (मासिक), काशी ।
वागमति (मासिक), लहेरियासराय ।
वैदेही (मासिक), दरभंगा ।

हिन्दी

माधुरी जनवरी, १९३६ ।
राष्ट्रधर्म, सितम्बर, १९६९ ।
हिन्दुस्तानी, जिल्द,–५ खंड-२ ।

कतिपय विशेषांक

मिथिलाङ्क (मिथिला-मिहिर, दरभंगा)
शिवाङ्क (कल्याण)
शिवपुराणाङ्क (कल्याण)
साधनाङ्क (कल्याण)

अप्रकाशित शोध प्रबन्ध

मैथिली लोक काव्य—पूर्णानन्ददास, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा पी-एच० डी० हेतु स्वीकृत ।

वर्णरत्नाकर का सांस्कृतिक अध्याय—भुवनेश्वर प्रसाद गुरूमैती, पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० हेतु स्वीकृत ।

English Books

AIN-I-AKABARI—by Abul Fazl-i-Allami, Trans. H. S. Jarrett, Revised by Sir Jadunath Sarkar, Royal Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1948.

An Account of the District of Purnea (Purnea Report)—Francis Buchanan, Bihar and Orissa Research Society, Patna, 1928.

A History of Maithily Literature. Vol. I and II—Dr. Jayakant Mishra, Tirbhukti Publication, Allahabad, 1949 and 1950.

A Statistical Account of Bengal (Tirhut and Champaran)—W. W. Hunter, London, 1877.

Bengal District Gazettier-Muzaffarpur—L. S. S O. 'Mallay' Bengal, 1907.

Bihar Through the Ages—R.R. Diwakar, Orient Longmans, 17 Chitranjan Avenue, Calcutta-13. 1959.

Biography of Dharmswami—Dr. G. Rhorich, K. P. Jayaswal Institute, Patna, 1959.

Chaitanya and his Companions—D. C. Sen, Calcutta, 1917.

Coins of Ancient India—A Cunningham, Indological Book House, Varanasi, 1963

Corpus Inscriptionaim Indicarum, Vol. III—J. Fleet, Government Printing, Calcutta, 1888.

Doha-Kosh—P. C. Bagchi, Journal of the Department of Letters, Vol. 28, Calcutta University, Calcutta, 1935.

Early History of Vaishnva Faith and Movement in Bengal—S. K. De, Calcutta, 1942.

Scanned by CamScanner

History and Culture of the Kirat People, Vol. II—I man Sing Chem-Jong, Pusparatan sagar, Kathmandu, 3rd. Ed. 1967.

History of Begusarai (A Reprint from Sri Ramcharitra Abhinandan Granth)—by R. K. Choudhary.

History of Brajbuli Literature—Dr. Sukumar Sen, University of Calcutta, Calcutta, 1935.

History of Dharmashastra, Vol. I—P. V. Kane, Bhandarkar oriental Research Institute, Poona, 1930.

History of Mithila—Dr. Upendra Thakur, Mithila Sanskrit Research Institute, Darbhanga, 1956.

History of Nepal—D. Wright, Sushil Gupta (India) Private Ltd. Calcutta-6.

Introduction to a Chrestomathy of the Maithili Language G. A. Grierson, Extra Number, Journal of Asiatic Society of Bengal, Part-I, 1880.

Medieval Nepal, Part-II—D. R. Reqmi, Firma K. L. Mukhopadhyay Calcutta-6, 1966.

Obscure Religious Cults—Dr. Shashibhushan Das Gupta, Firma K. L. Mukhopadhyay, Calcutta—12, 1962.

Origin and Development of Bengali Language—Dr. S. K. Chatterji, Calcutta University. Calcutta, 1926.

Select Inscriptions of Bihar—R. K. Choudhary.

Socio-Religious-Economic and Literary Condition of Bihar (C. 319 A.D. to 1000 A.D.)—Bhgawati Sharan Verma, Munshi Ram Manohar Lal, Delhi-6, 1962.

Songs of Vidyapati—Dr. Subhadra Jha, Motilal Banarasi Das. Benaras, 1954.

The formation of Maithily—Dr. Subhadra Jha, Luzac and Company Ltd., London, 1958.

The History of Bengali Language—Dr. Vijoy Chandra Mazumdar, Calcutta, 1927.

The Modern Vernacular Literature of Hindustan—G. A. Grierson, Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1889.

The Sakas—E. A. Payne, Oxford University Press, London, 1933.

Twentyone Vaishnava Hymns—G. A. Grierson, Journal of Asiatic Society of Bengal, Part-I, 1884.

Vaishnavism saivism and Minar Religious Systems—Sir R. G. Bhandarkar, Indological Book House Varanasi, 1965.

Vratyas in Ancient India—R. K. Choudhary, Choukhamba Publication, Varanasi, 1954.

Journals

Allahabad University Journal.
Indian Antiquery.
Indian Historycal Quarterly.
Indian Linguistics.
Journal of the Bihar (and Orissa) Research Society.
Journal of the Department of Letters (C. U.)
Journal of the Ganganath Jha Research Institute.
Journal of the Oriental Reseach Institute.
Patna University Journal.

Catalogue of Manuscripts

Discriptive Catalogue of Manuscripts in Mithila, Vol. I to V Bihar Research Society, Patna.

Discriptive Catalogue of Ancient Manuscripts, Vol. I State Chandradhari Museum, Darbhanga.

Scanned by CamScanner

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना द्वारा खोजमे उपलब्ध प्राचीन हस्त-
लिखित पोथियों का विवरण, खण्ड-६ – सं० नलिनविलोचन शर्मा,
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
बृहत् सूचीपत्रम्, भाग–१, २, ३—वीरपुस्तकालय, काठमांडू।
हस्तलिखित ग्रन्थ विवरण—मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी, दिल्ली।

—:०:—

Scanned by CamScanner

मैथिली अकादमी पटनाक

नवीनतम प्रकाशन

पोथीक नाम	रु० पै० अजिल्द	सजिल्द
विद्यापतिकृत मणिमंजरी—(नाटक—मूल तथा मैथिली अनुवाद) सं० डा० चन्द्रधर झा	८.५०	१०.५०
ललितनारायण मिश्र (मिथिला विभूति)— डा० मदनेश्वर मिश्र—	६.००	—
म० म० शंकर मिश्र— डा० त्रिलोकनाथ झा—	५.००	—
लोचनकृत रागतरंगिणी—डा० शशिनाथ झा—	१५.००	१७.००
आत्मकथा वा हमर सत्यक प्रयोग—मूल–मो० कर्म० गाँधी अनु०—योगानन्द झा—	३०.००	३४.००
अनचिन्हार गाम—श्री मन्त्रेश्वर झा—	१०.००	१३.००
सूर्यमुखी—कविवर आरसी प्रसाद सिंह —	१०.००	१२.००
कृष्ण चरित प्रो० तन्त्रनाथ झा—	६.००	८.००
रूसक चिट्ठी—मूल रवीन्द्रनाथ टाकुर— अनु०—राजेश्वरी झा—	६.००	—
महाकवि लाल दास—डा० राधाकृष्ण चौधरी—	५.००	६.५०
श्यामली (यात्रा साहित्य)—नागेन्द्र कुमर—	११.५०	१३.५०
कविता राजकमलक— सं० मोहन भारद्वाज	१०.००	१२.००
कादम्बरी—दामोदर झा—	१०.००	१२.००
आँगनक रेखा—श्री गिरीधर झा 'विकल'	६.५०	८.५०
पहिल साँझ—श्री सुधांशु शेखर चौधरी—(नाटक)	६.००	८.५०
पहिल लोक—डा० गंगेश गुंजन—	१०.००	१२.००
गीता प्रवेश—श्री विश्वनाथ मिश्र—	४.५०	—
गोविन्द दास भजनावली—सं० पं० गोविन्द झा	८.००	९.५०
किसुन रचनावली—(स्वयंवर)—रामकृष्ण झा 'किसुन'—	१०.००	१५.००
किसुन रचनावली—क्रमशः— …. … … …	१२.००	१५.००
पूर्व मीमांसा—पं० दुर्गाधर झा—	७.००	९.००
उत्तर रामचरित (अनुवादक मुंशी)—रघुनन्दन दास—	६.००	८.००
वरदान (नाटक)—श्री गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'	५.००	—
म० म० परमेश्वर झा—डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' (मिथिला विभाग)	७.५०	—
चरैवेति—श्री सोमदेव—	८.००	१०.५०
मिथिलाक संगीत परम्परा—डा० चन्द्रेश्वर झा—	९.००	११.५०
नवीन मैथिली कविता—श्री रमानन्द झा 'रमन'	१०.००	१२.५०
भाषणत्रयी— सं० डा० देवेन्द्र झा —	५.५०	—
इतिश्री— स्व० उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'	१०.००	१२.५०

Scanned by CamScanner